

10.4.2 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20.

---

PRINTED BY  
Tirantlal Mishra  
at the  
VISWAVINODE PRESS,  
48, Indian Mirror Street,  
Calcutta.

---

Published by the Compiler  
48, Indian Mirror Street,  
CALCUTTA

# जैन लेख संग्रह ।

कनिष्य चित्र और आचर्यक नाटिकायों मे युक्त

---

द्वितीय खंड ।







de puun at Inchi Páwápuu (North view)



आज बड़े हर्ष के साथ "जैनलेख संग्रह" का दूसरा खंड पाठकों के सन्मुख उपस्थित करना हूँ। इसका प्रथम खंड प्रकाशित होने के पश्चात् द्वितीय खंड शीघ्र ही प्रकाशित करने की इच्छा रहते हुए भी कई अनिवार्य कारणों से विलम्ब हुआ है। न तो प्रथम खंड में कोई वित्तीय भूमिका दी गई थी और न यहां ही लिख सके।

जैनियों का खास करके हमारे मूर्तिपूजक श्वेताम्बर भाइयों का धर्मप्राण शताब्दियों तक बराबर आचार्यों के उपदेश से देवालर और मूर्तिप्रतिष्ठा की ओर कहां तक अग्रसर था और वर्तमान समय पर्यन्त कहां तक है यह "लेख संग्रह" से अच्छी तरह पता हो सकता है। ऐतिहासिक दृष्टि से खिल प्रकार उपयोगी समझ कर प्रथम खंड प्रकाशित किया था यह खंड भी उसी इच्छा से विद्वानों की सेवा में उपस्थित करना है।

सन् १९१८ में प्रथम खंड प्रकाशित होने पर प्रतिष्ठित ऐतिहासिक श्रेष्ठ श्रीमान् राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझा जी ने पुस्तक भेजने पर उस संग्रह के उपयोगिता के विषय में जो कुछ अपना बक्ष्य प्रकट किये थे उसका कुछ अंश नीचे उद्धृत किया जाना है। उक्त महोदय अजमेर से ता० २६-१०-१९१८ के पत्र में लिखते हैं कि :-

"आपके जैनलेख संग्रह को आदि से अंत तक पढ़ गया हूँ। आपका यह ग्रन्थ इतिहासवेत्ताओं तथा जैन-संसार के जिये रत्नाकर के समान है। अंत में दी हुई ताक्षिकार्यों की बड़े काम की बनी हैं उनसे जित्त १ गद्यों के अनेक आचार्यों के निश्चित समय का पता लगता है, यदि इसके दूसरे जाय की निकलेंगे तो जैन इतिहास के जिये बड़े ही काम के होंगे।"

प्रथम खंड में सामान्य मूर्तियों के इतिहास "प्रतिष्ठासूत्र", "आचर्यों की शक्ति-गोशक्ति" और "आचार्यों के गच्छ और समाधि" की सूची दी गई थी। इन सब इन सबके निवारण राजा महाराजाओं के नाम जो इन लेखों में पाये गये हैं, उनकी तादिका भी समय २ पर आसन्न होनी है समझ कर इस खंड में दी गई है।

मैं प्रथम खंड की भूमिका में यह सुझा हूँ कि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से यह संग्रह प्रकाशित हुआ है। जिस समय यह खंड उपर था उसी समय श्री राजगुरु मीर में श्वेताम्बर विद्वानों में सुकवला छिड़ गया था पश्चात् जैन धारण में नै हो चुका है अतएव इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मुझे बड़े हर्ष के साथ विमला पटना है कि विद्वानों लोग मुझे ऐसे समर्थ उपहारित करने के बड़े मार्थका उक्त सुझावे में इन्कार के समय में जैनलेख संग्रह पर हल पट्ट डे हीमत निरि थे।



Jalmandira at Tirtha Pāvāpuri (North view)









# सूचीपत्र ।



स्लान	पत्रांक	स्लान	पत्रांक
<b>कलकत्ता ।</b>		कानपुरवालों का मंदिर	... २११
श्री आदिनाथजी का देरासर ( कुमारसिंह हाल )	... १,२५८	लाला कालिकादासजी का मंदिर	... २१२
हैमालालजी गुलाबसिंहजी का देरासर	... २	श्री चंद्रप्रभुजी का मंदिर	... २१३
लामचंदजी सेठ का घर-देरासर	... २	॥ पार्श्वनाथजी का मंदिर	... २१३
इंडियन म्यूज़ियम	... ३	॥ सुमस्वामीजी का मंदिर	... २१४
<b>अजिमगंज - मुर्शिदाबाद ।</b>		<b>श्री पावापुरी तीर्थ ।</b>	
श्री नैमिनाथजी का मंदिर	... ३	श्री गांव मंदिर	... २५८-२६५
<b>सैतीया - बीरभूम ।</b>		॥ जल मंदिर	... २६३
श्री आदिनाथजी का मंदिर	... ५	॥ समोसरण	... २६४
<b>रंगपुर - उत्तर बंग ।</b>		महताव विधि का मंदिर	... २६४
श्री चंद्रप्रनखामो का मंदिर	... ५	<b>श्री राजग्रह तीर्थ ।</b>	
<b>श्री सम्मैतशिखर तीर्थ ।</b>		श्री गांव मंदिर	... २१५
टोंक पर के चरणों पर	... २०५	॥ वैभार गिरि	... २१६
श्री जल मंदिर	... १५८, २०७	॥ लोन भंडार	... २१६
<b>मधुवन ।</b>		॥ मणियार मठ	... २१६
श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर	... १५६	<b>श्री क्वत्रीकुंड तीर्थ ।</b>	
जगतसेठजी का मंदिर	... २०८	श्री जैन मंदिर	... १६०
प्रतापसिंहजी का मंदिर	... २०६	<b>छठवाड़ ।</b>	
		श्री जैन मंदिर	... १६१

स्थान	पञ्चांक
<b>पटना ।</b>	
शहर मंदिर	... २२१
दिगम्बरी मंदिर	... २२१
म्यज़ियम	... २२१
<b>वनारस ।</b>	
शिखरचंद्रजी का मंदिर	... २२२
<b>चंड्रावती ।</b>	
श्री जैन मंदिर	... १५५
<b>अयोध्या ।</b>	
श्री अजितनाथजी का मंदिर	... १४६
„ समोन्नरणजी	... १४८
<b>नवराई ।</b>	
श्री जैन मंदिर	... १५०
<b>फैजाबाद ।</b>	
श्री शान्तिनाथजी का मंदिर	... १५३
<b>खखनड ।</b>	
श्री शान्तिनाथजी का मंदिर ( बोहरनटोला )	... ११५
„ ऋषभदेवजी का मंदिर ( बोहरनटोला )	... १२१
„ महावीरस्वामी का मंदिर ( बोहरनटोला )	... १२४
„ आदिनाथजी का मंदिर ( चूड़ीवाली गली )	... १२७
„ महावीरस्वामी का मंदिर ( मुंघीटोला )	... १२८
„ चिन्तामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ( " " )	१३१
„ नान्दनाथजी का मंदिर ( फूलवाली गली )	... १३६
„ महावीरस्वामी का घर-देरासर	... १३८

स्थान	पञ्चांक
रायसाहब का घर-देरासर	...
काला खेमचंद्रजी का घर-देरासर	...
हीरालालजी चुत्रिलालजी का घर-देरासर	...
श्री श्रीमंदिरस्वामीजी का मंदिर	...
„ वासुपूज्यजी का मंदिर ( सहादनगंज )	...
„ पार्श्वनाथजी का मंदिर ( " " )	...
„ ऋषभदेवजी का मंदिर ( " " )	...
„ शान्तिनाथजी का मंदिर ( " " )	...
„ दादाजी का मंदिर	...
<b>देहली ।</b>	
लाला हजारीमलजी का देरासर	...
चौरखाने का मंदिर	...
<b>मथुरा ।</b>	
श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर	...
<b>आगरा ।</b>	
श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर	...
„ श्रीमंदिरस्वामीजी का मंदिर	...
„ सूर्यप्रभस्वामीजी का मंदिर	...
„ गौडीपार्श्वनाथजी का मंदिर	...
„ वासुपूज्यजी का मंदिर	...
„ केशरियानाथजी का मंदिर	...
„ नेमनाथजी का मंदिर	...
„ शान्तिनाथजी का मंदिर	...
„ महावीरस्वामी का मंदिर	...

स्थान	पत्रांक	स्थान	पत्रांक
गवालियर - लस्कर ।		१. जैन उपासना ...	६७
श्री पंचायती मंदिर ...	७२	२. चिंतामणि पार्ष्वनाथजी का मंदिर ...	६७
.. पार्ष्वनाथजी का मंदिर ...	७८	३. श्रीमंदिरस्वामीजी का मंदिर ...	६८
.. शांतिनाथजी का मंदिर ...	८३	मोरखानो - वीकानेर ।	
सुरार - लस्कर ।		श्री देवी मंदिर ...	६६
श्री जैन मंदिर ...	८४	चुरू - वीकानेर ।	
गवालियर दुर्ग ।		श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	७१
श्री जैन मंदिर ...	८५	नागौर ।	
सुदानीय - गवालियर ।		श्री ऋषभदेवजी का मंदिर ...	४४
श्री जैन मंदिर ...	६४	.. आदिनाथजी का मंदिर ...	६०
जयपुर ।		.. सुमतिनाथजी का मंदिर ...	६१
श्री लुपार्ष्वनाथजी का मंदिर ...	२५	.. शांतिनाथजी का मंदिर ...	६२
.. सुमतिनाथजी का मंदिर ...	३२	सूरपुर - नागौर ।	
.. आदिनाथजी का मंदिर ...	३८	श्री मानाजी का मंदिर ...	१६५
.. पार्ष्वनाथजी का मंदिर ...	४१	उसतरां - नागौर ।	
चंदन चौक ।		श्री जैन मंदिर ...	१६५
श्री जैन मंदिर ...	१६२	रत्नपुर - मारवाड़ ।	
छाम्बेर ।		श्री जैन मंदिर ...	१६३
श्री चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर ...	४३	गांधाणी - मारवाड़ ।	
अलवर ।		श्री जैन मंदिर ...	१६४
श्री जैन मंदिर ...	४४	जोधपुर - मारवाड़ ।	
वीकानेर ।		राजवैद्य भट्टारक श्री उदयचंद्रजी का देवसर ...	२२६
श्री इक्ष्वाकु पार्ष्वनाथजी का मंदिर ...	६३	नगर - मारवाड़ ।	
		श्री जैन मंदिर ...	१६६



## ( ५ )

स्थान	पत्रांक	स्थान	पत्रांक
रोहेड़ा - सिरौही ।		श्री तारंगा तीर्थ ।	
श्री जैन मंदिर ...	२७६	श्री अमिननाथ स्वामी का मंदिर ...	१७१
नारज - सिरौही ।		श्री शत्रुंजय तीर्थ ।	
श्री जैन मंदिर ...	२७८	द्विगम्बर मंदिर ...	१७२
गुड़ा - सिरौही ।		पाषीताना ।	
श्री जैन मंदिर ...	२७८	श्री सुमतिनाथजी का मंदिर ...	१७३
त्रिवरी - सिरौही ।		तखाजा - काठियावाड़ ।	
श्री जैन मंदिर ...	२७८	जैन मूर्ति पर ...	१८८
साडीव - सिरौही ।		शिलालेख ...	१८८
श्री जैन मंदिर ...	२७९	सिहोर - काठियावाड़ ।	
मनिया - सिरौही ।		श्री सुनाश्वनाथजी का मंदिर ...	१७३
श्री जैन मंदिर ...	२७९	घोया - काठियावाड़ ।	
निंबज - सिरौही ।		श्री सुविधिनाथजी का मंदिर ...	१८१
श्री जैन मंदिर ...	२७९	घोरवाड़ - जुनागढ़ ।	
बुड़वाघ - सिरौही ।		श्री जैन मंदिर ...	१८०
श्री जैन मंदिर ...	२८०	श्रीयात्रवेट - काठियावाड़ ।	
श्रैजार ।		श्री जैन मंदिर ...	१८२
श्री परश्वनाथजी का मंदिर ...	१६८	जासनगर - काठियावाड़	
खीमत - पावलपुर ।		श्री सांतिनाथजी का मंदिर ...	१८१
श्री जैन मंदिर ...	१७१	.. कर्दश्वरजी का मंदिर ...	१८७
हीसा ।		सांगरोल - काठियावाड़ ।	
श्री कर्दश्वरजी का मंदिर ...	२८०	श्री जैन मूर्ति पर ...	१८६
.. महादेव स्वामी का मंदिर ...	२८१		

स्थान	पत्रांक	स्थान
वेरावख - काठियावाड़ ।		घस्देरासर ( गाम देवी ) ...
श्री जैन मंदिर ...	१८६	सिरपुर - सी० पी० ।
मिन्नालेख ...	१८६	श्री जैन मंदिर ...
ऊना - काठियावाड़ ।		शिलालेख ...
श्री जैन मंदिर ...	२००	रायपुर - सी० पी० ।
गाणेश - गुजरात ।		श्री जैन मंदिर ( सदर बजार ) ...
श्री जैन मंदिर ...	१६२	हैदराबाद - दक्षिण ।
प्रज्ञासपाटण - गुजरात ।		श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ( वेगम बजार )
श्री बायल मिनालर मंदिर ...	१६३	” पार्श्वनाथजी का मंदिर ( कारवान साहुकारी )
संज्ञात - गुजरात ।		” पार्श्वनाथजी का मंदिर ( रेसीडेन्सी बजार )
श्री मदीयत मकरम का मंदिर ...	१६५	” पार्श्वनाथजी का मंदिर ( चार कथान )
पोमिना - जरुयत ।		मद्रास ।
श्री जैन मंदिर ...	१६६	श्री चंद्रप्रभुस्वामी का मंदिर ( शूला बजार )
बम्बई ।		” चंद्रप्रभुस्वामी का मंदिर ( साहुकार पेठ )
श्री मदीयत का मंदिर ...	२०३	” जैन मंदिर ( “ ” )
		दादाजी का थंगला ...



# प्रतिष्ठा स्थान ।



	लेखांक		लेखांक
भकवरावाद्	...	१४५५	इंदलपुर ... १३६१
भचलगढ़ महादुर्ग	...	२०२७	इंद्रिय .. १२०७
भजीमगंज	...	१८११	उदईज .. २०१०
भजुपुर	..	१७१७	उग्रसेनपुर .. १४५६
भणहिरपुर ( पत्तन )	१७८६, १७८८, १८८०, १८८३		उज्जयंत ... १७८१
भमदावाद्	...	१२५४	उद्यमण ... २०७०
भयोध्या	१६४७, १६४८, १६४९, १६५१, १६५२, १६५४, १६५५, १६५६, १६५७, १६७६		उदयपुर ( मैदापाट ) १०२८, ११०६, १११५, १११६, १८६८
भार्गलपुर	... १४५४, १४७८, १४६६		उन्नतपुर ... १०१७, १०६६
भार्गुदगिरि	...	२०२५	उम ... १०६३
भालवर	...	१४६४	पार्इउलि ... १६१५
भालावलपुर	...	१५७४	पाच्छ-मांडयो ... १८१२
भद्यापद	...	१८०८	पालेली ... १०५७
भद्रमदावाद् ( गूर्जरदेसा )	१०३०, १३०८, १४७५, १५४०, १६३५, १७६५, १८८०		पारहेटक ( कर्नाडा ) .. १६५७
भामरा	१४४६, १४५२, १४५३, १४५७, १४६७, १४६९, १५०६, १५२०		कर्नाडा ... १११७
भामरा हुसे	१५८०, १५८१, १५८३, १५८४, १५८५		कंधरावादी ... १६२७
भामरोपा	.	१०६२	कंठिपुर ... १६३३, १६३०
भामरुति	.	१५६०	कामी १६६०, १६६५, १६६६, १६६७
भामरपुर	१५३१, १५३२, १६४१, १६६७, १६६८, १६६९		कंठारा .. १४८६
भामरवादी	.	१०६६	कृष्णगिरि .. १०८१
भामरपुर	.	१०६८	कुन्वरपुर .. १५८६
			कुन्वरगिरि .. १२१५
			कुन्वरवादी .. १३१४



## ( ८ )

प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान
कृष्णगढ	... ११६७	जयनगर
सत्रोकुण्ड ( पत्रोकुण्ड )	... १८४७	जयपुर ( जयनगर )
खिरहालू	... ११६५	
खोमसा	... १२७८	जात्रू
खोमंत	... १७२३	जालोर-महादुग
शंभार	... १००४	जावर
गाणउलि	... १७८८	जीणंभारा.
गिरनार	... १८०८	जूहाख्द
गिरिपुर	... १०८६	जैनगर
गुंडलि	... १५५१	ज्यायपुर
गोपगिरि	... १४२८	भाड़उलि
सोपाचल	... १२३२	टिंवानक
गोपाचल दुर्ग	... १४२६, १४२७	टौवाची
गोपाचलगढ दुर्ग	... १४२६	डूंगरपुर
घनौघ	... १७७१, १७७३	तारंगी दुर्ग
चक्रवर्तिनगर ( गूर्जरदेर )	... १७६३	दिल्ली
चंकिनी	... १५४४	दीवंदिर ( दीष )
चंदेरा	... १२०६	देउलवाड़ा ( मेवाड़ )
चंद्रावती	... १६८१, १६८६	देकावाड़ा
चंपापुर	... १८१०	देलवाड़ा
चारकवाण	... २०५२	देवकापाटण
च्यारकवाण	... २०५३	देवकुलपाटक ( पुर )
चित्रकूट	... १७८६, १६५५	देवड़ा
चित्रकूट दुर्ग	... १४१६	दौलती बाद
चोरवाटक ( तुनागड )	... १७३६	डोय घन्द्र
जगतपुर	... १४३७	धवलकक्षा
	... १२७३	धार नगर

## ( ए )

प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
नगर ( मारवाड़ )	१७१३, १७१४	बिहार	१६६७
नटोन्द्र	१६४६	भोलुडग्राम	२०७३
जवाछ	१३०७	भेव	१५७०
नवोननगर	१७८२	मकड़ावाद ( मझुदावाद )	१०१८, १७०३, १८१०, १८११, १८१२, १८१३, १८१४, १८२६
नव्यनगर ( हल्लार देस )	१७८१	मद्रास ( शूला )	२०६६
नंदाणि	१६६४	मद्रासस पत्तन ( साहूकार पेट )	२०७०
नागपुर	१२७४, १६७६	मधुमती	१७७६
नागौर	१४१७	मधुवन	१८२७
नारदपुरी	१८६१	मलारणा	१४८५
नासणुलो	१६३३	महिसाणा	११२७, १५६५
नेवोत्राप मगम	१३०२	मंगलपुर	१०६६
पत्तन	१०१६, ११०२, १३५४, १४०५, १५३६, १६१०, १६६०, १७१३, १७१४, १७६१, १६८८, २०६१, २१०६	मंडप	१४७२
पत्तन नगर	१६०६, १६१३, २०११	मंडप दुगो	१३१४
पाटण	१४६७	मंडासा	१०१५
पाटलिमनगर	१६७१	मंडोवर	१३५०
पालणपुर	११६०, १२६१, २०७४	मामुलक	१२३३
पावापुरी	१८०८, २०३६, २०३७	मारवीजा	१२१०
पूर्वाचलगिरि	१६६४	मालपुर	११३२
पारोजपुर	१३४६	मांगलोर	१०८७
पेधापुर	१७३०	मांडल ( गुडजंग देग )	१८०८
पटली	११८१	मांडलि	१५०५, ११०४
दानपुर	१०१७, १०१८, १०१९, १०२१, १०२४	मांही	१०६७
डोकानि	१२०५, १३४६, १३५०, १४४१, १६४६	निगलापुर	१६५१
पटनवट	१६०४	मुगारि	१४०५
पणलर	१७३५	मुंडरटा	१०७०
संगलावसति	१६६९	मुंडवा	११३७, १३०८, १४००

प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान
मेड़ता नगर	...	...
मेहूणा	...	१६२८
मोरखीयाणा	...	१२२१
योगिनीपुर	...	२०५४
रणासण	...	१४८३
रत्नपुर	...	११७५
रत्नपुर ( अयोध्या )	...	११३०
रत्नपुर ( मारवाड )	१६६२, १६६३, १६६४, १६६५, १६६६	विक्रमनगर
रंगपुर	...	१७०६, १७०८
राजगृह	...	१०१७, १०१८
राजनगर	...	१८५८
राजपुर ( सी० पी० )	१०१४, १५१६, १७५०, १८४०, २०४२	वोचावेडा
रामगढ दुर्ग	...	२०७७, २०७८
रालज	...	१८६६
रेवत	...	१२२२
रेवत	...	१८११
रेवत	...	१७६३
लक्षणपुर	१५२६, १५३०, १५३१, १५३३, १५३५	वीरमग्राम
लखनऊ	१५२५, १५२६, १५२७, १५२८, १५३२, १५८६	वीरमपुर
लुद्राडा	...	१२८२
लोद्राद्र	...	१०१२
चटपद्र	...	२०८८
चङ्गनगर	...	१७३४
चङ्गली	...	१११६, १८४३
चङ्गवा	...	१८६४
चणद्र	...	११८८
चनरिया	...	२०६५
चरडुड	...	१४१२
		शाल्मलीयपुर
		शिखरगिरि
		शूलाग्राम
		ध्रागर
		सपवाराही
		सखारि
		सत्यपुर
		समेतशैल
		सम्मेतगिरि
		सम्मेतशिखर

प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
शवाई जयनगर ( जंनगर )	... ११७८, १२१६, १४४१	सोरोही	... १२८३, १३३६, १४६५
सर्हाजगपुर	... १७७८	सीहा	... १४७७
सहआला	... ११६३, १७५३	सुजाउलपुर	... ११७३
साकर	... ११६८	सुद्रोयाणा	... १२६६
साचुरा	... १७२६	सुरमाणपुर	... १७००
साबलटन	... ११६५	सोजात	... १३२०
साहगञ्ज	... १४६६	स्तम्भतीर्थ ( खंभात )	... ११६६, १२१५, १७५६, १७६३, १७६४, १६४२
सातपुर	... १३६८	स्तम्भतीर्थ बंदिर	... १७६६, १८००
सिद्धक्षेत्र	... १४८६	स्वातरोय नगर ( बान्यरदेश )	... १७६५
सिद्धपुर	... १३३६, १४४४	खिराड	... २०६७
सिंहपानोय	... १४२६	हालीवाड़ा	... २०६४
सिंहदुर्गा	... १७७६	हाविल ग्राम	... २१०६
साणुरा	... १०६१	हुगली	... १८४७
सन्तापुर	... १०११	हैदराबाद ( दक्षिण )	... २०६१
सोपोर	... १८२६		
सारुंज	... १७५१		

## राजाओं की सूची ।

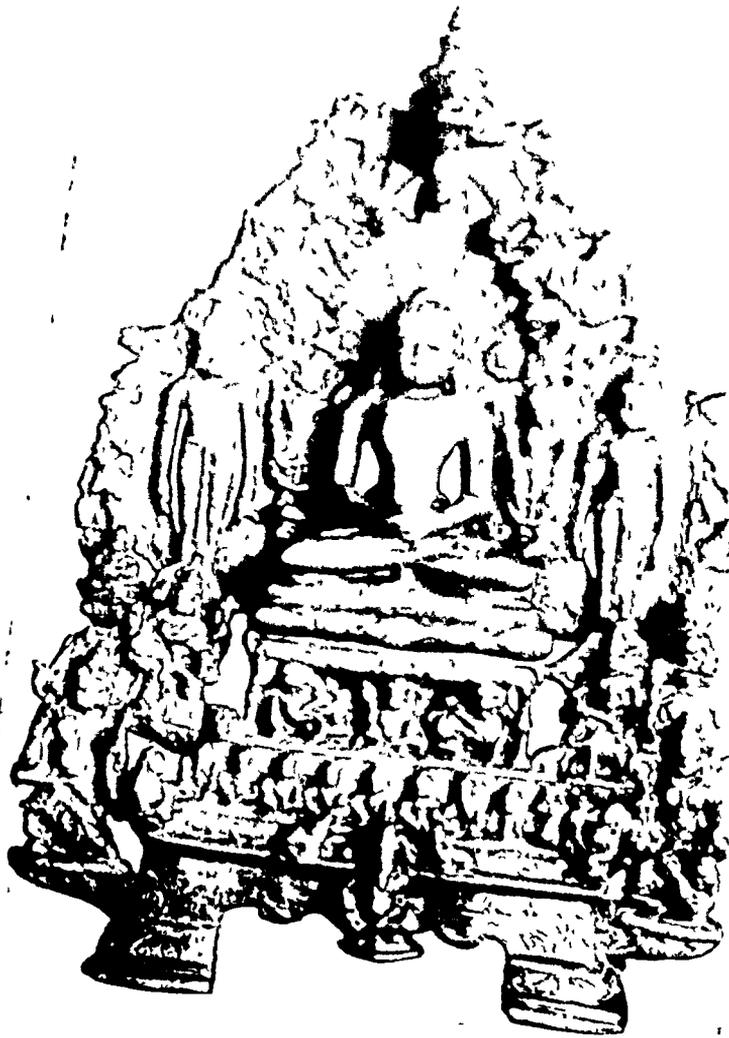


संवत्	नाम	स्थान	लेखांक	संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१६३३	बकवर, सुरजाप		१७८२	१७१३	बकवर, पानिसाहि		१७२७
१६५२	बकवर, पानिसाहि		१७६६	१४६६	कुंभकणे, राणा	मेराड	२००६
१६६१	" "		१७६४	१४६४	कुंभकणे, भूपति	द्वैतु अण्डक	११५८
१६७०	बकवर, सुरजाप		१६२८	१६६३	जगन्निह, राणा	उदयपुर	१००८

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक	संवत्	नाम	स्थान
१८०१	जगतसिंह, महाराणा	उदयपुर	१११५	११५०	महीपाल	"
१५६६	जगमाल, महाराजाधिराज	अचलगढ	२०२७	११५०	मूलदेव	गोपाचल
१५४८	जशसिंह, राजा		२०३६	११५०	मंगलराज	"
१६७८	जसवंतसिंहजी, जाम,	नवानगर	१७८१	१२७२	रणसिंह, मिहरराज	टिंवान
१६७१	जहांगीर, पातिसाह	आगरा दुर्ग १५८०-८१-८२		१७६८	राघव, राजा	देवकुलपाटक
१६७१	" "	आगरा १५८३-८४		१६६७	लक्ष्मराज, जाम	नवानगर
१६७१	जहांगीर, पातिसाह सवाई सुरवाण		१५७८-७९	१०३४	वज्रदाम, महाराजाधिराज	
१६७१	" "	उग्रसेनपुर	१४५६	११५०	वज्रदाम	"
१६७४	जहांगीर साह,		१४६०	१२११	वस्तुपाल, महामात्य	अणहिलपुर
१४६७	डूंगरसिंह, महाराजाधिराज	गोपाचल	१४२७	१५६२	वीकाजी, महाराजा राई	वीकानेर
१५१०	" "	गोपगिरि	१४२८	१६३३	शत्रुसल्ल, जाम	नवीननगर
१५१०	डूंगरसिंहदेव, राजाधिराज	गोपाचल	१२३२	१६७६	शत्रुसल्ल, जाम,	नवानगर
१५२५	डूंगरसिंह, राघवर सायर	अर्बुदगिरि	२०२५	१६७१	शाहजहां	
१६६६	तेजसिजी, राउल	बोरमपुर	१७१५	१८६३	सहादतअलि, नवाब	लखनऊ
११५०	त्रैलोक्यमल	"	१४२६	१६८६	साहजांह, पादशाह	
११५०	देवपाल	गोपाचल	१४२६	१६८८	साहिजांह, पातिसाह सवाई	अगलपुर
११५०	पद्मपाल	"	१४२६	१६६८	साहजांह, पातिसाह	
१३६२	पृथ्वीचंद्र, महाराजाधिराज	चित्रकूट	१६५५	१८५६	सुरतसिंह, महाराज	घोकानेर
१५४६	भीमसिंह, रावल	मण्डासा	१०१५	११५०	सूर्यपाल	"
११५०	भुवनपाल	"	१४२६	१५२६	सोमदास, राउल	डूंगरपुर नगर
१५५२	महसिंहदेव, महाराजाधिराज.	गोपाचल	१४२६	१६६६	हठीसिंहजी, महाराज	रामगढ दुर्ग







METAL IMAGE OF SHRI ADINATH  
Dated, V. S. 1077, ( A. D 1020 )





- ( १ ) पंकः श्रिया वे सुन  
( ३ ) स्तु पुन्नक श्राद्धः सी  
( ४ ) लगल सूरि जक्तश्चन्द्र कु  
( ५ ) ले कारयामासः ॥  
( ६ ) संवतु  
( ७ ) १०७२

[ 1002 ]

संवत् १६४२ वर्षे पो० सु० १२ सोमे श्रीअजित विं० का० सा० नानू बुदिङ्गाकेन प्र० श्रीहीरविजय सूरि ।

धातुकी चौविशी पर ।

[ 1003 ]

ॐ ॥ श्रीमन्निवृतगङ्गे संताने चाम्रदेव सूरीणां । महणं गणि नामाद्या चेद्धी सर्व देवा गणिनी ॥ वित्तं नीतिश्रमायातं वितीर्य शुजवारया । चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं ॥

हीरालालजी गुलावसिंहजी का देरासर—चितपुर रोड ।

धातु की चौविशी पर ।

[ 1004 ]

संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमालझातीय दोसी मूंगर जार्या म्यापुरि सुत मुंजाकेन जार्या सोही सुत वीका युतेन आ० श्रेयसे श्रीसुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगङ्गे श्रीअमरसिंह सूरि पट्टे श्रीहेमरत्नगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गन्धार वास्तव्य ॥ शुभं जवतु ॥ श्रीः ॥

लालचन्दजी सेठ का घर देरासर—पुलिस हस्पिटैल रोड ।

पापाण की मूर्तियों पर ।

[ 1005 ]

संवत् १६२३ ज्येष्ठ शुक्ल ५ महोपाध्याय युग प्र० विजयेन प्रतिष्ठितं जं । यु । प्र । ज श्रीजिनरंगसूरि राज्ये ।

[ 1006 ]

संवत् १७१७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ रवौ खरतरगङ्गीय महोपाध्याय रामविनयगणिना प्र० पार्श्वविम्बं ।

स्फटिक के विम्ब पर ।

[ 1007 ]

संवत् १७७७ मा । सु० १३ प्र । ख । श्रीजिनचन्द्र सूरिजिः ।

रौप्य के चरण पर ।

[ 1008 ]

जंगम युग प्रधान जट्टारक श्रीजिनदत्त सूरीश्वराणां पाडुके । श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां पाडुके । वीर संवत् १४४७ वि० १९७९ आषाढ शुक्ल १ चन्द्रे रांका गोत्रीय लानचन्द्र शेठेन आत्मकव्याणार्थ इमे पाडुके निर्मापिते, श्री वृ० ख० ग० ज० युग० जट्टारक श्रीजिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये श्रीमद्दिङ्मण्णलाचार्य श्रीनेमिचन्द्रसूरि अन्तेवासि पं० श्रीहीराचन्द्रेण यतिना प्रतिष्ठापिते श्री शुचं चूयात् ।

इण्डियन म्युजियम—चौरङ्गी रोड ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1009 ]\*

संवत् १४५७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ श्रीमूलसंघे प्रतिष्ठाचार्य श्रीपद्मनन्दि देवोपदेशेन श्रीजीमदेव । नार्या महदे । सुत गणपति नार्या करमू ॥ .....प्रणमति ।

—•••—

## अजिमगञ्ज-मुर्शिदाबाद ।

श्रीनेमनाथजीका मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1010 ]

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १ दिने सोमवारे उकेश वंशे लोहा गोत्रे ना० वीशन्न नार्या

\* यह चौविगी हात में परां पर लिखी से करं है ।

- ( १ ) पंकः श्रिया वे सुन  
( ३ ) स्तु पुन्नक श्राद्धः सी  
( ४ ) लगल सूरि जक्तश्चन्द्र कु  
( ५ ) ले कारयामासः ॥  
( ६ ) संवतु  
( ७ ) १०७२

[ 1002 ]

संवत् १६४२ वर्षे पो० सु० १२ सोमे श्रीअजित विं० का० सा० नानू जुदिज्जकेन प्र० श्रीहीरविजय सूरि ।

धातुकी चौविशी पर ।

[ 1003 ]

ॐ ॥ श्रीमन्निवृतगळे संताने चात्रदेव सूरीणां । महणं गणि नामाद्या चेह्वी सर्व देवा गणिनी ॥ वित्तं नीतिश्रमायातं वित्तीर्य शुजवारया । चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं ॥

हीरासावजी गुलावसिंहजी का देरासर—चितपुर रोड ।

धातु की चौविशी पर ।

[ 1004 ]

संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमाखडातीय दोसी मूंगर जार्या म्यापुरि सुत मुंजाकेन जार्या सोही सुत वीका युतेन आ० श्रेयसे श्रीसुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगळे श्रीअमरसिंह सूरि पट्टे श्रीहेमरत्नगुरुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गन्धार वास्तव्य ॥ शुभं चवतु ॥ श्रीः ॥

साजचन्दजी सेठ का घर देरासर—पुलिस हस्पिटैल रोड ।

पापाण की मूर्तियों पर ।

[ 1005 ]

संवत् १६२३ ज्येष्ठ शुक्र ५ महोपाध्याय युग प्र० विजयेन प्रतिष्ठितं जं । यु । प्र । न श्रीजिनरंगसूरि राज्ञे ।

( ५ )

## सैंतीया ( वीरभूम )

श्री आदिनाथजी का मन्दिर ।

धातुकी पञ्चतीर्थी पर ।

[ 1016 ]

संवत् १५९३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्रीजण्डसवंशे दो० वरूच्या जार्या मेघू पुत्र जईता सुश्रावकेण जा० जीवादे ज्ञातृ जटा सहितेन स्वश्रेयसे ॥ श्रीअंचलगणेश्वर । श्रीजयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन श्री पत्तने ॥ ठः ॥

## रङ्गपुर ( उत्तर वङ्ग )

श्रीचन्द्रप्रज्ञस्वामी का मन्दिर—माहीगञ्ज ।

शिला लेख नं० १

[ 1017 ]

- ( १ ) अत्यद्भुतं सज्जनसिद्धिदायकं जव्यांगिना मो
- ( २ ) क्करं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चन्द्रप्रज्ञं
- ( ३ ) नौसि जिनं सनातनं ॥ १ ॥ संवत् १७९३ मि । माघ वदि १ । र
- ( ४ ) वौ श्रीरङ्गपुरे । ज । श्रीजिन सौजागा सूरिजी विजयी ।
- ( ५ ) राज्ये वा । आनन्दवल्लभगणेरुपदेशान् श्रीमद्भुदात्रा
- ( ६ ) द् वाङ्मूचर वास्तव्ये च । निहालचन्द्र तत्पुत्र वाचू इन्द्रच०
- ( ७ ) न्द्रेण श्रीचन्द्रप्रज्ञ जिनः प्रासादः कागपिनः प्रनिष्ठापि
- ( ८ ) तश्च । विधिना ॥ सतां कल्याण वृद्धार्थम् ॥
- ( ९ ) श्रीरस्तुः ॥ १ ॥

० यह शिलालेख सनातन धर्मके पत्तन पर संवत् १७९३ ईश्वर १८ वदि १ माघ मासके अर्धरात्रि में श्रीजयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन श्री पत्तने ॥ ठः ॥

जावलदे तत्पुत्र सा० कर्मा तन्नार्या कउतिगदे तत्पुत्र सा० सहसमल्ल श्रावकेण सपरिवारेण  
आत्मश्रेयोर्थ श्रीचन्द्रप्रज्ञ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगढे श्रीजिनराजसूरि पढे  
श्रीजिनचन्द्रसूरिजिः ॥

[ 1011 ]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ४ सोमे श्रोत्रह्याणगढे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि विरूआ  
नार्या मुक्ति सुत हीरा नार्या हीरादे सुत जावड कम्बूआन्यां स्वपित्रोः श्रेयोर्थ श्रीधर्मनाथ  
विंशं पञ्चतीर्थी कारापितः प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरि पढे श्री विमल सूरिजिः ॥ सीतापुर  
वास्तव्यः ॥

[ 1012 ]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुके उ० ज्ञातीय विद्याधर गोत्रे । सा० सूमण ।  
जा० सूमलदे । पु० वेला जा० वगू नाम्ना पु० सोमा युतयां स्वत्रातृ पुण्यार्थ श्रीआदिनाथ  
विंशं का० प्र० वृहद्गढे घोकमीयावटंके (?) श्रीधर्मचन्द्रसूरि पढे श्रीमलयचन्द्र सूरिजिः ।  
लोड्राड ग्राम ॥

[ 1013 ]

॥ ए० ॥ संवत् १५२२ वर्षे आषाड सुदि ० उकेशिज्ञातीय रुवेयता गोत्रे । सा० केसरज  
नार्या रतनाकेन श्रेयसे श्रीसुमति विंशं प्रतिष्ठितं धर्मघोषगढे श्रीसाधु ॥

[ 1014 ]

संवत् १५०६ व । ज्ये । गु० श्री राजनगरवास्तव्य । प्राग्वाटज्ञातीय वृहद्शाषायां सा०  
रुषजदास जा० ऊहु नाम्ना श्रीनमिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं च तषागढे । ज० श्री ५  
श्रीविजयानन्दसूरिजिः ॥ आचार्य श्री ५ श्रीविजयराजसूरि परिकरितैः ॥ श्रीरस्तु । ज ॥ १ ॥

पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1015 ] \*

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघे जट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा सा० राज  
पापडीवाल सप्रणमति का० श्रीजीमसिंघ रावल । सहर मण्णासा ।

( ७ )

[ 1021 ]

सं० १९३६ सौभाग्यसूरिजी विजय राज्ये नाहटा मौजीरामजी तत्पुत्र गुलाबचन्दजी श्री आदिजिन कारापितं श्री आणन्द ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1022 ]

सं० १९२० मि० फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंहजी डुगड़ जार्या महताव कुँवर श्री श्रेयांस जिन विंवं कारापितं ।

[ 1023 ]

सं० १९२० मिः फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंह जार्या महताव कुँवर श्री अश्विदत्त २२ जिन विंवं का० ।

चौविगी पर ।

[ 1024 ]

संवत् १९०१ मिनी आपाह सुदि १३ जन्तिं चोग्देयीया सा० मांयल पतिना ॥ प्रतिष्ठितं उ० श्री कर्पूरप्रिय नपिजिः ।

पंचनीशियों पर ।

[ 1025 ]

सं० १९१३ व० ज्येष्ठ वदि ११ उजे० झा० जोरानी गोत्रे सा० महताव ना० ताव प० नेता डुंगर नेतावेन जा० नेतावे स० श्रीसुमतिनाथ विंवं जारि० प्र० श्रीमंतेर गोत्रे श्री ईश्वर सूरिजिः

[ 1026 ]

संवत् १९२६ ज्येष्ठ वदि १५ प्रतापसिंह जार्या महताव ना० गंगादे प० सा० महादेव ना० हांनू उ० गोवर्धनादि सुदुर्लभतुल्येन विंवं जारि० श्री जगन्नाथ विंवं जारि० प्रतिष्ठितं श्री तेजसिंह सूरिजिः ।



पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1030 ]

सं० १५१७ वर्षे पोष वदि ७ रवौ प्राग्वाट झा० सा० रूंगर जा० सुहासिणि पुत्र लपम सिंहेन जा० सोनाई पुत्र नगराजादि कुटुंब युतेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विम्बं कारितं । प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री रत्नशेखर सूरिजिः अहिमदावाद वास्तव्यः ।

[ 1031 ]

सं० १५५७ वर्षे मार्गशिर सुदि ए शुक्रे श्री नासा वादगच्छे उत्त० कावू गोत्रे का० सोंगा जा० सोंगलदे पु० धूलाकेन चार्या पूजी सहितेन पूर्वज पूष्यार्थं श्री शीतलनाथ विम्बं का० श्री महेन्द्र सूरिजिः ॥

पञ्चतीर्थीं और मूर्त्तियों पर । ७

[ 1032 ] ×

१ सं० ७७ ने० पद्मा विनिगो वाज० लृगापनि कारितं ।

[ 1033 ]

ॐ ॥ संवत् ११७६ माघ सुदि ११ शुभे नदृज मत्नाम्बा श्री ऋषभनाथ विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रावदेव सूरिजिः ॥

[ 1034 ]

संवत् ११५७ जेष्ठ सुदि १० रवौ । श्रे० चाण्दमीदेन निज कुटुम्ब सहितेन पार्थनाथः कारितः प्रतिष्ठितः श्री देवजठ सूरिजिः ।

[ 1035 ]

सं० ११६१ फागुण सुदि १० रवौ श्रे० प्रवदेव सुत वीगणमदेव श्रेयार्थं जा० प्र० श्री जारदेव सूरिजिः ।

\* वे मूर्त्तियां १० मूर्त्तियां जे वे मूर्त्तियां मूर्त्तियां मूर्त्तियां ३० मूर्त्तियां ३०

१ मूर्त्तियां मूर्त्तियां मूर्त्तियां ३० मूर्त्तियां मूर्त्तियां मूर्त्तियां ३० मूर्त्तियां ३०



( ३० )

[ 1036 ]

१२.....आषाढ सुदि ७ उवएस वाधि सीद्देण पु० गामा माढहाच्यां पितृ श्रेयोर्थं विम्बं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सर्वशुभ सूरिजिः ।

[ 1037 ]

सं० १३३३ ज्येष्ठ सुदि १.....श्री पार्श्वनाथ विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उद्योतन  
सूरिजिः ॥

[ 1038 ]

सं० १३३५ वर्षे फागुण सुदि ४ शुके । श्रे० धामदेव पुत्र रणदेव धारण जा० आससदे  
श्रे० राम श्री पार्श्वनाथ विम्बं कारितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[ 1039 ]

सं० १३३७ वर्षे वैशाख शु० ६ षण्मेरक गळे श्री यशोज्ञ सूरि सन्ताने सा० सद्गणेश  
जा० जगदह पु० राम श्री आस सिंह जा० मीढहा.....काया विम्बं कारितं प्र० श्री झाल  
सूरिजिः ।

[ 1040 ]

सं० १३३९ वैशाख वदि ९ शुके कठु जदा चार्या ललतू श्रेयसे कर्मणेन श्री आदिनाथ  
विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं .... ।

[ 1041 ]

संवत् १३५२ वर्षे फागुण सुदि १० बुधे श्री चैत्र गष्ठिय धर्कट वंशे नाहर गोत्रे सा०  
हापु सुत सा० विजयसीद्देन जातु धारसीह श्रेयसे ....माग्यकेन श्री वासपूज्य विम्बं कारितं  
प्र० श्री गुणचन्द्र .... ।

[ 1042 ]

सं० १३९४ माघ व० १० गुरौ श्री श्रीमाल झा० श्रे० पुन पाल सुत सोमल पितृ पुन  
पाल श्रे० श्री पार्श्वनाथ विम्बं कारितं श्री रामं (?) प्रायागळे प्रतिष्ठितं श्री शीलजज्ञ  
सूरिजिः ॥

( ११ )

[ 1043 ]

सं० १३७५ वर्षे फागुण सुदि.....श्री पार्श्वनाथ विम्बं कारिता प्रतिष्ठितं श्री कक्क  
सूरिनिः ॥

[ 1044 ]

सं० १३७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ बुधे श्री माल ज्ञातीय पितामह श्रे० वीढ्ढण पितृ श्रे०  
सोमा पितृव्य साजण जातृ माहा.....श्रेयोर्थं सुत राणा धरणिकाच्यां श्री पार्श्वनाथ पञ्च-  
तीर्थी का० ।

[ 1045 ]

संवत् १३७७ वर्षे माघ वदि ११ गुरौ श्री....दाहडु वीरम श्री चन्द्रप्रज विम्बं प्रतिष्ठितं ।

[ 1046 ]

सं० १३७१ मङ्गारुमीय गढे श्रे० पादा जा० जाइल पु० कर्म सीहेन पित्रो श्रेयोर्थं श्री  
महावीरं श्री रत्नाकर सूरि पढे श्री सोमतिलक सूरिनिः ॥

[ 1047 ]

संवत् १३७७ वै० सुदि १ प्राग्वाङ्ग श्री अठाङ्ग जार्या वाढहु....विम्बं प्र० श्री भावदेव  
सूरि ।

[ 1048 ]

सं० १४०५ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ पेता मानृ जगतल देवि  
तयो श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्र गढे श्री रतनागर सूरिनिः ॥

[ 1049 ]

सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ए रवौ सा०....कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विम्बं काग्निं  
प्रतिष्ठितं जीरापल्लीवैः श्री रामचन्द्र सूरिनिः ॥

[ 1050 ]

सं० १४०७ वैशाख वदि ४ रवौ श्री माल ज्ञातीय पितामह उदयनीड पितृ लपणनीड  
श्रेयसे सुत पोपाकेन श्री आदिनाथ विम्बं काग्निं प्रतिष्ठितं श्री गुणसागर नृनि शिष्य  
श्री गुणप्रज सूरिनिः ।

[ 1051 ]

सं० १४०९ वर्षे फागुण सुदि २ बुधे हुंवड़ ज्ञातीय ज्ञातृ पातल श्रेयसे ठ० वीरसेन  
श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री सर्वानन्द सूरि सहितैः श्री सर्वदेव सूरिभिः ॥

[ 1052 ]

सं० १४११ वर्षे माघ वदि ६ दिने नाहर गोत्रे सा० देवराज ज्ञा० रुपी पु० सा० घोडा  
चार्या नाट्ही.....पौत्रादि सहितै आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं कारितं श्री रुद्रपल्लीय  
ग० ज्ञ० श्री जिनहंस सूरि पदे श्री जिनराज सूरिभिः ॥

[ 1053 ]

सं० १४१२ वर्षे वैशाख सु० ११ बुधे प्राग्वाट ज्ञा० कञ्जोली वास्तव्य श्रेष्ठि तिहुणा ज्ञा०  
वांङ्गि पितृ श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री रत्नप्रज्ञ सूरिभिः ।

[ 1054 ]

सं० १४१३ फागु० सु० ७ सोमे प्रा० व्य० हरपाल चार्या आट्हाण दे पु० विजयपालेन  
पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री शालिजङ्ग सूरिभिः ॥

[ 1055 ]

सं० १४१३ फागुण सु० ९ सोमे श्रीमाल व्य० जोहण ज्ञा० माट्हाण दे सुत आट्हा  
पाट्हाण्यां पितृव्य आसपाल ज्ञातृघ्राण्यां श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिम्बं कारितं श्री अजय  
चन्द्र सुरिणामुपदेशेन ।

[ 1056 ]

सं० १४३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने मंलि दलीय गोत्रे सा० सारङ्ग ज्ञा० सारू पु० सीधरण  
ज्ञा० सुहवदे पुत्र सा० मांज मैस परवतादि युतेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्री  
खरतरगळे श्री जिनजङ्ग सूरि पदे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[ 1057 ]

संवत् १४३७ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे । श्री कारंटगळे श्री नन्नाचार्य सन्ताने उपकेश  
ज्ञा० श्रे० सोमा ज्ञा० सूमलदे पुत्र सोनाकेन पितृ मातृ श्रे० श्री आदिनाथ बिम्बं का० प्र०  
श्री सांवदेव सूरिभिः ।

[ 1058 ]

सं० १४५० वर्षे सप्तमि वदि ६ त्रौ उदकेश झातीय सा० पादण जा० पीसलिरि तयो  
श्रियोर्ध सुत आदहा उदा देवाकेन श्री वासुदेव विन्वं पञ्चती० का० प्र० श्री नागेन्द्रगळे  
श्री रत्नसंघ सूरि पदे श्री देवदुत सूरिजिः । जारा सलजा श्रेयोर्ध ॥ श्री ॥

[ 1059 ]

सं० १४५३ वर्षे वैशाख सुदि २ हुंवरु झा० श्रे० देवडु जा० चामज देवि पुत्र हापाकेन  
हापा जा० ह्यु पु० सु० पानल सुत जीजा हुंवरुगढी श्री सर्वानन्द सूरि प० श्री सिंहदत्त  
सूरिजिः ।

[ 1060 ]

सं० १४५५ त्रिणचट गोत्रे सा० तीपल जा० निहुणश्री पु० मोपाटन आत्मपूर्वजनिमित्तं  
चन्द्रप्रज विन्वं का० प्र० धर्मघोष गळे श्री सर्वानन्द सूरिजिः ।

[ 1061 ]

सं० १४५९ आषाढ सुदि ५ गुंम प्रा० जा० दवडु टाण्डु नार्या गोगडो पुत्र त्रिभुवणा  
केन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ विन्वं वागितं नाशु पु० प० श्री भर्मनिवक्त सूरि उपदे०

[ 1062 ]

सं० १४६० वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ त्रौ उदकेश गोत्रे सा० वैशाख पत्र पाना  
नार्या तीसिणि श्रेयोर्ध श्री वागिनाथ विन्वं वागितं त्रि० उदकेश गळे श्री देवदुत  
सूरिजिः ॥

[ 1063 ]

सं० १४६२ वर्षे आषाढ सुदि २ हुंवरु श्रीनाथ गळे श्री पत्रनदि सुत पुत्र झातीय  
व्य० वैशु जा० तीगदे सु० ह्यु नाथ नाथ वध गळे श्री वागिनाथ विन्वं वागितं त्रि०

[ 1064 ]

ले ॥ सं० १४६३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ हुंवरु गोत्रे सा० वैशाख पत्र पाना  
नाथपिठु श्रेयोर्ध श्री वागिनाथ विन्वं वागितं श्री भर्मघोष गळे श्री देवदुत सूरिजिः ।

( १४ )

[ 1065 ]

सं० १४५४ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे रनघणा गोत्रे हुंवड़ झातीय श्रे० वरजा चा० रूनी  
सु० सुप सूर० ॥ पितृश्रेयोर्थ श्री मुनिसुव्रत स्वामी विम्बं का० श्री सिंहदत्त ( रत्न ? )  
सूरिजिः ॥

[ 1066 ]

संवत् १४५७ वर्षे प्राग्वाट झातीय श्रे० नरदेव चार्या गांगी पुत्र श्रे० जावटेन चा० कदू  
पुत्र .... पितृव्य चांपा श्रेयोर्थ श्री चन्द्रप्रज विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1067 ]

सं० १४७९ प्राग्वाट व्य० कदहा जमी सुत सूरीकेन चा० नीणू चा० चांपा सुत  
सादा पेथा पदमादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थु विंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर  
सूरिजिः ॥

[ 1968 ]

सं० १४७० वर्षे फा० सु० १० बुधे उप० झा० श्रे० कसूर्यर चार्या कुसमीरदे सु० गेहा  
केन पित्रो श्रेय० श्री नमिनाथ विंबं का० प्र० मड्डा० रत्नपुरीय ज० श्री धणचन्द्र सूरि  
प० श्री धर्मचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1069 ]

संवत् १४७१ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ प्राग्वाट झातीय श्रे० काला चार्या कीदहणदे  
सुत सरवणेन पितृमातृ श्रेयसे श्री चन्द्रप्रज स्वामि पंचतीर्थी विंबं कारितं प्रतिष्ठितं मडाहड़  
गढे श्री उदयप्रज सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1070 ]

सं० १४७२ वर्षे वैशाख वदि ५ उपकेश झा० राका गोत्रे सा० चूणा चा० तेजलदे पु०  
कानू रूदहा चा० रयणीदे पु० केदहा हापा शादहा नेजा सोनीकेन कारापितं नि० पुण्यार्थ  
आत्म श्रे० उपकेश गढे कुकदाचार्य सं० प्र० श्रीसिद्ध सूरिजिः ॥

[ 1071 ]

सं० १४७३ वर्षे द्वि वैशाख वदि ५ गुरौ श्री प्राग्वाट झा० व्य० खीमती जा० सारू  
पुत्र व्य० जेसाकेन पुत्र वीकन आसाच्यां सहितेन श्री मुनिसुव्रत स्वामि विंवं श्री अंचल  
गढनायक श्री जयकीर्ति सूरि गुरूणां उपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[ 1072 ]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ उपकेश झातीय सा० कूता जा० कुंवरदे पुत्र  
जमा जा० चावलदे पु० सायर सहिते श्री वासुपूज्य विंवं का० प्र० उपकेश गढ सिद्धाचार्य  
सन्ताने मेदरथ श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1073 ]

सं० १४७४ वर्षे ज्ये० सु० ५ बुधे श्री नागेन्द्र गढे उपकेश झा० सा० सादहा जा० सादहा  
पु० धांगा जा० सामी पितृमानु श्रे० श्री संतवनाथ विंवं का० प्र० पद्मानंद सूरिजिः ॥

[ 1074 ]

सं० १४७५ वर्षे वैशाख सु० ६ गुरौ प्र० धरगा जा० पुनादे मुन हीराकेन जा० हीरादे  
पुत्र श्री सुमतिनाथ विंवं श्री सोमकुन्दर सूरि प्र० ॥

[ 1075 ]

सं० १४७५ वर्षे नाथ सुदि ५ बुधे सोमकेन पंताणेना जा० जमा नागा हीरादे पुत्र  
जमाकेन तपरिवारेण स्वपुण्यार्थ श्री सज्जितनाथ विंवं का० प्र० गगन ग० श्री विनयागर  
सूरिजिः ॥

[ 1076 ]

सं० १४७५ वर्षे ज्ये० इ० ११ प्राग्वाट सा० अमती जा० आदरणदे मुन चावाकेन  
जा० चारणदे मुन तोला घाला सुहृत् सा० अंचादि वृत्तेन स्वमुन सोमा श्रेयमे श्री नाग  
नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमकुन्दर सूरिजिः ॥ श्री ०

[ 1077 ]

सं० १४७५ वर्षे सुदि १४ बुधे सांपुडा सोद्रे सा० हीरिका पु० चांसा जा० सायदे  
पु० सायदेन जा० सायदे सुजादे श्री सावित्राय विंवं कारितं प्र० श्री सायदेन ग०  
श्री सप्तोदर सूरि सहे र० श्री विजयवन्ध सूरिजिः



( १९ )

[1085]

सं० १५०९ वै० शु० ३ प्राग्वाट व्य० मेघा चार्था हीरादे पुत्र व्य० आसा कोना चा०  
कैलू आल्हा पुत्र शिखरादि कुटुम्ब युतान्यां स्वश्रेयोर्धं श्री युगादि वि० का० प्र० तपा  
श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥

[1086]

सं० १५१० वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे गिरिपुर वास्तव्य हुंवड ज्ञाति डेफिकठ गोयद (?)  
जा० वारू सु० जाला चा० हीसू सु० आसाकेन चा० रूपी युतेन स्व० श्री सुविधिनाथ  
वि० का० श्री वृ० तपापद्मे श्री रत्नसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1087]

सं० १५११ वर्षे माह वदि ६ गूर दिने जप० झा० चलद (?) गोत्रे सा० ठाड़ा चा०  
सहवादे सा० जाड़ा चा० जसमादे सहितया स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विं० का० प्र०  
श्री ज० रामसेनीया अटकरा० श्री मलयचन्द्र सूरिजिः ॥

[1088]

॥ सं० १५१२ व० वै० सु० ६ गुरौ जकेश वं० ताल गो० सा० महिराज पु० सा०  
काल्हा चा० कजसिरि सु० धना चा० धरण श्री पु० बोपा यु० श्री शितलनाथ विं० का०  
प्र० धर्मधोष ग० श्री साधुरत्न सूरिजिः ॥

[1089]

॥ सं० १५१३ पौष शुदि ९ जकेश वंशे विमल गोत्रे सं० नरसिंहगंज सा० जाऊणेन  
श्री कुंथु विं० का० प्र० ब्रह्मणी उदयप्रत्त सूरि तपा नट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पटे हेम  
हंस सूरिजिः ॥

[1090]

॥ सं० १५१५ वर्षे जे० सुदि ५ उपकेश झा० जोजा जरा सा० बीदा चा० वारू पुत्र  
गांगा हुदाकेन पूर्वज निमित्तं श्री कुंथनाथ विं० का० प्र० श्री चैत्रगळे ज० श्री रामदेव  
सूरिजिः ॥



[ 1078 ]

सं० १४९६ वर्षे फागुण वदि २ शुक्ले दुंबड़ झातीय शु० देगा  
राणाकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री वासुपूज्य विंभं कागितं व्रतिष्टिं नित

[ 1079 ]

सं० १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ गुगे सुगणा गोत्रे सा० रो  
धिणराजेन गुणराज दशरथ सहस्रकिरण सनन्वितेन स्वश्रेयसे श्री  
३० श्री धर्मघोष गच्छे ज० श्री पद्मशेखर सूरि प० ज० श्री विजय

[ 1080 ]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्ले दहदहड़ा ..... श्री  
सेनीया वरफे (?) श्री धर्मचन्द्र सूरि पदे श्री मलयचन्द्र न

[ 1081 ]

सं० १५०५ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे श्री संडेरगछे ज० त  
पु० पैरु पु० बुलाकेन सा० गोगी पुत्र ठाड़ा कुंजा सहितेन  
का० प्र० श्री .....

[ 1082 ]

सं० १५०६ भा० सु० ७ दिने श्री उपकेशज्ञातौ सिरहठ  
पु० सालिगेन पित्रो निमित्तं श्री कुंघुनाथ विंभं का० प्रति०

[ 1083 ]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० जप० चिपड़ गोत्रे सा०  
मातृपितृ पुण्या० आत्म श्रे० श्री शान्तिनाथ विंभं का० उ  
सूरिजिः ।

[ 1084 ]

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ बुधे प्राग्वाट झातीय श्रे०  
मालाकेन लावा जा० गेदू राजू युतेन स्वश्रेयोर्थ श्री वर्द्धमान विंभं  
सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥ कृष्णगिरि वास्तव्य ॥

( १९ )

[ 1097 ]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय सा० नाज जा० हांसी पुत्र सा० ठाकुर्सी सा० वरसिंघ जातृ सा० वीसकेन जा० सोत्री पुत्र सा० जीणा महितेन श्री अंचलगहेश श्री श्री श्री जयकेसरि सूरिणासुपदेशेन श्री नमिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री संघेन मांही ग्रामे ॥ श्री श्री ॥

[ 1098 ]

॥ सं० १५३५ वर्षे मार्ग वदि १२ साषुला गोत्रे साह पाट्टा जा० रहणादे पु० सा० तेजा जा० तेजलदे पु० बलिराज वीसल लोला । माणिकादि युतेन श्री पार्श्वनाथ विंवं का० प्र० श्री धर्मघोषगहे श्री पद्मशेषर सूरि पढे श्री पद्माणंद सूरिजिः ॥

[ 1099 ]

सं० १५३६ वर्षे मार्गसिरि सुदि १० बुधवासरे श्री संकेर गहे ऊ० तेलहरा गो० सा० ध्वना पु० काट्ट पूजा जा० खलतू पु० टोहा हीरा टोडा जा० वरजू पु० .... स्वश्रे० लाला निमित्तं श्री शीतलनाथ विंवं का० श्री जिण जद्र ( ? ) सूरि सं० श्री सासि सूरिजिः ॥

[ 1100 ]

सं० १५४२ वर्षे फा० व० २ दिने जालजर महाडुर्गे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० पोप जा० पोमादे पुत्र सा० जेसाकेन जा० जसमादे जातृ लापादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्र० तप श्री सोमसुन्दर सन्ताने विजयमान श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्रियोस्तु ॥

[ 1101 ]

सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि २ उत्तवाख ज्ञाती कनोज गोत्रे सा० पेढा पु० महममख जा० सुहिलाखदे पु० ठाकुरसि ठकुर युतेन आत्मश्रेयमे माट्टण पितृपुण्यार्थ शीतलनाथ विंवं का० ॥ प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1102 ]

सं० १५६६ वर्षे वै० व० १३ र० पत्तनवासि प्रा० दो० सागिक ना० र्वकृ सुन पानाकेन जा० ईष्ट सु० नाथा सोनगडादि कुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ विंवं कारितं नपागठे श्री हेनविमल सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

( १० )

[ 1103 ]

सं० १५६६ वर्षे फ० व० ६ गुरौ प्रा० सा० तोला जा० रुपमिणि पु० गांगाकेन जा० पीबू पु० लाला लोला लापादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्र० तथा श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री कमलकलस सूरि पट्टे श्री नन्दकल्याण सूरिजिः ॥ श्रीः ॥ श्री चरणसुन्दर सूरिजिः ॥

[ 1104 ]

सं० १५६६ वर्षे ज्ये० शु० २ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय ज्यायपुर वा० सा० हापा जा० दानी पु० सुश्रावक सा० सरवण जा० मना जा० सा० सामन्त जा० कम्म पु० सा० सूरि सा० सीमा षेता प्रमुख समस्त परिवार युतैः निज पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंबं कारितं प्र० श्रीमत्तपा गढे श्री पूज्य श्री आनन्दविमल सूरि पट्टे सम्प्रति विजयमान राजा श्री विजयदान सूरिजिः ॥

[ 1105 ]

सं० १६६७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ लोढा गोत्रे प । साता हर्षमदे सु० कण्ठराकेन सुत वार दास प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री नमिनाथ विंबं कारितं प्र० तथागढे श्री विजयसेन सूरीणां निदेशात् उ० श्री सायविजय ( ? ) गणिजिः ॥

[ 1106 ]

संवत् १६७६ वैशाख सुदि ७ उदयपुर वास्तव्य उलवाळ ज्ञातीय वरनिया गोत्रे सा० पीथाकेन पुत्र पोषादि सहितेन विमलनाथ विंबं का० प्र० त० चट्टारक श्री विजयदेव सूरिजिः । स्वाचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

[ 1107 ]

सं० १६७० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे उकेस वंशे मांगरेचा गोत्रे सा० गोविन्द ज्ञार्या गारवदे पुत्र सा० समरथ श्री खरतरगढे श्री जिनकीर्त्ति सूरि श्री जिनसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

( ११ )

[ 1108 ]

संवत् १६९४ वर्षे वैशाख ..... श्री अनन्तनाथ विंबं का० प्र० च तपगुहाधिराज  
नट्टारक श्री विजयदेव सूरिजिः ॥ स्वोपाध्याय श्री लावण्यविजय गणि का० न० .....

[ 1109 ]

सं० १९७३ सा० तेजसी कारिता श्री विमलनाथ विंबं ..... ।

[ 1110 ]

संवत् ..... जीवा पु० सीद्दु चार्या श्रीया देवि पु० राजापाल प्रजापाल श्री श्री आदि-  
नाथ विंबं का० प्र० .... ० श्री वर्द्धमान सूरिजिः ॥

[ 1111 ]\*

॥ सं० १४९३ श्री ज्ञानकीय गठे । सा० बाहूड जा० प्रमी पु० पाट्टा लोलाच्यां  
अद्धप्रा ( ? ) कारिता ॥

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर ।

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1112 ]

संवत् १५०६ व० ऊकेश सा० बहुराज सु० सा० हीरा जा० हेमादे हरसदे पु० सा०  
जगा जा० फडु .... श्रेयसे श्री शीतल विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तथा श्री रत्नशेखर सूरिजिः  
श्री देवकुलपाटक नगरे ।

[ 1113 ]

सं० १९४२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ गुरुवार सुराणा गोत्रे सा० चेतन पु० नारायण .... सु०  
सीला .... गोकुलदास .... श्री चन्द्रप्रज विंबं कारितं ।

\* यह मूर्ति देवी की है और पारन घोंडा है ।

श्री गौड़ीपार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

धातुकी मूर्तियों पर ।

[ 1114 ]

सं० १७०५ माघ सु० १३ सोमे राणा श्री .....

[ 1115 ]

सं० १८०१ ज्ये० सु० ए उदेपुर महागणा श्री जगतसिंहजी बापणा गोत्र साह श्री .... ।

[ 1116 ]

सं० १८०८ वर्षे शाके १६७३ .... जेठ सु० ए बुधे तपा श्री विजयदेव सूरि श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य पोरवाड़ जण्फारी जीवनदास चार्या मटकू श्री पार्श्व विंवं कारापितं ।

धातु की चौबीशी पर ।

[ 1117 ]

ॐ ॥ सं० १५२२ वर्षे पो० व० १ गुरौ कर्केंग वासि उकेश व्य० जेसा जा० जसमादे सुत व्य० वस्ता चार्या वीऊलदे नाम्न्या पुत्र व्य० जीम गोपाल हूरदास पौत्र कर्मसी नरसिंग थावर रूपा प्रमुख कुटुम्बयुतया निजश्रेयसे श्री शान्ति विंवं का० प्र० तपागह श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिजिः । श्रेयः ॥

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1118 ]

ॐ सं० १५११ वर्षे वैशाख वदि ५ शनौ श्री मोढ़ झातीय सं० जीमा चार्या मञ्जु सुत सं० गोरकनेन सुत जोला महिराज युतेन स्वपितुः श्रेयार्थ श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं विद्याधरगण्ठे श्री विजयप्रत्न सूरिजिः ॥

[ 1119 ]

सं० १५४७ वर्षे पोष वदि १० बुधे ज० झातीय सा० कोला चार्या पीमाई पु० दीना

जा० खाडिकि नाम्न्या देवर सा० हेमा जा० फट्ट पु० धरणादि युतया स्वश्रेयसे श्री शान्ति  
नाथ विंवं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयचन्द्र सूरि शिष्याण आ० श्री जयरत्न सूरि उपदेशेन  
वकली ग्रामे ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1120 ]

सं० १५३४ श्री मूलसंवे ज० श्री भूवनकीर्ति श्री ज० श्री ज्ञानरूपण हूं० दो० सापा  
जा० अमरा जातृ दो० हीरा जा० अरघू सु० जूठा जगिणि सु० माणिक ..... ।

जण्कार की धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1121 ]

सं० १३३७ वर्षे चैत्र वदि ७ शुके महं० हीग ध्रया महं० सुत देवसिंहेन श्री पार्श्वनाथ  
विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1122 ]

सं० १३३१ ज्येष्ठ सु० ए दुधे ध्र० आरुपाइ सुत अजयसिंह राजार्या श्री करुणदेवि  
तयोः सुत कान्हड़ पूनाच्यां पितृव्य लूणा श्रेयसे श्री शान्तिनाथ कारितः । प्र० श्री यमो  
जद्र सूरि शिष्यः श्री विबुधप्रज सूरिजिः ॥

[ 1123 ]

सं० १४३७ वर्षे द्वि ( ? ) वैशाख व० ११ सोमे आश० व्य० नग जा० मेघी पु० नीग  
सिंहेन पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ विंवं वा० प्र० ब्रह्माणीद श्री रत्नाकर सूरि पदे श्री  
हेमतिजक सूरिजिः ।

[ 1124 ]

सं० १४४९ वर्षे वैशाख वदि ३ सोमे श्री श्रीनाथ जा० पितृ पीगा नातृ वेतवरे  
धेयोर्य सुत राजावेन श्री संजवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री राजेन्द्र गढे श्री बुद्धदेव  
सूरिजिः ।

सं० १४७७ ज्येष्ठ व० १ प्राग्वाट उ० उडलसीकेन पित्रो उ० पूनसीह जा० पूमषदे  
श्री चन्द्रप्रत्न विंवं का० प्र० मलधारि श्री मुनिशेखर सूरिजिः ।

[ 1126 ]

सं० १५०१ माघ वदि ५ गुरौ प्राग्वाट व्य० धणसी जा० प्रीमलदे सुत व्य० लाष  
जा० लाषणदे सुत व्य० पीमाकेन निज श्रेयसे श्री सुमति विंवं कारि० प्र० तपा श्री मुनि  
सुन्दर सूरिजिः ।

[ 1127 ]

सं० १५१६ वर्षे वै० व० १२ शुक्रे उकेश झाती व्य० नारद जा० घरघति पुत्र बाघाकेन  
जा० वडहादे त्रा० पहिराजादि कुटुम्ब युनेन स्वपितु श्रेयोर्थ श्री विमलनाथ विंवं का० प्र०  
श्री सूरिजिः ॥ महिसाणो वास्तव्य ॥

[ 1128 ]

सं० १५२० वर्षे वैशाख सु० ३ सोमे उपकेश झा० मह० कालू जा० आघू पुत्र ३ जावड़  
रतना करमसी स्वमातृनिमित्तं श्री चन्द्र प्रत्न स्वामि विंवं करापितं उपकेश गछे श्री कक्क  
सूरिजिः सत्यपुर वास्तव्यः ॥

[ 1129 ]

सं० १५२४ वर्षे ज्ये० सु० ए श्री श्री वंशे स० समधर जार्या जीविणि सुता वाडही  
पि० हेमा युतया पितृ मातृ श्रेयसे श्री अंचल गछ श्री जयकेशरी सूरिणामुपदेशेन श्री  
सुविधिनाथ विंवं का० प्र० श्री संघेन ।

[ 1130 ]

सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने प्राग्वाट झातीय श्रे० साजण जा० माडहू पुत्र  
डगड़ा देवराज जा० देवलदे स्वपुण्यार्थ श्री श्री विमलनाथ विंवं का० प्र० मडाहड़ गछ  
रत्नपुरीय ज० गुणचन्द्र सूरिजिः । उ० आणंदनंद सूरि तेन उपरिकेन ।

संवत् १५६९ वर्षे आषाढ शुद्धि १ मेडतवाल गोत्र सा० इला जा० मीढहा पुत्र ताढहा  
चार्या तिलसिरि खपितृश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गछे  
श्री लक्ष्मीसागर सुरिनिः ।

सं० १६५१ माह सुद्धि १० श्री मूलसंघे ज० श्री प्रजचन्द्र देवा तत्पट्टे ज० श्री चन्द्र  
कीर्ति नदाम्नाये चंद्रवाङ्ग गोत्रे सं० चाहा पुत्र नेजपाट पुत्र कैसे । सुरताण श्रीवंत नित्य  
प्रणमंति मातपुर वास्तव्य ॥

—

### जयपुर ।

श्री सुपार्श्वनाथजी वा पद्मावती गण मन्दिर ।

संवत् १६३२ वर्षे ११ माह ११ तिथि ।

सं० १६३२ वर्षे ११ माह ११ तिथि । सुरताण मन्दिरे श्री सुपार्श्वनाथजी वा पद्मावती गण मन्दिर  
विंशं कारितं प्रतिष्ठितं सुरिनिः ।

सं० १६३२ वर्षे ११ माह ११ तिथि । सुरताण मन्दिरे श्री सुपार्श्वनाथजी वा पद्मावती गण मन्दिर  
विंशं कारितं प्रतिष्ठितं सुरिनिः ।

सं० १६३२ वर्षे ११ माह ११ तिथि । सुरताण मन्दिरे श्री सुपार्श्वनाथजी वा पद्मावती गण मन्दिर  
विंशं कारितं प्रतिष्ठितं सुरिनिः ।



आचार्य श्री तिहुणकीर्ति गुरूपदेशेन हुंवड़ झातीय व्य० बाहड़ जार्या छाठी सु० व्य०  
षीमा जार्या राजूल देवि श्रेयोर्थ सु० का० देवा जार्या राजूल देवि नित्यं प्रणमन्ति ।

[ 1136 ]

सं० १४३७ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे प्राग्वाट झातीय श्रेष्ठि गोहा जार्या लखतादि  
सुत मूजाकेन । पितृत्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्री रत्नप्रज सूरिणामुपदेशेन ।

[ 1137 ]

सं० १४३९ वर्षे पौष वदि ए सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्री मा० पितृ माषसी जा०  
मोषलदे प्र० सुत सोमलेन श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर  
सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[ 1138 ]

सं० १४६५ वर्षे ..... आत्मार्थ श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ..... ।

[ 1139 ]

सं० १४६९ वर्षे ऊकेशवंशे नवलषा गोत्रे सा० साधर आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ  
विंबं कारितं प्रति० खरतर ग० । जिनचन्द्रेण ..... स्तव्य ।

[ 1140 ]

संवत् १४७९ वर्षे पोस सुदि १२ शुके श्री हुंवड़ झातीय द्यावेना गलनयोः पुत्रेण द्या०  
हापाकेन स्वत्रातृ द्यावड़ा मुलासी श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री  
बृहत्तपागच्छे श्री रत्नसिंह सूरिजिः ॥ शुभं चवतु ॥ श्री ॥ ४ ॥

[ 1141 ]

सं० १४९४ माह सु० ११ गुरौ श्री ..... १० संवदि गौष्ठिक सा० सुरतर्ण  
पु० धर्मा जा० ध ..... पु० वास ..... पा नाट्टहा स० पित्रोः श्रेयसे श्री  
श्रेयंस तु० का ..... न्ति

[ 1142 ]

सं० १५०१ वर्षे माह सुदि १० सोमे श्री संकैरगढे उपकेश झा० साह काबू चार्या  
वाड्ही पुत्र कान्हा चार्या सारू पितृमातृश्रेयोर्थ श्री नमिनाथ विंवं कारापितं प्रति० प०  
श्री सांति सूरिजिः ।

[ 1143 ]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे श्री ज्ञानकापगढे उपकेश० लोखस गोत्रे साह कान्हा  
चार्या कर्म सिरि पुत्र आद चार्या जाकु पुत्र धाना रामा काना चार्या अरपू आत्म श्रेयसे  
श्री आदिनाथ विंवं कारा० प्रति० श्री शान्ति सूरिजिः ।

[ 1144 ]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे पिरुत गोत्रे सा० माण्डा पु० अरजुण चार्या साह  
पुत्र कान्हाकेन जा० झूदी .... पु० दफ्दया श्री पद्मप्रजः का० प्र० श्री धर्मवोपगठे श्री  
महीतिलक सूरिजिः आ० विजयप्रज सूरि सहितैः ॥

[ 1145 ]

संवत् १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ शनौ ज० झा० जाजा उटाणा सा० कर्मा जा०  
सागू पु० पेना जस्तापेण जा० राणी पु० पंचायण जयना जा० मून्ती पित्रोः श्रे० श्री शान्ति-  
नाथ विंवं का० श्री चैत्रगढे प्र० श्री मुनितिलक नूरिजिः ।

[ 1146 ]

सं० १५०१ वै० व० ५ प्रा० व्य० लापा लापागढे पु० नामन्तेन मिगागढे पु० पादडा  
रतना कीशदि युनेन श्री कुंछु विंवं दा० प्र० नरा रत्नदेवर नूरिजिः ।

[ 1147 ]

सं० १५०४ फागुण सुदि ११ जूगटिया श्रीमाड सा० नाशण पुत्रेण सा० समुंमः  
श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा जागिता प्रतिष्ठितं श्री नरान्हागन श्री पृ चन्द्र नूरि पदे श्री सुमंम  
सूरिजिः ॥

आचार्य श्री तिहुणकीर्ति गुरूपदेशेन हुंवड़ ज्ञातीय व्य० वाहड़ चार्या दाही सु० व्य०  
षीमा चार्या राजूळ देवि श्रेयर्थ सु० का० देवा चार्या राजूळ देवि नित्यं प्रणमन्ति ।

[ 1136 ]

सं० १४३७ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि गोहा चार्या लखतादि  
सुत मूजाकेन । पितृत्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्री रत्नप्रज सूरीणामुपदेशेन ।

[ 1137 ]

सं० १४३९ वर्षे पौष वदि ए सोमे श्री ब्रह्माण गढे श्री श्री मा० पितृ माषसी चा०  
मोषलदे प्र० सुत सोमलेन श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर  
सूरिनिः ॥ श्रीः ॥

[ 1138 ]

सं० १४६५ वर्षे ..... आत्मार्थ श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ..... ।

[ 1139 ]

सं० १४६९ वर्षे जकेशवंशे नवलषा गोत्रे सा० साधर आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ  
विंबं कारितं प्रति० खरतर ग० । जिनचन्द्रेण ..... स्तव्य ।

[ 1140 ]

संवत् १४८९ वर्षे पोस सुदि १२ शुके श्री हुंवड़ ज्ञातीय द्यावेका गदनयोः पुत्रेण द्या०  
हापाकेन स्वत्रातृ द्यावडा मुलासी श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री  
वृहत्पागढे श्री रत्नसिंह सूरिनिः ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥ ॥ ॥

[ 1141 ]

सं० १४९४ माह सु० ११ गुरौ श्री संकरगढे ऊ० आ० संवाकि गौष्ठिक सा० सुरतणं  
पु० धर्मा चा० धर्मसिरि पु० वासलेन चा० कानू पु० नापा नावहा स० पित्रोः श्रेयसे श्री  
श्रेयंस तु० का० प्र० श्री शान्ति सूरिनिः शुभं ।

[ 1142 ]

सं० १५०१ वर्षे माह सुदि १० सोमे श्री संकेरगढे उपकेश झा० साह काबू चार्या  
वांढही पुत्र कान्हा चार्या सारू पितृमातृश्रेयोर्थ श्री नमिनाथ विंवं कारापितं प्रति० प०  
श्री सांति सूरिजिः ।

[ 1143 ]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे श्री ज्ञानकापगढे उपकेश० लोखस गोत्रे साह कान्हा  
चार्या कर्म सिरि पुत्र आल चार्या जाकु पुत्र धाना रामा काना चार्या अरपू आत्म श्रेयसे  
श्री आदिनाथ विंवं कारा० प्रति० श्री शान्ति सूरिजिः ।

[ 1144 ]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे पिरुत गोत्रे सा० माण्डा पु० अग्रजुण चार्या साह  
पुत्र कान्हाकेन जा० छूंदी .... पु० दफ्दया श्री पद्मप्रजः का० प्र० श्री धर्मघोषगढे श्री  
महीतिलक सूरिजिः आ० विजयप्रज सूरि सहितैः ॥

[ 1145 ]

संवत् १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ शनौ ज० झा० जाजा उटाणा सा० कर्मा जा०  
सागू पु० पेना जस्तापेण जा० राणी पु० पंचायण जयना जा० मूंतो पित्रोः श्रे० श्री शान्ति-  
नाथ विंवं का० श्री चैत्रगढे प्र० श्री मुनितिलक सूरिजिः ।

[ 1146 ]

सं० १५०१ वै० व० ५ प्रा० व्य० लापा लापणदे पु० नामन्तेन सिंगारदे पु० पाट्टा  
रतना कीदादि युनेन श्री कुंभु विंवं का० प्र० तथा रत्नशेखर सूरिजिः ।

[ 1147 ]

सं० १५०४ फागुण सुदि ११ कुंगटिया श्रीमात्र ना० नाशरग पुत्रेण ना० मधुशेखर  
श्री पार्श्वनाथ प्रतिना हागिता प्रतिष्ठितं श्री नरानदायक श्री पूर्वाचन्द्र सूरि पदे श्री हेमचंद्र  
सूरिजिः ॥

( १७ )

[ 1148 ]

सं० १५०५ आषाढ सुदि ए श्री उप० सुचिंतित गोत्रे सा० सीढा चा० जावटही पु०  
सा० सोलाकेन पुत्र पौत्र युतेन आत्म पु० श्री वन्द्यप्रत्त विंबं का० प्र० श्री उपकेशगढे  
श्री कक्क सूरिजिः ।

[ 1149 ]

सं० १५०६ फा० व० ए श्री उ० ग० श्री ककुदाचा० ..... गो० सा० समधर सु०  
श्रीपाल चा० परवाई पु० मुद श्री जव ससदा रंगाच्यां पितु श्रे० श्री सम्भवनाथ विंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[ 1150 ]

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि ३ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय जठम गोत्रे संदणसीई  
चार्या दादाह वीसल चाती महिपाल पु० मगराज साधी आत्मपुण्यार्थ श्री विमलनाथ  
विंबं का० प्र० श्री वृहज्ज्जे श्री सागर सूरिजिः ।

[ 1151 ]

सं० १५०७ वर्षे चैत्र वदि ५ शनौ लोढा गोत्रे । श्रे० गुणा चार्या गुणश्री पुत्र श्रे०  
पूजा कचरौच्यां पितृव्य धन्ना पुण्यार्थ श्री धर्मनाथ विंबं का० प्र० खरतर श्री जिनज्ज  
सूरि श्री जिनसागर सूरि ।

[ 1152 ]

सं० १५१० वर्षे चैत्र वदि ४ निथौ शनौ हिंगड गोत्रे गौरन्द पुत्रेण सा० सिंधकेन निज  
श्रेयो निमित्तं श्री सुत्रिधिनाथ विंबं कारितं प्रति० तपा० ज० श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[ 1153 ]

सं० १५१२ माघ सुदि ७ बुधे श्री ओसवाल ज्ञाती आदित्यनाग गोत्रे सा० सिंधा पु०  
ज्येढ्हा चा० देवाही पु० दशरथेन त्रातृपितृश्रेयसे श्री अनन्तनाथ विंबं कारितं श्री उपकेश  
गढे श्री कुकदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ॥

( १९ )

[ 1154 ]

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे ओसवाल ज्ञातीय वृषश गोत्रे सा० धीना  
जा० फार्ई पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थ श्री धर्मनाथ वि० का०  
प्र० श्री मलधार गढे .... सूरिजिः ।

[ 1155 ]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे श्री श्री सा० श्रे० जइता जा० लाडू तयो० पु०  
साधव निमित्तं लाडू आत्मश्रेयोऽर्थ श्री शान्तिनाथ विंवं का० पिप्पल ग० ज० श्री विजयदेव  
सू० सु० प्र० श्री शालिजड सूरिजिः ।

[ 1156 ]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि ४ बुधे जालह राजा० मंचूणा जा० देऊ सुत पितृ पांचा  
मातृ तेजू श्रेयसे सुत गोयंदेन श्री नमिनाथ विंवं कारितं पूनिम गढे श्री साधुसुन्दर सूरि  
उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[ 1157 ]

। सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने मंत्रिदलीय ज्ञातीय मुंरुगोत्रे सा० रतनसी  
चार्या वाकुं पुत्र सा० देवराज चार्या रामाति पुत्र सा० मेघराज युतेन खपुण्यार्थ श्री  
विमलनाथ विंवं कारितं प्र० श्री खरतरगढ श्री जिनहर्ष सूरिजिः ॥

[ 1158 ]

सं० १५२७ वर्षे विदि १ सोम दिन श्रीमाल वंशे जूनीवाल गोत्रे सा० दाना पुत्र  
सा० पिडराजकेन समस्तं परिवारेण आत्मश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ विंवं का० श्री परतर  
गढे श्री जिनप्रज सूरि अजिप्रतिष्ठितं श्री जिननिष्क सूरिजिः । शुभं भवतु ॥ ४ ॥

[ 1159 ]

सं० १५२९ वर्षे व्यासाट सु० २ रवौ श्री ओसवाल ज्ञा० चांपाचाड गढे पांमलेचा  
गोत्रे सा० साहूज चार्या मेघादे पु० जापर चार्या जावडदे पु० मोदगा दगता युतेन मातृ  
मेघू निमित्तं श्री पद्मप्रज विंवं कारितं प्र० ज० श्री वजेश्वर सूरिजिः ।

( ३० )

[ 1160 ]

सं० १५३० वर्षे माघ वंदि २ शु० पावणपुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरसिंह  
जा० नामलदे पु० कांहा जा० सांवल पु० षीमा प्रभू माषी जा० सीचू श्रेयोर्थ श्री नमिनाथ  
बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागळे ज० श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 1161 ]

सं० १५३० वर्षे मा० व० १० बुधे प्राग्वाट सा० सिवा जा० संपूरी पुत्र सा० पाट्टा  
जा० पाट्टणदे सुत सा० नाथाकेन त्रा० ठाकुरसी युतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिम्बं  
का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः धार नगरे ।

[ 1162 ]

सं० १५३३ वर्षे वै० सुदि ६ दिने श्रीमाल वंशे स० जईता पु० स० मारुण जा० लीलादे  
पु० षीमा जातइ युतेन श्री सुपार्श्व बिंबं का० प्र० श्री खरतर गळे श्री जिनचन्द्र सूरि  
पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1163 ]

सं० १५३४ वर्षे कार्तिक शुदि १३ रवौ श्री श्रीमाल झा० गोत्रजा अम्बिका श्रेष्ठि चांद्रसाव  
जा० जमकु सुत वानर जा० ताकू सुत जागा जा० नाथी सहितेन स्वपूर्वजश्रेयसे श्री  
शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगळे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 1164 ]

सं० १५३४ फा० शु० २ वासावासि प्राग्वाट व्य० आट्टा जा० देसू पुत्र परवतेन जा०  
जरमी प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागळे  
श्री रत्नशेपर पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 1165 ]

॥ सं० १५३५ फा० व० ७ बुधे ज० पांटाइ गो० म० पूना जा० अचू पु० राणाकेन जा०  
रयणादे पु० हरपति गुणवेति तेज । हरपति जा० हमीरदे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन स्वश्रेयसे

श्री सुमति विंवं का० प्रतिष्ठितं जावरुहरा गढे श्री जावदेव सूरिजिः ॥ खिरहादू  
वास्तव्येन ॥

[ 1166 ]

संवत् १५४५ वर्षे माघ शु० १३ बु० लघुशाखा श्रीमाली वंशे मं० घोषल जा० अकार्ई  
सुत मं० जीवा जा० रमाई पु० सहसकिरणेन जा० ललनादे वृद्ध जा० इसर काका सूरदास  
सहितेन मातु श्रेयसे श्री अंचलगढेश श्री सिद्धान्तसागर सूरीणामुपदेशेन श्री आदिनाथ  
विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री स्तम्भतीर्थे ।

[ 1167 ]

सं० १५४६ वर्षे वैशाख सुदि ५ रवौ उपकेशज अचोवंल० दढागोत्रे सा० साज जा०  
तेजसर पु० कुं० कोन्हा सहिसा सीधरा अरष युतेन स्वपुण्यार्थ श्री नमिनाथ विं० का०  
प्र० श्री मलयचन्द्र सूरि पढे श्री मणिचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1168 ]

संवत् १५५७ वर्षे शाके १४२२ वैशाख सुदि ५ गुरौ चण्णाल्या गोत्रे सा० तेजा जा० रूपी  
पु० अचला जा० देमी आत्मश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंवं कारापितं श्री मलयधार गढपति  
श्री गुणवपान सूरिजिः ।

[ 1169 ]

सं० १५६२ व० माघ सु० १५ गु० उ० वै० गोत्र० सा० जेसा जा० जिसमादे पुत्र  
राणा जा० पूणदे पु० अरुवाल तेजा आ० श्रे० श्रेयांस विं० कारि० चोकड़ी० श्री मलयचन्द्र  
पढे मुणिचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1170 ]

संवत् १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे विश्वलनगरे प्राग्वाट ज्ञानीय श्रे० जीवा नार्या  
रंगी पुत्र रत्न श्रे० नाहीआ ज्रातृ श्रीवन्त । केन चार्या श्री रत्नादे द्वि० दानिमदे मुन  
पीमा जामादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नपागठ  
जहारक श्री हेमविमल सूरिजिः ॥ कड्याणमस्तु ॥



( ३१ )

[ 1171 ]

संवत् १५७१ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० सा० धरमा जा० काउ सु० सोता मांडण  
सु० रूपा सोता जा० सुहडादे सु० नरसिंघ आढहा नापा माला मारुण चार्या माणिकदे पु०  
गांगा सोका पदम रूपा चार्या हासू सु० सेटा नोमा सुकुटुम्बेन रूपा नापा निमित्तं श्री  
शान्तिनाथ विं० का० प्र० श्री दैवरत्न सूरिजिः ॥

[ 1172 ]

सं० १५७७ वर्षे पोस वदि ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय प० काका जा० वाक सुत प०  
पहिराज जा० वरवागं आत्मश्रेयार्थं श्री चन्द्रप्रज्ञ स्वामी विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः  
श्रीरस्तुः ॥

[ 1173 ]

सं० १६७७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १ दिने सुजाउलपुर वास्तव्य श्री० तिलका श्री सुविधिनाथ  
विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदेव सूरिजिः ।

धातु की चौबीशी पर ।

[ 1174 ]

सं० १५०९ वर्षे आषाढ सुदि २ सोमे उसिवाल ज्ञातीय सूरणा गोत्रे सा० लषणा  
जा० सषण श्री पु० सा० सकर्मण सा० सिवराजेन श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री राजगछे जट्टारक श्री पद्माणंद सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1175 ]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रणासण वासि श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्मा  
जा० धर्मादे सुत जोजाकेन जा० जली प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ  
चतुर्विंशतिः पट्टः कारितः प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिजिः । श्रीरस्तु ॥

( ३३ )

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1176 ]

संवत् १६०१ वर्षे श्री आदिकरण बोटा वा० रंजा श्री श्रीमाली न्यात श्री धर्मनाथ श्री विजयदान सूरि ।

[ 1177 ]

संवत् १५४४ वर्षे फागुण सुदि १ तिथौ बुधवासरे तपागढाधिराज जहारक श्री विजय प्रज सूरि निदेशात् श्री पार्श्वनाथ त्रिवं प्रतिष्ठितं वा० मुक्तिचन्द्र गणित्तिः कारितः ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1178 ]

सं० १०५२ पौष सुदि ४ बृहस्पतिवासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदम् प्रतिष्ठितं वा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जैनगर वास्तव्य से० वषतमल तत् पुत्र सुपलालेन श्रेयोर्थं । ठ ।

[ 1179 ]

सं० १०५६ माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ ५ गुरौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० श्रीमद् बृहत् खरनरगढे ज० श्री जिनचन्द्र सूरित्तिः जयनगर वास्तव्य श्रीमाझान्वय फोफलिया गोत्रीय अनन्दराम त० पूवचन्द्र तत् पुत्र बहादुरसिंह तपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थं ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ।

पञ्चनीधियों पर ।

[ 1180 ]

सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ नोनवान्ते जाईलवाज पवित्र गांवे संवर्षी श्रीमद् पुत्र सं० जेजा जित जल ... पु० वाइड सहितेन आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ त्रिवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषगढे श्री मदीनिलक सूरित्तिः ॥

[ 1181 ]

सं० १४९१ आषाढ वदि ९ श्री श्रीमाधवंशे वडली वास्तव्य सं० सांभा जा० कामधे  
पुत्र सं० मना जा० रशदे पुत्राच्यां सं० समधर सं० साखिज अच्यो जा० राजू साधू सुत  
मिघा माणिक रत्ना प्रमुख कुकुम्ब सहिताच्यां श्री सुपार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री  
तपागच्छाधिराजैः श्री सोमसुन्दर सूरिजिः शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

[ 1182 ]

सं० १४९३ वैशाख सुदि ५ उप झा० आदित्यनाग गोत्रे । सा० पदमा पु० षेढा जा०  
पूजी पुत्र पीमाकेन श्री श्रेयांसनाथ विंबं का० श्री उपकेशगळे कुक० प्र० श्री सिद्ध  
सूरिजिः ॥

[ 1183 ]

सं० १५०६ वर्षे माह वदि ए श्री कोरंटकीयगळे श्री नत्राचार्य सन्ताने । ऊ० ती०  
सुचन्ती गोत्रे जा० आचरमुण्या पु० हाता जा० हुती पु० मांरुण जा० माणिक पु० वेतादि  
श्री वासपूज्य विंबं कारापितं प्र० श्री सांबदेव सूरिजिः ।

[ 1184 ]

सं० १५१३ थोसवाख सं० चारमल्ल जावळदे पुत्र रत्नाकेन जा० अपू चा० टीष्टा  
शिवादि कुकुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुन्दर सूरि  
श्री मुनिसुन्दर सूरि श्री जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिजिः ।

[ 1185 ]

सं० १५१९ वर्षे चैत्र शु० १३ पु० प्राग्वाट झा० सा० लपमण जा० साधू पुत्र साधू  
गोवळे जा० राजू युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्व विंबं का० प्र० तपागच्छेश श्री मुनिसुन्दर सूरि  
नत् पटे श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥

[ 1186 ]

सं० १५४९ झा० सु० ११ तौ० श्री मू० त्रिभुवनकीर्ति देवा० तन् पट्टान्व सा० पत्नी ।  
जा० वग्न्हा पु० ना० जनु । ना० चादंगदे पु० बहू जा० नूपा । त्रि० पु० सा० जेवा जा०  
दानमिदि व० पु० अजिन्तू जा० नैना कके ( ? ) विजसी .... ।

( ३५ )

[ 1188 ]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री ब्रह्माण गढे श्री श्रीमात्र ज्ञातीय श्रेष्ठि  
मंईआ ज्ञार्या माणिक सुत सामन्न ज्ञार्या सारू सु० धर्मण धाराकेन स्वपित्र पूर्वज श्रेयोर्थ  
श्री धर्मनाथ त्रिंशं कारापितं प्र० श्री विमल सूरि पढे श्री बुद्धिसागर सूरिजिः वण्ड  
वास्तव्यः ॥

[ 1189 ]

ॐ सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे ओसवाल ज्ञातौ तातहड़ गोत्रे सा० आढ  
जा० गोपाही पु० सुखलित । जः० सांगर दे स्वकुटुंबयुतेन श्री कुन्थुनाथ त्रिंशं कारितं प्रति  
ष्ठितं ककुदाचार्य सन्ताने उपकेश गढे ज० श्री देवगुप्ति सूरिजिः ।

[ 1190 ]

सं० १५६३ माह सु० १५ गुरु श्री संकेर गढे उत्तवाल पूगखिया गोत्रे स० काता जा०  
रानू पु० नरवद जा० राणी पु० तिहुण करमा कुवाला सइसा प्र० आत्म पु० श्री मुनिपुरा-  
स्वामि त्रिंशं कारापितं प्रति० श्री शान्ति सूरिजिः ॥

[ 1191 ]

सं० १५६९ वर्षे वैशाख सुदि ६ दिने सूरणा गोत्रे सं० चांपा सन्ताने । सं० नरा  
मु० सं० गांडा जा० धणपाखही पु० सं० सहस्रमल्ल ज्ञानू आढा पु० सोमदम युनेन मातृ  
पुण्यार्थ श्री शान्तिनाथ त्रिंशं का० श्री धर्मघोष गढे प्र० ज० श्री नन्दिवर्द्धन मूर्तिजिः ॥

[ 1192 ]

सं० १५७४ वैशाख वदि ५ ओसवंशे बरहनिरा गोत्रे सा० साया पुत्र सा० दर्पा नारा  
हीरा दे पुत्र सा० टोकर श्रावकेण स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ त्रिंशं कारितं प्रतिष्ठितं व प्रव  
गढे श्रावकेण श्रेयोस्तु ॥

( ३६ )

[ 1193 ]

संवत् १५९७ वर्षे पोस वदि ५ सकरे सहूआला वास्तव्य प्राग्वाट वृद्ध शाखार्या दो  
वीरा जा० जाणा जा० जरमा दे तेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन  
साधु सूरिजिः ॥

[ 1194 ]

सं० १६१२ वर्षे फागुण शुदि २ तिथौ श्री ओसवाल वंशे सा० आढत जा० रेणमा  
सणी सा० चतुह धर्मते कारापितं श्री बहितेरा गळे ज० श्री जावसागर सूरि त० श्री धर्म-  
मूर्ति सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री अनन्तनाथ ।

[ 1195 ]

॥ संवत् १६२४ वर्षे माहा शुदि ६ सोमे ओसवाल ज्ञातीय दोसी जामा संत दोसी  
पू० । ज । जार्या वाई मेलाई सुत वानरा श्री धर्मनाथ विंवं कारापितं ॥ तपागड श्री ७  
श्री द्वारा विजय सूरि प्रति० सावलदन नगरे ।

[ 1196 ]

सं० १६५३ वर्षे अलाई ४२ संवत् ॥ माघ सुदि १० दिने सोमवारे जकेश वंशे शंख-  
वाल गौत्रीय सा० रायपाल जार्या रूपा दे पुत्र सा० पूना जार्या पूना दे पुत्र सं० पाता सं०  
देहाच्यां पुत्र जिणदास म० चांपा मूला दे मू । सामल सपरिकराच्यां श्री शांतिनाथ विंवं  
कारितं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत् खरतर गद्याधीश्वर श्री अकबरसाहिप्रतिबोधक श्री जिन-  
माणिक्य सूरि पट्टालङ्कार युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1197 ]

सं० १७०३ वर्षे मार्गशिर्षे सित १ दिने मेडता नगरे वास्तव्य शंखबालेचा गोत्रे सा०  
नृंगर पुत्र सा० माईदासकेन श्री मुनिमुत्रत विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागडाधिराज सुवि-  
हित चहारक श्री विजयदेव सूरि पट्टे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥ कृष्णगढ नगरे  
मुदपत नयचन्द्र(?) प्रतिष्ठाया ॥

( ३७ )

धातु की चौबीशी पर ।

[ 1198 ]

॥ संवत् १५३३ वर्षे वैशाख वदि २ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मामल जा० कांई सु० पाता जा० वाजं सु० देवाकेन जा० देवलदे प्र० चातृ सामंत जा० लाम्नी सु० समधर जा० अजी सु० मांरुण नोजा राणा छि० चा० ऊदा जा० बाई पु० साईया जा० सहिज्यादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री संजवनाथ चतुर्विंशति पट्टः जीवितस्वामी पूर्णिमापक्षे श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० सुविधिना साकरग्रामे ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1199 ]

सं० १६३३ श्री संजवनाथ विं० पास० ।

[ 1200 ]

सं० १७७४ माघ तिन ३३३ वासा गुलालचन्द श्री सुमति विं० कारितं ।

[ 1201 ]

सं० १८३१ वर्षे मार्गशिर वदि १ शनौ रोहिणी नक्षत्रे ज० श्री विजयधर्म सूरीश्वरराज्ये मुनि श्री कृद्धिविजय गणि प्रतिष्ठितं पं० विद्याविजय गणि श्री वृषभनाथ विं० कारापितं स्वश्रेयसे ।

[ 1202 ]

श्री कृषभदेवजी मीती माग श्री सु० ३ सं० १९०६ ।

[ 1203 ]

श्री हंसराज श्रेयोर्ध श्री अजिनन्दन विं० ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1204 ]

संवत् १८४८ आश्विन शुक्ल १५ दिने तपागढाधिराज श्री विजैजिनेन्द्र सूरिनिः  
प्रतिष्ठितं सिद्धचक्र यंत्रमिदं कारापितं पटणी वाहाडुरसिंहेन स्वश्रेयसे पं० पुन्यविजै  
गणीनामुपदेशात् ॥

[ 1205 ]

संवत् १८५२ पौष सुदि ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं  
जैनगरमध्ये वा० लालचन्द्र गणिना वृहत् खरतरगढे कारितं वीकानेर वास्तव्य जै० मधेन  
श्रेयर्थं ॥ श्री ॥

श्री आदिनाथजी कां ( नया ) मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1206 ]

संवत् १४९६ वर्षे माघ वदि ११ तिथौ श्री मालान्वये ढोर गोत्रे सा० तोड्हा तझार्या  
आ० माणी तत् पुत्र सा० महाराज श्री शान्तिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगढे  
ज० श्री जिनचन्द्र सूरिनिः ॥ शुभं भवतु ॥

[ 1207 ]

सं० १४९९ फागुण वदि २ गुरौ श्री उपकेश झाती श्री धरकट गोत्रे सा० हरिराज  
प्रसिद्धनाम सा० बगुला पुत्रेण सा० लाया श्रावकेन चार्या गजसीही पुत्र बलिराज युनेन  
श्री संतवनाथ विंवं का० प्र० श्री वृहज्जे श्री रत्नप्रज्ञ सूरिनिः ।

[ 1208 ]

॥ सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ ज० मा० लाया चा० लपमादे सा० गुणराज धर्म

( ३९ )

पुत्री श्रा० धारू नाम्न्या श्री सुविधिनाथ विंवं कारितं प्र० तपागहनायक श्री सोमसुन्दर  
सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ सा० गुणराज सुत सा० कावू सुत सा० सदराज ॥

[ 1209 ]

सं० १५३१ वर्षे चैत्र वदि ७ बुधे चंदेरा वास्तव्य ओसवाल सा० दापा जा० हरषमदे  
सुत समराकेन चार्या शीतादे सु० वेला मेघराज हंसराज प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री  
अनंत विंवं का० प्र० श्री परतरगढे ज० श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[ 1210 ]

सं० १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ रवौ जप० सीसोदिया गोत्रे सा० देवायत चार्या देवलदे पु०  
पेता चार्या पेतलदे पुत्र चापर युतेन स्वपुण्यार्थ श्री नमिनाथ विंवं कारापितं प्रति० संकेर-  
वालगढे श्री सालि सूरिभिः ।

[ 1211 ]

॥ सं० १५४२ वर्षे वैशाख सुदि ९ शुके ज्जेश झा० सिंघानिया गोत्रे सं० रेना सं० सा०  
कदा चार्या जदतदे पु० सा० क्कारू श्रीमल जिणदत्त । पारस युतेन आ० पु० श्री मुनिसुव्रत  
विंवं का० श्री मेरुप्रज सूरिभिः ॥ श्री ॥

[ 1212 ]

संवत् १५५९ वर्षे माघस ( मार्गशीर्ष ) शु० १५ सोमे श्री श्रीमाल ज० वरसिंग जा०  
देसी० सु० हेसा सु० हराज सु० जयता पोसा सु० पांचाकेन आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ  
विंवं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं मारवीया ( ग्रामे ? ) ।

[ 1213 ]

॥ संवत् १५७० वर्षे माघ सुदि १३ भूमे श्री प्राग्वाट० सा शेवा जा० सहजजदे पुत्र  
हरपा रूपा हरपा जा० लारुकि पुत्र मातृपितृत्रानृ भृ० श्रेयार्थ श्री श्री श्री आदिनाथ विंवं  
कारापितं । प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्रगढे जहा० श्री हेमसिंह सूरिभिः ।





धातु के यंत्र पर ।

[ 1219 ]

संवत् १८५९ वर्षे ८ पोष सुदि ४ दिने सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं वा० लालचन्द्र  
गणिना कारितं सवाई जयनगरमध्ये समस्त श्रीसंघेन वृद्धत् परतरगच्छे । शुभमस्तु ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर—श्रीमालोंका महल्ला ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1220 ]

सं० १४६५ वर्षे वैशाख सुदि ३ सापुठा गोत्रे सा० वेला चार्या स० वीढ्णदे पु० साधु  
पिमराज पेमाच्यां पितृ मातृ श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं ॥ प्र० श्री धर्मधोपगठे  
श्री सोमचन्द्र सूरि पठे श्रीमलचन्द्र सूरिः ॥

[ 1221 ]

सं० १५११ वर्षे माघ शु० ५ गुरु श्री श्रीमल ज्ञानीय श्रे० मकुण्णी चार्या नाज सुन  
कीयाकेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयार्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीब्रह्माणगठे  
श्री मुनिचन्द्र सूरिः मेदूणा वास्तव्य । श्री ।

[ 1222 ]

संवत् १५३० वर्षे पोष वदि ६ रवौ श्री श्रीमल ज्ञा० मंत्रि समभर ना० श्रीयादे सुन  
कीयाकेन आत्मश्रेयार्थं श्री विमलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विष्णुगठे श्री गुणदेव  
सूरि पठे श्री चन्द्रप्रभू सूरिः राक्षजयामे ।

[ 1223 ]

सं० १५३१ वर्षे वै० शु० १० सोमे उम्वंजे खोटा गोत्रे सा० चार्या ना० देवद सु०

नीव्हा जा० सोनी करमी सु० सा० हासकेन त्रातृ सा० नाऊ सा० बेउ हासा जार्या रतनी  
सु० सा० ठाकुर सा० ईलटला० ऊधादि प्रमुखयुतेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ विंबं का  
प्रति० श्री वृहन्न श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1224 ]

॥ संवत् १५५५ वर्षे फागुण सुदि ए बुधे सीधुन गोत्रे ठधरि गरुपाल जा० गोरादे सुत  
वस्तुपाल त्रातृ पोमदत्त वस्तपाल जा० वव्हादे पुत्र त्रैलोक्यचंद्र श्रेयोर्य श्री संजवनाथ  
विंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगळे ज० श्री जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[ 1225 ]

संवत् १६१४ वर्षे वै० शुदि १ शुक्रवासरे तपगळे नायक ज० प्रज श्री हीरविजय सूरि  
मनराजो श्री पद्मप्रज विंबं प्रतिष्ठितं प्रतिष्ठापितं नागपर गहिलडा गोत्र सा० अमीपाल  
जा० अमूलकदे पु० कूअरपाल जा० कुरादे प्रतिष्ठितं शुभं जवति ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1226 ]

सं० १७७७ माघ शुक्ल १३ बुधे श्री पार्श्वनाथ जिन विंबं कारितं । प्र० वृ० त सा०  
श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1227 ]

संवत् १७५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्ष तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्रतिष्ठितं  
ज० जिनअक्षय सृग्णि पट्टालङ्कार श्री जिनचन्द्र सूरिजिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वयं  
सौधन गोत्रीय किलनचन्द्र तत्पुत्र उदयचंद्र सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्य ॥

[ 1228 ]

सं० १९०२ वर्षे आश्विन मासे शुक्ले पक्षे पूर्णमासी तिथौ बुधे जयनगर वास्तव्य

श्रीमालवंशे फोफलिया गोत्रीय चुनीलाख तत् पुत्र हीराखालेन श्री सिद्धचक्र यंत्र कारितं  
चारित्र्यउदय उपदेशात् प्र० ज० खरतरगह्वीय श्री जिननन्दीवर्द्धन सूरिभिः पूजकानां .....  
ती भूयात् ।

## आम्बेर । \*

श्री चन्द्रप्रज्ञ स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1229 ]

सं० १३९० वर्षे पोष सुदि १२ सोमे श्री काष्ठासंघे ..... सुत ताहड़ श्रेयोर्ध श्री  
सुमतिनाथ प्रतिष्ठितं ।

[ 1230 ]

सं० १५१५ वर्षे मार्गसिरि वदि १२ शुक्ले उपके० चावेद गोत्रे सा० अद् पुत्र लोला जार्या  
खानिमदे .... स्वश्रेयसे पितृमानृपुण्यार्थ श्री चंद्रप्रज्ञ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री गजधार  
गह्वे श्री गुणसुन्दर सूरिभिः ।

[ 1231 ]

॥ सं० १५४१ वर्षे फागु० व० २ दिने नीनोगेचा गो० आन० ना० नृग ता० नृगमां  
पु० परवत जा० सहजादे तथा परवत देवू ननधर बीजा नद्वन ता० पगनसदे नद्विन ता०  
सहजा पुण्यार्थ श्री संजयनाथ दिवं का० प्र० श्री नारसीदगरे श्री धनेश्वर सूरिभिः । ७ ।

## अलवर ।

पाषाण के मूर्ति पर ।

[ 1232 ] \*

- ( १ ) ॥ सिद्धि ॥ संवत् १५१० वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ दिने शुक्रवासरे श्री गोपाचल नगरे राजाधिराज श्री डूंगर-सिंह-देवराज्ये ज्जकेश विं ( वं ) शे ।
- ( २ ) [ पं ] चलउट गोत्रे जणफारी देवराज चार्या देवदण्णदे तत्पुत्र जं० नाथा चार्या रूपार्ई स्वश्रेयोर्थ श्री संजवनाथ विंवं कारितं प्रति-
- ( ३ ) छितं श्री परतरगहे श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री जिनसागर सूरिजिः ॥  
॥ श्रीरस्तु ॥ ठ ॥



## नागौर ।

श्री ऋषभदेवजी का बड़ा मंदिर—हीरावाडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1233 ]

- १ । ॐ संवत् सु० १०६६ फाट्गुन विदि २
- २ । मा मुलक व सतो पाहूरि सा-
- ३ । वकेणं सन्तरसुतेन नित्य-
- ४ । श्रेयोर्थ कारिताः ॥

[ 1234 ]

संवत् १३६१ वर्षे ..... सुदि २ सोमे श्रेष्ठि धणपाल चार्या पाटह पुत्रेण कुमारसिंह  
श्रावकेण आत्मश्रेयोर्थ श्री महावीर विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री .....

\* यह लेख राय गौरीशङ्करजी बहादुर से मिला है उनके विचार से इस लेख का राजाधिराज डूंगरसिंह देव ग्वालियर का तंवर ( तोमर ) वंशी-राजा डूंगरसिंह ही हैं । इस मूर्तिकी मूल प्रतिष्ठा ग्वालियर में हुई थी, यहाँ से किसी प्रकार अलवर पहुँची है ।

[ 1235 ]

संवत् १४३० वर्षे चैत्र सुदि १५ सोमे रावगणे वीवे (?) नेपाल जा० पूरी पु० सा० पेशा  
स्वपितृमातृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ त्रिवं कारापितं श्री धर्मघोषगह्वे श्री मलयचन्द्र सूरि  
पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥

[ 1236 ]

संवत् १४५० वर्षे वैशाख वदि २ बुधे उपवेश ज्ञानीय केकडिया गोत्र ..... जा०  
रुदी ३ जेस जा० जसमादे पित्रोः श्रे० श्री चन्द्रप्रत्तस्वामि त्रिवं का० रामसेनीय श्री  
धनदेव सूरि पट्टे श्री धर्मदेव सूरिभिः ॥

[ 1237 ]

संवत् १४५० वर्षे फाल्गुण वदि १ बुधे उपवेशीय हनुमानि लोभा० सा० पानाका  
सा० सजना जा० श्रीयादे पुत्र मधुप्रसेन श्री सुमति त्रिवं त्रिभुवने प्रणि० श्री पद्मिनी  
श्री शान्ति सूरिभिः ॥

[ 1238 ]

संवत् १४५३ वर्षे वैशाख वदि १ उपवेशीय श्री शान्तिनाथ त्रिवं कारापितं श्री धर्मघोषगह्वे श्री मलयचन्द्र सूरि  
पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥

[ 1239 ]

संवत् १४५४ वर्षे फाल्गुण वदि १ बुधे उपवेशीय श्री शान्तिनाथ त्रिवं कारापितं श्री धर्मघोषगह्वे श्री मलयचन्द्र सूरि  
पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥

[ 1240 ]

संवत् १४५५ वर्षे वैशाख वदि १ बुधे उपवेशीय श्री शान्तिनाथ त्रिवं कारापितं श्री धर्मघोषगह्वे श्री मलयचन्द्र सूरि  
पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥

[ 1241 ]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ त्रैमे प्राग्वाट् ज्ञातीय व० साढा श्री जादी पु० सहसा जा० सीतादे पु० पादहा स० आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ विंवं कारितं प्रति० पूर्णिमा पक्षे श्री सर्वानन्द सूरिजिः ॥

[ 1242 ]

संवत् १४७० वर्षे माह सुदि ००० पक्षे श्री श्यासवंशे कछग ज्ञातीय सा० अजीआ सुत सा० जेसा चार्या जासू पुत्र पोमासाणादिजिः अश्वलग्नेश श्री जयकीर्त्ति सूरिणामुपदेशे श्री चन्द्रप्रन्न विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1243 ]

संवत् १४७३ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे उपकेश ज्ञातीय सा० टाहा जा० कम्मदे पुत्र मेघा जा० अणुपमदे सहितेनात्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंवं कारितं प्रति० श्री अमरचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1244 ]

संवत् १४७३ वर्षे फादुन विदि १ दिनै श्रीवीर विंवं प्रतिष्ठितं श्री जिनचन्द्र सूरिजिः उपकेशवंशे सा० वाहरु पुत्र पूजाकेन कारितम् ॥

[ 1245 ]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुध उपकेश वंशे लघुशाखा मण्ण सा० मन्दबिक चार्या फदकू सुत सा० रूंगरसी चार्या ददहादे पुत्र सा० सोना जीवा शीनेन मातृपुण्यार्थ श्री मुनिसुव्रत विंवं कारितं प्रति० श्री खरतरगळे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि तत् पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[ 1246 ]

संवत् १४७६ वर्षे फादुण सुदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातीय व्यव० शाखा जा० चांपू पुत्र जधरणकेन चार्या देपू सहितेन आत्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंवं कारितं प्रति० बोकफियागळे जटा० श्री धर्मतिवक सूरिजिः ॥

( ४७ )

[ 1247 ]

संवत् १४९८ वर्षे फाद्युण विदि २ फांफटिया गोत्रे सा० मोहण चार्या कुमरी पुत्र सा० मेहाकाहाच्यां स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषगळे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री विजयचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1248 ]

संवत् १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने उपकेशवंशे करमदिया गोत्रे सा० वीढ्हा तत् पुत्र सा० धना पुत्र चाषा वाढ्हा वाढा प्रमुख परिवारेण श्री सुविधिनाथ विंवं कारितं प्रति० श्री खरतरगळे श्रीमत् श्री जिनसागर सूरि शिरोमणिजिः ॥ शुभम् ॥

[ 1249 ]

संवत् १५०४ व्य० ( वर्षे ) गवढ्हो रत्नदे पुत्र लक्ष्मण जाढ्हणदे पुत्र नाथू चा० दोया त्रात् चीढा युतया सृढ्ही नाम्ना कारितः श्री सुपार्श्वः । प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[ 1250 ]

संवत् १५०७ वर्षे कार्तिक सुदि ११ शुक्ले प्राग्वाट कोठा० लापा चा० लापणदे पुत्र को० परवत ..... चोढा माढा नाना कुंगर युतेन श्री संजवनाथ विंवं कारितं उएत्त गळे श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्रति० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1251 ]

सं० १५०७ वर्षे माह सुदि १३ शुक्ले पटवड् गोत्रे सा० साढ्हा चार्या सोना पुत्र सा कुसमाकेन चा० कमलश्री पुत्र धानादियुतेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषगळे पद्माणन्द सूरिजिः .... श्री हेमचन्द्र नूरीणामुपदेशेन ॥

[ 1252 ]

संवत् १५०९ वर्षे चैत्र सुदि १२ श्री काष्टासंघे श्री मलयकीर्ति श्री राढ्हा चार्या चीढ्हा



पुत्र राजा चार्या सादही द्वितीय पुत्र एहराणी राजा सुता ह्कुरु पउमदरा रतल एतेषां  
प्रणमति ॥

[ 1253 ]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ उपकेश ज्ञातीय आर्षरी गोत्रे सा० दूणा पुत्र सा  
गिरिराज चा० सुगुणादे पु० सोनाकेन ठाकुर देवात् श्री चन्द्रप्रज्ञस्वामि विंवं का० उपकेश  
गच्छे ककुदा० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1254 ]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ९ बुधे श्री ओसवंशे वृद्धशाखीय सा० हता चा० रंगादे  
पुत्र सा० माका श्री सुमतिनाथ विंवं कारापितं श्री साधु सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु श्री  
अमदाबाद् वास्तव्य ॥

[ 1255 ]

संवत् १५०९ वर्षे मार्गशिर सुदि ७ दिने उपकेशवंशे साधुशाखायां सा० लखमण सुत  
सा० महिपाल सा० वीढहाख्यौ तत्र सा० महिपाल चार्या रूपी पुत्र ए० तेजा सा० वस्ताज्यां  
पुत्रादि परिवारयुताज्यां स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं श्री खरतर श्री जिनराज  
सूरि पट्टे श्री जिनजद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[ 1256 ]

संवत् १५०९ वर्षे माह सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० कूरसी पु० पासड  
चा० जङ्गलदे पु० पारस चा० पाटहणदे पु० पदा परवतयुतेन पितृश्रेयसे श्री संजवनाथ  
विंवं कारितं उ० श्री ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[ 1257 ]

संवत् १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीमान् जा० सुठीया गोत्रे सा० पिउंपाल पु०  
सोनाकेन आत्मश्रेयसे आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनतिलक  
सूरिजिः ॥

[ 1258 ]

संवत् १५१० वर्षे चैत्र सुदि १३ गु० प्राग्वाट सा० गोगन जार्या सडू पुत्र सा० जेसाकेन  
जा० राणी ..... ज्ञातृ जामा जा० हीरू प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंवं  
कारापितं प्रति० तपागच्छेश श्री रत्नसागर सूरिजिः ॥

[ 1259 ]

संवत् १५११ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ रवौ उपकेश ज्ञातीय शाह आसा जा० अहविदे सु०  
शाह ठाकुरसी जा० जानू स्वहितेन पितृ ज्ञातृ श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंवं कारापितं श्री  
कोरएटगळे प्रति० श्री सावदेव सूरिजिः ॥

[ 1260 ]

संवत् १५१२ मार्ग० शुदि १५ ..... वारे प्राग्वाट श्रेष्टि गोधा जा० फसी सुत नरदे  
सहसा माटा जा० धीराकेन जा० तारू सुत खीमादिकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ  
विंवं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ।

[ 1261 ]

संवत् १५१२ माघ विदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा पुत्र सुदमा  
जा० सोना पु० सादावढा हंसा पासादेवादिजिः पित्रोः श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंवं कारिणं  
प्रतिष्ठितं उपकेश गळे ककुडाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सूरिजिः ।

[ 1262 ]

संवत् १५१२ वर्षे फाट्युन सुदि ९ शनौ श्री श्रीमात्र ज्ञातीय व्य० नग्मी सुत काळा  
सुतवर्द्धमान सुत दो० वादाकेन जा० कूय्यरि सुत सा० शरण प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वद्रानृ  
जयारामा तौ श्रेयोर्थ श्री सुमतिनाथ विंवं कारिणं प्रतिष्ठितं तपागळे श्री श्री रत्नशेखर  
सूरिजिः ।



[ 1268 ]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख विदि ११ तौवाची वासि प्राग्वाट झातीय ए० केसव जा०  
जोली सुत सा० लारुणेन जा० सरगादे सुत जसवीर प्रसुखकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री  
शान्तिनाथ विंवं कारितं प्र० त्रपागढाधिराज श्री श्री रत्नशेखर सूरि पढे श्री लक्ष्मीसागर  
सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1269 ]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्री ब्रह्माणगढे श्री श्रीमास झातीय श्रेष्ठि देवा  
जा० हरपू सुत चाम्पाकेन जार्या जईती करणकुंजायुतेन पित्रो श्रेयसः श्री धर्मनाथ विंवं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरि पढे श्री विमल सूरिजिः ॥ सुझीयाणा वास्तव्य ।

[ 1270 ]

संवत् १५१९ वर्षे नाघ सुदि १० उपकेशवंशे शुनगोत्रे सा० गूजरेण जा० गउट्टे पुत्र  
पेदा अजाण्डू जा० कुसजगदे पाटेवाट ( ? ) सहितेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री  
खरतरगढे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1271 ]

संवत् १५२० वर्षे मार्गशीर्ष विदि १२ उपकेश० झातो श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य जा० मांगण पुत्र  
स० सोनाकेन जार्या जाहलदे पुत्र समस्त न० इन्द्रपुत्र संमागचन्द्रनिमित्तं श्री चन्द्रप्रभ  
स्वामि विंवं जा० प्र० उपकेश गढे बहुदाचार्य मन्नादे श्री करन मूर्तिजिः ॥ श्रीः ॥

[ 1272 ]

संवत् १५२१ माघ सुदि ३ पुत्रे सा० झातीय वरद० नैवा पुत्र सीता जार्या पुत्री  
पुत्र जांसा हेना पाठवा मरिनेन श्री नैविनाथ विंवं कारितं प्र० नरागढे श्री जनीतया  
सूरिजिः ॥

संवत् १७२४ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे दिने प्रा० वंशे सा० आका चार्या ललतादे तको  
पुत्र आग चार्या वीजलदे श्री अञ्जलगच्छे श्री श्री केशरि सूरीणामुपदेशेन निज श्रे० श्री  
नीलकण्ठ त्रिं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥ जयतलकोट वास्तव्यः ॥

[ 1274 ]

संवत् १७२४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि २१ शुके उपकेश झातौ आदित्यनाग गोत्रे सा०  
पुत्र आग चार्या वीजलदे श्री अञ्जलगच्छे श्री श्री केशरि सूरीणामुपदेशेन निज श्रे० श्री  
नीलकण्ठ त्रिं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥ जयतलकोट वास्तव्यः ॥

[ 1275 ]

संवत् १७२४ वर्षे वैशाख सुदि २ पुगे उपकेश झातीप ग्यावही गोत्रे साह भृणी सा०  
पुत्र आग चार्या वीजलदे श्री अञ्जलगच्छे श्री श्री केशरि सूरीणामुपदेशेन निज श्रे० श्री  
नीलकण्ठ त्रिं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥ जयतलकोट वास्तव्यः ॥

[ 1276 ]

संवत् १७२४ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे दिने प्रा० वंशे सा० आका चार्या ललतादे तको  
पुत्र आग चार्या वीजलदे श्री अञ्जलगच्छे श्री श्री केशरि सूरीणामुपदेशेन निज श्रे० श्री  
नीलकण्ठ त्रिं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥ जयतलकोट वास्तव्यः ॥

[ 1277 ]

संवत् १७२४ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे दिने प्रा० वंशे सा० आका चार्या ललतादे तको  
पुत्र आग चार्या वीजलदे श्री अञ्जलगच्छे श्री श्री केशरि सूरीणामुपदेशेन निज श्रे० श्री  
नीलकण्ठ त्रिं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥ जयतलकोट वास्तव्यः ॥

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि ६ शुक्ले उप० गहिलमा गो० सा० षेढा जा० दानिमदे  
प्रभृति पुत्रादियुतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे  
श्री विद्यासागर सूरि पट्टे श्री गुणशेखर सूरिजिः ॥ खीमसा वास्तव्य ॥

संवत् १५२७ वर्षे प्राग्वाद् सा० प्रथमा जा० पाट्टण्णदे सुत सं० परवत जा० चाम्पू  
सुत सा० नीसलेन जा० नाई श्रेयोर्थं सुत जगपादादि कुटुम्बयुतेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं  
कारितं प्रति० तपा लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख विदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातौ डूगड़ गोत्रे सा० सिखा जा०  
यली पुत्र धनपालेन जा० मारू पु० नागिन सोनपाल प्रमुख सहितेन स्वश्रेयसे श्री शीतल-  
नाथ विंवं कारितं प्रति० श्री वृहजगठे श्री मेरुप्रज्ञ सूरिजिः ।

संवत् १५२७ माघ सुदि ६ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय पिण्डवेदापट (?) नामलदे सु० ताजा  
जा० राजलदे सु० कर्मसा तेजा सा० श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं श्री पूर्णिमापद्धीय श्री  
साधुसुन्दर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं । जूहारूद्र वास्तव्यः ॥ श्री ॥

संवत् १५३० वर्षे वैशाख सु० ३ उपकेश ज्ञातीय सा० गणनिह जा० तेजलदे पुत्र सा०  
कीताकेन जा० कुनिगदे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुनिसुवन स्वामि विंवं कारितं  
प्रतिष्ठितं तपागञ्जनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ लूड्राना वास्तव्य ॥ शुद्धं नवनु ॥ श्रीः ॥

[ 1283 ]

संवत् १५३० वर्षे माघ सुदि ४ प्रा० झा० रादा जा० ज्ञान पु० मिगेड़ी वासी सा०  
सांमणेन जा० माणिकदे पु० लपमादियुतेन श्री सांतिनाथ विंबं कारितं तथा श्री सांमण्डर  
सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[ 1284 ]

सं० १५३० वर्षे फाट्युण सुदि ७ बुधे श्रीमाघ झातीय सा० राना जा० राजलदे जागेयर  
स्वश्रेयोर्थ श्री अंचलगढे श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[ 1285 ]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाख सुदि १० शुके श्री जणसवंशे चण्णालिया गोत्रे सा० नेमा  
जा० कीमी पुत्र सा० सोहिल जार्या मार्वी पुत्र सा० पहिराज जार्या पाट्णदे पुत्र सा०  
रत्नपाल सुश्रावकेण पितृव्य शाह जोपाल प्रमुख कुटुम्ब सहितेन पितुः श्रेयसे श्री सुविधि-  
नाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गढे श्री पुण्यनिधान सूरिजिः ॥ पहिराज  
पुण्यार्थ ॥

[ 1286 ]

संवत् १५३३ वर्षे चैत्र सुदि ४ शुके ओसवंशे बावेल गोत्रे सा घेवहा पुत्र शा० खेता  
जा० खेतश्री पुत्र शा० देदाकेन स्वपिता श्रेयसे श्री अजिनन्दन नाथ विंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गढे श्री गुणसुन्दर सूरि पढे श्री गुणाननिधान सूरिजिः ॥

[ 1287 ]

संवत् १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शित १० दिने सोमे उपकेशवंशे कटारीय गोत्रे जापचा  
जार्या पाट्णदे पुत्र सामरसिंह श्रीरकेण श्री श्रेयांस विंबं कारितं प्रति० श्री षरतरगढे  
श्री जिनचन्द्र सूरि पढे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ श्रेयसे ॥

[ 1288 ]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उप० कयणआ गोत्रे सा० लषमण जार्या लषमादे पु० टिता साजा जा० कीट्हुणदे स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ विंवं कारितं प्र० जापकाण गढे श्री कमलचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1289 ]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ ऊकेश वंशे जहड गोत्रे सा० जगच पुत्र सा० खरहकेन जा० नीविणि पुत्र माला वला पासड सहितेन धर्मनाथ विंवं निज श्रेयोर्ष कारापितं श्री खरतरगढे जट्टा० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1290 ]

संवत् १५३४ वर्षे माह वदि ५ तिथौ सोमे उपकेश ज्ञाती धरावही गोत्रे लठण वीपां म० कान्हा जार्या हीमादे पुत्र सतपाक तिहुअणाज्यां पित्रोः पुण्यार्थ श्री शीतलनाथ विंवं कारितं श्री कन्हरसा तपागढे श्री पुण्यरत्न सूरि पढे श्री पुण्यवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1291 ]

सं० १५३४ मा० शु० १० डा० व्य० नरसिंह जार्या नमलदे पुत्र मेलाकेन जा० वीराणि सुत रातादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ पादणपुरे ॥

[ 1292 ]

संवत् १५३५ वर्षे आषाढ द्वितीया दिने उपकेश ज्ञातीय आचार गोत्रे लूणाग्न शाखायां सा० जांजा पु० चउत्थ० जा० मयलहदे पु० मृलाकेन आत्मश्रेयसे श्री पयप्रत विंवं कारितं ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त नृगिनिः ॥

[ 1293 ]

संवत् १५४६ वर्षे आषाढ विदि २ आनवाड ज्ञाता श्रेष्ठ गोत्रे वैद्य शाखायां मा०



सिंधा जा० सिंगारदे पु० वींजा ढाजू ताच्यां पुत्र पौत्र युताच्यां श्री चन्द्रप्रज्ञ विंबं सा०  
सिंधा पुण्यार्थं कारापितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1204 ]

संवत् १५५२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ओसवाल ज्ञातीय म० साहेजा जा० केदही  
सु० गकुरसीकेन चार्या गिरसू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंबं कारितं श्री  
वृद्धतपापक्षे ज० श्री जिनसुन्दर सूरिजिः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

[ 1205 ]

संवत् १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमे उपकेश वंशे मेडतावाल गोत्रे शा० पगारसीह  
सन्ताने शा० सहसा सु० हा० श्रवण जा० साखिगसुतेन श्री अजितनाथ विंबं कारितं प्र०  
दर्पपुरीय गळे जट्टारक श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे ॥ श्री ॥

[ 1206 ]

संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्री सफेरगळे ज० बढाला गोत्रे सा० लूसा लीला  
पु० लाळा हरा लोका चार्या तारू पु० हराबजइ (?) तू पु० पु० सु० श्रे० श्री शांतिनाथ विंबं  
कारितं प्र० श्री शान्ति सूरि .... ।

[ 1207 ]

संवत् १५५७ आषाढ सुदि १० बुधे श्री पट्टहुवरु गोत्रे शा० तोला सन्ताने कुँअरपाल  
पुत्र साधू .... वेत जा० देवल० पु० णए रूपचंद युतेनात्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं  
प्र० वृद्धजच्छे ज० श्री मेरुप्रज्ञ सूरि पट्टे श्री मुनिदेव सूरिजिः ॥

[ 1208 ]

संवत् १५५८ वर्षे माह सुदि १० दिने शनिवारे उपकेशवंशे सखवाल गोत्रे सा गुणदत्त  
चार्या जंगादे पुत्र सा० धणदत्त चार्या धन श्री पुत्र सा० हीरादे परिवारयुतेन श्री शीतल

नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री जिनहंस सूरिजिः ॥  
कल्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

[ 1299 ]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि १५ उ० उच्छितवालगोत्रे संघवी देवा जा० देवलदे सा०  
वीण्हा चार्या वीट्हाणदे पुत्र तेजा वस्ता धन्ना आत्मपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं  
प्र० श्री धर्मघोषगच्छे श्री श्री श्रुतसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[ 1300 ]

संवत् १५६६ वर्षे फाट्गुन सुदी ३ सोमवासरे उपकेशवंशे रांका गोत्रे शा० श्रीरंग  
जा० देऊ पु० करमा जा० रूपादे स्वश्रेयसे आत्मपुण्यार्थं नमिनाथ विंवं कारितं प्र० उपकेश  
गच्छे ज० श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

[ 1301 ]

संवत् १५७१ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीवंशे मं० सिंघा जा० रद्दा पु० मं० करण  
जा० रमादे पु० मं० अजा सुश्रावकेण जा० आहवदे पु० राणा तथा पितृव्य पु० मा० गोगद  
प्रमुखसहितेन मातृ साधुपुण्यार्थं नागेन्द्रगच्छे सुगुरूणामुपदेशेन श्री वासुपूज्य विंवं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री संघेन वीवलापुरे ॥

[ 1302 ]

संवत् १५७६ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाख ज्ञातीय मं० राजा जा० रमादे पुत्र  
खीमाकेन जा० हीरादे पुत्र धनादि समस्त कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयार्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी  
विंवं कारितं श्री पूर्णिमा पट्टे जीमपल्लीय ज० श्री चारित्रचन्द्र सूरि पट्टे श्री मुनिचन्द्र  
सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ नेवीआए मगम वास्तव्य ॥

[ 1303 ]

ॐ संवत् १५७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ९ उ० सुराणा गोत्रे शा० हेमराज चार्या न० हेमश्री

सिंधा ज्ञा० सिंगारदे पु० वींजा ठाजू तान्यां पुत्र पौत्र युतान्यां श्री चन्द्रप्रज्ञ विंवं सा०  
सिंधा पुण्यार्थ कारापितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1294 ]

संवत् १५५२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ अोसवाल ज्ञातीय म० साहेजा ज्ञा० केदही  
सु० ठाकुरसीकेन ज्ञार्या गिरसू सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं श्री  
वृद्धतपापक्षे ज० श्री जिनसुन्दर सूरिजिः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

[ 1295 ]

संवत् १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमे उपकेश वंशे मेडतावाल गोत्रे शा० पगारसीह  
सन्ताने शा० सहसा सु० हा० श्रवण ज्ञा० साखिगसुतेन श्री अजितनाथ विंवं कारितं प्र०  
दर्पपुरीय गढे जट्टारक श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे ॥ श्री ॥

[ 1296 ]

संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्री सफेरगढे ज० बढाला गोत्रे सा० लूसा लीला  
पु० खाला हरा लोका ज्ञार्या तारू पु० हरालजइ (?) तू पु० पु० सु० श्रे० श्री शांतिनाथ विंवं  
कारितं प्र० श्री शान्ति सूरि .... ।

[ 1297 ]

संवत् १५५७ आषाढ सुदी १० बुधे श्री पट्टहुवरु गोत्रे शा० तोला सन्ताने कुँअरपात्र  
पुत्र साधू .... वेत ज्ञा० देवल० पु० णए रूपचंद युतेनात्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं  
प्र० वृद्धजच्छे ज० श्री मेरुप्रज्ञ सूरि पट्टे श्री मुनिदेव सूरिजिः ॥

[ 1298 ]

संवत् १५५८ वर्षे माघ सुदि १० दिने शनिवारे उपकेशवंशे सखवाल गोत्रे सा गुणदत्त  
ज्ञार्या नंगादे पुत्र सा० धणदत्त ज्ञार्या धन श्री पुत्र सा० हीरादे परिवारयुतेन श्री शीतल

नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री जिनहंस सूरिजिः ॥  
कव्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

[ 1299 ]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि १५ उ० उच्छितवाद्यगोत्रे संघवी देवा ज्ञा० देवलदे सा०  
वीणा ज्ञार्या वीढ्णदे पुत्र तेजा वस्ता धन्ना आत्मपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं  
प्र० श्री धर्मघोषगच्छे श्री श्री श्रुतसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[ 1300 ]

संवत् १५६६ वर्षे फाट्पुन सुदी ३ सोमवासरे उपकेशवंशे रांका गोत्रे शा० श्रीरंग  
ज्ञा० देज पु० करमा ज्ञा० रूपादे स्वश्रेयसे आत्मपुण्यार्थं नमिनाथ विंवं कारितं प्र० उपकेश  
गच्छे ज्ञ० श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

[ 1301 ]

संवत् १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीवंशे मं० सिंघा ज्ञा० रद्दा पु० मं० करण  
ज्ञा० रमादे पु० मं० अजा सुश्रावकेण ज्ञा० आहवदे पु० राणा तथा पितृव्य पु० मा० गोगद  
प्रमुखसहितेन मातृ साधुपुण्यार्थं नागेन्द्रगच्छे सुगुरुणासुपदेशेन श्री वासुपूज्य विंवं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री संघेन वीवलापुरे ॥

[ 1302 ]

संवत् १५७६ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० राजा ज्ञा० रमादे पुत्र  
खीमाकेन ज्ञा० हीरादे पुत्र धनादि समस्त कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिमुवतस्वामी  
विंवं कारितं श्री पूर्णिमा पट्टे जीमपट्टीय ज्ञ० श्री चारित्रचन्द्र सूरि पट्टे श्री मुनिचन्द्र  
सूरीणासुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ नेवीआए मगम वास्तव्य ॥

[ 1303 ]

ॐ संवत् १५७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ९ उ० सुगणा गोत्रे शा० हेमराज ज्ञार्या स० हेमश्री

पुत्र शा० देवदत्तेन स्वपितृपुन्यार्थेन कारितं श्री आदिनाथ विंबं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष  
गङ्गे चट्टारक श्री पयाणंद सूरि पट्टे श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः ॥

[ 1304 ]

संवत् १५७६ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० झा० टप गोत्रे द्वे० सदा चा० सक्तादे पु०  
थिरपाल चा० घेमलदे पु० सहसमल्ल हापा जगा सहितेन पितृ नि० श्री मुनिसुव्रत विंबं  
कारितं प्र० श्री सण्फेरगङ्गे श्री शांतिसुन्दर ॥

[ 1305 ]

संवत् १५७७ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने आदित्यनागगोत्रे तेजाणी शाखायां शा०  
मुहना पु० हासा पुत्र सखारण दा० नरपाल सधारण चार्था सूहवदे पुत्र ४ श्री करणरां  
समरथ अमीपाला सखारण स्वपुण्याय कारितं । श्री उपकेश गङ्गे चट्टा० श्री सिद्ध सूरिभिः  
श्री अजिनन्दन विंबं प्रतिष्ठितं स्वपुत्रपौत्रीय श्रेये मातु ॥

[ 1306 ]

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख विदि १३ सोमे श्री सण्फेरगङ्गे ज० चाण्फारी गोत्रे ज० ईसर  
पु० वीसल चा० कीट्टूपत्ते निमित्तं श्री नेमिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः ॥

[ 1307 ]

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख विदि १० सोमे जवाठ वास्तव्य हुंबम ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे  
दोसी श्रीपाल चार्था सिरीआदे सुतं दोसी रूढाकेन चा० राणी युतै श्री पद्मप्रज विंबं तपा०  
श्री तेजरत्न सूरिभिः प्रति० ॥

[ 1308 ]

संवत् १६४३ वर्षे फाट्गुन सित ११ अहमदाबाद वास्तव्य वाई कौरुकीसङ्घाया प्राग्वाट  
सेठि मूला चा० राजखदे पुत्री श्री आदिनाथ विंबं प्रतिष्ठितं श्री विजयसेन सूरिभिः  
श्री तपागङ्गे ॥

संवत् १६९६ वर्षे मिंगतिर सुदि १० रवौ उपकेश ज्ञातीय लघु शाखायां बुरा गोत्रे  
 फुमण गोत्रे वाइ गेलमादि पुत्र ठाकुरसी टाईसिंघ श्री कुन्धुनाथ विंवं कारापितं श्री  
 तपागठे गुरु श्री विजयदेव सूरि तत्पटे विजयशिव सूरिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1310 ]

संवत् १६९९ वर्षे वैशाख शुक्ल ए दिने ..... श्री शांतिनाथ विंवं कारितं  
 प्र० तपागठे श्री विजयसिंह सूरिः ॥

[ 1311 ]

संवत् १६९९ वर्षे फाट्युन विदि २ तिथौ सा० पुनपाकेन शीनस विंवं कारितं प्रतिष्ठितं  
 .... गठे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिः ॥

[ 1312 ]

संवत् १७१५ श्री श्रीमाल ज्ञानो नाद ज्ञाना नार्या गणपसदे पुत्र शिव पाशेन त्राव  
 वृणसिंह .... निज नार्या ..... (नसितं श्री पञ्चतीर्थी वा० प्र० श्री नागेन्द्र गठे श्री  
 पद्मचन्द्र सूरि पठे श्री रत्नाकर सूरिः ॥

चौबीती २१ ।

[ 1313 ]

संवत् १५२० वर्षे वैश्वि विदि ५ शुद्धे श्रीमोद ज्ञातीय सं० कल्या नार्या नार्या  
 हूरावेन ना० माई सु० गजराजना नहिनेन सिद्धादृशेसने नमृवेननिमित्त श्री गणपसदे  
 पलुदिसति पठः कारितः प्रति० श्री विद्याधरगठे श्री विजयप्रस सूरि पठे श्री देवप्रस  
 सूरिः ॥ दर्दमाल नार्या ।

संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ मङ्गलपङ्क्तिं प्राग्वाट सं० अजन जा० टबकू सुत सं०  
वस्ता जा० रामा पुत्र सं० चाहाकेन जा० जीविणि पुत्र संजाग आनादिकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे  
श्री चन्द्रप्रज्ञ २४ पट्ट का० प्र० तपा पक्षे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ॥

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—दफ्तरियों का महद्वा ।

संवत् १५१३ माघ शुक्ल ७ बुधे श्री उसवाल ज्ञातौ लोढा गोत्रे सा० जूचर जा० सरू  
पु० हंरू जा० सहर्नाई पु० जरहूकेन पितृ श्रेयसे श्री विमलनाथ विंवं कारितं श्री रुद्रपक्षीय  
गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिनिः ॥

संवत् १५१७ वर्षे आषाढ सुदी २ गुरौ उपकेश ज्ञातीय तावअजा जार्या आहसवे  
पुत्र नीवा जा० मानू सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री मुनिसुव्रत विंवं कारितं । प्रतिष्ठितं  
अश्वलगढे श्री जयकेसर सूरिनिः ॥

संवत् १५३४ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने उपकेशवंशे बोधरागोत्रे शा० जेसा पु० चाहा  
सुश्रावकेण जा० सुहागदे पुत्र देवहा मानी वाकि, युतेन माता लखी पुण्यार्थ श्री श्रेयांस  
विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगढे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिनिः ॥

संवत् १५३४ वर्षे मिंगसिर वदि ५ उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे शा० चाहर जा० जार्या  
हरखू पुत्र वीजाकेन जा० वीजलदे पुत्र कैशत्रयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ विंवं कारितं  
प्रति० श्री धर्मघोषगढे श्री धर्मसुन्दर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ॥

[ 1319 ]

संवत् १५३४ वर्षे प्राग्वाट झा० श्रे० सोमा जा० देऊसु जोटाकेन जा० वानरि त्रातृ  
जोजा प्रमुखकुटुम्बेन युतेन श्री संजवनाथ विंवं का० प्र० तपापके श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥  
वीसनगरे ॥

[ 1320 ]

संवत् १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने सोजात वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय शा० जाणा  
जा० जावलदे पु० आशाकेन जा० कीइ सुत वापा वीदा प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थ श्री  
वासुपूज्य विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

[ 1321 ]

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमवार पुण्य नक्षत्रे नाहर गोत्रे सं० पटा तत् पुत्र  
से० पासा चार्या पावलदे तत् पुत्र सं० लाखणाय्येन तद् चार्या जापणदे तत् पुत्र सं०  
नानिग सं० खीमसिंह .... सहितेनात्मधेयसे विंवं कारितं श्री शांतिनाथस्य श्री धर्मयोग  
गठे चहारक श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितः जज्ञं जवनान् ॥

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1322 ]

संवत् १५९७ वर्षे पौष विदि ५ शुक्रे प्राग्वाट श्रे० हृग्गाज जा० चणवी पु० महापंथ  
जा० नाई प्रमुखकुटुम्बेन सहितेन स्वधेयसे श्री कुन्दुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपदेश  
गठे सिद्धाचार्य सन्ताने श्री देवदत्त सूरि पंथे श्री सिद्ध सूरिजिः ॥



चौवीसी पर ।

[ 1323 ]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनो श्री वायव्य ज्ञानीय मं० माह्व जा० ह्यू सु०  
म(हा)देवदास जा० जीवि सु० सिंहराज ज्ञातृ हरदास काही आसुरा पद्मादण अमीषा  
श्रेयसे श्री पार्श्वनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्री अमररत्न सूरि गुरुपदेशेन  
प्रतिष्ठितश्च विधिना ॥ देकावामा वास्तव्य ॥

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—( घोमावतों की पोख )

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1324 ]

संवत् १३१६ वर्षे चैत्र विदि ६ जौमे श्री वृहज्जयी श्री उद्योतन सूरि शिष्यैः श्री  
हीरजद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं । श्रे० शुजंकर जार्या देवइ तयोः पुत्रेण श्रे० सोमदेवेन जार्या  
पूनदेवि पुत्र श्रीवह नागदेवादियुतेन आत्मश्रेयोर्थ श्री वीरजिन बिंबं कारितं ॥

[ 1325 ]

संवत् १५०३ वर्षे माह्वू गोत्रे सा० जाखर जरमी श्राविकायाः पुण्यार्थ मा० खडाकेन  
जीवा खीदा जीदा जादा पुत्र युतेन कारितं स्वपुण्यार्थ श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री  
जिनजद्र सूरिजिः ॥ श्रीखरतरगच्छे ॥

[ 1326 ]

संवत् १५५९ वर्षे वैशाख विदि ५ ओसवाल ज्ञातो सूरणा गोत्रे सा० सखर सहस्र  
वीरेण जार्या जोजी पु० कीमा वरता रंगू रत्नू युक्तेन स्वजार्या पुण्यार्थ श्री धर्मनाथ  
बिंबं कारितः प्रति० श्री धर्मघोषगच्छे श्री पद्माणन्द सूरिजिः ॥

[ 1327 ]

संवत् १५४५ वर्षे ज्येष्ठे विदि ११ दिने वीरवाडा वासि प्रागूँ झाति साण रत्ना जाण  
गाधू पुण साण चीमाकेन जाण हेमी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं श्री  
श्री श्री सूरिजिः ॥ श्रिये ॥

[ 1328 ]

संवत् १५६६ वर्षे फाट्गुण सुदि ३ सोमे श्री नाणावालगच्छे उसज गोत्रे कोण बुद्ध जाण  
वाहिणदे पुत्र वीवावणा वधा दोहावणी युष्यार्थ श्री विमलनाथ विंबं कारितं प्रण श्री शांति  
सूरिजिः ॥ मेरुता नगरे ॥

चौवीसी पर ।

[ 1329 ]

संवत् १४९० वर्षे फाट्गुण शुक्ल ए जाइलंवाळ गोत्रे साण शिखर पुत्राच्यां शाण संग्राम  
सिंह धनाच्यां निज मातृ साद्वीं श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पद्यं कारितः  
प्रतिष्ठितं । तथा चहारक श्री पूर्णचन्द्र नृरि पद्ये चहारक श्री हेमचंद्रं सूरिजिः ॥

—३३—

वीकानेर ।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

आसानियों का मद्दहा—दांतियों के उभारने के पास ।

संचनीधियों पर ।

[ 1330 ]

संवत् १४९६ फाट्गुण विदि ६ पक्षे चारुण इन्दीर माण जगदीश नाण लवक पुण्या थाण

चौबीसी पर ।

[ 1323 ]

संवत् १५३१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनो श्री वागम ज्ञातीय मं० माह्व जा० ह्व सु०  
म(हा)देवदास जा० जीवि सु० सिंहराज चानू हरदास माही आमुग पञ्चाण अमीपाण  
श्रेयसे श्री पार्श्वनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्री अमररत्न सूरि गुरुपदेशेन  
प्रतिष्ठितश्च विधिना ॥ देकावाम्ना वास्तव्य ॥

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—( घोमावतों की पोल )

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1324 ]

संवत् १३१६ वर्षे चैत्र विदि ६ जौमे श्री बृहज्जीय श्री उद्योतन सूरि शिष्यैः श्री  
हीरजद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं । श्रे० शुक्रंकर चार्या देवइ तयोः पुत्रेण श्रे० सोमदेवेन चार्या  
पूनदेवि पुत्र श्रीवह नागदेवादियुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री वीरजिन विंबं कारितं ॥

[ 1325 ]

संवत् १५०३ वर्षे माह्वू गोत्रे सा० जाखर चरमी श्राविकायाः पुण्यार्थं मा० खड्गाकेन  
जीवा खीदा जीदा जादा पुत्र युतेन कारितं स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ विंबं प्रतिष्ठितं श्री  
जिनजद्र सूरिजिः ॥ श्रीखरतरगच्छे ॥

[ 1326 ]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाख विदि ५ श्रोसवाल ज्ञातौ सूराणा गोत्रे सा० सखर सईस  
वीरेण चार्या जोजी पु० कीमा वरता रंगू रत्नू युक्तेन स्वचार्या पुण्यार्थं श्री धर्मनाथ  
विंबं कारितः प्रति० श्री धर्मघोषगच्छे श्री पञ्चाणन्द सूरिजिः ॥

[ 1327 ]

संवत् १५४५ वर्षे ज्येष्ठ विदि ११ दिने वीरवाडा वासि प्राग्गुं ज्ञाति साग् रत्ना ज्ञाग्  
माधू पुग् साग् नीमाकेन ज्ञाग् हेमी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं श्री  
श्री श्री सूरिजिः ॥ श्रिये ॥

[ 1328 ]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुण सुदि ३ सोमे श्री नाणावालगढे उसज गोत्रे कोग् बुहथ ज्ञाग्  
चाहिणदे पुत्र वीवावणा वधा दोहादणी गुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंवं कारितं प्रग् श्री शांति  
सूरिजिः ॥ मेरुता नगरे ॥

चौवीसी पर ।

[ 1329 ]

संवत् १४९० वर्षे फाल्गुण शुक्ल ए जाइलंवाल गोत्रे साग् शिखर पुत्रान्यां शाग् संग्राम  
सिंह धनान्यां निज मातृ साब्हीं श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पटं कारितः  
प्रतिष्ठितं । तपा जट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे जट्टारक श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

—६३—

## वीकानेर ।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

ध्यातानियों का महत्वा—वांठियों के उपासने के पास ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1330 ]

संवत् १४९६ फाल्गुण विदि ६ दूधे लोकेन ज्ञानीय साग् जगमी ज्ञाग् उवकृ पुण्या श्याग्

रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा स्वर्तृनिमित्तं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री  
कोरंटगढे श्री कक्क सूरि पढे श्री सावदेव सूरिः ॥

[ 1331 ]

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जज्ञता चार्या वरजू पु० दुवा सा०  
आत्मश्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं ... श्री मुनिप्रज सूरिजिः ॥

[ 1332 ]

सं० १५०० वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे ओसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना चार्या  
अमरी पु० तोळूकेन स्वपूर्वज रीजा पुण्यार्थ श्री वासुपूज्य विंवं का० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1333 ]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० ७ ऊकेशवंशे माळू शापायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन  
पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माला पांचा महिषा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थ श्री कुंथुनाथ  
विंवं कारितं श्री खरतरगढे श्री जिनराज सूरि पढे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ 1334 ]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगढे ककुदाचार्य संताने चाद्रगोत्रे सा०  
साधा सा० सारंग चा० तड्ही पु० भीमधर चा० जेठी पु० बेता बेकायुतेन आत्मश्रेयसे श्री  
संजवनाथ विंवं का० प्रति० श्री कक्क सूरिजिः ।

[ 1335 ]

संवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ऊकेशवंशे दोसी सा० चादा पुंन सा० धणदत्त  
तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल विंवं मातृ अपू पुण्यार्थ कारितं  
प्र० खरतर श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

( ६५ )  
[ 1336 ]

सं० १५१० वर्षे माघ सु० ५ बुधे ज्जकेश शुभ गोत्रे श्रे० आसधर पुत्र श्रे० पूनडु चार्या  
फती पुत्र सा० करमणेन चार्या कर्मादे धर्म पुत्र सा० समरा चार्या सहजलदे सुत तेजादि  
कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थकर विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः। श्री सिद्धपुर वास्तव्य ॥

[ 1337 ]

सं० १५३३ फा० सुदि ०० श्री ०००० संजवनाथ विंवं श्री संदेरगछे चहारक श्री ०००० ।

[ 1338 ]

सं० १५३४ वर्षे सा० सुदि ५ सोमे श्री उपकेश वांज गोत्रे । सा० बहा चा० बोरिणि  
पु० सा० सच्चू चा० लपमादे मातृपितृ पु० आत्म पु० श्री कुंथुनाथ विंवं कारापितं श्री  
मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिजिः ॥

[ 1339 ]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ ओसवाल धामी गोत्रे सा० पदमा चार्या प्रेमलदे  
पु० जोला चा० चावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंवं कारापितं प्र०  
ज्ञानकीय गछे श्री धनेश्वर सूरिजिः ॥ सारो ०००० ।

[ 1340 ]

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ तष्ट गोत्रे सा० नीधर पुत्र गुणपतिना सा० गरुडदे  
पु० महसा पुनि चार्या गसारदे पुत्र करमती पहराज युतेन श्री कुंथुनाथ विंवं निज पुण्यार्थ  
कारितं प्र० नमदास गछे श्री देवगुप्त सूरिजिः ।

[ 1341 ]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ज्जकेश ०० ग गोत्रे सा० इन्द्रा पुण्यार्थ पुत्र सा०  
अपधराज तद् भ्रातृ सी ०० युतेन श्री नमिनाथ विंवं सा० प्र० श्री नरनरगछे श्री जिनरु  
सूरि पछे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ श्री ॥

रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा स्वर्तृनिमित्तं श्री शान्तिनाथ विंभं का० प्रतिष्ठितं श्री  
कोरंटगढे श्री कक्क सूरि पटे श्री सावदेव सूरिः ॥

[ 1331 ]

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जज्ञता जार्या वरजू पु० बुवा सा०  
आत्मश्रेयोर्य श्री श्रेयांसनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं श्री मुनिप्रज्ञ सूरिः ॥

[ 1332 ]

सं० १५०० वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे श्रोसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना जार्या  
अमरी पु० तोलूकेन स्वपूर्वज रीजा पुण्यार्थ श्री वासुपूज्य विंभं का० प्र० श्री कक्क सूरिः ॥

[ 1333 ]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० ७ ऊकेशवंशे मातृ शापायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन  
पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माला पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्य श्री कुंभुनाथ  
विंभं कारितं श्री खरतरगढे श्री जिनराज सूरि पटे श्री जिनचन्द्र सूरिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ 1334 ]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगढे ककुदाचार्य संताने चाद्रगोत्रे सा०  
साधा सा० सारंग जा० तदही पु० षीमधर जा० जेठी पु० वेता वैनायुतेन आत्मश्रेयसे श्री  
संजवनाथ विंभं का० प्रति० श्री कक्क सूरिः ।

[ 1335 ]

संवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ऊकेशवंशे दोसी सा० जादा पुत्र सा० धणदत्त  
तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल विंभं मातृ अपू पुण्यार्थ कारितं  
प्र० खरतर श्री जिनचन्द्र सूरिः ।

( ६५ )

[ 1336 ]

सं० १५१० वर्षे माघ सु० ५ बुधे ऊकेश शुभ गोत्रे श्रे० आसधर पुत्र श्रे० पूनड़ चार्या  
फती पुत्र सा० करमणेन चार्या कर्मादे धर्म पुत्र सा० समरा चार्या सहजलदे सुत तेजादि  
कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थकर विंवं कारिनं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः । श्री सिरूपुर वास्तव्य ॥

[ 1337 ]

सं० १५३३ फा० सुदि ०० श्री ०००० संजवनाथ विंवं श्री संनेरगळे चहारक श्री ०००० ।

[ 1338 ]

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ सोमे श्री उपकेश वांज गोत्रे । सा० वछा चा० वोरिणि  
पु० सा० सच्चू चा० लपमादे मातृपितृ पु० आत्म पु० श्री कुंथुनाथ विंवं कारापितं श्री  
मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिजिः ॥

[ 1339 ]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ आनवात्र धामी गोत्रे सा० पद्मना नार्गा प्रेमदादे  
पु० जोला चा० जावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थ श्री पितृनाथ विंवं कारापितं प्र०  
ज्ञानकीय गळे श्री धनेश्वर सूरिजिः ॥ नागे ०००० ।

[ 1340 ]

सं० १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ तइट गोत्रे सा० मीधर पुत्र गुरुपतिना चा० गरगादे  
पु० सरस्ता पुनि चार्या रामादे पुत्र करमर्नी पद्मराज युतेन श्री कुंथुनाथ विंवं निज पुण्यार्थ  
कारिनं प्र० नमदास गळे श्री देवगुप्त सूरिजिः ।

[ 1341 ]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ललेन ०० ग गोत्रे सा० इच्छा पुण्यार्थ पुत्र सा०  
पद्मपराज तद् ज्ञातृ श्री ०००० युतेन श्री नमिनाथ विंवं कार० प्र० श्री नमदास श्री विमल  
सूरि एते श्री विनयन सूरिजिः । श्री ।



रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा खजर्तृनिमित्तं श्री शान्तिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री  
कोरंटगढे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिः ॥

[ 1331 ]

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जइता जार्था वरजू पु० लुग सा  
आत्मश्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं श्री मुनिप्रज सूरिः ॥

[ 1332 ]

सं० १५०८ वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे ओसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना जार्था  
अमरी पु० तोळूकेन खपूर्वज रीजा पुण्यार्थ श्री वासुपूज्य विंवं का० प्र० श्री कक्क सूरिः ॥

[ 1333 ]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० ७ ज्जकेशवंशे माळू शाषायां सा० पूना सुत सा० सहसाके  
पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माळा पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थ श्री कुंथुनाथ  
विंवं कारितं श्री खरतरगढे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ 1334 ]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगढे ककुदाचार्य संताने जाडगोत्रे सा०  
साधा सा० सारंग जा० तड्ही पु० धीमधर जा० जेठी पु० वेता वैनायुतेन आत्मश्रेयसे श्री  
संजवनाथ विंवं का० प्रति० श्री कक्क सूरिः ।

[ 1335 ]

संवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ज्जकेशवंशे दोसी सा० जादा पुत्र सा० धणदत्त  
तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल विंवं मातृ अप् पुण्यार्थ कारितं  
प्र० खरतर श्री जिनचन्द्र सूरिः ।

सं० १५१० वर्षे माघ सु० ५ बुधे ज्जकेश शुभ गोत्रे श्रे० आमधर पुत्र श्रे० पूनड़ चार्या फती पुत्र सा० करमणेन चार्या कर्मादे धर्म पुत्र सा० समरा चार्या सहजलदे सुत तेजादि कुडुम्बयुनेन श्री प्रथम तीर्थकर विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः । श्री सिद्धपुर वास्तव्य ॥

सं० १५३३ फा० सुदि .... श्री ..... संजवनाथ विंवं श्री संमेरगळे चट्टारक श्री ..... ।

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ सोमे श्री उपकेश वांच गोत्रे । सा० बछा चा० वोरिणि पु० सा० सच्चू चा० लषमादे मानृपितृ पु० आत्म पु० श्री कुंथुनाथ विंवं कारापितं श्री मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिजिः ॥

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० ३ रवौ ओसवाळ धामी गोत्रे सा० पद्मना चार्या प्रेमलदे पु० जोला चा० चावलदे पु० देवराज युनेन स्वपुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंवं कारापितं प्र० ज्ञानकीय गळे श्री धनेश्वर सूरिजिः ॥ सारो ..... ।

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ तष्ट गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुग्पतिना चा० गरलदे पु० महता पुनि चार्या गसादे पुत्र कर्मली पहराज युनेन श्री कुंथुनाथ विंवं निज पुण्यार्थ कारितं प्र० नमदाळ गळे श्री देवगुप्त सूरिजिः ।

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ विने ज्जकेश .... ग गोत्रे सा० च्छुद्धा पुण्यार्थ पुत्र सा० अपयराज तद् चानृ खी .... युनेन श्री नमिनाथ विंवं का० प्र० श्री नगरगळे श्री जिनरु सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1342 ]

सं० १५३९ वर्षे वैशाख सुदि ४ शुक्रे उ० ज्ञातीय प्राह्मचा गोत्रे व्य० चांदा जा० धर्मिण पु० गांगा जा० म्यापुरि सहितन श्री पार्श्वनाथ विंवं का० प्र० जावड़ गहे श्री जावदेव सूरिजिः ।

[ 1343 ]

संवत् १५४९ वैशाख सु० ५ बुध काष्ठासंघे जटारक श्री ..... तस्याम्नाये .....

[ 1344 ]

सं० १५५२ वर्षे फा० शु० ६ शनौ ओस० ज्ञातीय सा० मुंज जा० मुजादे पु० सा० परवत जा० अमरादे सा० पर्वत श्रयार्थ श्री विमलनाथ विंवं कारितं प्र० तपागहे श्री हेमविमल सूरि ।

[ 1345 ]

संवत् १५६१ वर्षे माह सृदि ५ दिने शुक्रे हुंबड़ ज्ञातीय श्रे० विजपाल जा० हीरू सु० श्रे० पदमाकेन जा० चांपू सु० पोना जा० रषी सु० कर्मसी प्रमुखपरिवारपरिवृत्तन स्वश्रेयोर्य श्री विमलनाथ विंवं कारित प्रतिष्ठितं तपागहाधिगज श्री लक्ष्मीसागर सूरि तत्पट्टे श्री सुमनिसाधु सूरि तत् ण्डे साम्प्रत विद्यमान परमगुरु श्री हेमविमल सूरिजिः ॥ वीचावेमा वास्तव्य ॥

[ 1346 ]

सं० १५७७ वर्षे वैशाख वदि ७ श्री ओमवंशे ठजलाणी गोत्रे । पीगोजपुर स्थाने । सा० धनूतार्या ... सुत सा० वीरम वीरमदे सुत दीपचंद उधरणादि कुटुम्बयुतन श्री मंजवनाथ विंवं कारितं । प्रतिष्ठितं .....

[ 1347 ]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमवार श्री आदित्यनाग गोत्रे चोरवेड्या शाखाया

साण पासा पुत्र ऊदा जाण पऊमादे पुण कामा रायमल देवदत्त ऊदा पुण्यार्थं शांतिनाथ  
त्रिंशं कारापितं उषपल सिद्ध सूरिभिः प्रति .... ।

[ 1348 ]

संवत् १६१७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साह काजड़ गोत्र साह चाण्सी जार्था नारंगदे  
पुण श्री वासपु श्रो वासुपूज्य त्रिंशं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री हीरविजय सूरिभिः ।

जैन उपासरा का शिक्षा लेख ।

[ 1349 ]

- ( १ ) पृथ्वी नल मांहे प्रगटः वड़ो नगर वीकाण ।
- ( २ ) सुगनसोह महागजजुः राज करै सुविहाण ॥ १ ॥
- ( ३ ) गुणी कृमामाणिक्य गणिः पाठक पुन्य प्रधान ।
- ( ४ ) वाचक त्रिद्या हेमगणिः सुप्रत सुख संस्थान ॥ २ ॥
- ( ५ ) सय अठार गुणसठ में महिरवान महाराज ।
- ( ६ ) नव्य वनाय उपासरो दियो सदा धित काज ॥ ३ ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर—बाजार में ।

शिक्षालेख ।

[ 1350 ]

॥ संवत् १५६१ वर्षे आषाढ़ सुदि ए दिने वार रवि । श्री वीकानेर मध्ये महागजा  
राई श्री श्री श्री वीकाजी विजयराज्ये । देहगे करायो श्री संघ ॥ संवत् १३७७ वर्षे श्री  
जिनकुशल सूरि प्रतिष्ठितः ॥ धी संतोवर मूलनायक ॥ श्री श्री आदिनाथ चतुर्विंशति

[ 1342 ]

संवत् १९३९ वर्षे वैशाख सुदि ४ शुके उ० ज्ञातीय प्राह्मचा गोत्रे व्य० चांदा जा०  
धर्मिणि पु० गांगा जा० म्यापुरि सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंबं का० प्र० चावड गढे श्री  
चावडेव सूरिनिः ।

[ 1343 ]

संवत् १९४९ वैशाख सु० ५ बुधे काष्ठासंघे जट्टारक श्री ..... तस्याम्नाये .....

[ 1344 ]

संवत् १९५२ वर्षे फा० शु० ६ शनौ श्रोस० ज्ञातीय सा० मुंज चा० मुजादे पु० सा०  
परगत जा० अमरादे सा० पर्वत श्रयार्थ श्री विमलनाथ विंबं कारितं प्र० तपागढे श्री  
हेमविमल सूरि ।

[ 1345 ]

संवत् १९६१ वर्षे माह सदि ५ दिने शुके हुंबड ज्ञातीय श्रे० विजपाल जा० हीर  
सु० श्रे० गढमाकेन जा० चांपू सु० पोना जा० रपी सु० कर्मसी प्रमुखपरिवारपरिवृतं  
गणेशोदर श्री विमलनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागढाधिगज श्री लक्ष्मीसागर सूरि  
कल्ले श्री सुमन्निमाधु सूरि तत पंटे साम्प्रत विद्यमान परमगुरु श्री हेमविमल सूरिनिः ॥  
वीजावेग वास्तव्य ॥

[ 1346 ]

संवत् १९६३ वर्षे वैशाख वदि ३ श्री श्रोसवंजे उजलाणी गोत्रे । पीगंजपुर म्यांन ।  
सा० धर्मादे श्री ..... मुत सा० वीरग तयो वीरमदे मुत दीपचंद उधरणादि कुटुम्बपुत्रे  
संवत् १९६३ वर्षे वैशाख सुदि ३ सामवार श्री आदित्यनाग गोत्रे चोगवेड्या जा० न

[ 1347 ]

साठ पासा पुत्र ऊदा चाण पऊमादे पुण कामा गयमल देवदत्त ऊदा पुष्यार्थ शान्तिनाथ  
विंवं कारगपितं उशपल सिद्ध सूगितिः प्रति .... ।

[ 1848 ]

संवत् १६१७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साइ काजड़ गोत्र साइ चाण्सी चार्था नारंगदे  
पुण श्री वासपु श्री वासुपूज्य विंवं कारगपितं प्रतिष्ठितं श्री हीरविजय सूगितिः ।

जेन उपासरा का शिक्षा लेख ।

[ 1849 ]

- ( १ ) पृथ्वी नल मांहे प्रगटः वडां नगर वीकाण ।
- ( २ ) सुगनसोह महागजजुः गज करे सुविडाण ॥ १ ॥
- ( ३ ) गुणी कूमामाणिक्य गणिः पाठक पुन्य प्रधान ।
- ( ४ ) वाचक विद्या हेमगणिः सुप्रत सुव संस्थान ॥ २ ॥
- ( ५ ) सय अठार गुणसठ मे महिरवान महागज ।
- ( ६ ) नव्य वनाय उपासरो दियो मदा थिन काज ॥ ३ ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर—बाजार में ।

शिक्षाशेख ।

[ 1850 ]

॥ संवत् १५६२ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने वाग रवि । श्री बांकादेर मार्ये महागज  
गई श्री श्री श्री बांकाजी विजयगज्जे । देहरो कगयो श्री संय ॥ संवत् १३७३ वर्षे श्री  
जिनलाल सूगि प्रतिष्ठितः । श्री संदेवर सूजनाथ " श्री श्री आदिनाथ ननुविशति

पट्टे ॥ नवलक्षक रासख पुत्र नवलक्षक राजशख पुत्र श्री नवलक्षक साठ नेमिचंद्र सुश्रावणे  
माह वीरम दुसाऊ देवचंद्र कान्हूरु महं ॥ संवत् १५९१ वर्षे श्री श्री श्री चउवीस इन्द्रजी  
रो परघो महं वठावते जरायो ठे ॥

चौवीस जिनमाता के पट्टे पर ।

[ 1351 ]

॥ संवत् १६०६ वर्षे फागुण वदि ७ दिने श्री वृहत् खरतरगढे । श्री जिनचन्द्र सूरि  
वन्ताने । श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे ॥ श्री जिनहंस सूरि तत् पट्टालंकार  
श्री जिनमाणिक्य सूरिजिः प्रतिष्ठिता श्री चतुर्विंशति श्री जिनमातृणां पट्टिका कारिता ।  
श्री विक्रमनगर संघेन ॥

चरण पर ।

[ 1352 ]

संवत् १९०५ वर्षे आके १७७० प्रमिते माधव मासे शुक्ल पक्षे पौर्णिमास्यां त्रिंशो गुरुवा  
वृहत् खरतर गणाधीश्वर ज० । ज० । युग प्र० श्री १०८ श्री हर्ष सूरि जित्पाडुके श्री संवत्  
कागदिने प्रतिष्ठितं च ज० । ज० । यु० । प्र० । श्री जिनसौजाग्य सूरिजिः श्री विक्रमपुर  
देरे ॥ श्री ॥

श्रीमन्दिर स्वामी का मन्दिर—जांदासर ।

[ 1353 ]

सं० १५३० वर्षे मार्ग सुदि १७ जकेज ज्ञानीय वांद्दटिया गोत्रे साठ समुवर पुत्र  
साठ साहु साहु दुनेन श्री पद्मप्रत विंशं कारिने नया ज० श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री  
देरासर सुदिजिः ।

[ 1354 ]

सं० १५३० वर्षे मार्ग सुदि १७ जकेज ज्ञानीय वांद्दटिया गोत्रे साठ समुवर पुत्र

( ६९ )

श्रीमो नरसिंहं लौलादि कुटुम्बयुतयां श्री संजव विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री इन्द्रनन्द  
सूरिभिः पत्तने ॥ श्री ॥

कुंठ और नहर पर की शिलालेख ।

[ 1355 ]

॥ श्री नेमिनाथाय नमः ॥

श्री बीकानेर तथा पूरब बंगाला तथा कामरू देस आसामं का श्री संघ के पास प्रेरणा करके रुपया जेला करके कुंड तथा आगोर की नहर बनाया सुश्रावक पुण्य प्रजावक देवगुरुचक्रिकारक गुरुदेव को चक्र चोरडिया गोत्रे सीपानी चुन्निलाल शवतमलाणि सिरदारमल का पोता सिंधिया की गवांडु में वसता मायसिंध मेघराज कोठारी चोपड़ा मकसुदावाद अजिमगंजवाले का गुमास्ता और कुंड के ऊपर दारईकेलाव ( ? ) बकतावर चंद सेठिया बनाया संवत् १९५४ शाके १९९० प्रवर्तमाने मासोत्तममासे ज्ञाद्रवामासे शुक्ल पक्षे पन्नम्यां तिथौ चौमवासरे ।



मोरखानो-बीकानेर ।

[ 1356 ] \*

१. ॥ ॐ ॥ श्री सुसाणं कुलदेव्यै नमः ॥ मूलाधारनिरोधबुद्धफणिनीकंदादिमंदानिले ।  
( ९ ) नाक्रम्य ग्रहराज मंठ

\* यह स्थान "देशलोक" से दक्षिण-पूर्व कोण १२ मील पर है । यहां के देवी मंदिर में काले पाषाण पर यह लेख खुदा हुआ है और टेसिटोरी साहव ने अपने ई० सं० १९१६ की रिपोर्ट में छापी है । See J & P of the A S of "Bengal"  
Vol XIII. pp 214-215



१. वधिया प्राग्पश्चिमांतं गता । तत्राप्युज्वलचंद्रमंडलगतत्पीयूषपानोद्धसक्तै-  
व्यानुजव्या सदास्तु जगदानं
३. दाय योगेश्वरी ॥ १ या देवेन्द्रनरेन्द्रवन्दितपदा या जडतादायिनी । या देवी किं  
कल्पवृक्षसमतां नृणां दधा-
४. ... लौ । या रूपं सुरचित्तहारि नितरां देहे सदा विव्रती । सा सूराणासवंश  
सौख्यजननी ज्ञूयात्प्रवृद्धिं क-
५. री ॥ २ तत्रैः किं किल किं सुमंत्रजपनैः किं नेपजैर्वा वरैः । किं देवेन्द्रनरेन्द्र-  
सेवनतया किं साधुभिः किं धनैः । ए-
६. का या जुवि सर्वकारणमयी ज्ञात्वेति चो ईश्वरी । तस्याध्यायत पादपंकजयुगं  
तद्ध्यानलीनाशयाः ॥ ३ ॥ श्री भूरिद्धर्म-
७. सूरी रसमयसमयांचोनिधेः पारदृश्वा । विश्वेषां शश्वदाशा सुरतरुसदृशस्त्या  
जितप्राणिर्हिंसां । सम्यग्दृष्टिं ...
८. मनणु गुणगणां गोत्रदेवीं गरिष्ठां । कृत्वा सूराणवंशे जिनमतनिरतां यां चका-  
रात्मशक्त्या ॥ ४ तद्यात्रां महता महेन
९. विधिवद्विज्ञो विधायाखिले निर्गमे मार्गणचातकपृणगुणः सन्नारटंकठटः । जातः  
क्षेत्रफले ग्रहिर्मरुधरा धारा-
१०. धरः ख्यातिमान् संघेशः शिवराज इत्ययमहो चित्रं न गर्जिध्वजः ॥ ५ तत्पुत्रः  
सच्चरित्रे वचनरचनया जूमिराजः
११. समाजालंकारः स्फारसारो विहित निजहितो हेमराजो महौजाः । चंगप्रान्तुंग-  
शृगं जुवि जवनमिदं देवयानोप-
१२. मानं । गोत्राधिष्ठातृदेव्याः प्रसृमरकिरणं कारयामास जक्त्या ॥ ६ संवत् १५७३  
वर्षे ज्येष्ठमासे सितपक्षे पूर्णिमा-

१३. स्यां शुक्रे ऽनुगधायां षीमकर्णे श्री सूर्याणवंशे सं० गोसल तत्पुत्र सं० शिवराज  
तत्पुत्र सं० हेमराज तद्भार्या सं० हेमश्री त-
१४. त्पुत्र सं० धजा सं० काजा सं० नाढ्हा सं० नरदेव सं० पूजा ज्ञार्या प्रतापदे पुत्र  
सं० चाहड़ ज्ञा० पाटमदे पुत्र सं० रणधीर
१५. सं० नाधू सं० देवा सं० रणधीर पुत्र देवीदास सं० काजा ज्ञार्या कउतिगदे पुत्र  
सं० सहसमल्ल सं० रणमल
१६. सहसमल पुत्र मारुण । रणमल पुत्र धेता षीमा । सं० नाढ्हा पुत्र सं० सीहमल्ल  
पुत्र पीथा सं० नरदेव पुत्र मोकला-
१७. दिसहितेन । सं० चाहकेन प्रतिष्ठा कारिता सपरिकरेण श्रीपद्मानंद सूरि तत्पट्टे  
ज्ञ० श्री नंदिवर्द्धन सूरिश्चरेज्यः ॥

## चुरू-बीकानेर ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1357 ]

संवत् १३०४ ..... गढे ..... कारितं श्री पार्श्वनाथ विंवं ।

[ 1358 ]

॥ सं० १३०० ज्येष्ठ सु० १४ श्री जयसगढे धे० म ..... ला ज्ञा० मोपलदे पु० देहा  
कमा पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री ककुदाचार्य सं० श्री कम्क  
सूरिजिः ।

( १३ )

[ 1359 ]

सं० १४६९ वर्षे फा० वदि २ शनौ नागरं ज्ञातीय अखियाण गोत्र श्रै० कर्मा जार्पा  
धाण सुतं मूगं ज्ञातृ सांगा श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० अंचलंगछ ना० श्री  
मेरुतुंग सूरिजिः ॥

[ 1360 ]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० असवंशे नाहरे गोत्रे सा० हेमा ज्ञा० हेमसिरि पु०  
तेजपालह आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंवं का० प्र० धर्मघोषगछे .... ।

[ 1361 ]

सं० १५३० वर्षे फा० व० २ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० साह करमा ज्ञा० कुनिगदे पु० सा०  
दोला ज्ञा० देव्हा चोला ज्ञातृ जुणा स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंवं का० प्र० पूर्णि० कठोदी-  
बालगछे ज० श्री विद्यासागर सूरिणामुपदेशेन ।

[ 1362 ]

॥ सं० १५४५ वर्षे माह सु ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० श्रेष्ठि गोत्रे साह आसा ज्ञा० ईसरदे  
पु० जईता ज्ञा० जीवादे पुत्र चाहा युतेन पित्रो श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं  
महाहरउ गछे ..... ज० श्री कमलचंद्र सूरिजिः ॥

~~1363~~

गवालियर ( लस्कर ) ।

गंचायती मंदिर — सराफा बजार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1363 ]

ॐ सं० ११९० ज्येष्ठ सु० १२ देवम सुतया वीटिकया कारितेयं प्रतिमा ।

( १३ )

[ 1364 ]

सं० १३४० वै० सुदि ३ गुरौ श्रीमास ज्ञातीय ..... श्री प्रद्युम्न सूरिजिः ।

[ 1365 ]

संवत् १३९६ वर्षे वैशाख सु० ३ ..... प्रणमंति ।

[ 1366 ]

सं० १४९१ माघ सुदि ६ बुधे उप० वोहड़ वर्धमान गोत्रे सा० राणा ना० सूहवदे पु०  
महिषा मोकल श्रेयोर्थ श्री वासुपूज्य विं० कारितं खरतरगछे श्री जिनचंद्र सूरि पद्ये श्री  
जिनसागर सूरि प्रति० ॥

[ 1367 ]

सं० १४९७ फागुण वदि १० चंमेजरिया गोत्रे । सा० धर्मा पुत्रेण जीणाजूणान्यां  
निजपितृनिमित्तं श्रीपद्मप्रज विं० कारितं प्र० तपागछे नटारक श्री हेमदंस सूरिजिः ।

[ 1368 ]

संवत् १५०० वर्षे वैशाख सुदि ३ जाज श्रीमास ज्ञातीय । श्रे० सादा ना० मनुं सुत  
मार्द्ध्या चा० अष्ट सुत देवराजेन पितानिमित्तं श्री शीतलनाथ पंचनीर्था विं० कागपिमं  
प्रति० श्री ब्रह्माणगछे प्र० ज० श्री विमल सूरिजिः ।

[ 1369 ]

संवत् १५०१ वर्षे मा० सु० ५ श्री श्रीमास ज्ञातीय सं० तांदर सुत नटमा ना० नागि  
पु० सायकरणा वरनागयजिः पित्रो श्रे० चंद्रप्रज स्वामि विं० प्र० श्री वृहदत्त मा ..... गछे प्र०  
श्री मंगलचंद्र सूरिजिः ।

[ 1370 ]

सं० १५०५ वर्षे वै० सु० ३ जाज श्रीमास ज्ञातीय ..... श्री प्रद्युम्न सूरिजिः ।

सं० १५०७ वैशाख सु० ६ जूका बेविकान्यां स्वश्रेयसे कारिता .... ।

[ 1372 ]

सं० १५०८ वर्षे माघ सु० १० शनौ जकेशवंशे मादहू गोत्रे सं० जोजराज जा० जमा  
पुत्र सं० देवोकेन त्रा० सं० सोनार संग्रामादि सहितेन सू(?) जा० देवलदे श्रेयोर्थ श्री अजित  
बिं का० प्र० श्री खरतरगढे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[ 1373 ]

सं० १५१२ माघ सु० १ बुधे श्री ओसवाल ज्ञातौ सुहणाणी सुचिंती गो० सा० सारा  
जा० नयणी पु० श्रीमालेन जा० षीमी पु० श्रीवंत युतेन मातृश्रेयसे श्री आदिनाथ विं  
कारितं उपकेशगढे ककुदाचार्य सं० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1374 ]

सं० १५१३ पौष सु० ७ जकेशवंशे वि .... क गोत्र सं० नरसिंहांगज सा० मार पुत्रेण सा०  
कीढहाकेन निजमातृपुण्यार्थ श्री नमि बिंबं का० प्र० ब्रह्माण तपागढे उदयप्रन्न सूरि  
जहारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पढे श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[ 1375 ]

सं० १५१३ वर्षे माह सु० २ जकेश पीथेपरिया गो० सा० बिथपाल चार्या वेमथी ....  
पु० जापू सेपू जा० सोम श्री ..... माथी ..... प्ररपोध (?) आ० श्रेयसे श्री आदिनाथ विं  
का० प्र० श्री वृहज्जठे श्री सागरचंद्र सूरिजिः ।

[ 1376 ]

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे गूर्जर ज्ञातीय दो० अमरसी जा० रूपिणि सु

( ७५ )

ऊसाकेन ज्ञा० वंङ्जीयुतेन पितुरादेशेन आत्मश्रेयसे जीवितस्वामी श्री धर्मनाथ त्रिवं  
कारितं पूर्णिमापक्षे त्रीमपल्लीय जट्टारक श्री जयचंद्र सूरीणमुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[ 1377 ]

सं० १५२० वर्षे वैशाख सुदि ए सोमे श्रीमाल ज्ञातीय रुड्डा (?) गोत्रे सा० वठराज  
पु० सा० जाटा ज्ञार्या गजवदे पु० सा० ठाजू ज्ञार्या हर्षमदे पु० सा० रत्नपाल सीधर समदा  
सायराज्यः स्वपितृणां श्रेयसे श्री श्री सुविधिनाथ त्रिवं का० प्र० श्री धर्मघोषगढे श्री  
विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः ॥

[ 1378 ]

॥ संवत् १५२१ वर्षे वैशाख वदि ७ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० देवसीय ज्ञार्या पाट्टणदे  
पुत्र सा० ज्ञासवेन ज्ञा० माकू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पद्मप्रज्ञ त्रिवं कारापितं प्रतिष्ठितं  
श्री साधुपूर्णिमापक्षे ५ । श्रीरामचंद्र सूरि पट्टे पुज्य । श्री पुज्य चंद्र सूरीणामुपदेशेन विधिना  
आचष्टे ।

[ 1379 ]

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि ७ जौमवारे प्रामेचा गोत्रे सा० जाटा ज्ञा० जट्टो पुगपी  
साता जाटी पु० जट्टवदास ..... ज्ञा० डुह्लादे सहितेन वाठि निमित्ते श्री धर्मनाथ त्रिवं  
कारितं खरतरगढे प्रतिष्ठितं श्री जिनचंद्र सूरिभिः । शुभं भवतु ।

[ 1380 ]

सं० १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे श्री कोण्टगढे श्री मद्रगय नंताने उव० पोना०चा  
गोत्रे सा० जगदास ज्ञा० जासुहदे पु० सा० नांग ज्ञा० नंनारदे पु० ना० मेदा नरति  
सहितेन श्रेयसे श्री सुमतिनाथ त्रिवं प्र० श्री नांददेव नूरिभिः ॥

[ 1381 ]

संवत् १५३३ वर्षे नाव सुदि १३ नानदावरे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० देवा टा० सा० पु०

स० बभ्रूया ज्ञा० काही .... पु० स० वता ज्ञा० मजकूं पुत्र कूंगर आत्मश्रेयसे श्री विमलनाथ  
विंबं कारितं साधुपूर्णिमापक्षे प्रतिष्ठितं श्री जयशेखर सूरिनिः ।

[ 1382 ]

सं० १५३४ वर्षे फागुण सुदि ए बुधवारे प्रा० ज्ञा० सा० मोकल ज्ञा० मोहणदे पु०  
मेहाके० ज्ञा० कुंती पु० रो० ज्ञा० लषमण आसर वीसल सहितेन आ० श्री वासुपूज्य विंबं  
का० प्र० पू० द्वि० कछोली वा० ज० श्री विजयप्रज्ञ सूरीणामुपदेशेन ।

[ 1383 ]

संवत् १५४९ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ सोमे आसवाल ज्ञातीय सा० मूला ज्ञा० माणिकदे सं०  
माणिक ज्ञा० गंगादे सु० चूनं च ज्ञा० छाठी विंबं कारितं मूला श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य विंबं  
का० प्रतिष्ठितं । श्री संकरगढे श्री सुमति सूरिनिः ॥

[ 1384 ]

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुगै उपकेश ज्ञा० चूरि गोत्रे सा० चांपा चउहथ चां०  
ज्ञा० चांपले पु० कान्हा ज्ञा० चंगी पु० देवा शिवा सुकुटुम्बयुतेन चउहथ श्रियोर्थं श्री  
सुविधिनाथ विंबं श्री धर्मघोषगढे ज० श्री श्रुतसागर सूरिनिः प्रतिष्ठितं । शुचं जवतु ॥

[ 1385 ]

सं० १५६७ वर्षे वैशाख सुदि १० बुधे गूंदेचा गोत्रे जकेशवंशे सा० ठाकुर जार्या दहन  
पु० ऊधा सुत कचा वर्जू ज्ञा० २ जसा गुणा प्रमुख कुटुंबसहितैः श्री अंचलगढे जावसागर  
सूरीणामुपदेशेन ।

[ 1386 ]

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे ज० ज्ञा० फूलपगर गोत्रे सा० दधीरथ पु० सा०  
धर्मा ज्ञा० २ पात्र साद्वही पञ्चू .... पु० जांजा ज्ञा० घूरी .... पुत्र मोकल प्रमुख समस्त

कुटुम्बेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री वडगढे श्री श्री चंद्रप्रज्ञ सूरिनिः ॥  
॥ श्री ॥ जावर वास्तव्य ॥

[ 1387 ]

सं० १५७९ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे कूकर वाड़ा वा० नागर ज्ञातीय श्रे० कान्हा ज्ञा०  
धनी सु० श्रे० हरपतिलक्षणकेन ज्ञा० लषमादे प्र० क० सुतेन नपा सीपा पदमा श्रे० श्री  
श्रेयांसनाथ विंवं का० श्री बृहत्तपा प० श्री धनरत्न सूरि श्री सौजाग्यसागर सूरिनिः  
प्रतिष्ठितं ॥

[ 1388 ]

संवत् १६२७ वर्षे वैशाख शुदि ३ शुके जकेशवंशे गोठ १ गोत्रे सोप श्रीवड सोप जोला  
पुत्र सो० उदयकरण ज्ञार्या अठवोदे पुत्र सो० जसवीर । सो० नका सो० धवजी प्रपुख  
परिवारयुतैः श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्री बृहत्खरतरगढे श्री जिनसिंह सूरिनिः प्रतिष्ठितं  
॥ श्रीः ॥

चौवीसी पर ।

[ 1389 ]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि १० श्री उपकेश ज्ञातीय वापणा गोत्रे सा० देहड़ पु०  
देव्हा ज्ञार्या धाड़ पुत्र सा० लूला जीमा कान्हा स० जीमाकेन ज्ञा० वीराणि पुत्र श्रवणा  
मानू जाजू सहितेन श्री शांतिनाथ मूलनायक प्रभृति चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री  
उपकेशगढे ककुदाचार्य संताने प्र० श्रीसिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिनिः ॥ शुनं ॥

[ 1390 ]

सं० १५४१ वर्षे आषाढ सु० ३ शनौ उप० श्रेष्ठि गोत्रे सा० रामा ज्ञा० रत्न पु० राजा  
भाजा शिवा राजा ज्ञा० टह्कू पु० वना सांगा सांगा गीर्झ्या थ्यामा नददेव ज्ञार्या नटी  
सा० सांगाकेन ज्ञा० करमी छि० ज्ञा० रामति प्र० समस्तकुटुम्बसहितेन वानू वना



निमित्तं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्टकं का० श्री मद्भूद्भु गच्छे रत्नपुरीय ज० श्री धर्मचंद्र  
सूरि पट्टे ज० श्री कमलचंद्र सूरिजिः ॥ शाब्दमलीयपुरे ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1391 ]

सं० १६०५ वर्षे वै० सु० १५ दिने इंदलपुर वास्तव्य प्रा० वाद ( प्राग्वाट ) ज्ञातीय  
वाई वज्र का० श्री संजव विं० प्र० श्री । विजयदेव सूरिजिः ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1392 ]

संवत् ११०७ फागुण सुदि ए साविगदे लूण वति जा० कारिता ।

[ 1393 ]

सं० १३०६ माह वदि ३ श्री बृहज्ज वा० श्री देवार्य स० ऊकेश ज्ञा० श्रे० आसचंद्र  
सा० श्रे० देदारिसीहेन पितृश्रेयसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री अमरचंद्र सूरि शिष्यैः  
श्री धर्मघोष सूरिजिः ॥

[ 1394 ]

॥ सं० १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातौ म० साब्दा सुत पितृ म० मूल  
मातृ मूनी सुत ठकुरसिंहेन पितृमातृश्रेयसे श्री संजवनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री  
ब्रह्माणगच्छे श्रीवीर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1395 ]

सं० १४६७ वर्षे माह सुदि ६ पंकेरकीयगच्छे ज० सा० अजा जा० कपूरवे सुं० तिहुअण

( ५९ )

जा० माह्णदे पु० तेजाकेन पितृ घस्समेठी सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांति विंशं का०  
प्रति० श्रीसुमति सूरिभिः ॥

[ 1396 ]

सं० १४९० वर्षे माघ सु० १२ गुरुवारे आदित्यनाग गोत्रे सा० सलपण पुत्र कर्मण  
जा० सांवत दीर तेजाकेन श्री शांतिनाथ विंशं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीदेव सूरिभिः ॥ ० ॥

[ 1397 ]

सं० १४८९ माघ सुदि १० शनौ श्रीमाल ज्ञातीय सं० पेशा संताने सं० ठाडा जा०  
नाज नाम्ना पु० कान्हा सोजा सहितया ऋतु श्रेयसे श्री श्रेयांस विंशं का० प्र० श्री पूर्णिमा  
पक्षे श्री विद्याशेखर सूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

[ 1398 ]

संवत् १४९९ माह सुदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय वीटवल व्य० पाना सुत वयरसी  
चार्या नाही .... पितृमातृश्रेयोर्थं सुत मेलाकेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंशं कारापितं  
श्री नागेन्द्र गढे श्री गुणसागर सूरिः शिष्यैः प्रतिष्ठितं श्री श्री गुणसमुद्र सूरिभिः ॥ श्री  
सांतपुरे पितृव्य देवदवणीषी ।

[ 1399 ]

सं० १५०४ वर्षे फागण शु० ११ गुरौ दिने नाहर गोत्रे सा० जादड़ जा० नोनाही  
सा० राजा जा० लादू .... पु० जाजू सहितं निजपुण्यार्थं श्री बानुपुत्र्य विंशं का० प्र०  
श्री धर्म० गढे श्री विजयचंद्र सूरिभिः ।

[ 1400 ]

सं० १५०९ ज्येष्ठ सुदि २ दिने जकेदाबंने सा० नोएनी चार्या कपूरदे आदित्यया निज  
ऋतु चौखतीपुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंशं का० प्रति० नगनगनाधिगज श्री जिनगज  
सूरि पद्माडकार प्रति० श्री जिनरुद्र सूरि गजेः ।

[ 1401 ]

ॐ ॥ सं० १५११ वर्षे माघ वदि ए ढोहरिया गोत्रे सा० दातु पूरेण ..... श्री विमलनाथ  
विंबं कारितं प्र० तपा जट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

[ 1402 ]

सं० १५११ फा० शु० ए रवौ प्राग्वाट० सा० पेषा चार्या राजू सुत वीढाकेन चार्या  
कमा सुत दरपाल टाहा जरकीता जरमा कगतादि कुटुम्बयुतेन श्री संजवनाथ विंबं स्वश्रेयसे  
कारितं प्रतिष्ठितं तपागञ्ज नायक जट्टारक श्री सोमसुंदर सूरि प्रांषज श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥

[ 1403 ]

सं १५१३ वर्षे मा० व० ५ प्राग्वाट व्य० तिहुणा चा० कर्मा पुत्र हासा जगिन्या व्य०  
दरुा पट्टया श्रा० मनी नाम्न्या श्री वासुयुज्य विंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर  
सूरिजिः ॥

[ 1404 ]

संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० बुधे श्री कोरंटगच्छे उपकेश झा० काला पमार शाखाया  
सा० सोना चा० सहजलदे पु० सादाकेन चातृ चउड़ा चादा नेमा सादा पु० रणवीर वणवीर  
सहितेन स्वश्रेयसे श्री चंद्रप्रज विंबं कारि० श्री कक्क सूरि पट्टे श्रीपाद ..... ।

[ 1405 ]

संवत् १५१८ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय बजोला चार्या देमाइ सुत  
व्यव० कुरुपालेन चार्या कमलादे सुत व्यव० विद्याधर वीरपाल प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थ  
श्री मुनिसुवत स्वामी विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागञ्जनायक जट्टारक श्री सूरसुंदर सूरिजिः ॥  
श्रीपत्तन वास्तव्य शुभं जवतु ॥ श्री ॥

[ 1406 ]

॥ संवत् १५१८ वर्षे माह सुदि १० दिने श्रीमालवंशे । पट्टहवड़ गोत्रे सा० मेया चार्या

मेलाही पु० सा० वीरमेन जार्या षीमा पु० सा० समरा सहसू श्रे० श्री शांतिनाथ विं० प्र०  
श्री वृहज्जठे श्री रत्नाकर सूरि प० श्री मुनिनिधान सूरि श्री मेरुप्रज सूरिजिः ॥

[ 1407 ]

सं० १५११ वर्षे वैशाख सु० १० सोमे ओसवाल झा० सा० ठाकुरसो जा० वीसखदे  
सुत सा० धनाकेन जार्या सोनाई पुत्र सा० हांसादियुतेन सुता बाबू श्रेयसे श्री शीतलनाथ  
विं० कारितं प्रति० श्री वृहत्तपापके श्री उदयवह्मन सूरिजिः ।

[ 1408 ]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री संडेरगठे ओसवाल झा० राणु द्राथेच (?) गोत्रे  
केद्रादेन जणा आद्वू पु० गोकाला लुदेद्व " " जयनादर्पदयुतेन आत्मपुण्यार्थ श्री चंद्रप्रज  
स्वामि विं० का० प्र० श्री " " सूरि संताने श्री शांति सूरिजिः ।

[ 1409 ]

सं० १५३३ माघ सुदि ५ श्री आदिनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री जयशेपर मूर्तिजिः ।

[ 1410 ]

सं० १५३६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ सोमे श्री १ माघ झा० महाजन । सदा जा० मृदुवदे  
सुत वीका आका महा० वीका जा० कपूर सुत ताद्व्हा कान्हा जनामहिनेन मानृपिनृश्रेयसे  
श्री विमलनाथ विं० का० प्रति० श्री चैत्रगच्छे श्री लक्ष्मीनागर मूर्ति० चांडनमीया अमागि  
गोयं वास्तर ( ? ) वा० ।

[ 1411 ]

॥ सं० १५३६ वर्षे माघ सुदि ६ सोमे प्रा० । ज्ञानि ना० नन्दार ना० महज्जठे मृत  
सा० सूरु पाद्व्हा सा० जोगा जार्या कनी सुत डनड प्रसुम्पडुद्वयुतेन स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ  
विं० कारितं प्रतिष्ठितं प्र० " " सूरिजिः ॥ ६ ॥ श्री ॥

सं० १५५४ वर्षे वरडउद वास्तव्य ज्जकेश ज्ञातीय गांधी गोत्रे सा० सारंग ज्ञार्या  
जादही पुत्र सा० फेरू ज्ञार्या सूहृवेदकेन ज्ञाराज्युतेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री अंचलपदके श्री सिद्धान्तसागर सूरिजिः ।

[ 1413 ]

सं० १५५७ वर्षे वैशाख सु० ६ शुके ज्जकेशवंशे ज्ञणसाली गोत्रे ज्ञ० गुणराज पु० ज्ञ० सहदे  
पु० ज्ञ० हासा ज्ञ० राजी ... पु० ज्ञ० वसुपाल ज्ञा० लीला पु० ज्ञ० सालिग सुश्रावकेण ज्ञा०  
नीमी प्रमुखपरिवारयुतेन पितृश्रेयोर्थं स्वपुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री ।

[ 1414 ]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख शु० ७ बुधे उपकेश ज्ञा० श्रे० सालिग सुत श्रे० नरवद ज्ञा०  
पेतृ पुत्र राणाकेन पितुः पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री बृहज्ज्जे वोकडिया  
वंदुकेन श्री श्री श्री मलयचंद्र सूरि पट्टे श्री मण्चिंद्र सूरिजिः ॥

[ 1415 ]

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दि० श्रीमाल धांधीया गोत्रे सा० सारंग पु० सा० दोदा  
ज्ञा० संपूरी पु० सा० कालण सा० जदा सा० ठाला सा० कालण पु० गोपचंद्र श्रीचंद्र  
इत्यादिष्विदृशान्यां सा० जदा० सा० टालान्यां श्री सुविधिनाथ विं० का० स्वपितृव्य  
वेदा श्री नंनरी पुद्गार्थं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[ 1416 ]

सं० १५७१ वर्षे वैस सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोचा गोत्रे गोत्रजा वायण सा० पद्मा ज्ञा०  
चांगू पु० दानः ज्ञा० कर्मा पु० कर्मा अयाई लावेता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ विंवं  
का० प्र० श्री नंनर गणे कवि श्री ईश्वर सूरिजिः ॥ श्री ॥ श्री चित्रकूटपुरे ।

( ७३ )

धातु के यंत्र पर ।

[ 1417 ]

॥ संवत् १७५५ वर्षे आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्रं यंत्रमिदं । प्रतिष्ठितं वा । द्वावण  
कमल गणिना । कारितं श्री नागोर नगर वास्तव्य लोढा गोत्रे ज्ञानचंद्रेण श्रेयोर्थं ॥ श्रीरस्तु ॥

[ 1418 ]

ॐ ॥ श्रीमन्त्रिं च गच्छे संगंनद्र (?) देव सूरीणां महप्प गणिना च ०..... ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—दादावाड़ी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1419 ]

॥ सं० १३०१ माघ शुक्ल ५ कुशल पु ..... श्री शान्तिनाथ विंशं ।

[ 1420 ]

संवत् १४४३ वर्षे वै० सु० १३ श्री मूलसंघे ..... ।

[ 1421 ]

सं० १४७३ वर्षे सा० सुदि ३ श्रीनाथ दा० श्रे० नाथ दा० सदा सु० श्रे० देवगज  
हरपति ब्राह्मणुत श्रे० बरसिंह शार्दा कृष्णदे सुत पर्वतेन तार्या वरण निज विन्दुनामृश्रेयमे  
श्री मुनिसुवत विंशं कारितं प्र० श्री तारागुल नाथक श्री श्री श्री गोमन्नुंदर मृगिनिः ।

[ 1422 ]

॥ सं० १४९६ वर्षे वैशाख सु० ५ वृधे श्री श्रीनाथ डानीव श्रे० नाथ दा० शार्दा

युतौ साखगगदा श्री सुविधिनाथ विंबं कारापितं श्री मुनिसिंह सूरीणामुपदेशेन प्र० श्री  
शीखरत्न सूरिजिः ॥ शुभं ॥

[ 1423 ]

॥ सं० १५३६ वर्षे माह सुदि ५ ओसवालान्वय सूराणा गोत्रे सं० नाद्धा जा० नावद्धं  
ज० । यग पक्षु सनषन कारापित वासुपूज्य वि० धर्मघोष गच्छे श्री ... सूरि प्रतिष्ठितः ।

## मुरार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1424 ]

सं० १४९६ वर्षे फा० व० २ हुंबड़ ज्ञातीय ऊ० चाकम जा० वाद्धणदे सुत करमती  
देवसीद्वाच्यां निज पितृश्रेयोर्य श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ महर्ष  
जवतु ॥ ठ ॥

चरण पर-दादावाड़ी ।

[ 1425 ]

सं० १९२१ शा० १९०६ माघ मासे शुक्लपक्षे पष्ट्यां-६ पूर्व तु मरुदेशे मेरुतेति नाम  
नगरस्थोऽभूत् अथुना च मुरारि ठावण्यां वास्तव्य धाड़ीवाल गोत्रीय शंभुमल्ल सुजान  
मह्लाच्यां युगप्रधान दादा श्री जिनदत्त सूरीणां श्री जिनकुशल सूरीणां च पादन्यासो  
कारापितौ प्रतिष्ठितौ च वृ । ज । खरतरगठीय श्री जिनकट्याण सूरिजिः उ० माणिक्यचंद्र  
तद्विष्य पं० हुकुमचंद्रोपदेशात् ।

# ग्वालियर ( गोपाचल ) दूर्ग ।

शिलालेख । ७

[ 1426 ] †

पहला पत्थर ।

- ( १ ) ॐ नमः पद्मनाथाय । हर्षोत्फुल्लविलोचनैर्दिशि दिशि प्रोज्जीयमानं जनैर्मेदिन्यां विततन्ततो हरिहरब्रह्मास्पदानि क्रमात् । श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्री पद्मचूभृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्म्मलवपुः श्वेतानि रुद्रश्चिरम् ॥ १ ॥ मौलिन्यस्तमहानीलशकलः पातु वो हरिः । दर्शयन्निव केशस्थ नवजीमूत कर्णिकाम् ॥ २ ॥ मुक्ताशैलच्छलेन क्षिति
- ( २ ) सकयशो राशिना निर्म्मतोऽयन्देवः पायापुषायाः पतिरतिधवलस्त्रकान्तिर्जगन्ति । मन्वानः सर्वथैव त्रिचुवनविदितं श्यामता पहवं यः शङ्के स्वं वर्णचिह्नं मुकुटतटमिदन्नीलकान्त्या विजति ॥ ३ ॥ इदं मौलिन्यस्तं न जवति महानीलशकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितश्चैय
- ( ३ ) जगवान् । उपाकर्णोत्तंतीकरणसुजगं नीलनलिनं वहल्यथाप्यस्याश्चिरविरहपाण्डूकृततनुः ॥ ४ ॥ आसीद्दीर्घसुकृतेन्द्रतनयो निःशेषजमीभृतां वन्यः कठपघातवंशतिषकः क्षौणीपतिर्षक्षणः । यः कोदण्धरः प्रजाहितकरश्चक्रे स्वचित्तानुगाङ्गामेकः पृथुवत्पृथूनपि इठापुत्पाद्यपृथ्वीभृतः ॥ ५ ॥ तस्माद्भ्रजधरोपमः क्षिति
- ( ४ ) पतिः श्रीवज्रदामाजवद्दुर्वारोर्ज्जितबाहुदण्डविजिते गोपाद्रिदुर्गे युवा । निर्व्याजं परिच्यु वैरिनगराधीशप्रतापोदयं यद्दीरव्रतसूचकः समजवत् प्रोढोपणाङ्गिनिमः ॥ ६ ॥

● ग्वालियर किले के लेख डा: राजेन्द्रलाल मिश्र के " इंडो-एशियन् " में छपे थे । यह पुस्तक मद्र मुद्रायय संस्ते के काल

● जो यहां प्रकाशित किये गये ।

† Indo-Aryans, Vol. II pp. 370-373



न तुलितः किल केनचिदप्यञ्जगति ऋमिश्रुतेति कुतूहलात् । तुलयतिस्व तुला  
पुरुषः स्वयं खमिह वर्ष्म विशुद्धहिरण्यैः ॥ ७ ॥ ततो रिपुध्वान्तसहस्रधामा  
नृपोन्नव-

( ५ ) नमङ्गलराजनाभा । यज्ञेश्वरैकप्रणति प्रजावान् महेश्वराणाम्प्रणतः सहस्रैः ॥ ८ ॥  
श्री कीर्तिराजो नृपतिस्ततोऽन्यस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थैः । धूलीवितानैः सममेव  
चित्रं मित्रस्य वैवर्ण्यमञ्जूद् द्विवश्च ॥ ९ ॥ किं ब्रूमोस्य कथामृतं नरपतेरेतेन  
शौर्याब्धिना धत्ते मालवञ्चूमिपस्य समरे सङ्ग्रामतीतोर्जितः यस्मिन् रङ्गमुपागते  
दिशि दिशि त्रासा-

( ६ ) त्कराग्रच्युतैर्ग्रामीणाः स्वगृहाणि कुन्दनिकरैः सञ्जादयाञ्चक्रिरे ॥ १० ॥ अद्भुतः  
सिंहपानीयनगरे येन कारितः । कीर्तिस्तम्भश्चात्ताति प्रासादः पार्वतीपतेः ॥ ११ ॥  
तस्मादजायत महामतिमूलदेवः पृथ्वीपतिर्जुवनपाल इति प्रसिद्धः । श्री नन्ददण्ड  
गदनिन्दितचक्रवर्तिचिह्नैरलंकृततनुर्मनुतुद्व्यकीर्त्तिः ॥ १२ ॥ यस्य ध्वस्तारि ऋपालां  
सर्वाम्पालयतः

( ७ ) प्रज्ञोः । जुवन् त्रैलोक्यमल्लस्य निःसपत्नमञ्जुङ्गात् ॥ १३ ॥ पत्नी देवव्रता तस्य  
हरेर्लक्ष्मीरिवात्तवत् । तस्यां श्री देवपालोऽन्यत्तनयस्तस्य ऋपतेः । दानेन कर्णमजयत्  
पार्थ कोदण्डविद्यया । धर्मराजश्च सत्येन स युवा विनयाश्रयः ॥ १४ ॥ सुनुस्तस्य  
विशुद्धबुद्धिविज्वः पुण्यैः प्रजानामञ्जुन्मान्धातेव स चक्रवर्तितिलकः श्रीपद्मपालः  
प्रभुः यत्स्वाम्येपि क-

( ८ ) रप्रवृत्तिरपरस्येतीव यश्चिन्तयन्दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरुणं सान्द्रैश्चमूरेणुजिः ॥ १५ ॥  
॥ कृत्वान्याः स्ववशे दिशः क्रमवशात्सद्भापतिर्दक्षिणानुत्खिप्ताचलसन्निजानविरत  
... वाजिब्रजैः । उद्भूतान् पततः-प ..... संप्रेक्ष्य रेणुत्करान् ऋयोप्युद्भटसेतुवन्धन-  
धिया त्रस्यन्ति ... ॥ १६ ॥ तस्येन्दुद्युतिसुन्दरेण यशसा नाके सुराणांगणे  
सौवर्ण्यत्रमशीलखंरुन-

- ( ९ ) जयादप्राप्तुवत्यः प्रियान् । नूनं शक्रपुरः सुरासुरवधूसङ्घाः श्रिये साम्प्रतं .....  
 यन्ति ये प्रथमतः सर्वा वपुः संश्रिते ॥ कैर्हृप्ता .... पादपां गावःकामडुघा .... कैश्चि-  
 न्तितार्थप्रदाः । पूर्णाः कस्य मनोरथा इह न कैः .... मुना पूरिता वीरो यानि तदस्ति  
 तद्गुणवतः कस्य द्रुमादीन्यपि । श्रुत्वा न पद्मनृपतिं परिरक्षितारं प्राप्नोदस्योपि  
 यदसौ वंते नम्रजावः ।
- ( १० ) योद्यापि .... तनुर्विपिनेष्यशो .... ॥ अमः कुलालचक्रे च लाजः पुण्यार्जनेषु च ।  
 काठिन्यं  
 कुम्भेषु क .... शासत्रिमर्दिनीम् ॥ असम्मतो .... पीमा साधुर्न निखिंशपरि .... तोपि  
 इ .... बलमेन धनुर्न चासिं तथापि या वैरिगणं जिगाय । सद्य ....
- ( ११ ) .... पाधिप शिरोमणिं जि .... । लोकानुरागयशसापि .... प्रतापं विस्तारयां यदसि  
 .... ॥ बलयानीव नारीणां हिमानीव नजःश्रियः । .... स विमृश्य नदीपूरचत्वरे  
 सम्पदायुषः पूर्वधर्मे मतिं चक्रे जिघृक्षुरनयोः फलम् ॥ प्रजा .... त्वते
- ( १२ ) न क्षितितिलकचूतं न जवनं .... कारितमदः । .... मिव गिरा यस्य शिखरं  
 समारूढसिंहो मृगमिव नृ .... मशितुम् ॥ .... सश्च .... वरशिखरस्पर्द्धिनो हिममाण्  
 .... त्यावतीयं शशिकरधवला वैजयन्ती पतन्ती । निर्व्वीतं जाति चूतिचतुरितनिज-  
 तनोर्देवदेवस्य शम्भोः स्वर्गाज्ञज्ञेव पिङ्गस्फुटवि-
- ( १३ ) कटजटाजूटमध्यं विशन्ती ॥ तदेतद्ब्रह्माणं स इह जविता पद्मजजुवः पुनर्वयं  
 बोढाल्लो वयमिह .... वियति .... । .... तदिदमुररीकृत्य सक्रयं ध्रुवं संसेवन्ते हरिपदन  
 .... तममी ॥ .... कनकाचक्रः शुभ्रविद्यावन्तः स्थितः श्रीपतिर्विच्राणोद्भिजसत्तमानुदधि-  
 जावातो नृसिंहान्वितः । निर्म्माता स्ववृतः समस्तविबुधैर्व्यधप्रनिर्णयं प्राप्नोदश्च
- ( १४ ) धरातले तममहो कल्पं हरेः कल्पताम् । - द्विजपुङ्गवेषु प्रतिष्ठितेष्वष्टषु पद्मपाश्र्वः  
 युवैव देवप्रतिकूलजावा .... बभूव ॥ तस्य ज्ञाना नृपतिरनवत् सूर्यपाश्र्वस्य मृतुः श्री

गोपाहैः प्रकृतनिलयः श्री महीपालदेवः । यस्प्राप्यैव प्रथितयशसन्तावजूतां सनाथो  
सोयं त्यागो हरिरविसुताजावडुस्थोऽचिरेण । सृष्टिङ्कुर्वन्नमात्यानां विप्रा-

(१५) णां स नृपस्थितिम् । प्रलयं विद्धिपामासीद् ब्रह्मोपेन्द्रहरात्मकः यत्र धामनिधौ गङ्गा  
पालयत्यवनीतलम् ॥ .... मुद्गहन्ति शिरसःखलु राजहंसाः सृष्टास्त्वया पुनरिमाः  
समयावसन्नाः । नाथ प्रजा सुमनसां प्रथमो .... सि त्वं सिद्धवीररसता-

(१६) मरसोद्भवस्य ॥ लक्ष्मीपतिस्त्वमसि पङ्कजचक्रचिह्नं पाणिद्वयं वहसि जूप जुवं विजृम्भितं  
श्यामं वपुः प्रथयसि स्थितिहेतुरेकस्त्वं कोपि नीतिविजितो ..... सम्पालयस्य निश-  
मर्थिजनस्य कायं रामश्रिया त्वमसि नाथ मु .... । सङ्कर्षणस्त्वमसि विद्धिपदायुधन्तं  
त्वं कोसि सञ्चरितहालहलायुधस्य ॥ .... ख्यातारति .... रूपं तवातिश ....

(१७) यविस्मयकारिदेव । त्वं मीनसिद्धपुरुषोत्तमसम्भवोसि कस्त्वं द्वितीश्वरशंकर  
सूदनस्य ॥ जूजृतसुता पतिरसि द्विषतां पुराणि जेत्ता त्वमीश .... म् । जूर्ति  
दधास्य मलचन्द्रविजृम्भिताङ्गः कस्त्वं सदम्बुजदिवाकर शङ्करस्य ॥ त्वं तेजसा शिखिन  
मिद्धमधः करोषि शक्तिं दधासि .... । त्वन्तारकं रिपुबलं

(१८) .... बलान्निहंसि कस्त्वं नवीनलनीलमलब्धजन्मा (?) ॥ त्वं वज्रजृत्त्वमसि पद्मत्रिदप्य-  
शेषं जूमीभृतां विबुधबन्धगुरुप्रियोसि .... दुर्गाचरणोसि कोसि त्वं ज्मीमसाहससहस्र-  
विलोचनस्य । ख्यातं तवेश बहु पुण्यजनाधिपत्यं कान्तालकावल्लिजिरासतमैः सुगुप्ता ॥  
त्वामामनन्ति परमेश्वरबद्धसख्यं त्वं कोसि सद्गुणनिधानधरा-

(१९) धिपस्थ । तेजोनिधिस्त्वमसि जूमिजृतः समग्राः क्रान्ताः करैः प्रयतमुग्रतरैस्तवेश ।  
प्राप्तोदयः सततमर्थिजनस्य कोसि त्वं कद्वपजूधरसरोरुहबान्धवस्य ॥ ध्यानन्ददोसि  
जनतानोत्पलानामाप्यायिताखिलजनः करमार्दवेन । त्वं शश्वदीश्वरशिरस्तद्वदत्त-  
पादस्त्वं कोसि मर्त्यजुवनेश निशाकरस्य ॥ त्वामंशमीश नि-

(२०) गदन्ति मधुद्विपोमी श्यामाजिरामतनुरस्य मलप्रबोधः पुण्यं .... रतमिदं विहितं त्वयैव



- ( ४ ) समरचैरवकैरवस्य ॥ त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसि सश्वन्मङ्गल्यज्जुस्वमसि  
निर्मलताजिरामः । कोसि प्रसीद बहु सद्गुणरत्नयोनिस्त्वंकञ्चपारिकुलज्जुष  
ज्जुषणस्य ॥ धात्रा परोपकरणाय विसृष्टकायः सहायजन्मसमलंकृततुङ्गोत्र ।  
ब्रूहि .... मवनीश्वरवन्दनीयस्त्वं कोसि सूर्यनृपनन्दन चन्दनस्य .... ॥ नत्वाशु  
शुरूहृदय प्रथितो-
- ( ५ ) ग्रमायस्त्वं जानुना कृतवृषो न जमीकृताहस्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथं ते ॥  
नित्यं सन्निहिते कृपाणतमसा प्रायोजिञ्जुयेत स त्वन्नासाद् जुवनैकनाथ हरिणा-  
स्तस्योदरे प्राविशन् । मूर्तिस्ते च कलङ्किता सजम्नां धत्ते .... : शङ्खस्थैर्विदित  
स्तथापि नृपते राजा त्व....द्भुतः....विमुखतां पार्थेन नीताः परे व्यसिनस्तुतिरर्जुन-
- ( ६ ) स्याविहिते व्यज्ञायि पूर्वं किल तत्सम्यक् प्रतिजाति सम्प्रति पुनः श्रीमन्मही-  
पालवत् त्वामालोक्य सहस्रशो रिपुबलं निघ्नन्तमेकं रणे ॥ किं ब्रूमोपि .... स्तं  
नीतिपात्रं परं वृत्तान्तं जगतीपतेरत्तिष्ठणात्मप्रियाणां शृणु । कीर्त्तिर्त्राम्यति दिक्षु  
.... किं चित्रं जुवनैकमद्वयं यदि
- ( ७ ) मन्दाकिनोपद्मज्जुलोकाडुद्धरता जगीरथनृपेणानायि निम्नां महीम् । आश्चर्यं  
पुनरेतदीश यदि ते निम्नान्महीमंरुलाहूर्द्धं कीर्त्ति....णीकमलज्जुलोकं त्वया प्रापिता ।  
चित्रं नात्र फल .... सर्वात्मना विद्मिषो विशिखैः समूर्च्छितस्याहवे । .... मध्यं
- ( ८ ) न्नताश्चर्यकृत् ॥ अत्यंबुधिजवद्वैमत्यादित्यजवन्महः । अतिसिंहजवत्शौर्यमतः  
केनोपमीयते ॥ केयूरं बलज्जुपालजुजदाणे विराजते किरीटमिव .... त्रिधासि विजय-  
श्रियः । .... जुवनगुरोस्तोत्रमकृथास्तदेव
- ( ९ ) वैतालिकैरित्यमज्जिष्टुतेन संपूजितामर्त्यगुरुद्विजेन । विमुक्तकारागृहसंयतेन विदीर्ष-  
ज्जुतालयदक्षिणेन । तेनाज्जिपिकमात्रेण प्रतिजह्ने ह्यं स्वयम् । पद्मनाथस्य ज्जुसिद्धिः  
कन्यायाः .... ॥ .... यशः शरीरम् ॥ स-

- (१०) सर्षिता ब्रह्मपुरी च तेन शेषान् विधायावनिदेवसुख्यान् । प्रवर्ति ... ब्रमतन्द्रितेन  
मृष्टान्नपानैरतिधार्मिकेण ॥ श्री पद्मनाथस्य सलोकनाथ ... नैवेद्यपाका ... विला
- (११) सिनीवा ... नादिर्यथार्हतः पादकुलस्य मूर्तिम् । स पद्मनाथस्य पुरः समग्राम-  
कल्पयत्प्रेक्षणकायचूपः ॥ पापाणपह्नीं प्रविचज्य सम्यग् देवाय ... । सम्पाद-  
यामास तथा छिजेज्यः ... ।
- (१२) गतो योगीश्वरांगोद्भवः ख्यातः सूरिसलक्षणः क्षितिपतेः सर्वत्र विश्वासचूः ।  
आधारो विनयस्य शीलजवनं चूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य क क वसतिः ...
- (१३) हीपाले नटो विप्रास्तस्मिन् ग्रामे प्रतिष्ठिताः । तेषां नामानि लिख्यन्ते विसूरः  
शासनोदितः ॥ देवलब्धिः सुधीराख्यस्ततः श्रोधरदीक्षितः ॥
- (१४) ... रामेश्वरो छिजवरस्तथा दामोदरो छिजः । अष्टादशैते विप्राश्च ... छिजः ।  
पादोनपदिका ... ऐकौसुरार्चकौ । द्वावर्द्धपदिनावेप विप्राणां संग्रहः कृतः ।  
...दद्धपदं नृपः । विधाय ... कायस्य सूरये देवाय दत्तः सौवर्णो राज्ञा दत्तैः समाचितम् ।  
... हरिणमणिमयं चूप—
- (१५) ... कं ददौ । रत्नैर्विचित्रं निष्कञ्च निष्क ... स चूपतिः ॥ प्रा—केयूरयुगलं  
रत्नैर्वहुन्निराचितम् । कङ्कणानां चतुष्कञ्च महार्द्धमणिचूपितम् । ... द्वितीय  
मनि ... स्य सौवर्णं केवलं यथा । कङ्कणानां चतुष्कञ्च नीलपट्टयं तथा । ...  
द्वैः पञ्चनिर्युता । ... धारापात्रञ्च कां ।
- (१६) ... चतुष्टयम् । सुवर्णाण्णत्रयं देवपरिवारविचूपणम् । ... परिद्रेमात्त्रमानपत्रीकृतं  
विज्ञोः ॥ निवेद्य ताम्रपट्टे च तन्मयेनैवम ... । प्रतिमा नित्यं मणि ... राजनी ...  
प्रतिमा ... का द्वितीया ... युती । राज -- मयी चान्या ... । नाः प्रयत्नेन  
तिस्रोपि पूज्यते ... वेरमनि । तत्र ताम्रनयं देवं दीपार्थं मण्डिकाकृतम् ।

- (१७) ...क । ताम्रार्थपात्रद्वितयं तथा दत्तं महीजुजा । सधूपवहनाः सप्त धराणा  
 ... । दत्ताः शङ्खाश्च सप्तैव ताम्रपात्रीचतुष्टयम् । स कांस्यजाजनं प्राद-  
 न्नृपतिः ...चामरं दण्डं वृहच्चतुष्टयम् ताम्रमयं तास्ता ... । दत्ताश्च दशतन्मयाः ॥  
 ...देवोपकरणं द्रव्याणां संग्रहः कृतः ।
- (१८) ...वापीकूपतडागादि ... नानावनेषु च । दशमासं तथा विंशत्यूर्ध्वं सर्वत्र मण्डपे  
 ददौ राजा नि ...यते सर्वं प्रवर्तते । अयं देवालयो नाम ...स्फटिकामल ... जारद्वारं  
 मीमांसान्यायसंस्कृतबुद्धिना । कवीन्द्ररामपौत्रेण गोविन्दकविसूनुना । कविता  
 मणिकर्णेन सुजापितसरस्वती । प्रशस्तिं
- (१९) ...लङ्केश्वरस्वान् द्वितीयां वित्रत्सुहृतां मणिकण्ठसूरैः । पञ्चासे चाश्वने मासे  
 कृष्णपक्षे नृपाङ्गया । रचिता मणिकर्णेन प्रशस्तिरियमुज्ज्वला ॥ अङ्कतोपि ११५०  
 ॥ आश्विनवहुलपञ्च ।
- (२०) ... खिलां महीम् । यस्थ गीर्वाणमन्त्री च मन्त्री गौरो जव । प्रशस्तिरियमुत्की-  
 र्णा सद्गर्णा पद्मशिष्टिपना ।
- (२१) • • • • •

### मूर्तियों के चरणचौकी पर ।

[ 1427 ] \*

श्री आदिनाथाय नमः ॥ संवत् १४९७ वर्षे वैशाख ... ९ शुक्ले पुनर्वसुनक्षत्र  
 श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज राजा श्रीकुंग ...संवर्त्तमानो श्रीकाञ्चीसंघे मायूरान्वयो  
 पुष्करगणजहारक श्रीगणकीर्तिदेव तत्पदे यत्यः कीर्तिदेवा प्रतिष्ठाचार्य श्रीपंडितरघूतेयं

आज्ञाय अग्रोतवंशे मोङ्गलगोत्रा सा ॥ धुरात्मा तस्य पुत्रः साधु ज्ञोपा तस्य ज्ञार्या नाही ।  
 पुत्र प्रथम साधुक्षेमसी द्वितीय साधुमहाराजा तृतीय असराज चतुर्थ धनपाल पञ्चम  
 साधुपाटका । साधुक्षेमसी ज्ञार्या नोगादेवी पुत्र ज्येष्ठ पुत्र ज्ञधायि पतिकौल ॥ ज्ञ—ज्ञार्य. च  
 ज्येष्ठ स्त्री सुरसुनी पुत्र मद्धिदास द्वितीय ज्ञार्या साध्वीसरा पुत्र चन्द्रपाल । क्षेमसी पुत्र  
 द्वितीय साधु श्रीज्ञोजराजा ज्ञार्या देवस्य पुत्र पूर्णपाल ॥ एतेषां मध्ये श्री ॥ त्यादिजिनसंघा-  
 धिपति काळा सदा प्रणमति ॥

[ 1428 ]\*

- ( १ ) सिद्धि संवत् १५१० वर्षे माघसुदि ७ अष्टम्या श्रीगोपगिरौ महाराजाधिराज रा
- ( २ ) जा श्रीडंगरेन्द्रदेवराज्यप्र ... श्रीकार्त्वीसंघे मायूरान्वये जट्टारक श्री ।
- ( ३ ) क्षेमकीर्त्तिदेवस्तत्पदे श्रीक्षेमकीर्त्तिदेवास्तत्पदे श्रीविमलकीर्त्तिदेवाः ...
- ( ४ ) डिता ... सदाम्नाये अग्रोतवंशे शर्गगोत्रेसा ... त
- ( ५ ) योः पुत्राः ये दशाय श्रीवंद ज्ञार्या माळाहा नस्य प्रवसाणपेपार रा ... जीसा ... दु
- ( ६ ) तीयसाण हरिवंदज्ञार्या जसोधर हितये ... एसा साण सधा साण तृती
- ( ७ ) य हेमा चतुर्थ साण रतीपुत्र साण सह सापं ... मु साण धं...साण सद्धापुत्र एसेवं...ए
- ( ८ ) तेषां मध्ये साधु श्रीचंद्रपुत्र शेषा तथा हरिचंद्र देवकी ज्ञार्या ...
- ( ९ ) दीप्रमुखा नित्यं श्रीमहावीर प्रतिमा प्रतिष्ठाप्य जृगिजक्त्या प्रणमंति ॥
- ( १० ) अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां जिनस्य जक्त्या प्रतिष्ठाप्यतो महत्या । फलं वलं राज्य
- ( ११ ) मनन्त सौख्यं जवस्य विच्छित्तिरघो विमुक्ति ॥ शुभं जवंतु सर्वेषां ॥

[ 1429 ]

- ( १ ) श्रीमज्ञोपाचलगतदृग्ने ॥ महाराजाधिराज श्री मत्स्यमिह देवराज्ये प्रवर्त्तमाने ।  
 नवत् १५५१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ।



- (२) ए सौमवासरै श्रीमूलसंघे बलत्कारगणै सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये । जगद्भीरु  
नन्दिदेव तत् पट्टालंकार श्री ।
- (३) शुक्लचंद्र देव । तत्पट्टे जग मणिचंद्र देव । तत्पट्टे पं मुनि ... गणि कचरदेव तदग्रे  
वाग्द जेणीवंशे सालम चार्या व --
- (४) शुक्ल पु ४ तेषां मध्ये अणंद चार्या उदैसिरि । पुत्र ६ लोहंगराम मुनिसिंघ अरजु  
लुभगण मद्धू नद्धू । मद्धू चार्या ।
- (५) पिरोसिरि पुत्र पारसराम चार्या नव । दुती पुत्र रामसि चार्या नागसिरी । तृतीय पु  
पुत्र । चतुर्थे पुत्र गेपणि ॥ सां मद्धू ।
- (६) - तीर्थंकर विंशं निर्मापितं प्रणमति प्रीत्यर्थं ॥

## मुहानीय ।

पायाण की मूर्तियों के चरणचोकी पर ।

[ 1420 ] \*

सं० १०३३ श्री कृष्णदेव मदिन्द्रचन्द्रकेन कता ग्यादिना ।

[ 1421 ] \*

सं० १०३४ श्री कृष्णदेव मद्दाराजाधिगज वडमाव वदि पाचमी \* \* \*



सं० १५२३ व० वै० सु० ६ प्राग्वाट श्रे० वस्ता जा० फडू सुत श्रे० सारंगेण जा० मरगां  
पुत्र श्रे० वीकादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ विम्बं का० प्र० तपागढे श्री रत्नशेखर  
सूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागर सूरिजि : ॥ जइतपुर ॥

[ 1438 ]

स० १५२७ वर्षे फागुण - - श्रीमालझातीय टार्की गोत्रे स० जाविनो पुत्र श्रीजागू  
श्रावक श्रीआदिनाथ विंबं का० प्र० श्री खरतरगढे श्री जिनसागर सूरितत्प० श्री सुंदर  
सूरि पट्टे श्री हर्ष सूरिजि : ।

[ 1439 ]

सं० १५७९ वर्षे माघसुदि ६ शुक्ले वैशाख वदि ५ उसवंशे लाषाणी गांधी गोत्रे सा०  
तेजपाल पुत्र सा० कुयरपाल चार्या सालिगदे पुत्र रायमद्व श्रावकेण स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ  
विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगढे श्रावकेण श्री गुणनिधानसूरि उपदेशात् ।

धातुकी मूर्ति पर

[ 1440 ]

सं० १६०७ फाग० सु० १० केमकीर्ति ... .. ।

धातुके यंत्र पर ।

[ 1441 ]

सं० १७५२ पोष सुदी ४ दिने । बृहस्पति वासरे श्रीसिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं  
सवाई जैनगर मध्ये वा० लालचंद्र गणिना कारितं वीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोप  
चंद्र तत्पुत्र जेठमद्वेन श्रेयोर्थं शुभं जवतु ॥

## आगरा ।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर—रोशन मोहल्ला ।

पंचतीर्थियों पर

[ 1442 ]

॥ संवत् १३७९ वर्षे वैशाख सुदी ६ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अरसीह जा० पामना-  
पुत्र " वाट्हाकेन श्री पार्श्वनाथ विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1443 ]

॥ संवत् १५१४ वर्षे मार्गशिर वदी ४ रवौ उपकेश ज्ञातीय लिंगा गोत्रे सा० पीघा जा०  
ऊदी...पु० सा० चेडन जा० सूहवादे पु० शेपा सरूजन अरजन अमरासहितेन स्वपु०  
श्रीकुन्धुनाथ विम्बं का० प्र० श्रीउपकेशगळे ककुदाचार्यसन्ताने श्री सिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क  
सूरिजिः ॥

[ 1444 ]

॥ सं० १५३३ वर्षे पोस सुदि १५ सोमे सिद्धपुर वास्तव्य आसवाल ज्ञातीय सा०  
नासण जा० वानू सु० वडाकेन जा० माई मुसूरा प्र० कुटुम्बयुतेन श्री मुमतिनाथ विम्बं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपागळे श्री ज्ञानसागर सूरि पट्टे श्री उदयसागर सूरिजिः ॥

[ 1445 ]

॥ संवत् १५३६ व० ज्येष्ठ वदि ४ सोमे श्रीश्रीमाली दोला रगना उपरिमन प्रावरु ना०  
हपारा सुत नैरवदासेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ वि० का० प्रति० वृद्धतपा श्री उदयसागर-  
सूरिजिः ॥

[ 1446 ]

॥ संवत् १५९२ सा० लीला जा० का० -- सं० गांटे गदधीर -- देवति प्राणमन्ति



॥ संवत् १५९४ माघ सुदी ५ बुधवासरे श्री मूलसंघे ज० श्री जिनचन्द्र तदाम्ना  
जसवाल इच्छा ... कुवेसल श्री हेमणे ....

[ 1448 ]

॥ संवत् १६१० वर्षे ज्येष्ठ वदी २ ... श्री सुपार्श्वनाथ विम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री-  
वृहत् खरतरगढे ज० श्री जिनचन्द्र सूरिनिः ॥

[ 1449 ]

॥ स० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढा गोत्रे प्रतापसिंहस्य ज्ञा० मूल श्रीनवपद  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री (?) विजयसूरी.... ।

धातु की चौविशी पर ।

[ 1450 ]

॥ संवत् १५९४ वर्षे वैशाख सुदी दशमी शुक्र ओसवाल ज्ञातीय राका शाखायां बल्लह  
गोत्रे सं० रत्नापुत्र स० राजा पु० सं० नाथू ज्ञा० बल्लह पुत्र सं० चूहम ज्ञा० हीसू पु० स०  
महाराज ज्ञा० संघ्रा पुत्र सोहिल लघुत्रातृ महपति ज्ञा० माणिकदे सु० नरहपाल ज्ञा०  
सलूही पु० धनपाल स० हेमराज ज्ञा० उदयराजी पु० संघागोराज त्रातृ सेन्यरत्न ज्ञा०  
श्रीपासी पु० संघराज समस्तकुटुम्बसहितेन सुश्रावकेन हेमराजेन श्री धर्मनाथ विम्ब  
कारापितं श्रीजपकेश गढे ककुदाचार्यसन्ताने प्रतिष्ठितं ज० श्री सिद्ध सूरिनिः ॥ श्रीरस्तु ॥

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1451 ]

ॐ सिद्धिः ॥ संवत् १६६० ज्येष्ठ सुदि १५ तिथौ गुरुवासरे अनुराधा नक्षत्रे । ओस-  
वाल ज्ञातीय अरडक सोनी गोत्रे साह पूना संताने सा० कान्हड़ ज्ञा० जामनी बहु पुत्र सा०

हीरानंदेन विम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्धन सूरि संताने .... श्री लब्धिवर्द्धन शिष्येन ।

[ 1452 ]

श्रीमत्संवत् १६११ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री आगरावासी उंसवाल ज्ञातीय चोरनिया गोत्रे साह .... पुत्र सा० हीरानंद चार्या हीरादे पुत्र सा० जेठमल श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्रीमद्धर्ममूर्ति सूरि तत्पदे ....

पाषाण के चौविशी के चरण पर ।

[ 1453 ]

संवत् १७६१ ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवारः श्री सिंघाडो वाई ने बनाया । श्री आगरा वास्तव्य व्य० संघपति श्री श्री चंद्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

शिखालेख ।

[ 1454 ]

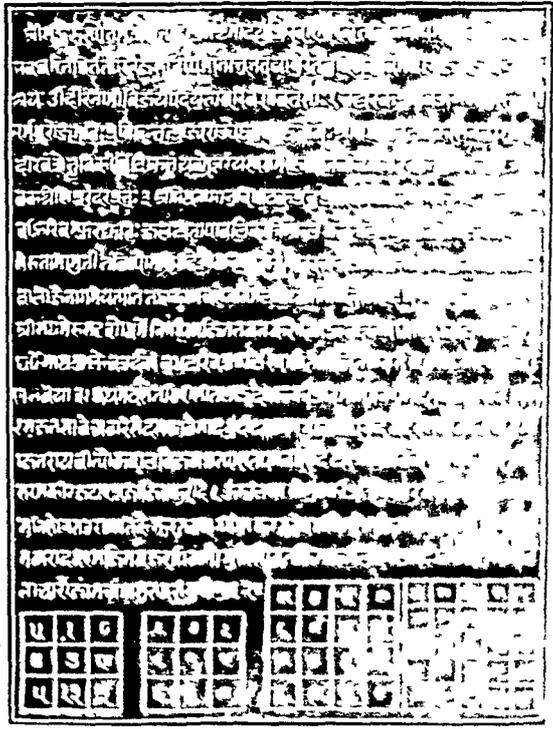
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ संवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १५ श्री अर्गलपुरे जला-बूदीन पानिसाह श्री अकबर सुत जहांगीर सुत सवाई साहिजां विजयराज्ये ... राजद्वार शोक्तक सोनी .... श्री हीरानंद ... श्री जहांगीरस्य गृहे .... कृतं । तत्र तस्य नंदनवनो-द्यानससवाटिकायां ...निज धनस्य .... चार्या सोना सुत निहालचंद चार्या मृगां खोत्रंग पुत्र चिरं सहस्रमह्व सना श्री गंगाजल वारि पूरपूरित निर्मल कूपः कारापितः ॥ आचं-द्राकं यावत्तिष्ठतु ॥

[ 1455 ]\*

१। १। श्री सङ्गुरुष्यो नमः ॥ सत्पटोत्तुंगश्रृंगोदयं शिखरि शिखा जानु विवोपमाना जैनोपज्ञा : स

\* बड़े मंदिर के यगल में जो लड़ाई काम को नई वेदी और सनामंडप बने हैं उसमें दाहिने तरफ़ ऊपर में यह मिलालेख लगाया हुआ है । इसकी लंबाई अंशज २ फिट और चौड़ाई ११ फिट है और मामूली पत्थर है । मिलालेख के निचे ४ पंक्तियाँ हैं ( १ ) २० का ( २ ) १५ का ( ३ ) ३४ का और ( ४ ) १७ का खुदा हुआ है ।

- २। मं चञ्चरित चित तपस्तेजसा तप्यमानाः नूनं नंदा सुरैरेते जुवि यशविमला रात्र  
राजीव हंसा ॥
- ३। श्रेयः श्री हीरनामा विजयपदयुता सूरिवंशावतंसाः २ जट्टारक श्री विजयेण युक्तः  
श्री
- ४। धर्म सूरि जगति प्रसिद्धः तत् प्राज्यराज्ये प्रगुणी कृतो यः श्री संघमानन्द विकास  
हेतु २ श्री
- ५। हीरवंशे जुवि कीर्त्तिविश्रुतं यशोत्तरं यस्य समीक्ष्य मानवाः पश्यन्ति नेत्रैर्न सुधाकरं  
वरं श्री पा
- ६। उकश्रेणिपुरन्दरप्रभुः ३ श्रीमेघनामा जुवि पाठक प्रभु प्रसह्य पापं दहतेस्म कामदः  
महादवं
- ७। वन्हिरिव स्फुरद्युतिः ज्वलत्प्रतापावलि कीर्त्तिमंकलं ४ तत्पट्टे विबुधार्चितो विजय  
प्राक् श्री
- ८। मेरुनामा मुनी तद्विष्यो मणिसदृशौ शुभमति माणिक्य जानू जयौ ताज्यां शिष्य  
कृशाप्रधीति कु
- ९। शलो जैनागमे यन्मति तद्भाक्यं श्रवणेन निर्मलधीयां निर्मापितोयं एहं ५ श्री  
अकव्वरावादपुरे
- १०। श्रीसंघमेरुसदृशो धर्मे निर्मापय जिनजवनं करोति बहुजक्तिः वात्सल्यं ६ दिगोष्क  
मिने
- ११। वर्षे माघशुक्ले चतुर्दशी बुधवारे च पुष्यर्क्षे स्थापितोयं जिनेश्वरान् ७ श्रेयः कट्याण  
जयं
- १२। ॥ मवैया ३१ प्रथम वसंत सिरी सीतल जू देवहु की प्रतिमा नगन गुन दस दंग  
तरी ह् थ्याग
- १३। रे सुजन माचे अगोर्मे दस थ्याठे माह सुदी दस च्यार बुद्ध पुष धरी ह् देहा  
नवीन कीन्दो संग



AGRA TEMPLE I AS I-SII  
 D. rec. V. S. 1818. A. D. 1739







- ४। पाल स्वर्णपालौ । धर्मकृत्य परायणौ । स्ववंशकुजमार्त्तडौ । प्रशस्तिर्लिख्यते तयोः । ३ । श्रीमति हायने रम्ये चद्रर्षि रस
- ५। जूमिते । १६७१ षट् त्रिंशत्तिथौ शाके । १५३६ । विक्रमादित्यभूपतेः । ४ । राधमाते वसतर्तौ शुक्लायां तृतीया तिथौ । युक्ते तु
- ६। रोहिणी तेन । निर्दोषगुरुवासरे । ५ । श्रीमदंचलगह्वाख्ये सर्वगह्वावतंसके । सिद्धाः न्ताख्यातमार्गेण । राजिते विश्वविस्तृते । ६ । जग्रसे
- ७। नपुरे रम्ये । निरातंके रमाश्रये प्रासादमंदिराकीर्णे । सद्ज्ञातौ ह्युपकेशके । ७ । लोढागोत्रे विवश्वांस्त्रिजगति सुयशा ब्रह्मवी
- ८। र्यादियुक्तः श्री श्रंगाख्यातनामा गुरुवचनयुतः कामदेवादि तुह्यः । जीवाजीवादि तत्त्वे पररुचिरमतिर्लोकवर्गेषु यावज्जीवा
- ९। श्रंङ्कार्कविंशं परिकरभृतकैः सेवितस्त्वं मुदाहि । ८ । लोढा सन्तानविज्ञातो । धनः राज्ञो गुणान्वितः । द्वादशव्रतधारी च । शुभ ।
- १०। कर्मणि तत्परः । ९ । तत्पुत्रो वेसराजश्च । दयावान सुजनप्रियः । तुर्यव्रतधरः श्री मानः चानुर्यादिगुणैर्युतः । १० । तत्पुत्रौ द्वा ।
- ११। वनूनां च सुरागावर्धिनां सदा । जेठू श्रीरंगगोत्रौ च । जिनाज्ञा पालनोच्चुको । १ । नौ जीण । सीद् मद्वाख्यौ । जेठूवात्मजौ वचूवतु
- १२। : । धर्मविदो तु दहौ च । महापूज्यौ यशो धनौ । १२ । आसीच्च्रीरंगजो नूतं । जिनपदाचने रतः । मनीषी सुमना चव्यो राजपा-
- १३। ख उवाग्वीः । १३ । आर्या । धनदो चर्पजदास । पेमाख्यौ विविध सौख्य धनयुक्तौ । धाम्नां प्राज्ञौ दौ च । तत्त्वज्ञौ नौ तु तत्पु
- १४। त्रौ । १४ । रेपान्निधस्तयोज्येष्टः । कटपट्टुरिव सर्वदः । राजमान्यः कुत्राधारो । दयादुर्धर्मकर्मठः । १५ । रेपश्रीस्तन्प्रिया
- १५। नचदा । शीलाखंकाधारिणी । पतिव्रता पत्नी रक्ता । सुखशा रेवती निजा । १६ । श्री पद्मप्रदविंशम्य नवीनम्य जिनाक्ष ।

- १६। ये । प्रतिष्ठा कारिता येन सत्श्रारूगुणशालिना । १७। खलौ तुर्यवृतं यस्तु । श्रुत्वा  
कल्याणदेशनां । राजश्रीनंदनः
- १७। श्रेष्ठ । आणंदश्रावकोपमः । १८। तत्सूनुः कुंरपालः किल विमलमतिः स्वर्णपालो  
द्वितीय । श्रातुर्यौदार्यधैर्यप्रसु- ।
- १८। खगुणनिधिर्जाग्यसौजाग्यशाली । तौ द्वौ रूपाजिरामौ विविधजिनवृषध्यानकृत्यैक-  
निष्ठौ । त्यागैः कर्णावतारौ निज-
- १९। कुलतिलकौ वस्तुपालोपमाहौ । १९। श्रीजहांगीररूपालमान्यौ धर्मधुरंधरौ । धनिनौ  
पुण्यकर्तारौ विख्यातौ त्रा-
- २०। तरौ भुवि । २०। याच्यामुसं नव क्षेत्रे । वित्तवीजमनुत्तरं । तौ धन्यौ कामदौ लोके ।  
लोढा गोत्रावतंसकौ । २१। अवा
- २१। प्य शासनं चारू । जहांगीरपतेर्ननुः कारयामास तुर्धर्म । कृत्यं सर्व सहोदरौ । २२ ।  
शाखापौषधपूर्वात्रै । यकाच्यां सा
- २२। विनिर्मिता । अधित्यका त्रिकं यत्र राजते चित्तरंजकं । २३। समेतशिखरे जव्ये  
शत्रुंजयेर्वुदाचले । अन्येष्वपि च तीर्थेषु । गि
- २३। रिनारिगिरौ तथा । २४। संघाधिपत्यमासाद्य । ताच्यां यात्रा कृता मुदा । महारूपा  
सवसामग्र्या । शुद्धसम्यक्कहेतवे । २५। तुरंगा
- २४। णां शतं कांतं । पंचविंशति पूर्वकं । दत्तं तु तीर्थयात्रायां गजानां पंचविंशतिः । २६।  
अन्यदपि धनं । वित्तं । प्रत्तं संख्यातिगं खद्यु
- २५। अर्जयासासतुः कीर्तिं । मित्थं तौ वसुधातले । २७। उचुंगं गगनाग्रंवि । मच्चित्रं  
सध्वजं परं । नेत्रासेचनकं ताच्यां । युग्मं चैत्य
- २६। स्य कारितं । २८। अथ गद्यं श्रीध्वंक्षगठे । श्रीवीरादृष्टत्वारिंशतमे पट्टे । श्रीपावक  
गिरौ श्री सीमंधरजिनवचसा । श्रीचक्रे ( श्वरीट )
- २७। त्वराः । सिहांतोक्तमार्गप्ररूपकाः । श्री विधिपद्मगठसंत्यापकाः । श्री आर्यगद्गिन  
सूर्य । १। तत्तद्वे श्री जयसिंह सूरि २ श्रीधर्मदो

- २७ प सूरि ३ श्रीमहेन्द्रसिंह सूरि ४ श्रीसिंहप्रज्ञसूरि ५ श्रीअजितसिंह सूरि ६ श्री देवेन्द्रसिंह सूरि ७ श्रीधर्मप्रज्ञ सूरि ८ श्री ( सिंहतिलक सू )
- २८। रि ए श्रीमहेन्द्रप्रज्ञसूरि १० श्रीमेरुतुंगसूरि ११ श्रीजयकीर्त्ति सूरि १२ श्री जयकेशरि सूरि १३ श्री सिद्धांतसागर सूरि १४ ( श्री जावसा )
- ३०। गर सूरि १५ श्री गुणनिधान सूरि १६ श्रीधर्ममूर्त्ति सूरय १७ स्तत्पट्टे संप्रति विराज-  
मानाः श्रीचट्टारकपुरंदराः स .....
- ३१। णय : श्रीयुगप्रधानाः । पूज्य चट्टारक श्री ५ श्रीकल्याणसागरसूरय १ए स्तेषामुप-  
देशेन श्रीश्रेयांसजिनविंवादीनां ...
- ३२। कुंरपाक्षसोनपाक्षाच्यां प्रतिष्ठा कारापिता । पुनः श्लोकाः । श्री श्रेयांसजिनेशस्य  
विंवं स्यापितमुत्तमं । प्रतिष्ठितं .... गुरू
- ३३। णामुपदेशतः । २ए । चत्वारिंशत् मानानि सार्धान्युपरि तत् रूपे । प्रतिष्ठितानि विंवानि  
जिनानां सौख्यकारिणां । ३० । ....
- ३४। तु क्षेप्ताने प्राज्य पुण्यप्रजावतः देवगुर्वोः सदाचक्रौ । शश्वतौ नंदतां चिरं । ३१।  
अथ तयोः परिवारः संघराजो पु ....
- ३५। .... ३२ । सूनवः स्वर्णपाल .... शत्रुर्जुज ... पुत्री युगलमुत्तमं । ३३ । प्रेमनस्य त्रयः  
पु ( त्राः .... )
- ३६। पेतसी तथा । नेतसी विद्यमानस्तु सखीखेन सुदर्शन । ३४। धीमतः संघराजस्य ।  
नेत्रस्विनो यशस्विनः । चत्वारस्तनुजन्मानः ..... मताः । ३५ । कुंरपाक्षस्य स ...
- ३७। द्वार्या ... पत्नीतु स ... पतिप्रिया । ३६ । तदंगजास्ति गंजीरा जादो नाम्नी रा ...  
दानी मद्राप्रार्द्धो ज्येष्ठमहो गुणाश्रयः । ३७ ।
- ३८। संघश्रीसुखश्रीर्वा दुर्गाश्रीप्रसुर्गैर्निजेः । वधूजनैर्युतो जातां । रेपश्री नंदनी मद्रा  
। ३८ । नृमंडलं सत्रांगमिद्वर्कयुक्त संघ ..... ।

श्री श्रीमंदिर स्वामी जी का मंदिर—रोशन महल्ला ।

पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1457 ] \*

- ( १ ) ॥ सं० १६६० ज्यैष्ठ सुदि १५ गुरौ ॥ श्योसवा  
 ( २ ) ल ज्ञाति श्रृंगार । अरडक सोनी गोत्रे  
 ( ३ ) सा० हीरानंद पुत्र सा निहालचंदे  
 ( ४ ) न श्री पार्श्वनाथ कारितः सर्परूपाकार  
 ( ५ ) श्री खरतरगह्वे श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री  
 ( ६ ) जिनचन्द्र सूरिणा । श्री आगरा नगरे

धातुकी मूर्तियों पर ।

[ 1458 ]

॥ सं० १५३४ वर्षे माघ सुदी ५ श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री जिनवरदेवाः तत्  
 शिष्य मुनिरत्नकीर्त्ति उपदेशात् खण्डेलवालान्वये पहाड्या गोत्रे सा० तेजा चार्या रोहिषी  
 पुत्रौ सा० पूना पाट्टहा नित्यं प्रणमन्ति ॥

[ 1459 ]

॥ सं० १६४१ श्री सुपार्श्वनाथ वि० का० प्र० श्री हीरविजय सूरिनिः ॥

[ 1460 ]

॥ संवत् १६७४ वर्षे माघ वदी १ दिने गुरुवारे पुष्यनक्षत्रे साह श्रीजहांगीर विजय  
 मानराज्ये श्योसवालज्ञातीय नाहर गोत्रे । सं० हीरा तत्पुत्र स० अमरसी जा० अन्तरङ्गदे  
 तत्पुत्र सा० साडूला जा० सोजागदे युतेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी विन्त्रं कारापितं प्रतिष्ठितं  
 जहांगीर महातपाविरूद्धधारक चहारक श्री ५ श्री विजयदेवसूरिनिः ॥ शुभं भवतु ॥

\* यह लेख श्री पार्श्वनाथ स्वामी की श्वेत पाषाण की कापोत्सर्ग

मनोह मूर्ति के चरणचौका पर मुदा हुआ है ।

पंचतीर्थियों पर

[ 1461 ]

॥ संवत् १५०० वर्षे वै० शु० ५ उपकेशज्ञातीय सा० नानिग जा० महहाड सुत सा०  
लाखा जा० लाखणदे सुत सा० चाहडेन मातृ हासा सिधराज जा० चापलदेवी सुत वसुपा-  
लादिकुटुम्बयुतेन पितृ श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रज्ञबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागहनायक श्री श्री  
मुनिसुन्दर सूरिजिः ॥

[ 1462 ]

॥ संवत् १५३६ वर्षे आषाढ सुदी नवम्यां तिथौ उप० वीरोलिया गोत्रे सा० मूमा  
जा० केदही पु० दशरथ नाम सा० दशरथ जा० दत्तसिरी पु० जिणदत्त श्री संजवना  
बिम्बं का० प्र० श्री पद्मीवालगच्छेश ज० श्री ऊजोअण सूरिजिः ॥

[ 1463 ]

संवत् १५५९ वर्षे महा सुदी १० श्रीमालवंशे वहकटा गोत्रे सा० तेजा पुत्र सा०  
जोगाकेन पुत्रादियुतेन श्रा० अमरसहितेन श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री खरतरग  
श्री जिनहंस सूरिजिः ॥ श्रेयसे ॥

[ 1464 ]

॥ संवत् १५७७ वर्षे श्येष्ठ वदी० सोमे श्री अलवर वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय वृद्धश-  
खायां आयत्रिण्यगोत्रे चोरवेडिया शाखायां सं० साहणपाल जा० सहलासदे पु० सं०  
रत्नदाम जा० सूरमदे श्रेयोऽर्थ श्री उकेशगठे कुकदाचार्यसन्ताने श्री सुमतिनाथ कारापि  
बिम्बं प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

चौविशी पर ।

[ 1465 ]

॥ संवत् १५३३ श्येष्ठ शु० ५ प्रा० ज्ञातीय सं० पूजा जा० कर्मादे पुत्र सं० नरजस जा०

( १०७ )

नायकदे पुत्र स० खीमाकेन जा० हरपमदे पुत्र परवंत गुणराज प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री  
आदिनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० लक्ष्मीसागर सूरिभिः सीरोही नगरे

धातु के यंत्रों पर ।

[ 1466 ]

॥ सं० १६०४ वर्षे शाके १४७० प्रवर्त्तमाने आश्विनमासे वदिपक्षे १४ दिने रविवासरे  
दीपाक्षिकादिने श्री श्रीमालगोत्रीय साह श्री जयपालसुत साह सोरंगकेन सुखशांति श्री  
हर्षरत्न सप्तपदेशेन श्री पार्श्वनाथ यंत्रं कारापितं प्रतिष्ठितम् शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ ७ ॥

[ 1467 ]

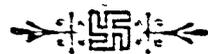
॥ संवत् १७०५ वर्षे माघशुक्ल ५ गुरौ श्री गूर्जरदेशीय पाटण वास्तव्य श्री खरतरगङ्गीय  
कावनीया गोत्रे सेठ वेलजी पुत्र सेठ हेमचन्द्रेण स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्र नवपदगुह्यकर्म  
कार्यार्थं कारापितं श्री आगरा नगरमध्ये श्रीतपागङ्गीय पं० कुशलविजय गणि उपदेशात्  
॥ ॐ ॥

[ 1468 ]

॥ सं० १७०६ वर्षे आश्विन शुक्ल १० चौमे छगन गोत्रीय सा० कपूरचन्द्र पुत्र सिताव  
सिंह गृहे तरसमित(?) सुखदे नाम्नी स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्रयंत्रं कारितं अ तपागङ्गीय  
जट्टारक श्री विजयदेव सूरेश्वरराज्ये पं० कुशलविजय गणि उपदेशान् कृतम् ॥ श्रीः ॥

[ 1469 ]

सं० १७३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढा गोत्रे प्रतापसिंहस्य जार्या मूढो श्री नवपद  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री धरणेन्द्रविजय सूरिराज्ये तपा ।





श्री सूर्यप्रजस्वामी जी का मंदिर-मोती कटरा

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1470 ]

॥ संवत् १५३३ मार्ग सुदि ६ शुके ओसवाल ज्ञातीय बड़गोत्रे सा० जीमवे चा०  
रूढही पुत्र सा० जोना चा० जेठी नाम्न्या पुत्र सा० महीपति मेघादि कुटुम्बयुता  
स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीसूरिनिः ॥

[ 1471 ]

॥ संवत् १५४६ वर्षे पौष वदी ५ सोमे राजाधिराज श्री श्री श्री नाजिनरेश्वरराज्ञी श्री  
श्री श्री मरुदेवी तनया पुत्र श्री श्री श्री श्री श्री आदिनाथदेवस्य बिम्बं सुप्रतिष्ठितम् ॥

[ 1472 ]

॥ सं १५९७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्री मंरुपे श्रीमाख ज्ञातीय सं जदा चा० हर्ष  
सा० खीमा चा पूंजी पु० सा० जेगसी चा० माऊ पु० सा० गोदहा चा० सापा पु० मेघा  
पु० कार्णी बहुत्रात् सं० राजा चार्या सागू पु० सं० जावडेन चा० धनार्ई जीवादे सुहागंदे  
सत्तादै धनार्ई पुत्र सं० हीरा चा० रमाई सं० लावादि कुटुम्बयुतेन बिम्बं कारापितं निज  
श्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपागळे श्री सोमसुन्दर सूरिसन्ताने लक्ष्मी  
सागर सूरिपट्टे श्री सुमतिसाधु सूरिनिः ॥

चौवीसी पर ।

[ 1473 ]

॥ सं० १५१३ वर्षे वैशाखमासे जकेश ज्ञातीय से० पेयड चा० प्रथमसिरी पुत्र सं०  
हेमाकेन चार्या हीमादे द्वितीया लाठि पुत्र देवहा राणा पासादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयस्य श्री-  
कुन्थुनाथादि चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री अञ्जलगणेश श्री जयकेशरी सूरिनिः प्रतिष्ठितः  
॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

( १०९ )

श्री गोडीपार्श्वनाथजी का मंदिर - मोती कटरा ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1474 ]

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदी ११ सूरणा गोत्रे सा० धन्ना जा० धानी पुत्र सा० फलहूकेन  
आत्मपुत्रार्थ श्री पार्श्वनाथ विम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गढे श्री पद्मशेखर सूरि पढे श्री  
पद्मनाथक सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[ 1475 ]

॥ सं० १५२० वर्षे वैशाख शुदी १२ बुधे श्री श्रीमाळी ज्ञातीय श्रे० हीरा जा० जीविणि  
सु० कान्हाकेन जा० पदमाई सु० रत्नायुतेन ज्ञातृ हांसा मना निमित्तं श्री अरनाथ विम्बं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ अहमदावाद वास्तव्य ॥

[ 1476 ]

॥ संवत् १५३६ वर्षे कार्तिक शु० १५ गूजर श्रीमाळ ज्ञातीय वहरा गोत्रे सा० धन्ना जा०  
धारलदे सु० सा० माडा पुत्र देवाराजादि श्री शान्तिनाथ विम्बं कारितम् ॥ प्रतिष्ठितम् ॥  
श्री सूरिजिः ॥

[ 1477 ]

॥ संवत् १५५४ वर्षे मा० व० २ लीहा वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० अमा ज्ञार्या  
लखमादे पुत्र व्य० माढहण जा० माढहणदे सुन नरवद प्रमुखसमस्तकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयार्थ  
श्री सुविधिनाथ विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपापद्धे श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

[ 1478 ]

॥ सं० १९४० वर्षे वैशाखशुदी ५ ऋग्वारे अर्गलपुरे आनवाल वंशोद्भवे ज्ञातो  
वैद. मोता गोत्रे साहू हंसराज चन्द्रशेखर कारितं नेमनाथस्य विम्बं प्रतिष्ठितम् ॥ कमला  
गढे श्री सिद्ध सूरिजिः ॥ उपदेश गढे ॥ ॥ श्री ॥ श्रेयम् ॥

( ११० )

चौवीसी पर ।

[ 1479 ]

॥ संवत् १५०५ वर्षे वैशाख सुदी ६ श्री उपकेश ज्ञातीय अ.दित्यनाग गोत्रे सा० गङ्गा  
पु० सा० धणसीह जा० वणश्री पु० सा० साधू जा० मोहणश्री पु० श्रीवंत सोनपात्र  
जिखू एतैः पित्रोः श्रेयसे श्रीअजितनाथ चतुर्विंशतिपट्टः काराणितः । श्री उपकेशगङ्गे श्री  
ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितः । जट्टारक श्री सिद्ध सूरिः तट्टाळंकारहार जट्टारक श्रीकर्म  
सूरिजिः ॥ ठः ॥

[ 1480 ]

॥ सं० १५११ वर्षे माघे शुदी ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यवहृता सुत व्यस  
कर्मसीह जार्या कस्मीरदे सुत सायरकेन जार्या मेथूसहितेन पितृमातृआत्मश्रेयसे श्री कुंभु  
नाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री पूर्णिमापट्टे जट्टारक श्री राजतिलक सूरीणामुपदेशेन  
प्रतिष्ठितम् ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर — मैती कटरा ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[ 1481 ]

॥ संवत् १४९६ वर्षे वैशाख सु० १२ गुरु ठाहखा गोत्रे सं० घेवहा पुत्र स० दया  
डीडा पुत्र स० जादा सादा जार्या रू० डीडानिमित्तं श्री सुविधिनाथ विम्बं कारितं  
प्रतिष्ठितम् तपागङ्गे जट्टा ( रक ) श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

चौवीसी पर ।

[ 1482 ]

॥ उं ॥ सं० १५०१ वर्षे ... व० ६ बुधे लोढा गोत्रे सा० हरिचन्दसन्ताने । सा० गंगा  
पु० सं० गौरा । पुत्र । स० आसपाल तत्पुत्रेण स० लाखाकेन । ज्ञातृ स० वस्तुपाल तेजपाल

पूजपाल । पुत्र सोनपाल पासवीर । सं । हंसवीर द्रावु पुत्र । कुनरपाल पर्वतादियुनेन  
निजमाता मूणी पुण्यार्थ श्री संजवनाथ त्रिम्बं चतुर्विंशति देवपट्टे । का० प्र० तपागठे  
श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिः ॥

धातु के यन्त्र पर

[ 1483 ]

॥ ॐ ॥ स्वस्ति संवत् १४७७ वर्षे माघ सुदी ५ गुरुवासरे श्रीमन् योगिनीपुरे राज्य  
श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे चत्वारक श्री श्री हेमकीर्तिदेवान्स्तद्वट्टे चत्वारक  
श्री हेमकीर्तिदेवाँसनत् शिष्य श्री धर्मचन्द्रदेवान् श्री महेन्द्रकीर्तिदेवान् श्री जिनचन्द्र  
देवान् जिनचन्द्र शिद्दिणी वाई सहजाई एतेन श्री कलिक्लृण्डयंत्रस्वकर्मक्षयार्थ कारापितं  
॥ शुभं चवतु ॥

श्री केशरियानाथजी का मंदिर - मोतीकटरा ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[ 1484 ]

संवत् १५७१ वर्षे सुदी ६ शुके उकेशवंशे घांघ गोत्रे सा० ठीतर जा० लखमाई पुत्र सा०  
सांगा आत्ता० सिया हीरा तन्मध्ये सांगाकेन जा० लिंगारदे पु० राजसी रामसी युनेन श्री  
शान्तिनाथ त्रिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गठे श्री गुणसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीनागर  
सूरिः ॥

श्री नेमनाथजी का मंदिर - हींगमंटी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1485 ]

॥ संवत् १५१५ वर्षे मलारणावासी सुहरल गोत्रे श्रीनाथ ज्ञानीय ना० थोत्र ना०  
देल्हू पु० मडनपेन जा० नाल्दी द्रावु हिंगार जा० पुन पुत्र० नरजन प्रमुग्गदृग्गवयुनेन  
स्वधेयसे श्री सुनतिनाथ दिम्बं जा० प्र० तपागठे श्री लक्ष्मीनागर सूरिः ॥

॥ संवत् १९२१ शा० १७०६ प्र० माघ शु० ७ गुरुवारे अञ्चलगङ्गे कच्छ देशे कोठारा  
वास्तव्य उत्सवाल शा० गांधी मोहता गोत्र श्री केशवजी नायकेन श्री सिद्धदेव्रे श्री  
नेमिनाथ जिन विम्बं कारापितं प्र० ज० श्रीरत्नशेखर सूरिभिः ॥

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर - नमकमंडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1487 ]

॥ सं० १४०५ वर्षे फा० सु ए शुके श्री ज्ञानकीय गङ्गे उत्सन्न गोत्रे उ० ज्ञातीय सा०  
शिवा ज्ञा० कांजं पुत्र केदहा ज्ञा० कीदहणदे सन्ततिवृद्ध्यर्थं पितृमातृनिमित्तं श्री कुंभुनाथ  
विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री शान्ति सूरिभिः ॥ शुभं जवतु ॥

[ 1488 ]

॥ संवत् १४२५ माघ वदि ७ सोमे श्री संडेरगङ्गे श्री उरकेशज्ञाति सा० महीपाल ज्ञा०  
मदहणदे पु० वेला ज्ञा० सहजादे पु० सरवणनैक (?) ज्ञातृ कसामलस्य श्रेयसे श्री आदि  
नाथ पञ्चतीर्थी कारिता । प्र० श्री ईश्वर सूरिभिः ॥

[ 1489 ]

॥ सं० १४५३ ... शु० ३ शनौ श्रीमाल माधलपुरा गोत्रे सा० केला पुत्रेण सा० तंवाकेन  
नरपात्र श्री पालेत्वादि पुत्रयुतेन श्री धर्मनाथ विम्बं कारितं प्र० तपागङ्गे श्री पूर्णचन्द्र  
नृसिंहे श्री हेमहंस सूरिभिः

[ 1490 ]

॥ सं० १४५७ वर्षे वै० शु० ३ शनौ उदकेश गङ्गे धेधड ज्ञा० केली प्रा० जृपणा ज्ञा०  
देवी पु० लीगकेन (?) पितृमातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ वि० का० प्र० श्री श्रीमाल  
श्री गनदेव नृगिभिः ॥

( ११३ )

[ 1491 ]

॥ सं० १४०५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ अस्वाल खांटड गोत्रे सा० जाहजू जा० अहवदे पु०  
पूना पितृश्रेयसे श्री संजवनाथ विम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गळे श्री मलयचन्द्र सूरि पटे  
श्री पद्मशेखर सूरिजिः ॥

[ 1492 ]

॥ सं० १५०३ मार्ग सुदि ५ उ० झा० उठितवाल गोत्र सा० मेघा पुत्र सा० खेताकेन  
जा० हर्षमदे सह पूर्वपुरषमेदानिमित्तं शान्तिनाथ विम्बं का० प्र० श्री धर्मघोषगळे श्री  
महोत्तिलक सूरिजिः ॥

[ 1493 ]

॥ सं० १५०९ वर्षे ज्येष्ठ वंशे सा० पेथड़ जा० षीथाही पु० खेला सरवण साजण के  
श्री अंचलगणेश श्री जयकेशरी सूरि उपदेशेन श्री विमलनाथ विम्बं स्वश्रेयसे कारितं प्र० ॥

[ 1494 ]

॥ सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ उपकेश सुचिन्ति गोत्रे सा० नरपति पु० सा०  
साव्हा पु० फमण जा० केव्हाही पु० सुधारण जा० संसारदे युतेन पित्रोः श्रेयसे श्री आदि  
नाथ विम्बं कारापितं उपकेश० ककुदाचार्य प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1495 ]

॥ सं० १५१४ वर्षे मागसिर वदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय महं केव्हा चार्या कीव्हाण  
पुत्र सुरजणकेन जा० राणी सहितेन श्री कुन्धुनाथ विम्बं का० प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणीयगळे  
जा० श्री उदयप्रज सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[ 1496 ]

॥ संवत् १५५४ वर्षे माह वदि ३ गुरौ प्राग्वाट ज्ञानीय शृङ्गारसंदवी सिद्धराज मुश्राव  
केन चार्या ठणकू पुत्र सा० हूपा चार्या रम्मदे मुख्यकुटुम्बसहितेन श्री मुपार्श्वनाथ विम्बं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

( ११४ )

श्री दादावाढी - साहगंज ।

श्री महावीरस्वामी के वेदी पर ।

[ 1497 ]

संवत् १९७५ मिति वैशाख सुदि ३ सोमवारे दुखीचन्द के पुत्र प्यारेबाल चोरिया  
की बहूने वेदी बनाई ॥

चरणों पर ।

[ 1498 ]

॥ सं० १९४४ मिति आषाढ़ सुदि १० श्री गोतमस्वामीजी प्रतिष्ठितं । पं० संवेगी श्री  
रघुधीर विजय कारापितं ।

[ 1499 ]

श्री अर्गलपुरे साहगजे प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १७७९ मिति ज्येष्ठ सुदि १५ खरतरगजे  
श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरिजी के पाडुके संवत् १९६४ मिति जेठ सुदी २ गुरुवार  
प्रतिष्ठा समय विद्यमान श्री तपागछ उपाध्याय श्री वीरविजयजी ॥

[ 1500 ]

॥ सकल जहारक पुरन्दर जहारक श्री १०८ श्री हीरविजय सूरिश्वरकस्व नाम  
प्रतिष्ठापितं तपागछे ।

[ 1501 ]

॥ संवत् १९६४ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल २ दिने गुरुवारे श्री आगरा नगरे सकलसंघेन श्री  
बेकारगजे श्रीमद् आचार्य सेमकरणस्य पाडुका श्री तपागछीय श्रीमद् वीरविजय  
प्रतिष्ठापिता ॥

( ११५ )

## लखनउ ।

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर - बोहरन टोखा ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1502 ]

सं० १३०६ वर्षे वैशाख सु० १३ सा० करमण जा० ... खसिरि पु० गोसाकेन मातृपितृ  
श्रेयोर्थ श्री विंशं का० प्र० च धर्मप्रज्ञ सूरि ... ।

[ 1503 ]

संवत् १४०२ वर्षे फा० सु० ३ उकेस वंशीय सा० जेसिंग सुत सामस जार्या सह-  
जसदे सुत सा० जसा जा० जाससदे ज्ञातृ देधर जार्या श्रा० संगार्ह स्वश्रेयोर्थ श्री अजित  
नाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनजस्र सूरिजिः ॥

[ 1504 ]

सं० १५१२ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्रीमाखी ज्ञानीय सं० अज्जुन जा० सास पु०  
टोइं आमाइं ... हदाकेन जा० लखी लहितेन निजश्रेयसे श्री अजितनाथ विंशं का०  
उकेशगढे श्री सिरुाचार्य संताने श्री कक्क सूरिजिः प्रतिष्ठितमिति ।

[ 1505 ]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाख वदि ३ सोमे श्री श्रीमास ज्ञानी श्रे० नाहुग्गी मृत श्रे०  
पंगाकेन जार्या होमी सु० धना बना मिष्टा गती युतेन श्री श्रीतयनाथादि पंचतीर्थी  
आगमगढे श्री हेमरत्न नूरीणामुखदेवात् कागिता प्रतिष्ठिता च मातृषि वामनद ।

[ 1506 ]

सं० १५२७ वर्षे माघ वदि ७ रवौ उरर ज्ञा० सं० कृष्ण जा० सोमस पुत्र कप जार्या  
नू सु० जिहा बुदा मिष्टा आगमश्रेयसे श्री श्रीतयनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं था ।



( ११६ )

जिरायपट्टीय गच्छे चट्टारक श्री साखिचन्द्र सूरि पदे श्री ज० श्री उदयचंद्र सूरिजिः  
प्रतिष्ठितं श्री ॥ ७४ ॥

[ 1507 ]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे सा० चचू चार्या सवीराई । पुत्र अका श्री  
विजयदान सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[ 1508 ]

संवत् १६१६ वर्षे वैशाख शुदि १० रवौ श्रीमालो ज्ञातीय सा० सता श्रेयार्थ श्री  
वासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिजिः ।

[ 1509 ]

सं० १६१६ वर्षे वै० शु० १० रवौ श्रे० ककुश्रेयार्थ श्री संजवनाथ विंबं कारि तंतप  
गच्छे प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिजिः ।

[ 1510 ]

संवत् १६९० व० फागुण सुदि ए ..... ।

मूर्तियों पर ।

[ 1511 ]

॥ सं १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री महावीर जिन विंबं कारितं च उम वंशे गजेन्द्र  
गोत्रे । दादा जीवनदास पुत्रेण दुर्गाप्रसादेन कारितं चट्टारक श्री शांतिसागर  
सूरिजिः प्रतिष्ठितं विजयगच्छे ।

[ 1512 ]

॥ सं० १९२४ मा० शु० १३ सुमतिजिन विंबं का० उम वंशे वैद मुहता बाखवंद  
तज्ञार्या महतावो वीवी प्र । विजयगच्छे श्री शांतिसागर सूरिजिः श्रेयार्थ ।

( ११७ )

[ 1513 ]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गु० मुनिसुव्रत जिन विं वं कारितं, उ० वंशे लाजेड गोत्रे  
लाजा हरप्रसाद तत् पुत्र जीवनदास चार्या नन्ही वीवी श्रेयोर्थं ज० श्री शांतिसागर  
सूरिनिः प्रतिष्ठितं विजय गढे ।

[ 1514 ]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गु० सुमतिनाथ जिन विं वं वेद मुहता गोत्रे लाजा धर्मचंद्र  
पुत्र शिवरचंद्र तद् ज्ञा० सांदन वीवी श्रेयोर्थं । ज० श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिनिः  
प्रति० विजय गढे

[ 1515 ]

॥ सं० १९२४ मा० शु० १३ मद्दारीर जिन । वेद धर्मचंद्रजी विजय गढे ज० शांति-  
सागर सूरिनिः ।

[ 1516 ]

सं० १९२४ मा० शु० १३ श्री सुमति जिन विं वं का० उ० वंशे सादकम गोत्रीय धर्म  
चंद्र तत् पुत्री संगल वीवी प्र० । विजयगढे ज० । श्री शांतिसागर सूरिनिः श्रेयोर्थं  
प्रतिष्ठित हीरा वीवी ।

[ 1517 ]

सं० १९२४ मा० शु० १३ नंजर जिन । सादकल गो० धर्मचंद्र तत् पुत्र हीरा वीवी  
। प्र० । शांतिसागर सूरिनिः विजयगढे ।

[ 1518 ]

सं० १९२४ मा० शु० १३ श्री धर्मनाथ विं वं का० उ० वंशे सूरिनि गोत्रे साद  
नोरनाथ पु० नेरा प्रसादेन जिन प्र० विजयगढे शांतिसागर सूरिनिः ।

सं १७९३ माघ सुदि १० बुधवारे राजनगरे उंसवाल ज्ञानि वृद्ध ज्ञाण साधु वीर्य  
रूपा श्रेयोर्थ शांतिनाथ त्रिवं चरावी प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं तपागणे ।

[ 1520 ]

शाहजहां विजय राज्ये । श्री विक्रमार्क समयातीन संवत् १६७१ वर्षे शाके १५३३  
प्रवर्तमाने आगरा वास्तव्य उंसवाल ज्ञानीय लोढा गोत्रे अग्रणी वंशे सं० शपनदास  
तत्पुत्र सं० श्री कुंरपाल सोनवाल संवाधिराज्यां श्री अंतनाथ त्रिवं प्रतिष्ठितं श्रीमद्वल  
गळे पूज्य श्री ५० श्री धर्ममूर्ति सूरि पदाम्बुज हंस श्री श्री कल्याणसामर सूरिणा  
मुदेशेन ।

श्याम पाषाणके मूर्तियों पर

[ 1521 ]

॥ सं० १७७९ फा० सु० ए शनौ उंस वंशे लोढा गोत्रे हरपचंद्रस्य ... श्री सुशर्क  
त्रिवं ... ।

[ 1522 ]

॥ सं० १७७९ फा० सु० ए शनौ उंस वंशे मयाचंदजी तत्पुत्र धनसुख ... ।

[ 1523 ]

सं० १७७९ फा० सु० ए शनौ श्रीमाल षाड़ड़ मन्नुलाल ... ।

[ 1524 ]

॥ सं १७७९ फा० सु० ए शनौ चोरडिया गोत्रे दयाचंद ... ।

श्वेत पाषाणके चरणों पर ।

[ 1525 ]

सं १७६३ मि० माघ सु० ५ दिने श्री अतीत चौविंसी जगवान जी की उंसवाल वंशे ।

नाहटा गोत्रे राजा बडगाज बाबू विशेश्वरदास बाबू जैरुनाथ बाबू वैजनाथ बाबू जगन्नाथ  
बाबू लछमणदास ने चरण जराया बृहत्खरतर गढे जहारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं  
श्रेयोर्थ शासन देवो अत्य मंदिरस्य रक्षां कुर्वतु ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री लखनउ नगरमध्ये  
नवाव ताहव सहादतअलि विजय राज्ये ।

[ 1526 ]

सं० १७३४ मि० वै० सु० ३ दिने वर्तमान चौविशी १४ जगवान जी के उंसवाल वंशे  
काकरिया गोत्रे खुमाझराय। बखतावरसिंह । गोकलचंद । माणकचंद । स्वरूपचंद । रतनचंद ।  
ताराचंद । संपरिवारेण चरण वनवाया श्री बृहत्खरतर गढे जहारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः  
प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे ।

[ 1527 ]

सं० १७३४ मि० वै० सु० ३ दिने अनागतचौविशी उंसवाल वंशे नाहटा गोत्रे राजा  
बडगाज तत्पुत्र बाबू जगन्नाथस्य जार्या स्वरूपने इदं चरणं काराषितं श्रेयोर्थ श्री बृहत्खरतर  
गढे जहारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे ।

[ 1528 ]

सं० १७३४ मि० वै० सु० ३ दिने १० विहरमान ४ शास्वतानि जगवानजी के उंसवाल  
वंशे कांकरिया गोत्रे जेठमल गुजरमल बहादुरसिंह स्वरूपचंद सपरिवारेण चरण वनवाया  
श्री बृहत्खरतर गढे ज० श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे ।

सहस्रकूट पर ।

[ 1529 ]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १९७५ प्रवर्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट  
विंशति प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर जहारक गढे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रदाता जहारक  
श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कागितं श्री लखनपुर वास्तव्य प्रह्लादन गो० । श्री  
जेठमल तत्पुत्र कालकादास तत्पुत्र दत्तदेवदासेन श्रेयोर्मानंदपुरे

॥ १९१० वर्षे शाके १९७५ प्रवर्त्तमाने माघशुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंवाति प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर जट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रज्ञाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्षणपुर वास्तव्य चो० । गो० । श्री हंसान तद्भार्या सोना विवि तथा श्रेयोर्थमानंदपुरे ॥ पं० । प्र० । कनकविजय मुण्युपदेशात् ।

॥ सं १९१० वर्षे शाके १९७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंवाति प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर जट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रज्ञाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्षणपुर वास्तव्य ठा० । गो० । सा० उमेदचंद्र तत्पुत्र हरप्रसाद रामप्रसाद तत्पुत्र जीवनदास धनपतराय तत्पुत्र दूर्गाप्रसाद सपरिकरैः श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

॥ सं० १९१० शाके १९७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंवाति प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर जट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रज्ञाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लखनऊ समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

संवत् १९१३ शाके १९७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां परमार्हत श्रीमत् शांति जिन मांका कट्याणक पाडुका लक्षणपुर वास्तव्य समस्त श्री संघेन कारितं प्र० च बृहत्खरतर मन्त्रीय जं । यु । प्र । श्री जिनचंद्र सूरि पद्मजभृत् श्री जिन जयशेखर सूरिजिः ।

श्वेतपाषाण के पंचमुष्टिलोच के जाव पर ।

संवत् १९१३ शाके १९७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ... दीक्षा कट्याणक पाडुका ...  
इतं वंशे मन्ना गोत्रे ... ।

## श्री ऋषभदेवजी का मंदिर - बोहरनटोला ।

शिक्षात्रेव । ०

[ 1535 ]

॥ १० ॥ उं नमः सिद्धं । नवम् १९७४ माघ शुक्ल १३ गुरो ॥ श्लोकाः ॥ विजयगढाधिपो  
 सूरि । विद्मन् नन् महात्मनं ॥ शान्ति सूरिन्ति नामन । संग्राप्तो लक्ष्मणपुरे ॥ १ ॥ जगदान्  
 देशनाम्ना । जिननात्कनपुष्टिका ॥ कादंबलीव संजाता । जठयानां बोधहेतवे ॥ २ ॥  
 तथा नरमेवज्ञेन । श्री संयो जक्तिवच्छत्र ॥ कारयन्स्म जिनं चैत्वं । रूपरत्नाधिपंदिं  
 ॥ ३ ॥ सूरिस्तु विद्मन् भूयदां । स्वशिष्यं स्थापितं मुदा ॥ धर्मचंद्राजिधानं च । संस्थिति  
 धर्महेतवे ॥ ४ ॥ तत्रैव धर्म दिलेनिस्म । शिष्यान् पाठयति सदा ॥ स्वशिष्यं गुणचंद्राहं ।  
 गुरुदक्षिणायणं ॥ ५ ॥ मंदिरोपरि भूम्यां च । त्रिद्वारं जगदिकाधुनं ॥ मंदिरं कारयेत्  
 संवः । जानः समर्पवस्ततः ॥ ६ ॥ माघमासे शुक्लद्वे । त्रयोदश्यां गुरो दिने ॥ जट्टारक  
 शान्ति सूरिः । प्रतिष्ठां चक्रे मुदा ॥ ७ ॥ तस्मिन् जिनमंदिरे । श्री चतुर्मुख विद्वानां  
 चतुर्णां ज्ये । श्रीआदिजिनस्य विंशं । उत्तवंशे वरुद्धा गोत्रे लाला ठाटेनाज पुत्रेण स्वरूप-  
 चंद्रेण कारितं । तथा द्वितीय श्री वासुदेव जिनत्रिं । फुनपाणा गोत्री लाला सीतागम  
 तत्रार्या जांडिया गोत्री तथा कारितं । तृतीयं श्री शान्तिनाथ जिनविंश । श्री शान्तिसागर  
 सूरि शिष्येण । रुषिणा धर्मचंद्रेण कारितं । चतुर्थं श्री महावीर स्वापि जिनविंशं ।  
 सुविना गोत्रे । लाला घेरानीमल्ल पुत्रेण गोविंदरायेण रूपचंद्र पुत्र सडिनेन कारितं ।  
 श्री विजयगढाधीश्वर सार्वभौम जंगनयुगप्रधान जट्टारक श्री जिनचंद्रसागर सूरि  
 पट्टप्रसाधंकार श्री पूज्य श्री शान्तिसागर सूरिनिः प्रतिष्ठितं । रुषिणा चतुर्भुजेनाथ ।  
 गोकुलचंद्रेण संयुता ॥ इयं कृति लिखिताभ्यां । गुरुदक्षिणायणौ ॥ १ ॥ श्रीरस्तुः ॥  
 श्रीः ॥ पद्मावती लब्धवर प्रसादान् । यो मेद्मादाभिरतिं स्वरूपं । राणावदे संस्थित शत्रु  
 सिंह रोगात् प्रमुच्येन स शान्ति सूरिः ॥ २ ॥

\* इस लेखके प्रथम चार पंक्तों में दाहिने २० का और बायें १६ का है, उनके निचे दाहिने ६ चाने का और बायें ११ चाने का पंक्त है, उनके जोड़ मिलते नहीं हैं ।

१०	२	८
४	७	६
६	११	३

७	२	१०
६	६	४
३	११	५

३१	३०	३५	२२	२१	२६	६७	६६	७१	६६	५३	४०	२७	१४	१	१२०	१०७	६४	६१	६०
३६	३२	२६	२७	२३	१६	७२	६६	६४	७६	६५	५२	३६	२६	१३	११	११६	१०६	६३	६२
२६	३४	३३	२०	२५	२४	६५	७०	६६	७६	६९	७९	७६	५१	३८	२५	१२	१०	११८	१०५
०१	८१	८०	४०	३६	४४	४३	३	८	६६	१०३	६०	८८	७५	६२	४६	३६	२३	२१	८
८२	७३	७३	४५	४१	३७	६	५	१	६	११५	१०२	८६	८७	७४	६१	४८	३५	३३	२०
०५	७१	७८	३८	४३	४२	२	७	६	६	११४	१०१	६६	८६	७३	६०	४७	३४	३२	१६
१३	१२	१७	५८	५०	६७	६६	४८	५२	१८	५	११३	१००	६८	८५	७२	५६	४६	४४	३१
१८	१४	१०	६३	५६	५५	५४	५०	४६	३०	१७	४	११२	१२०	६७	८४	७१	५८	४०	४३
११	१६	१५	५६	६१	६०	४७	५२	५१	४२	२६	१६	३	१११	१०६	६६	८३	७०	५७	५०
									५४	४१	२८	१५	२	१२१	१०८	६५	८२	६६	५१

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1536 ]

सं० १५७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ भातु साव्यायां तेलङ्गिया वंशे ना० वरमा पुत्र मा०  
 ललतर्मा पुत्र ना० वर्धमान ना० गीडा श्री पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा कृता श्री साधु वचनात् ।

पंचतोरियों पर ।

[ 1537 ]

सं० १५८८ वर्षे मार्गशिर वदि २ वृधे ना० स्रिया गोत्रे ना० नोला पु० ना० काक

( १३३ )

त्रातृ उसीह ... त्रिः पितुः पु० श्री आदिनाथ त्रिंशं का० प्र० बृहज्जे श्री महेंद्र सूरिनिः  
॥ श्री शुभं ॥

[ 1538 ]

सं० १५११ वर्षे माघ वदि ५ जसत्राल ज्ञाती जाइत्रवाल गोत्रे जोजा पुत्र धडिया  
पु० मोहण पुत्र वेताकेन स्वचार्या श्रेयर्थ श्री शांतिनाथ त्रिंशं श्री धर्मघोष गहे ज० श्री  
महीतिलक सूरिनिः ॥

चौवीशी पर ।

[ 1539 ]

सं० १५१० माघ शुदि ५ दिने पत्तन वाली श्रीमाली श्रे० ठाकरसी जा० धारी सुत  
श्रे० गोधा साका जाणा जगिन्या श्रे० नरसिंग चार्या वैरामति नाम्न्या श्री वासुपूज्य  
चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिनिः ॥ श्री श्री  
तपगळे ॥

[ 1540 ]

सं० । १६१६ वर्षे शाके १४०३ प्रवर्तमाने वैशाख सुदि १० दिने रवौ अट्टमदावाद  
वास्तव्य उकेस वंशीय मा० अंठा० जा० अनरा नत्पुत्र सा० राकर ना० संपू नत्पुत्र मा०  
मेलाख्येन जा० मेलादे पुत्र पुत्री परिवारयुतेन आत्मश्रेयर्थ श्री अजितनाथ त्रिंशं काग्निं  
नयागळे जहारक श्री आनंदविमल सूरि नत्पट्टे विजयदान नूरिनिः प्रतिष्ठितं ।

पाणण के चरण पर ।

[ 1541 ]

सं० १५२४ । जूरा वंशे पदकावन गोत्रे छालु नत् पुत्र किमनचंद्र काग्निं ।



श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर - वोहरनटोला ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1542 ]

॥ सं० १ए ... श्री वर्द्धमान जिन विंवं उसवंशे बहुरा गोत्रे लाला कीर्त्तिचंद तत्पुत्र  
शुलीया विवि तयो पुत्र मोतीचंदेन कारितं वृद्धत् विजय गच्छे ज० श्री सार्वभौम श्री  
पूज्य श्री जिनचंद्रमागर सूरि पट्टप्रताकर जं । यु । प्र । शान्तिनागर सूरिनिः ।

मूर्त्ति पर ।

[ 1543 ]

सं० १ए ... श्री पार्श्वजिन विंवं उसवंशे बड़ड़िया गोत्रे लाला दयाचंद तत्पुत्र गो  
मद्वेन मत्पुत्र सरुचंदेन सहितैः कारितं प्र० विजय गच्छे ..... सूरिनिः ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1544 ]

सं० १ए० वर्षे माघ वदी ० रवौ सं० फाल्गु जा० लक्ष्मी सा० द्वर्षा जा० वारु मा  
गन्त ता० मार्जी सं० वसा ता० चात्री सं० जोगा श्री शान्तिनाथ विंवं तपा श्री इंदुमा  
सूरि । चंद्रिनी ग्रामे ।

श्री पद्मप्रता म्वासीजी का मंदिर - चूडिवाली गली ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1545 ]

सं० १३१२ दः श्री जिनचंद्र मूर्त्ति शिष्यैः श्री जिनकुशल मूर्त्तिः श्री पार्श्वनाथ  
विंवं इति विंवं कारितं च मा० केसव पुत्र रत्न मा० जेदुहु मुश्रावकेन पुत्रार्थे ।

( ११५ )

[ 1546 ]

सं० १४९१ वर्षे माह शुद्धि ५ बुधदिने गादहिया गोत्रे सा० सिवराज सुत सा०  
सहजाकेन माना पदमाहीनिमित्तं श्री पार्श्वनाथ त्रिवं कारितं श्री उपकेस गढे प्र० श्री  
सिद्ध सूरिनिः ।

[ 1547 ]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११ ओमवात्र ज्ञानीय अजमेरा गोत्रे सा० सुरजन चा०  
सहजलदे पु० सा० सहजाकेन आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ त्रिं० का० प्रतिष्ठितं श्री धर्म-  
धोष गढे ज० श्री विजयवंद्र सूरिनिः ।

[ 1548 ]

सं० १५०८ वर्षे वैशाख वदि ४ शनौ श्री संडेर गढे पद्मनेवी गोत्रीगानान्वये सा०  
कृष्णपु पु० धांवा चा० बालू पु० जुगाकेन जः० कोडा पुत्र स्वश्रेयसे श्री शिवप्रनाथ त्रिं०  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री शाति सूरिनिः ।

[ 1549 ]

सं० १५१० वर्षे दै० द० ५ प्रा० चा० ... चा० राज पुत्र सा० नरनातेन जा० चांपू  
पुत्रेन स्वश्रेयसे श्री सुविधि त्रिवं वा० प्र० नरा श्री गणेश्वर सूरिनिः ॥ श्री ॥

[ 1550 ]

॥ सं० १५११ वर्षे माघ शुद्धि ५ शुक्रे श्री लोकेन वंसे शोभा गोत्रे सं० दया पु० सा०  
नरवंद्र जा० सीतू तत्पुत्रेण सा० धामकेन नारायण सदाशिव पुत्र उदयगिरिदयनेन श्री  
आदिनाथ त्रिवं कारितं प्र० श्री गणेश्वर गढे श्री जिनवाड सूरिनिः

[ 1551 ]

सं० १५१२ वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीनाथ जार्ज र विदु सांठका मातृपुत्रं  
शेलेरु सुत सांठकेन श्री सदाशिव त्रिवं कारितं श्री गणेश्वर गढे श्री सूरिवंद्र सूरि  
गढे प्रतिष्ठितं श्री शोभ सूरिनिः वृद्धि शान्तरा

( १२६ )

[ 1552 ]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सु० ५ श्री ज्ञानकीय गढे उ० किलासीया गोत्रे श्रे० रेलण  
जा० मादहणदे पुत्र कर्मा जा० कर्मादे पु० घडसीसहितेन कर्मा यद्वा द्वाच्या आरम-  
पुण्यार्थ श्री आदिनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसेन सूरि पढे श्री धनेश्वर  
सूरिनिः ॥ श्री ॥

[ 1553 ]

॥ संवत् १६१७ वर्षे माघ वदि १ गु० मं० आना चार्या अत्रलादे पु० मं० नौवाकेन  
प्रात् मं० कान्हारि सा० वस्था आजीवा चार्या जश्वंत तत् पुत्र मं० कर्मसी राजसीने  
तया कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्री कुंथुनाथ विं० का० प्र० श्री तपागढे श्री दानविजय  
सूरिनिः श्री हीरविजय सूरि प्रमुखैः परिवारपरिवृत्तैः ॥

[ 1554 ]

सं० १५१७ वर्षे आषाढ शुदि ३ शुके उ०सवाल झा० सा० लेषा जा० लषमादे पु० सा०  
राजलकेन जा० रत्नादे पु० सा० कोढहा जा० शादहणदे पु० सा० गांगा सकुटुंबयुतेन  
स्वपुण्यर्थ श्री कुंथुनाथ विं० का० प्र० लंडेरक गढे श्री शांति सूरिनिः ॥

[ 1555 ]

सं० १५३६ वर्षे वै० ए चंद्रे ... चार्लेवा गोत्रे सा० पातल जा० वाचा पु० बीजा सा०  
मदना नाथी पु० ठाजू स्वपितृ श्रे० श्री चंद्रप्रज विं० कारितं प्र० श्री पलीवाल गढे श्री  
नत्र सूरि पढे च० उद्योतन सूरिनिः ।

[ 1556 ]

संवत् १५६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ शुके काकरेया गो० पूर्व सा० ठोटा पु० कुंडा पु०  
पेता जा० जाउ तत्पुत्र कान्हा जा० कस्मीरदे सकुटुंबेन श्रे० पि० श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ  
विं० का० प्र० श्री यशोज्ञ सूरि संताने श्री शांति सूरिनिः ॥ श्री ॥

( १९७ )

[ 1557 ]

सं० १९७७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा तिथौ गुरुवारे मूजनायक श्री पार्श्वनाथ जिन  
पंचनीचीं जिनैः प्रतिष्ठितं श्री वृद्धत् परम जहारक श्री जिनसुख सूरि वराणां उपाध्याय  
श्री क्षेत्रराम गणित्तिः ॥ श्रीरस्तु ॥ कारितं चैतत् गणधर चौपड़ा गोत्रे शाह् श्री लाल  
चंद्रजी पुत्ररत्न श्री कपूरचंद्रजीकेन स्वपुन्यविवृष्ट्यर्थं ॥ शुभं जवतु ॥ श्री आदि जिन  
विंवं ॥ श्री नेमिनाथ जिन विंवं ॥ श्री शांति जिन विंवं ॥ श्री महावीरस्वामी विंवं ॥

श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा पर

[ 1558 ]

संवत् १९३५ शके १५९१ वैशाख सुदि ५ आदित्यवारे .... ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर - जुडीवाडी गल्ली ।

मूर्ति पर ।

[ 1559 ]

सं० १९२४ माघ शुद्धी ३ चंद्रप्रज विंवं कारितं । मासकोम गो० परमसुख कामनां  
प्रतिष्ठ । विजय गढे ज० । श्री शांतिनाथ नृगितिः ॥

पंचनीचीं पर ।

[ 1560 ]

॥ सं० १९६४ वर्षे मार्ग सुदि दशमी उज्जैन चतुप्र संश्रे ज० । पेशा ज० । देव मू  
स । रिता । ज० धनी सापलेन ज० कामरी पुत्र नाथ प्रमुखसुखमतेन निजविना  
शेदने श्री आदिनाथ विंवं कारितं । प्र... नर... उज्जैन... मूर्ति श्री... ॥

[ 1561 ]

सं० १९६६ वर्षे मार्ग सुदि दशमी उज्जैन चतुप्र संश्रे ज० । पेशा ज० । देव मू  
स । रिता । ज० धनी सापलेन ज० कामरी पुत्र नाथ प्रमुखसुखमतेन निजविना  
शेदने श्री आदिनाथ विंवं कारितं । प्र... नर... उज्जैन... मूर्ति श्री... ॥

श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंभं का० । प्र० । श्री पार्श्वचंद्र सूरिजिः ॥

वीसस्थानक यंत्र पर ।

[ 1562 ]

सं० १८६१ वर्षे आश्विन शु० १५ । गुरौ श्री सिद्धचक्रराज यंत्र प्रतिष्ठापितं श्री श्रीमाख पटणीय बहादुरसिंहजी तत्पुत्र लाला बखतावरसिंहजी श्रेयोर्थं तथागणीय जं । यु । प्र । ज । श्री १०८ श्री श्री विजयजिनैंद्र सूरिजिः विजयराज्ये वाणारसां ।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर - सुंधि टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1563 ]

सं० १४३९ वर्षे पोष वदि ए .... ।

[ 1564 ]

॥ सं० १४०२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रौ श्रीमाखी ज्ञातीय फोफलिया नरसिंह ना० नामदे सुत वाछा पितामह पितृश्रेयसे माता वर्द्धजलदे युतेन सुतेन योगकेन श्री नमिनाथ मुख्य पंचतीर्थी का० पूर्णिमा पक्षे जीमपल्ली श्री पासचंद्र सूरि पदे श्री जयवंद सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[ 1565 ]

॥ सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ए रवौ श्री श्रीमाखज्ञातीय श्रे० सरवण ना० वा० पु० श्रे० गोवड ना० इसी पु० सहमाकेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंभं कारिणं पूर्णिमापक्षे श्री श्यामसुद्ध सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ १॥ नदिमण्डल स्थाने ॥ श्री १॥

( ११६ )

[ 1566 ]

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ श्री श्रीमात्र० सं० सामल जा० लाखणदे सुत  
देवा जा० नेत्रू नाम्ना देवदा कुटुंबसहितया अंबज गङ्गे श्री जयकेशर सूरिणामुप-  
देशेन सश्रेयोर्य श्री विमलनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्रासंधेन ॥

[ 1567 ]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जांटा जा० जासू  
सुत सा० मानंत चार्या कारिसु अदाकेन चातृ बहा पाशदीर प्रभृति कुटुंबसुनेन मातृपितृ  
श्रेयसे श्री आदिनाथ विंशं पूर्णिसा । श्री पुण्यरत्न सूरिणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ।

[ 1568 ]

सं० १५२२ वर्षे मघ सुदि ६ रवौ उमकेश ज्ञातीय सा० जेना चार्या पोईणी सुत  
राजनेन चार्या राजलदे चातृ सौर्यद जा० साळ प्रभुत्व कुटुंबसुनेन सश्रेयोर्य श्री श्री श्री  
सुमति विंशं का० प्र० कनकरत्न सूरिजिः ।

[ 1569 ]

सं० १५२४ वै० सु० १० प्राग्वाट सा० धन्ना जा० गंतू सुत सं० देवा जा० जीनिणी  
सुत सं० सनधर संप्रामाच्यां स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ विंशं कारितं । तसामणे श्री सनधी-  
तागर सूरिजिः । जीर्णधारा वासिनः ॥ श्रीरस्तु ॥

[ 1570 ]

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ३ प्राग्वाट वष० देवनी चार्या देवनाथे पुत्र विंशानेन  
जा० धीजलदे पुत्र सांजादिकुटुंबसुनेन श्री नमकदनाथ विंशं च गितं प्रतिष्ठितं तथा श्री  
रत्नशेखर सूरि पंठे श्री सनधीतागर सूरिजिः । श्री नंदनाथे ॥

[ 1571 ]

सं० १५२७ वर्षे वैशाख वदि ३ सोमदिने । उरवेन ज्ञातेः बहरी संश्रे संना सा०  
गोयंर पु० साहित्य जा० जगद्वदे पु० बोड्डू नाम्ना जा० सनधरे पुत्रादिसुनेन विंशः

( १२० )

श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंबं का० । प्र० । श्री पार्श्वचंद्र सूरिजिः ॥

वीसस्थानक यंत्र पर ।

[ 1562 ]

सं० १७६१ वर्षे आश्विन शु० १५ । गुरौ श्री सिद्धचक्रराज यंत्र प्रतिष्ठापितं श्री श्रीमाल पटणाय बहादुरसिंहजी तत्पुत्र लाला वखनावरसिंहजी श्रेयोर्य तरागणीय जं । यु । प्र । ज । श्री १०७ श्री श्री विजयजिनेंद्र सूरिजिः विजयराज्ये वाणारस्यां ।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर - सुंधि टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1563 ]

सं० १४३९ वर्षे पोष वदि ए .... ।

[ 1564 ]

॥ सं० १४७२ वर्षे चैत्र वदि ए शुक्रौ श्रीमाली ज्ञातीय फोफलिया नरसिंह जा० नामलदे सुत बाछा पितामह पितृश्रेयसे माता वर्डजलदे युतेन सुतेन योगाकेन श्री नमिनाथ मुख्य पंचतीर्थी का० पूर्णिमा पक्षे जीमपल्ली श्री पासचंद्र सूरि पद्वे श्री जयचंद्र सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[ 1565 ]

॥ सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ए रवौ श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० सरवण जा० वारु पु० श्रे० गोवल जा० हूसी पु० सहसाकेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं पूर्णिमापक्षे श्री गुणसमुद्र सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ ७ ॥ मद्रिसाणा स्थाने ॥ श्री ॥

( ११९ )

[ 1566 ]

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ श्री श्रीमन्नं सं० सामल जा० लाखणदे सुत  
देवा जा० मेघू नाम्न्या देवडा कुटुंबसहितया अंचन गङ्गे श्री जयकेशर सूरीणामुप-  
देशेन स्वश्रेयोर्ष श्री विमलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंधेन ॥

[ 1567 ]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ बुके श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जांडा जा० जासू  
सुत सा० मानंत चार्या कार्दसु अदाकेन ब्रातृ बहा पाशवीर प्रभृत्कुटुंबयुतेन मातृपितृ  
श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं पूर्णिमा । श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ।

[ 1568 ]

सं० १५२३ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ उरकेश ज्ञातीय सा० जेना चार्या पोईणी सुत  
राजाकेन चार्या राजलदे ब्रातृ सौर्यद जा० गारु प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्ष श्री श्री श्री  
सुसति विंवं का० प्र० कनकरत्न सूरिनिः ।

[ 1569 ]

सं० १५२४ वै० सु० १० प्राग्वाट सा० धन्ना जा० गंनू सुत सं० देवा जा० जीविणी  
सुत सं० लप्रधर संग्रामाच्यां स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं । तथापु श्री लक्ष्मी-  
सागर सूरिनिः । जीर्णधारा वासिनः ॥ धीरस्तु ॥

[ 1570 ]

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ६ प्राग्वाट वय० देवनी चार्या देवनागदे पुत्र विंजारुन  
जा० बीजलदे पुत्र सांडादि कुटुंबयुतेन श्री सनन्दनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तथा श्री  
स्वरोत्तर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः । श्री देवनागे ॥

[ 1571 ]

सं० १५२० वर्षे वैशाख वदि ६ सोमदिने । उरकेश ज्ञातीय बहरी गोत्रे गंगा मा०  
गोयंद पु० सावित्र जा० राजदे पु० वेणू नाम्न्या जा० लक्ष्मीदे पुत्रादियुतेन विंवाः



पुण्यार्थं स्वश्रेयसे च श्री नमिनाथ विंशं का० प्र० उपकेश गठीय श्री ककुदा० सं  
श्री देवगुप्त सूरिजिः ।

[ 1572 ]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० नगसिंग जा० संजू सुत वकूश-  
केन चार्या रही प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं  
त्तपागच्छनायक श्री रत्नशेखर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । मूंडहटा वास्तव्यः ॥

[ 1573 ]

सं० १५५४ वर्षे पौष सुदि १५ सोमे उपकेश ज्ञातीय सं० मेहा जा० सरूपदे पु०  
सं० रिष्मलेन जा० रत्नादे पु० लापा दासा जिणदास पंचायणकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे  
श्री सुमतिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचल गठे श्री सिद्धांतसागर सूरिजिः ॥

[ 1574 ]

सं० १५७१ वर्षे फागुण शुदि ३ शुके उंसवाल ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे साह सहदे  
पुत्र साह नयणाकेन कलत्रपुत्रादिपरिवारयुतेन पुण्यार्थं श्री मुनिसुवन स्वामि विंशं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गठे ककुदाचार्य संताने जट्टारक श्री श्री सिद्ध सूरिजिः ॥  
अलावलपुरे ॥ श्रीरस्तु ॥

[ 1575 ]

सं० १७०१ वर्षे मार्ग शिर कृष्णैकादश्यां रूढा वाई नाम्ना कारितं श्री नमिनाथ विंशं  
प्रतिष्ठितं तपागठे श्री विजयदेव सूरि पदे प्रजाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ।

[ 1576 ]

सं० १७३३ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे उंसवाल ज्ञातीय चौरवेडिया गोत्रे सं० सोहिल तसुत्र  
सचवा सिंघराज तस्य पुण्यार्थं सं० सिद्धपालेन श्री शांतिनाथ विंशं कारापितं श्री जगवा  
गठे श्री सिद्ध सूरि प्रतिष्ठितं । पूजक श्रेयसे ॥ श्रीः ॥

संवत् १५७१ वर्षे चैत्र वदि ७ गुरौ श्री वायड् ज्ञातीय मं० नरसिंघ जा० चमकू सुत  
समधर द्वितीया जा० हीरू नाम्न्या देकावडा वास्तव्यः सुत मं० धनराज नगराज संधादि  
स्वकृदुंनयुतया स्वश्रेयसे श्री अजिनंदन स्वाम्यादि चतुर्विंशति पट्ट श्री आगम गद्ये श्री  
अमररत्न सूरि तत्पट्टे सोमरत्न सूरि गुरुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर - सुंधिढोला ।

सूचनायकजी के चरणचौका पर ।

- ( १ ) ॥ श्री विक्रम संमयात् सं० १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ॥ श्रीमत्कीराट्टि  
लोकक-
- ( २ ) ह्योत्रडिंडी गण्डप्रसरसरसशारदशशांककिरणसुशुक्तिमौक्तिकहारनिकरधवल्य-
- ( ३ ) शोक्तिः पूरितदिङ्मंडलसकलधर्मकर्मनीतिप्रवृत्तिकरणप्राप्ताशेषचैवनप्र-
- ( ४ ) सिद्धिनानाशास्त्रोत्पन्नप्रवसुद्धिप्राग्जारजावितोतःकरणाश्वपतिगजपतिव्रतपति-
- ( ५ ) प्रणनपादारविंदुंनप्रथिततनुद्भवचव्यनुजादंडचंडप्रचंडकोदंडखंडितानेकका-
- ( ६ ) विन्यनमकुशितारिप्रकरतरवशीकृनाखिअखंनचूपाखमौखिसंधृतनिर्देशाधिशेषधर्म-
- ( ७ ) शर्माधिकावातस्तकीर्त्तिनिःशेषसार्धनामशाईलसमस्तमनुजाधिपत्यपदवीर्षा-

\* विही सत्राट जयंगर के समय ये मूर्तियां की प्रतिष्ठा हुई थी, उस समय पातगाह को कई लोकोंने पट्ट दिया कि  
नेपडोने ( जैने लोकोंने ) मूर्तियां बन चार हैं और हट्टके नामरों अपने पुत्रोंके ( मूर्तियों के ) पैरों के निचे दिया गया है । फिर  
पना था । पातिसाहके शोषका पार न रहा । श्री संघने पातिसाह का शोष भोगि तथा राजदेवके मर्त्तने मर्त्त प्रयाग प्रतिष्ठ दूर करनेकी  
हे मूर्तियों ( नं० १५७८ - १५७९ ) के मन्तर पर पातिसाह का नाम खुदया दिया था ऐसा प्रवाद है ।

- ( ८ ) लोमीपरिरंजमुनाशीरविजयराज्ये । उसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे आंगाणी मंधरी  
( ९ ) रेषा तद्धार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्र श्री कुंरपालसोनपालाख्याः । तेषां प्राशुकमानीयुत  
( १० ) प्रतिष्ठाया ॥ स्तन्नाम्ना प्रतिमा द्वय प्रतिष्ठा गतः संवेशैः स्वपितृणाम् धर्म चिंतामणि  
( ११ ) पार्श्वनाथ विंबं प्रतिष्ठापितं । अंचलगहेश श्री धर्ममूर्ति सूरि पट्टालंकार पूज्य  
( १२ ) श्री ५ कट्याणसागर सूरीणामुपदेशेन ॥  
( मस्तकपर ) पातिसाह सवाई श्री जहांगीर सुरत्राण

[ 1579 ]

- ( १ ) संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उसवाल ज्ञाती—  
( २ ) य लोढा गोत्रे आंगाणी सं० कृष्णदास तद्धार्या श्रा०  
( ३ ) रेषश्री तत्पुत्रप्रवरैः श्री कुंरपाल सोनपाल सं—  
( ४ ) वाधिपैः सुत सं० संघराज रूपचंद चतुर्जुज धन—  
( ५ ) पालादियुतैः श्री अंचल गहेश पूज्य श्री ५ श्री धर्ममूर्ति  
( ६ ) सूरि पट्टे श्री कट्याणसागर सूरीणामुपदेशेन  
( ७ ) विद्यमान श्री अजितनाथ विंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥  
( मस्तकपर ) पातिसाह श्री जहांगीर विजय राज्ये ।

[ 1580 ]

- ( १ ) ॥ स्रस्ति श्रीमद्भूपविक्रमादित्य संवत्सर समयातीत संवत् १६७१ वर्षे  
( २ ) शके १५३६ प्रवत्तमाने वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीमदागरा दुर्ग वाहनव्योपकेश  
( ३ ) ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंशे साह जेठमख तत्पुत्र सा० राजपाल तद्धार्या श्रा० ग  
( ४ ) जश्री तत्पुत्र श्री दिमलाद्यादि संवकारक सं० कृष्णदास तद्धार्याजयकुमा—  
( ५ ) गगंददादिनी रेषश्री तत्पुत्राच्यां श्री शत्रुंजय समेतगिरि संघ महन्मद्द्विर्वा—  
( ६ ) ह् प्रातननकीर्तियां श्री कुंरपाल सोनपाल संवाधिपाच्यां ॥ सुत सं० मंधार  
रूपचंद पौत्र

( १३३ )

- ( ७ ) सं० ब्रूधरदास सूरदास सिवदास पदमश्री । प्रपौत्र साधारणादि परिवाम्यु-  
( ८ ) तान्यां श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि पद्मांजो जज्ञास्वराणां पूज्य श्री ५  
( ९ ) श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन श्री संजवनाथ विंवं प्रतिष्ठापितं जव्यैः  
पूज्यमानं चिरं नद्यादिति श्रेयस्तुः ॥  
( मस्तक पर ) पातिसाह श्री ५ श्री जहांगीर विजयराज्ये

[ 1581 ]

- ( १ ) ॥ स्वस्ति श्रीमन्मृप विक्रमादित्य समयात् संवत् १६७१ वर्षे शा-  
( २ ) के १५३६ प्रवर्तमाने श्री आगरादुर्ग वास्तव्य उपकेश झा-  
( ३ ) तीय लोढा गोत्रे " सा० राजपाख तज्ञार्या श्रा० राजश्री त-  
( ४ ) त्पुत्र संघपतिपदोपार्जनक्षम सं० ऋषजदास तज्ञा-  
( ५ ) र्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्रान्यां श्री कुंरपाख सोनपाख संघाधिगज्यां श्री अंचल-  
( ६ ) गच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि पद्वे श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदे-  
( ७ ) शेन श्री अजिनंदन स्वामि विंवं प्रतिष्ठापितं ॥ पूज्यमानं चिरं नद्यात्  
( मस्तकपर ) पातिसाह अकवर जखालुदीन सुरत्राणात्मज पातिसाह श्री जहांगीर  
विजयराज्ये

[ 1582 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उत्तमाख झा-  
( २ ) तीय लोढा गोत्रे आंगाणी वंशे सं० ऋषजदास त-  
( ३ ) ज्ञार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्रान्यां सं० श्री कुंरपाख सं० सोन-  
( ४ ) पाख संघाधिपैः तत्पुत्र सं० संघराज सं० रूपचंद चतुर्गुज  
( ५ ) धनपाखादित्तहितैः श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि तत्प-  
( ६ ) द्वे श्री कल्याणसागर सूरिरुपदेशेन विद्यमान श्री रूपनानन जिन  
( ७ ) विंवं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीस्तु ॥  
( मस्तकपर ) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

- ( १ ) ॥ संवत् १६७२ वर्षे वैशाख शुद्धि ३ तनौ रोहिणी नक्षत्रे आ-  
 ( २ ) गण वास्तव्यापकोश द्वितीय मोडे भावने सं० कृष्णदास  
 ( ३ ) चार्वा रेषथी तत्पुत्र संवाधिय सं० श्री कुंभपाद सं० श्री सोनपा-  
 ( ४ ) ल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद्र चतुर्भुज भनपायाविभुनेः  
 ( ५ ) श्रीगदंचक्र गच्छे पूज्य श्री ५ श्री अर्धमूर्ति सूरि नरमहे पूज्य  
 ( ६ ) श्री ५ कदवाणजानर सूरीणामुपदेशेन विहरमान श्री ईश्वर  
 ( ७ ) जिन विंश प्रतिष्ठापितं सं० श्रीकान्द ... ।

( मस्तकपर ) पानिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

- ( १ ) ॥ श्रीमस्तनत् १६७२ वैशाख शुद्धि ३ तनौ रोहिणी नक्षत्रे आ.वरा वा-  
 ( २ ) शंभुसोसवाज ज्ञाती लोहा मोडे भावने सं० राजमदा चार्वा राजधी  
 ( ३ ) तत्पुत्र सं० कृष्णदास चाण रेषथी तत्सुत संवाधिय सं० कुंभपाद सं०  
 ( ४ ) श्री सोनपाद तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद्र सं० चतुर्भुज सं० भन-  
 ( ५ ) पाल पौत्र सुधरदास कुतैः श्री अंबल नटे पूज्य श्री  
 ( ६ ) ५ श्रीपदम सूरि पहाडंकार श्री कदवाणजानर सूरीणामुपदेशेन  
 ( ७ ) श्री पद्मानन जिन विंश प्रतिष्ठापितं ॥ श्री ॥

( मस्तकपर ) पानिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

- ( १ ) ॥ सं० ॥ स्वदिन श्री संवत् १६६७ वर्षे ॥ उषेउ शुद्धि १५ तिथौ शुद्धवासो  
 ( २ ) अतुराधा नक्षत्रे जलवाज द्वितीय अण्डकोशी मोडे सा० कृष्ण  
 ( ३ ) ॥ संताने सा० कान्दुड । सा० चाननी ... पुत्र सा० पद्मीराज ...  
 ( ४ ) सा० इंद्राणी । सा० मोनी पुत्र सा० निहालचंद्र । तेन श्री चंडानन शास्  
 ( ५ ) न विंश कारितं प्रतिष्ठितं । श्री उपरमभे श्री जिनवर्धन सूरि संताने

१३ ) श्री जिनाक्षय सूरि षोः श्री विनयस्य सूरिभिः ॥ श्री नन्दराज नगरे ॥ शुद्ध सप्तम्यु ॥

[ 1533 ]

सर्व १५७७ वर्ष शुद्ध ५ श्री बल्लभान् विन विंशं पारितं उक्तवन्ते चोद्विधा योऽत्रे हरी-  
पल दादा नदी तथा । इ । ह । ज । ह । य । र । न । श्री जिनाक्षय सूरि पद्मजप्रबोध खचित्तु-  
सह श्री विनयस्य सूरिभिः कारितं पूजनयोः शेषोऽर्च । सत्समल नगरे ।

पंचलीशिवो पर

[ 1537 ]

सर्व १५९५ वर्षे मास शुद्ध ६ शुद्धे श्री उदयत वंद्ये साधु कियदात्त साधु ब्रूइती शुद्ध साधु  
कादा साधु कादखदे शुद्ध साधु काहा साधु दयसादे शुद्ध साधु कथा बुद्धावकेण एवन्ती पुत्र  
वरमास्य विदुष्य साधु पूजा साधु समंत साधु नमस्य शुद्ध समस्तकुटुंबसहितेन श्री शंवल  
नद शुद्ध श्री जगद्वेशरी सूरियां उद्वेसेन मातुः शेषोऽर्च श्री नन्दराज विंशं साधु प्रनिहितं  
श्री उद्वेन ॥

[ 1540 ]

सर्व १५९६ वर्ष मास्य शिवि १ शोस पावडी नौजे साधु ईश्वर साधु श्रीभाजदे शुद्ध श्रीम  
काद दयखडे शुद्ध जावदुसा निज साधु शेषोऽर्च श्री वेदिनाथ विंशं साधु नमसादे श्री  
नन्दराज सूरि षोः श्री नन्दराज सूरिभिः ॥ शुद्धे ॥

[ 1547 ]

सर्व १५९५ वर्षे मास शुद्ध ५ शुद्धे साधु साधु शेषोऽर्च साधु शुद्ध शुद्ध तथा साधु साधु  
साधु विदुष्य साधु ज साधु शुद्ध श्री नन्दराज सूरिभिः ॥ शुद्धे ॥ श्री नन्दराज सूरिभिः ॥ शुद्धे ॥  
श्री नन्दराज सूरिभिः ॥ शुद्धे ॥ श्री नन्दराज सूरिभिः ॥ शुद्धे ॥

श्री नन्दराज सूरिभिः

[ 1550 ]

सर्व १५९५ वर्षे मास शुद्ध ५ शुद्धे साधु साधु शेषोऽर्च साधु शुद्ध शुद्ध तथा साधु साधु

वीरू सुत अर्जुन सहिदे वरदे पुत्री आजुं नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पङ्  
कारितः प्रतिष्ठितो वृद्ध तपापक्षे जटा० श्री ज्ञानसागर सूरिजिः ॥

[ 1591 ]

। संवत् १५५२ वर्षे फाड्युन शुदि तृतीया ३ तिथौ बुधे ॥ श्री पटोलिया गोत्रे । सा  
पोल । तत्पुत्र पेटा । तत्पुत्र रूवा । तत्पुत्र गर्ईपाल । तत्पुत्र मोहण । तत्पुत्र एडा पुत्री दौ ।  
चांपा पाहा । चांपा स्वनिजपुण्यार्थ । स्वयंशसे च । श्री चतुर्विंशति पङ् कारितवान्  
प्रतिष्ठितः श्री राजगछीय श्री पुण्यवर्द्धन सूरिजिः ॥ श्रेयसे ॥

श्री संज्ञवनार्थजी का मंदिर - फूलवाली गली ।

इयाम पाषाण के मूर्तियों पर ।

[ 1592 ]

सं० १००० माघ सुदि ५ सोमे श्री गौड़ी पार्श्वनाथ विंबं का० । उस वंशे सखसेवा  
गोत्रे महताव .... ।

[ 1593 ]

सं० १००० माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रानन शास्वतजिन विंबं कारितं उस वंशे  
कुचेरा गोत्रे वसंतलाखस्य जार्या .... ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1594 ]

श्री मूलसंघे वधेरवाखान्वये वांजा मेला प्रणमति ।

[ 1595 ]

सं १०९९ माघ सु० १३ बु । उ । वंशे डागा गोत्रे सैठमल तन्नार्या गिलहरी तान्या  
। पार्श्वनाथ जिन विंबं का० । वृ० ज । खर । ग । श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

( १३७ )

[ 1596 ]

सं० १९२१ शाके १७७६ । मा । शु । पक्षे ६ । बुधे श्री महावीरजी जिन वि० प्र० श्री शांतिसागर सूरिजिः का० सुचिंती गोत्रे रूपचंद तत्पुत्र धर्मचंद्र श्रेयोर्थ ।

[ 1597 ]

सं० १९२१ शाके १७७६ । मा । शु० ६ बुधे श्री महावीर जिन विं० प्र० श्री शांति-सागर सूरिजिः का० सुचिंती गोत्रे बाबू रूपचंद तद्धार्या मनि विवि श्रेयोर्थ ।

[ 1598 ]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अजित जिन विं० उंस वंशे सुचिंती गोत्रे लाखा रूपचंद पुत्र धर्मचंद तद्धार्या गुलाबो विवि श्रेयोर्थ ज० श्रीशांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1599 ]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री महावीर जिन विं० उंस वंशे मृगणा गोत्रे लाखा खैरातीमल पुत्र रूपचंद तद्धार्या ठोटोविवि का० प्र० श्रीशांतिसागर सूरिजिः विजयगणे ।

[ 1600 ]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन विं० उंस वंशे चोरगिया गोत्रे ला । रजूमल तत्पुत्र इंद्रचंद्रण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिजिः विजय गणे ।

[ 1601 ]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन विं० उंस वंशे मृचिंती गोत्रे लाखा रूपचंद पुत्र धर्मचंद्रण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिजिः विजय गणे ।

संदर्भितो म ।

[ 1602 ]

सं० १९२३ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन विं० उंस वंशे मृचिंती गोत्रे लाखा रूपचंद पुत्र धर्मचंद्रण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिजिः विजय गणे ।



श्रेयोर्य सुत सांगणेन श्री शांतिनाथ त्रिवं कारापितं ।

[ 1603 ]

॥ संवत् १५४४ वर्षे आषाढ़ वदि ७ गुरौ उपकेश ज्ञातो हुंडोयूरा गोत्रे सं० गांगा पु०  
पदमसी पु० पासा ज्ञा० मोहणदेव्या पु० पाटहा श्रीवंतसहितया स्वपुण्यार्थं श्री आदि-  
नाथ त्रिवं का० प्र० उपकेश गच्छे श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1604 ]

संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ दिने ऊ० ज्ञा० बलदत्त आमवासि व्य० वेत्ता ज्ञा०  
सारू पु० व्य० येसाकेन ज्ञा० कीट्टु सहितेन स्वश्रेयोर्य श्री शांतिनाथ त्रिवं का०  
प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिजिः ॥ श्रीस्तु ।

[ 1605 ]

संवत् १५५७ वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० सोकल ज्ञा० वरु  
पु० पांचा ज्ञा० जासू पु० बहासहितेन स्वपूर्वजश्रेयोर्य शीतलनाथ त्रिवं का० नामेंद्र गच्छे  
ज्ञा० श्री कमलचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरि प्रतिष्ठितः ॥

[ 1606 ]

... श्री नागपुरीय गच्छे श्री हेमसमुद्र सूरि पट्टावतंसैः श्री हेमरत्न सूरिजिः ॥ शुभं ॥

लाला माणिकचंद्रजी और राय साहब का देरासर ।

मूर्तियों पर ।

[ 1607 ]

सं० १६२० मि० ज्ञा० कृष्ण २ बुध सा । प्र । ज्ञा० महताव कुंज श्री अधिष्ठापक जिन  
त्रिवं का० श्री अमृतचंद्र जूगितिः ।

[ 1608 ]

सं० १६२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री कृष्णदेव जिन त्रिवं कारितं आस वंशे चोदितं

( १३९ )

गोत्रे जादा प्रतापचंद्र तत्पुत्र शिखरचंद्रेण । प्रतिष्ठितं । ज० श्री शांतिसागर सूरिजिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1609 ]

सं० १५९७ आषाढ सुदि १० बुधे श्री वीर वंशे ॥ सं० पोषा जा० करणं पुत्र सं०  
गरसिंघ सुश्रावकेण जा० लघू ज्ञातृ जयसिंघ राजा पुत्र सं० वरदे कान्हा पौत्र सं० पदमसां  
सहितेन निज श्रेयोर्थ श्री अंचलमहेश श्री जयकेशर सूरीणां उपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ  
विंघं कारितं प्र० संवेन पत्तन नगरे ।

[ 1610 ]

॥ संवत् १५६३ वर्षे आषाढ सुदि ७ गुरौ पत्तन वास्तव्य । सोढ झातीय श्रे० जीवा  
जा० होळ पुत्र श्रे० अमराकेन जा० पुहुति सुत हांसादिकुटुंबयुतेन श्री वासुपूज्य विंघं  
कारितं । प्रतिष्ठितं श्री तपागढनायक । श्री निगमाविज्ञाविका । परमगुरु । श्री श्री श्री  
इंद्रनंदि सूरिजिः ॥

लाला खेमचंदजी का देरासर ।

[ 1611 ]

सं० १६०४ माघ शुक्ल ए बुधे श्यो । वज्रजानीय गोत्रे ला० रोजनलाळ तत्पुत्र  
सोजाचंद्रेण जा० नति विवि तथा श्री पार्श्वनाथ विंघं कारितं पांचाल देशे कंपिलपुर  
प्र० न श्रीमद् नृहारक ... सूरिजिः ।

लाला हीरादाजी कुन्जिदाजी का देगसर ।

सूदननाथजी पर ।

[ 1612 ]

संवत् १६१५ श्ये वैश्व सुदि १ सुत वज्रजानीय जगन्नाथ । श्री जगन्नेदजी ... ।

मूर्ति और पंचतीर्थियों पर ।

[ 1613 ]

सं० १७०५ व० वै० व० २ उवकेश झा० सा० कान्हूजी सुत वीरचंद नाथ श्री  
विमलनाथ कारि० प्रति० तप० श्री विजयदेव सूरिनिः । जय ।

[ 1614 ]

सं० १७१० व० जै० सु० ६ मि० प्राग्वाट लघुशाषायां श्री व्य० सं० मनजीकं  
सुगार्ध विं० कारितं । प्रतिष्ठितं तपा विजयराज सूरिनिः ।

[ 1615 ]

सं० १७२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री सुविधिनाथ जिन विं० श्रीमाल जांडिया कर्क  
यालास तज्जार्थ जनु श्रेयार्थे ज० श्री शांतिसागर सूरिनिः प्रति० विजय गछे ।

[ 1616 ]

सं० १७२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अनंतनाथ जिन विं० श्रीमाल टांक गोत्रे हुम  
मतगवती तखुत्र द्जारीमलेन कारितं प्र० श्री विजय गछे ज० श्री शांतिसागर सूरिनिः ।

[ 1617 ]

सं० १७२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री आदिनाथ विं० .... निहालचंदेण कारितं प्रतिष्ठितं  
विजय गछे श्री शांतिसागर सूरिनिः श्रेयार्थे ।

[ 1618 ]

सं० १७२४ माघ शुद्धि १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ विं० श्रीमाल पाण्डु गोत्रे पदुचंद [१]  
तखुत्र श्री कर्कचंदेण कारितं । प्र० त० श्री पूज्य शांतिसागर सूरिनिः । विजय गछे ।

[ 1619 ]

सं० १७२० वैश्र ३० १० गुरौ श्री आदम व० मिठ्टीया सो० जायदु त० तखुत्र

( १४३ )

१० श्री हीरविजय सूरि पहालंकार श्री अकवग्ठत्रते (?) परिषतप्राप्तवाद्  
० श्री विजयसेन सूरिजिः ॥

श्री कृष्णदेवजी का मंदिर - सहादतगंज ।

मूर्तियों पर ।

[ 1629 ]

१००० मा । सु । ५ । श्री आदि जिन विंशं कारितं उंस वंशे, पहलावत गो ।  
पुत्र गुलावराय चार्या जूनाख्या काण प्र । वृ । न । खरतर । ग । श्री जिनाक्षय  
२ पंहुजभुंगैः श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[ 1630 ]

१० १६१७ कागुण शीन २ बुधे श्री श्री आदि जिन परिकरं कारितं पांचालदेशे कांवि-  
तिष्ठितं । श्रीमद्भद्राक वृहत् खरतर गहाधिराज श्री जिनअक्षय सूरि पट्टस्थित  
नचंद्र सूरि पदकजडयक्षीन विनेय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरिजिः उंस वंशे पहलावन  
लालाजी श्री सहानंदजी तत्पुत्र लाला श्री सदानंदजी तत्पुत्र लाला गुलावरायजी  
यो जूनु त्रिवि तेन कारितं महना प्रमोदेन ।

पंचतीर्थों पर ।

[ 1631 ]

सं० १५१७ वर्षे माघ वदि २ बुधे जदेउग झा० मा० कमलसी ना० नेज्ज नुन गा०  
केन जा० वीरणिश्रेयोर्ध पुत्र गोविंदादियुनेन श्री संनवनाथ विंशं काः प्रनिष्ठिनं  
संडेर गडे श्री शांति सूरिजिः ॥

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर - सहदतगंज ।

चौकी पर ।

[ 1632 ]

१० संवत् १६२३ का निनि जेठ सुदि १० नयां श्रीनाथ वंशे ठे देनावन सहादतगंज

( १४५ )

महिराज ..... त्रातृ नागानिमित्तं श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० श्री विद्याधर गढे ज० श्री  
हेमप्रज सूरिजिः ॥ मांडलि वास्तव्यः ॥ १ ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर - सहादतगंज ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1625 ]

सं० १५७६ वर्षे वैशा० सुदि ६ सोमे झूगड़ गोत्रे सा० बीढहा जा० पूना पु० ४ सा०  
मेहा जा० रेडाही सा० कामी जा० झूला सा० पूला जा० मूलाही सा० उदा० जा० पीमाही  
सा० सधारण श्री सुविधिनाथ विंबं कारितं रडुल गढे श्री सूरि प्रतिष्ठितं ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर - सहादतगंज ।

सूदननायकजी पर ।

[ 1626 ]

॥ संवत् ११७७..... ।

पचनीर्थियों पर ।

[ 1627 ]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाप सुदि ३ दिने श्री श्रीमालझातीय श्रेष्ठि राजल चार्या लाठी  
सुत जोगा चार्या रूपी जसमादे सुत करमण काढहा करमण चार्या ररनादेसहितेन श्री  
शांतिनाथ विंबं कारापितं श्री ..... गढे शांति सूरि पट्टेश सर्वदेव सूरिजिः । कंधरावी  
वास्तव्यः ॥

[ 1628 ]

संवत् १६७० वर्षे वैशाप शित पंचम्यां तिथौ सोमे मेड़तानगर वास्तव्य समदड़ीया  
गोत्रीय । उकेश झातीय वृद्धशापीय सा० माना जा० मनरमदे सुत रामसिंह नाम्ना त्रातृ  
रामसिंह प्रमखकुंडव्युनेन श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्र० तपा गढे श्री अकबर सुरनाथ

( १४३ )

दत्तबहुमान ज० श्री हीरविजय सूरि पट्टाळंकार श्री अकवग्ढत्रते (?) परिषत्प्राप्तवादे-  
जयकार ज० श्री विजयसेन सूरिजिः ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर - सहादतगंज ।

मूर्तियों पर ।

[ 1629 ]

सं० १८०८ मा । सु । ५ । श्री आदि जिन विंशं कारितं उंस वंशे पह्लावत गो ।  
सदानंद पुत्र गुलावराय चार्या जूनाख्या का० प्र । वृ । ज । खरतर । ग । श्री जिनाक्षय  
सूरि तत् पंहुजभृंगैः श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[ 1630 ]

सं० १९१९ फागुण शीत ३ बुधे श्री श्री आदि जिन परिकरं कारितं पांचालदेशे कांपि-  
लपुर प्रतिष्ठितं । श्रीमद्भट्टांक वृहत् खरतर गढाधिराज श्री जिनअक्षय सूरि पट्टस्थित  
श्री जिनचंद्र सूरि पदकजडयक्षीन विनेय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरिजिः उंस वंशे पह्लावत  
गोत्रे दादाजी श्री सहानंदजी तत्पुत्र दादा श्री सदानंदजी तत्पुत्र दादा गुलावरायजी  
तद्चार्या जूनु विवि तेन कारितं महना प्रमोदेन ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1631 ]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि ३ बुधे जदेउरा झा० मा० कमलसी जा० तेज् सुन सा०  
खेनाकेन जा० वीरणिश्रेयोर्थ पुत्र गोविंदादियुतेन श्री संनवनाथ विंशं का० प्रतिष्ठितं  
श्री संडेर गढे श्री शांति सूरिजिः ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर - सहादतगंज ।

चौकी पर ।

[ 1632 ]

॥ सं० १९२३ का निति जेष्ठ सूदि १० म्यां श्रीमत् वंशे के.के.साहन दामोदरजी ने ८

छात्रा विसनचंद्र जी तत्पुत्र काशीनाथजी तत्पुत्र देवीसाह तद् ज्ञातृवधुः नमकु ॥  
श्रेयार्थ ॥ १ ॥

पंचतीर्थिणां पर

[ 1633 ]

संवत् १५२३ वर्षे माह सुदि ६ नासणुकी वासि सं० जलाकेन जार्या ज्ञावलेदे सु  
मांडण जा० जेअरि प्रमुखकुटुंबयुतेन ज्ञातृ बलराज श्रेयसे श्री शांतिनाथ त्रिवं कारितं  
प्रतिष्ठितं तपागच्छेश श्री श्री लक्ष्मासागर सूरिनिः ॥ श्रीः ॥

[ 1634 ]

सं० १५५० वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ श्री उंसवाल ज्ञातौ कठजतिया गोत्रे । सं०  
पदमसी जा० पदमलदे पु० पासा जा० मोहणदे । पु० पाट्टहा श्रीवंत तत्र सा० पाट्टहाकेन  
स्वजार्या इंद्रादेपुण्यार्थ श्री श्रेयांस त्रिवं कारितं । प्रतिष्ठितं । ककुदाचार्य संताने उपकेश  
गच्छे जहारक श्री देवगुप्त सूरिनिः ॥

[ 1635 ]

सं० १६०२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ श्री अहमदावाद वास्तव्य उंसवाल ज्ञातीय वृद्ध  
शाषायां श्री शांतिदास जा० वाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्री शांतिनाथ त्रिवं  
प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे ज० श्री विजयदेव सूरि वरैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री  
मुनिसागर गणिनिः श्रेयोस्तु ॥

चौवासी पर ।

[ 1636 ]

सं० १६१९ वर्षे वैशाख वदि ५ श्रु० श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री  
कुंदकुंदाचार्यान्वये ज० श्री सकलकीर्त्ति देवास्त० ज० श्री जुवनकीर्त्ति देवास्त० ज० श्री  
ज्ञानरूपण देवास्त० ज० श्री विजयकीर्त्ति देवास्त० ज० श्री शुजचंद्र देवास्त०

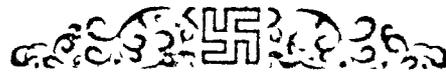
चटारक श्री सुमतिकीर्ति गुरूपदेशात् हुंबड़ ज्ञातीय वजीयाणा गोत्रे सा० धारा जा० राणी  
सु० दादा जा० हरबमदे सुत० सा० जगा जा० जगमादे त्रा० जयवंत जा० जीवादे त्रा०  
जसा जा० काज्या सुत बचूआ युतैः श्री मुनिसुव्रत तीर्थकरदेव नित्यं प्रणमंति ॥

श्री दादाजी का मंदिर - जौहरीबाग ।

श्वेत पाषाण के चरणों पर ।

[ 1637 ]

संवत् १९१३ शालिवाहन शाके १७७७ प्रवर्त्तमाने तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ॥ ५ ॥  
शुक्रवासरे जं । यु । प्र । चटारक श्री जिनकुशल सूरि पाण्डुकां लक्षणपुर वास्तव्य श्रीसंघेन  
कारितं वृहत् चटारक खरतर गष्ठीय श्री जिननंदिर्वरून सूरि पट्टालंकृत श्री जिनजय-  
शेखर सूरिभिः॥ श्रेयोस्तु ॥ श्री ॥



## अयोध्या ।

यह बहुत प्राचीन नगरी है । प्रथम तीर्थकर श्री जयजदेवजी का चरण, जन्म,  
और दीक्षा ये तीन कदवाणक यहां हुए । दूसरे तीर्थकर श्री अजितनाथजी का चरण,  
जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कदवाणक और चतुर्दे तीर्थकर श्री अजितनन्दनजी  
का चरण, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कदवाणक और पांचवें तीर्थकर श्री सुमति-  
नाथजी का चरण जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कदवाणक तथा छठवें तीर्थकर  
श्री अनन्तनाथजी का चरण जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कदवाणक सभी नगरी में  
हूए । तृतीयादीर हरामी के नरमें मन्दार छे कदवाणक का चरण, नरमें के मन्दार का चरण  
रत्ननाथजी श्री रामचन्द्रजी इन्द्रचन्द्रजी का चरण, चरण नगरी के देवायुज के ।



छाला विसनचंद जी तत्पुत्र काशीनाथजी तत्पुत्र देवी तमाद गद् ज्ञागृवभुः नमः ॥  
श्रेयार्थ ॥ १ ॥

पंचतीर्थिंगो पर

[ 1633 ]

संवत् १५२३ वर्षे माह सुदि ६ नासण्ण्णी वासि सं० जलाकेन जार्या ज्ञावलेदे सु०  
मांडण जा० जेअरि प्रमुखकुटुंबयुतेन ज्ञातृ बलराज श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं  
प्रतिष्ठितं तपागच्छेश श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ॥ श्रीः ॥

[ 1634 ]

सं० १५५० वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ श्री उंसवाल ज्ञातौ कठउतिया गोत्रे । सं०  
पदमसी जा० पदमलदे पु० पासा जा० मोहणदे । पु० पाट्टहा श्रीवंत तत्र सा० पाट्टहाकेत  
स्वजार्या इंद्रादेपुण्यार्थ श्री श्रेयांस विंवं कारितं । प्रतिष्ठितं । ककुदाचार्य संताने उपकेत  
गच्छे जहारक श्री देवगुप्त सूरिनिः ॥

[ 1635 ]

सं० १६०२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ श्री अहमदावाद वास्तव्य उंसवाल ज्ञातीय वृद्ध  
शाषायां श्री शांतिदास जा० वाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्री शांतिनाथ विंवं  
प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे ज० श्री विजयदेव सूरि वरैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री  
मुनिसागर गणिनिः श्रेयोस्तु ॥

चौवासी पर ।

[ 1636 ]

सं० १६१९ वर्षे वैशाख वदि ५ श्रु० श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे वज्ञात्कारण्णे श्री  
कुंदकुंदाचार्यान्वये ज० श्री सकलकीर्ति देवास्त० ज० श्री ज्ञुवनकीर्ति देवास्त० ज० श्री  
ज्ञानशूषण देवास्त० ज० श्री विजयकीर्ति देवास्त० ज० श्री शुभचंद्र देवास्त० ज०

( १४७ )

[ 1643 ]

सं० १५७५ वर्षे फा० व० ४ दिने प्रा० सा० आढ्या नार्या आढ्याणदे पुत्र सा० विंसा-  
केन जा० विढ्याणदे पुत्रीपुत्र जयवंतप्रमुखयुतेन श्री संजवनाथ विंवं का० प्र० तपा गळे  
श्री जयकव्याण सूरिजिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1644 ]

सं० १७६६ फा० व० ५ श्री पार्श्वनाथ विंवं प्रतिष्ठितं श्री जिनमहेंद्र सूरिणा । फो०  
गो० सेवाराम ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1645 ]

श्री । संवत् १९०९ आ० सु० ३ श्री सिद्धचक्र यंत्रं का० गांधी गुलाबचंद्रस्य नार्या  
कली नाम्ना प्र० श्री जिनमहेंद्र सूरिणा श्री बृहत् खरतर गळे ।

[ 1646 ]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल द्वितीया तिथौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं  
प्र० ज० श्री महेंद्र सूरिजिः का० गो० नाहटा उन्नवाक्ष लठमणदास नद् नार्या मुन्नि  
विंवि तत्पुत्र हजारीमल श्रेयोर्धमानंदपुरे ।

पापाण के चरण पर ।

[ 1647 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां पाठक हीन्धर्मोपदेशेन जयपुर वामनदेव आम्नास्य नैज  
तुक्कुनचंदजेन उदयचंदेन अयोध्यायां श्री मन्देव ? विजया २ मिजया ४ मुमंगला ॥  
सुयशा १४ गर्जरत्नानां परमेष्ठिनां चण्डन्यानाः कागिताः प्र० श्री जिनदर्प नृगिणा ।

## समवसरणजी के चरणों पर ।

[ 1648 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां वृहत् खरतर चट्टारक गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जय  
नगर वासिना ओसवाल ज्ञातौ संत गोत्रीय वृकुमचंदजेन । उदयचंदेन अयोध्यायां श्री  
अजित सर्वज्ञस्य पादन्यासः कारितः । प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा ॥

[ 1649 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां श्री जिनज्ञान सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन  
अयोध्यायां श्री वृपजनाथानां पादन्यासः कारितः ओसवाल । मिरगा जाति सामंतसिंहेन  
पंटेर गोत्रीयेन वीकानेरस्य पदार्थमद्वेन । प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1650 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन ओसवाल जाति  
संत गोत्रीय वृकुमचंदजेन । उदयचंदेन जयनगरस्थेन । अवधौ सर्वज्ञाजिनंदन पादाः  
कारिताः । प्र । जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1651 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयनगर वासि  
नेसवाल ज्ञातौ संत गोत्रीय वृकुमचंदजेन । उदयचंदेन । अयोध्यायां श्री मुमनि रा  
पादाः कारिताः प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1652 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां श्री वृहत् खरतर गणीय श्री जिनज्ञान सूरि शिष्योपाध्याय  
श्री हीरधर्मोपदेशेन अवधौ सर्वज्ञानंदन पादन्यासः कारितः संत उदयचंद प्र । श्री जि  
हर्ष सूरिणा । १६७

( १४ए )

[ 1653 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री अजिताजिनंदन सुमत्यनंतनाथानां चरणन्यासः कारितः जयनगर वासिना । ओसवाल सेठ गोत्रीय हुकुमचंद सुतेन । उदयचंदेन प्रतिष्ठितः खरतर जट्टारक गणेश श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1654 ]

॥ सं० १७७५ रा धराकायां खरतरगणेश श्री जिनलाज सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन । अयोध्यायां श्री नाजि १ जितशत्रु २ संवर ४ मेघ ५ सिंहसेन १४ जानामार्हतां क्रमन्यासः कारितः जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन । उदयचंदेन प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1655 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां श्री जिनलाज सूरि शिष्योपाध्याय हीरधर्मोपदेशेन जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन । उदयचंदेन । अयोध्यायां २ । ४ । ५ । १४ । जिनादयो गणधराणां श्री सिंहसेन । वज्रनाज । चमरगणि । यशसां पादाः कारिताः । प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्षे सूरिणा ।

दावाजी के चरण पर ।

[ 1656 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां पितामहानां श्री जिनकुशल नृगीणामयोध्यायां चरणन्यासः प्र । श्री जिनहर्षे सूरिणा खरतर जट्टारक श्री जिनलाज नृगि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन कारिताः । जयनगर वासिना अयुना मिरजापुरस्थेन सेठ हुकुमचंदेन । उदयचंदेन श्रेयोर्भ ।

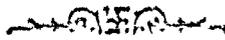
यह और देवियों के पादाय की मूर्तियों पर ।

[ 1657 ]

॥ श्री गोकुल यज्ञ मूर्तिः ॥ १ ॥ ॥ सं० १७७७ काठकुल कुल ७ मूर्ति प्रतिष्ठितः ।

जं । यु । प्र । बृहत्स्वरतर जट्टारकेन्द्र श्री जिनमुक्ति मूर्ति जिनामादेजात्मंडानार्थ श्री  
विवेककीर्ति गणिना कारितं । श्री संघस्य श्रेयोर्षमयोऽग्यायाम् ॥ शुभम् ॥ १ ॥

नोट- ऐसेही लेख और ( १ ) ॥ श्री महायक्षमूर्तिः ॥ २ ॥ ( २ ) ॥ श्री यक्षनाथ  
मूर्तिः ॥ ४ ॥ ( ३ ) ॥ श्री तुंबुरुयक्षमूर्तिः ॥ ५ ॥ ( ४ ) ॥ श्री पातालयक्षमूर्तिः ॥ १४ ॥  
( ५ ) ॥ श्री अजितवला देवी ॥ २ ॥ ( ६ ) ॥ श्री कालिदेवीमूर्तिः ॥ ४ ॥ ( ७ ) ॥ श्री  
अंकुशदेवी मूर्तिः ॥ १४ थे सात मूर्तियों पर हैं ।



## नवराई ।

नवराई फैजावाद से १० मैल और सोहावल स्टेशन से अंदाज २ मैल पर एक छोटा  
गांव है । यही प्राचीन तीर्थ 'रत्नपुरी' है । यहां १५ वें तीर्थकर श्री धर्मनाथस्वामी का  
च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुवे हैं ।

### पंचतीर्थियों पर

[ 1658 ]

संवत् १५१२ वर्षे माह शुदि ५ सोमे वाडज वास्तव्य जावसार जयसिंह जाण फाल्गु  
पुण पोचा जाण जासी पुण लीचा सरवण लाहू उमावु पोचाकेन । श्री सुविधिनाथ विंबं  
कारापितं श्री विंबंदणीक गछे श्री सिद्धाचार्य संनाने प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिनिः ।

[ 1659 ]

सं० १५६७ वर्षे वैशाख सु० १० बु० श्री उपकेश ज्ञातौ सं० साहिल सु० सं० हासा  
जा० बाजी नाम्न्या स्वपुण्यार्थ श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गछे  
ककुदाचार्य सं० ज० श्री सिद्ध सूरिनिः

( १५१ )

[ 1660 ]

संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ सोमे श्री पत्तने उसवाल झातीय सा० अमरसी  
सुत आणंद । जा० वीरु सुत काहाना सारंगधर विंवं श्री पद्मप्रजनाथ । प्रतिष्ठितं ।  
। पा गढे श्री विजयदान सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1661 ]

॥ संवत् १६४४ वर्षे फागुण शुदि २ दिने उसवाल झातीय बंज गोत्रीय साह कटारू  
तार्या दुलादे सुत सा० तारू चार्या जीवादे सुत सा० टटना प्री (?) संघनाम चिंतामणि  
श्री श्रेयांसनाथ विंवं तपागढाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

पाषाण के करणों पर ।

[ 1662 ]

संवत् १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथानां पादाः कारिताः वरद्वीया  
बृहत्चंद्रज वेणीप्रसाद प्र । बृहत् खरतरगणेश श्री जिनलाल सूरि शिष्य पाठक हीर-  
धर्मोपदेशेन । श्योसवालेन । काशीस्थेन प्रतिष्ठिताः श्री जिनदर्प सूरिणा ।

[ 1663 ]

संवत् १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मार्हनायादाः कारिताः बृहत् खरतर  
गणेश श्री जिनलाल सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन वरद्वीया बृहत्चंद्रज वेणीप्रसादेन  
त । श्री जिनदर्प सूरिणा बृहत् खरतरगणेशेन ।

[ 1664 ]

सं । १७७७ रा धराकायां बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाल सूरि शिष्य पाठक हीर-  
धर्मोपदेशेन काशीस्थ वरद्वीया बृहत्चंद्रज । वेणीप्रसादेन श्री धर्मरामेष्टिनां पादा  
कारिताः श्री रत्नपुरे प्र । श्री जिनदर्प सूरिणा खरतर गणेशेन ।

[ 1665 ]

सं । १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्म रत्ननाथानां पादाः कारिताः श्योसवालेन

वरहीया ब्रह्मचंदज वेणीप्रसादेन श्री काशीस्थेन बृहत् खरतर गणनाथ श्री जिनलाल  
सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश ।

[ 1666 ]\*

सं० १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथायः गणधर श्रीमद् अरिष्टाद्यानां  
पादाः कारिताः ओसवाल वंशे वरहीया ब्रह्मचंदज वेणीप्रसादेन बृहत् खरतर गणेश श्री  
जिनलाल सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन । प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा । बृहत् खरतर  
गणेशेन ।

[ 1667 ]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ । श्री गौतम स्वामी जी  
पादन्यासौ । प्र । ज । श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः । का । गा० श्री अग्रमद्व पुत्र ठोटण  
लालेन आणंदपुरे ॥ श्री ॥

[ 1668 ]

सं० १९१० वर्षे शाके १७१५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे श्री जिनकुमार  
सूरीणां पादन्यासौ प्रतिष्ठितः ज । श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः का । गां । श्री वेणीप्रसा  
दांगज ठोटणलालेण आणन्दपुरे ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1669 ]

सं । १६६७ का ... अजितनेदन ... । जं । बु । प्र । चट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[ 1670 ]

सं । १६७५ वैशाख सुदि १३ शुके श्री बृहत् खरतर संघेन कारितं श्री अजितनाथ  
त्रिवं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिजिः युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि शिष्यैः ।

\* किन्नर यक्ष और कंदर्पा देवी मूर्तियों पर भी ऐसे ही लेख हैं ।

( १५३ )

[ 1671 ]

॥ सं० १७७३ शाके १७५७ प्र० माघ सुदि १० बुध वासरे श्री पादक्षित नयरे श्री अजिनंदन विंवं कारितं श्री वृहत् खरतर गठे ज० जं० यु० । श्रीमहेंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1672 ]

सं० १७७३ माघ सुदि १० बुध वासरे श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं वृहत्खरतर गठे प्रतिष्ठितं जं० यु० प्र० ज० श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः ।

[ 1673 ]

॥ सं० १७१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्तमाने माघ शुक्ल ९ तिथौ श्री पार्श्वनाथ विंवं प्रतिष्ठितं ज० श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः कारितं वमा (?) गोत्रीय श्री हुकुमचंद तत्पुत्र अगारमह्व तद्गार्या बुध तथा श्रेयोर्धमाणंदपुरे ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1674 ]

सं० १७१० मि० फा० कृष्ण ९ बुधे झूगड़ प्रतापसिंह गार्या महताव कुंवर का० विहर-  
मान अजित जिन १० विंवं श्री अमृतचंद्र सूरि राज्ये वा० ज्ञानध्वंज गणिना ।

फैजावाद ।

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर । सह्या - पादग्रीवना ।

पंचवीचियों पर ।

[ 1675 ]

सं० १४३१ वर्षे जेठ सुदि १० बुधे प्र० श्रेष्ठि ज्ञान ना० वेरत पु० जेमा दानुदर  
पीचनान्यां स्वश्रेष्ठे श्री पद्मप्रज विंवं का० प्रतिष्ठितं विष्णु गठे श्री योगप्रज मूर्तिना ॥



( १५४ )

[ 1676 ]

सं० १४७७ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्रीमाल झालीय श्री एलहर गोत्रे शा० द्या  
संताने सा० पूनात्मज म० मिच्चाकेन त्रातृ डोडाप्रभृतिपरिवारयुतेन श्री वासुपूज्य विं  
कारितं श्री वृहद् गढे श्री मुनीश्वर सूरि पट्टे प्र० रत्नप्रज्ञ सूरिजिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1677 ]

सं० १६६४ वर्षे राय पालक० मु० पा० प्र० तप ..... ।

पट्ट पर ।

[ 1678 ]

सं १६७२ ज्ञाद्र सुदि ११ श्री चंद्रप्रज्ञ जिन विंवं ॥ वीरदास प्रणमति । ठः ठः ॥

पाषाण के चरणों पर ।

[ 1679 ]

सं० १७७७ फादगुण शुदि ४ वार शनि अयोध्या नगरे वंगलावसति वास्तव्य उंस वंशे  
नखत गोत्रीय जोरामल तत्पुत्र वषतावरसिंघ तत्पुत्र कनईयालालादिसहितेन श्री जिन  
कुशल सूरि पाडुका कारितं । प्रतिष्ठितं वृहत् जट्टारक खरतर गढीय श्री जिनचंद्र सूरिजिः  
कारक पूजकानां भूयसि वृद्धितगं भूयात् ॥

[ 1680 ]

सं० १७७७ मि । फा । सु० ४ श्री जिनकुशल पादौ । प्र । श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।





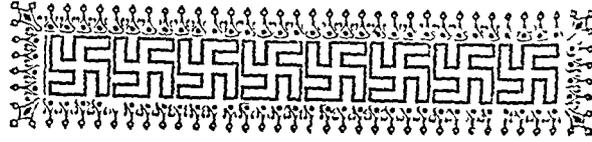
( १५६ )

[ 1685 ]

श्री संवत् १८९१ शाके १७५७ माघ शुक्ल १५ चौमवार पूष्यनक्षत्रे आयुष्यमाण बां  
चोरडिया गोत्रोत्पन्न लाला मन्नुलालजी बुधसिंहेन निर्मिता विश्रामस्थान ।

[ 1686 ]

॥ सं। १८९४ वर्षे शा १७५९ माघ शुक्ला ४ चतुर्थ्यां चंद्रवासरे श्रीमालान्वये फोफडिया  
गोत्रे सा । श्री पुसवषतरायजी तत्सुतौ दिलसुखराय .... चाक्षिधानौ श्री चंद्रप्रस  
कल्याणकचूम्यां चंद्रावती पूर्या धर्मशाला कारापिता संघार्थ ।



## श्री सम्मेदशिखर तीर्थ ।

मधुवन - जैन श्वेताम्बर मन्दिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1687 ]

सं० १२१० आषाढ़ सुदि ए सोमे श्री पंडेरक गढौ .... प्रतिमा कारिता वसु .... ।

[ 1688 ]

संवत् १२३५ वैशाख सुदि ३ बुधे तंगकीय सोहि सुत पीत आवकेण स्वश्रेयोर्थ श्री  
पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता । .... श्री पूर्णचंद्र सूरिणा ।

[ 1689 ]

संवत् १२४२ वैशाख सुदि ४ श्री वापदीय गढे श्री जीवदेव सूरि पितृश्रेयोर्थ मूर्ति  
श्रेयोर्थ श्री० टाणाकेन कारितं ।

( १५७ )

[ 1691 ]

संवत् १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० कर्मसी जार्या मटकू  
सुत गुणीआकेन स्वकुलश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री बृहत्तपापद्मे  
श्री ज्ञानकलश सूरि पद्रे श्री विजय तिलक सूरिजिः ।

[ 1692 ]

सं० १५५३ वर्षे वैशाख वदि ११ शुके उकेश वंशे सा० पनरवद जार्या मानू पुत्र साह  
वदा सुश्रावकेण जार्या धनाई पुत्र कुंरपाल सोनपाल प्रमुखसहितेन श्री वासुपूज्य विंवं  
स्वश्रेयोर्थ कारितं । प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गह्वनायक श्री जिनसमुद्र सूरिजि ।

[ 1693 ]

संवत् १५७० वर्षे माह वदि १३ बुध दिने सुराणा गोत्रे । सं० केसव पुत्र सं० समरय  
जार्या सं० सोमलदे पु० सं० पृथीमल्ल महाराज कर्मसी धर्मसी युनेन श्री अजितनाथ  
विंवं कारितं मातृपितृपुण्यार्थं आत्मश्रेयसे प्रतिष्ठितम् । श्री धर्मघोष गह्वे जटारक श्री श्री  
नंदिषर्द्धन सूरिजिः ॥

चौबीसी पर ।

[ 1694 ]

सं० १२२७ वैशाख शु० ३ गुरौ नंदाणि ग्रामेन्या श्राविकया आत्मीय पुत्र लूणदे श्रेयोर्थं  
चतुर्विंशति पट्टः कारिताः । श्री मोढ गह्वे वप्पजट्टि संताने जिनजडाचार्यैः प्रतिष्ठितः ।

[ 1695 ]

सं० १५०७ प्रा० सा० पाट्टहणीसी जा० जोट्ट सुत सा० राजाकेन जा० मंदोअरि सुत  
सीहा ककुआदिकुटुम्बयुतेन श्री कुंथुनाथ सपरिकर चतुर्विंशति पट्टः काग्निः प्रतिष्ठितः  
श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजि ॥ व ॥ श्री ॥

( १५७ )

## जलमंदिर ।

पंचतीर्थ पर ।

[ 1696 ]

सं० १५११ पोष वदि ६ गु० मंत्रीअर गोत्रे श्री हुंवड़ झाति गारुडिया जा० पूजू सु०  
समेत जा० सहनल दे सु० समधर सोमा श्रेयोर्थ जा० पादहण नादहा एतैः श्री आदिनाथ  
विंबं कारितं वृद्धतपा ज० श्री रत्नसिंह सूरिजिः प्रति० ॥



## श्री पावापुरी तीर्थ ।

मंदिर प्रशस्ति ।

शिवालेख ।

[ 1697 ]

- ( १ ) ॥ ए ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९७ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पातिसाह श्री  
साहिजांइ सकलनूर
- ( २ ) मंरुलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितमजिनाधिराज श्री वीरवर्द्धमान  
स्वामी
- ( ३ ) निर्वाण कल्याणिक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीरजिनचैत्यनिवेशः । श्री
- ( ४ ) रूपन जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्ती श्री जरत महाराज सकलमंत्रिमंडलप्रभं  
मंत्रि श्रीदलसन्तानीय म-





- ( ५ ) हतिव्याण ज्ञातिश्रृङ्गार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुषसीदास जार्या निहा-  
लो पुत्र सं० संग्राम ।
- ( ६ ) लघुत्रातृ गोवर्द्धन तेजपाल जोजराज । रोहदीय गोत्रीय सं० परमाणंद सपरिवार  
महधा गोत्रीय विशेष धर्म ।
- ( ७ ) कर्मोद्यम विधायक ठ० छुलीचंद काऊड़ा गोत्रीय सं० मदनस्वामीदास मनोहर  
कुशला सुंदरदास रोहदिया ।
- ( ८ ) मथुरादास नागायणदासः गिरिधर सन्तादास प्रसादी । वार्तिदिया गो० गूजरमह  
बूदड़मह मोहनदास ।
- ( ९ ) माणिकचन्द बूदमह जेठमह ठ० जगन नूरीचन्द । नान्हरा गो० ठ० कव्याणमह  
मलूकचन्द सजा-
- ( १० ) चन्द । संघेला गोत्रीय ठ० सिंजू कीर्तिपाल बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ ।  
काऊड़ा गो० दयाल-
- ( ११ ) दास जोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किलू । काणा गोत्रीय ठ० राजपाल  
रामचन्द ॥
- ( १२ ) महधा गो० कीर्तिसिंघ रो० ठवीचन्द । जाजीयाण गो० सं० नथमह नंदसाध  
नान्हड़ा गोत्रीय ।
- ( १३ ) ठ० सुन्दरदास नागरमह कमलदास ॥ गो० सुन्दर मूरति मूरति सवस कृती प्रताप  
पाहड़िया ।
- ( १४ ) गो० हेमराज चूपति । काणा गो० मोहन सुबमह ठ० गढ़मह जा० हरदास पर-  
सोत्तम । नीणवा-
- ( १५ ) ए गो० विहारीदास बिंहु । सट्ठे मेदनी नगवान गरीबदाम माहरेणपुरीय जीरण  
बजागरा गो० ।
- ( १६ ) मलूकचन्द जूठ गो० मचल बन्दी मंत्री । चो० गो० नगमिंघ हीग परम् उतम  
वर्द्धमान प्रमुख धी ।



- ( १७ ) बिहार वास्तव्य महतीयाण श्री संघेन कारितः तत् प्रतिष्ठा च श्री वृद्धत् स्वता गङ्गाधीश्वर युगप्रधान श्री ।
- ( १८ ) जिनसिंह सूरि पट्टप्रजाकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरि विजयमान गुरुराजानामा देशेन कृत ।
- ( १९ ) पूर्वदेश विहारे युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री समयराजोपाध्याय शिष्य वा० अजयसुन्दर ग-
- ( २० ) णि विनेय श्री कमललाजोपाध्यायैः शिष्य पं० लब्धकीर्त्ति गणि पं० राजहंस गणि देवविजय ग-
- ( २१ ) णि थिरकुमार चरणकुमार मेघकुमार जीवराज सांकर जसवन्त महाजलादि शिष्य सन्ततिः सपरिवार्यौ । श्रीः ।



## क्षत्रियकुण्ड । \*

पंचतीर्थी पर ।

[ 1698 ]

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ५ दिने । बारडेवा गोत्रे सा० कोहा जा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा जा० हीरुश्रेयसे श्री कुंथुनाथ त्रिवं कारितं प्र० श्री कोरंट गढे श्री नन्न सूरिजिः ॥



\* 'लछवाड़' ग्रामसे १ कोस दक्षिण में छोटे पहाड़ पर यह स्थान है । श्वेताम्बर सम्प्रदाय वाले २४ वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के अवन, जन्म और दीक्षा ये ३ कल्याणक इसी स्थान में मानते हैं । वहाँ के लोग इसको 'जलम धान' कहकर पुकारते हैं । पहाड़ के तलहटी में २ छोटे मन्दिर हैं । उन में श्री वीर प्रभु की श्याम वर्ण के पाषाण की मूर्तियाँ हैं । पहाड़ पर मन्दिर में भी पाषाण की मूर्ति है और मन्दिर के पास ही एक प्राचीन कुण्ड का चिह्न वर्तमान है ।

( १६१ )

## लछवाड़ ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1699 ]

॥ सं० १९२० मि० फाट्गुन कृ० २ बुधे मारू गो० केसरीचंद जार्या किसन विवि  
शीर जिन विंवं का । जं । यु । ज । श्री जिनहंस सूरि राज्ये उ । सं । ग । च । प्रति० ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1700 ]

सं० १९१३ । वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंवंड़ ज्ञानीय फडो शिवराज सुन महीया श्रेयसे  
ज्रातृ हीयकेन ज्रातृज कुमूया युनेन श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रति० वृहत्तपा पदके  
श्री श्री रत्नसिंह सूरिजिः ॥

[ 1701 ]

सं० १९२० फा० कृ० २ बुधे प्रतापसिंह डूगड़ गोत्रे जार्या महताय कुंवर श्री सुमति  
जिन पंचतीर्थी का० ज० । सदालाज गणिना श्री जिनहंस सूरि राज्ये ।

यंत्र पर ।

[ 1702 ]

सं० १९३३ ज्येष्ठ शुक्ल १२ शनिवासरे श्री नवपद यंत्र कारितं श्योस वंशे डूगड़ गोत्रे  
श्री प्रतापसिंह तत्पुत्र रायवहाडुर धनपत्सिंहेन कारितं प्रतिष्ठितं विजयगढे ज० श्री शांति-  
सागर सूरिजिः ।

[ 1703 ]

सं० १९३३ का ज्येष्ठ शुक्ल १२ छादश्यां शनिवासरे नवपद यंत्र.....का० मकमूदा-  
वाद वास्तव्य उंस वंशे डूगड़ गोत्रे बाबू प्रताप सिंह तत्पुत्र राय वहाडुर छठमीपतसिंह  
रायवहाडुर धनपतसिंह ने कारितं विजय गढे श्री शांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

## चन्दनचौक ।

मन्दिर का शिवा खेम ।

[ 1704 ]

- |                                       |                                     |
|---------------------------------------|-------------------------------------|
| १ । उं ॥ संवत् २३४४ वर्षे आ-          | २ । पाद सुदि पूर्णिमायां देव श्रीने |
| ३ । मिनाथ चैत्ये श्री कल्याण ....     | ४ । मस्य पूजार्थं श्रे० तिमधर । त-  |
| ५ । त्पुत्र श्रे० गांगदेवेन वीस....   | ६ । ल प्रीय इमाणं ए२० श्री नेमि     |
| ७ । नाथ देवस्य जांटागारे निदि.        | ७ । सं वृद्ध फल जोगेन सम्प्रति इ    |
| ८ । ....३३ प्रदत्तं पूजार्थं थाचंद्र- | १० । काखं यावत् शुभं जवतु श्री ॥    |

मूर्ति के चरण चौकी पर ।

[ 1705 ]

- १ । गुणदेव जार्या.जइतसिरि साद्वहू-
- २ । पुत्र दइरा पूना लूणावी ... कम-
- ३ । रेवता हरपति कर्मद राणा क-
- ४ । मंट पुत्र खीमसीइ तथा धीर-
- ५ । देव सुत अरसीइ तत्पुत्र वस्तु-
- ६ । पाख तेजःपाख प्रभृति सकल-
- ७ । कुटुंब सामस्त्येन श्रे० गांग-
- ८ । देवेन कारितानि ।

( १६३ )

## रत्नपुर - मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

शिक्षा लेख ।

[ 1706 ]

- १ । सं० १३४३ वर्षे माह सुदि १० शनौ रत्नपुर-
- २ । रे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री जसिवाल ज्ञातीय व्यवसी-
- ३ । ह गह सुतयासी पुत्रादि सरोराज हसिकया व्यव महि-
- ४ । लण नार्यया महणदेव्या स्वात्म श्रेयसे कारितं श्री आ-
- ५ । दिनाथ विवस्य नेचक निमित्तं श्री पार्श्वनाथ देव जांडा-
- ६ । गारे द्दित वीसल प्रिय डम्म २० तथा सं० १३४६ माह सुदि
- ७ । १५ पूर्णिमायां कल्याणिक पंचकनिमित्तं द्दितं ड १० उ
- ८ । नयं ड ३० अमीषां डम्माणां व्याजे शतं मासं प्रति ड २०
- ए । विशति डम्मा पुम्माणां व्याजेन नवकं करणीयं दश डम्मा-
- १० । णां व्याजेन कल्याणिकानि करणीयानि शुभं नवतु ।

मूर्तियों पर ।

[ 1707 ]

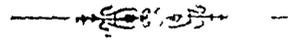
- १ । देव श्री शान्तिनाथ
- २ । दीसावाय न्यानी सुरमा-
- ३ । णपुर वास्त ( व्य ) साधु रतन
- ४ । सुन सा० द्वापु जलगे

[ 1708 ]

- १ । ॐ ॥ सं० ॥ १३३० फागुण सुदि १० शुभे । अयेद् रत्नपुर श्री पंटेर गळे श्री
- २ । ....नदं नदन पुत्रमहं हुंगरनीदेन
- ३ । .....धे

४। योर्थ श्री जिनेन्द्रस्य त्रिंशं—कारितं ॥ ५७

५। श्री यशोज्ञ सूरि संताने श्री सुमति सूरिः ॥ शुचं जवतु ॥



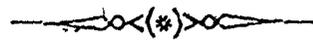
## गांधाणी ( भारवाड़ ) ।

प्राचीन जैन मंदिर ।

धातु की मूर्ति पर

[1709] \*

- ( १ ) उं ॥ नवसु शतेष्वहानां । सप्तत्वं ( त्रिं ) शब्दधिकेष्वतीतेषु । श्रीचण्डीमांगलीयां ज्येष्ठार्याच्यां
- ( २ ) परमजसया ॥ नोजेय जिनस्यैषा ॥ प्रतिमा ऽषाढार्द्धभास निष्कन्ना श्रीम-
- ( ३ ) तोरण कसिता । मोक्षार्थं कारिता ताच्यां ॥ ज्येष्ठार्यपदं प्राप्ती । छावणि
- ( ४ ) जिनधर्मवष्टसौ ख्याती । उद्योतन सूरिस्तौ । शिष्यो श्रीचण्डीवर्षदेवौ ॥
- ( ५ ) सं० ए३७ अषाढार्द्धे ॥



\* गांव 'गांधाणी' जोधपुर से उत्तर दिशा में ६ कोस पर है । वहां तालाब पर एक प्राचीन जैन मंदिर में यह सर्वधातु की आदिनाथजी की मूर्ति है और उसके पृष्ठ पर यह लेख खुदा हुआ है । जोधपुर निवासी पण्डित रामकरणजी की हवा से मुक्त हुए का छाप और अक्षरान्तर प्राप्त हुआ है । उन्होंने इस लेख पर निम्न लिखित नोट्स लिखे हैं ।

- पंक्ति— १। " ज्येष्ठार्य " यह पदवी वाचक शब्द ज्ञान हीना है, जो पंक्ति ३ में के "ज्येष्ठार्य पदं प्राप्ती" इस वाक्य से स्पष्ट है ।
- २। " अषाढार्द्ध " पद से अषाढ सुदि १ और यदि १५ का भी ज्ञान हो सकता है; परन्तु यहाँ प्रतिमा का पद अधिक है, क्योंकि शुभ कार्य में अषाढमा चर्चित है ।
- ३। " उद्योतन मूर्तिः " —पट्टावली में इनके स्वर्गवास का संवत् ६६४ मिलता है परन्तु उन के पट्टाधिकारी होनेका संकेत देकरने में नहीं आया । लेख से जाना जाता है कि उद्योतन मूर्ति संवत् ६३० में आचार्य पद्म पा चुके थे । इनके मूर्तियंत्र गच्छ भेद नहीं था इसी लिये लेखमें गच्छ का उल्लेख नहीं है । ऐतिहासिक दृष्टिसे यह लेख बड़े महत्त्व का

( १६५ )

## सूरपुरा - नागौर ।

माताजी के मंदिर के स्तम्भ पर ।

शिला लेख ।

[ 1710 ]

- |                                 |                                |
|---------------------------------|--------------------------------|
| ( १ ) संवत् १११५ पोस व-         | ( २ ) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये  |
| ( ३ ) ..... पुत्र्या धाहुरु जा- | ( ४ ) र्थया देवधरमात्रा सू     |
| ( ५ ) ह्वाजिधानया आत्म श्रे-    | ( ६ ) योर्थ स्तंभद्वयं दत्तं ॥ |

[ 1711 ]

- |                                 |                                |
|---------------------------------|--------------------------------|
| ( १ ) संवत् ११३७ पोस व-         | ( २ ) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये  |
| ( ३ ) ..... पुत्र्या धाहुरु जा- | ( ४ ) र्थया देवधरमात्रा सू-    |
| ( ५ ) ह्वाजिधानया आत्म श्रे-    | ( ६ ) योर्थ स्तंभद्वयं दत्तं ॥ |
| ( ७ ) मूल्ये ड्र १० ॥ सर्व शु-  | ( ७ ) ऊं ॥                     |



## उसतरां - नागौर ।

शिला लेख ।

[ 1712 ]

- |  |
|--|
| ( १ ) संवत् १६४४ वर्षे पशुपुत्र वदि १५ उन्नेन जानीव यादवा गोत्रे । |
| ( २ ) .....  |
| ( ३ ) संवत् १६४४ वर्षे पशुपुत्र वदि १५ उन्नेन जानीव यादवा गोत्रे । |

## नगर - मारवाड ।

मूर्तियों के चरणचाकी पर ।

दाहिने तर्फ ।

[ 1713 ] \*

- १। ॥ ॐ ॥ संवत् १२९२ वर्षे आषाढ सुदि ७ रवौ श्री नारदमुनि त्रिनिवेशोत्ते श्री नगर-  
वरमहास्थाने सं० ए०
- २। ७२ वर्षे अतिवर्षाकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय  
महाप्रसाद विनष्टायां ।
- ३। श्रीराजलक्ष्मदेवी मूर्त्ते पश्चात् श्रीमत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट उ० चण्डपातमज उ० श्रीचंड-  
प्रसादांगज उ० श्री सो. ।
- ४। मतनुज उ० श्री आसाराजनन्दनेन उ० श्री कुमारदेवीकुङ्किसंज्ञूतेन महामात्य श्री  
वस्तुपालेन स्वचार्या म-
- ५। हं श्री स ..... पुण्यार्थमिद्वैव श्री जयानित्य देवपत्न्या श्री राजलक्ष्मदेव्या मूर्त्तिरियं कारिता  
॥ शुभमस्तु ॥

बायें तर्फ ।

[ 1714 ]

- १। ॥ ॐ ॥ संवत् १२९२ वर्षे आषाढ सुदि ७ रवौ श्री नारद मुनि त्रिनिवेशोत्ते श्री नगर-  
वर महास्थाने सं० ए० ७२ वर्षे अ-
- २। तिवर्षाकालवशादतिपुराणं तथा च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय महाप्रसाद  
पत्तन विनष्टायां श्री रत्नादेवी मूर्त्ते
- ३। पश्चान् श्री मत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट उ० श्री चण्डपातमज उ० श्री चण्डप्रसादाङ्ग  
उ० श्री सोमतनुज उ० श्री आसाराजनन्द-

- ४। नेन उ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसम्भूतेन महामात्य श्री वस्तुपालेन स्वचार्य मय्याः उ०  
कन्हड पुत्र्याः उ० संपू कुक्षिजवा  
५। याः महं श्री लज्जिना देव्या पुण्यार्थमिहैव श्री जयादित्य देवपत्न्या श्री रत्ना देवी  
सूर्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ उ ॥

## नगर - खेडगढ़ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर । \*

[ 1715 ]

- १। उं सं० १६६६ वर्षे । जाडपदे शुक्लपक्षे । श्री द्वितीया दिने । शुक्रवारे । वीरमपुर वरे  
। श्री शान्तिनाथ प्रासाद  
२। चूमि यह । श्री खरतर गढे । युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये । आचार्य  
श्री जिनसिंह सूरि यौवराज्ये । श्री  
३। गडल श्री तेजसिजी विजयराज्ये । कारिनं श्री संवेन ॥ लिखितं वा० श्री गुणरत्न  
गणिना दिनेयेन रत्नविशालगणिना  
४। सूत्रधार । चांपा पुत्र । रत्ना । पुत्र । जोधा दामा । पुत्र मन्ना । घन्ना । वर योगेन  
कृतं । चार्या सोमा किख पाणा । वल्ली । मेघ । श्री रस्तु ।

## घाणेशाव मारवाड़ ।

महावीर स्वामीका मन्दि । \*

[ 1716 ]

सं० १११३ जाडपद सुदि ४ मङ्गल दिने श्री दण्डनायक वैजल देव राज्ये श्रीवंश

\* यद लेख मन्दि के मन्दिरे था है ।

\* यद मन्दि "घाणेशाव" के ११ मन्दि पराट पर है ।



इत्तीय राउत महणसिंह चक्तिवसंहज वाटमध्यात् । श्री महावीर देव विंवं प्रति प्राम  
पालसुणे दत्ताः यस्य झूमि तदा फलं ॥ सेठ रायपाल मुत रावजिहु महाजन कुरुवा  
विना णिय सारिवहिं ॥



## अक्षार ।

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

प्रशस्ति ।

[ 1717 ]

- १ । उं नमः श्री पार्श्वनाथाय । ५ श्री हू .... पै गणेशाय ....
- २ । श्री मेद मुनीन्द्र गुरुयो नमः ॥ स्वस्ति श्री पार्श्वनाथांघ्रिं तुष्टि
- ३ । हेतु स्मृतौ सतां । यौ विश्वत्रय विख्यातौ तावजिष्टप्रदौ मम ॥ १ ॥
- ४ । श्री मल्लिकमतः संवत् । मुनिवाजीरसेन्दुके । १६७७ । वर्षे वैशाख मा
- ५ । सेंडुइजिपन्नेर्कनूदिने ॥ २ ॥ अक्षयायां तृतीयायां रोहणीस्थे .... वां
- ६ । जवे एवं सर्व मुनेयस्ते । जीर्णः प्रसाद उद्भूतः ॥ ३ ॥ श्री मत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य कथा
- ७ । ए फलहेतवे । श्रीमत्यात्मज पुण्यां च धुर्यायां तीर्थ संसदि ॥ ४ ॥ श्री श्री-
- ८ । मातीकृत्रांतेधि । चान्देण सिनकीर्तिना । दोसी श्री श्री जीवराजह मुने-
- ९ । न गृहमाहिना ॥ ५ ॥ मद्धर्मचारिणा इर्पाणुन्नतपुग्वासिना । श्रीम-
- १० । त्कुंथरती नाद्या महद्वयस्य व्ययेन च ॥ ६ ॥ साहायवहीसंघस्य
- ११ । मुन्देव प्रसादतः । जाला कार्यस्य संसिद्धिः । पुण्यः किं किं न सि-
- १२ । इति । ७ । श्रीमत्पार्श्वनाथजीश्री श्री दीर्गविजय प्रदाः । पष्टे श्री विजय
- १३ । जेन । श्रीमत्पार्श्वनाथजीश्री श्री दीर्गविजय प्रदाः । मुग्गे श्री
- १४ । विजयदेव मुग्गे । निपादोयं पुण्यः । प्राप्ताद्वरश्चरंतीयात् ॥ ७ ॥ तस्य द

( १६९ )

१५ । द्विगु दिग्जागे । सङ्गरचनान्विते । स्तूये श्री कृष्णस्वामी पाण्डुकेऽत्र महाङ्ग-  
१६ । ते ॥ १० ॥ पूजनीयाः शुभाः श्लाघ्याः । गुरुणां तत्र पाण्डुकाः कारिता मदनाख्येन । दो-  
१७ । सीना ज्ञानयान्विता ॥ ११ ॥ धर्मशास्त्रा विशाखा च शास्त्रारकेन निर्मिता । साहाय्या-  
१८ । छरसंग्रहस्य दोसोसङ्गस्य तुष्टयेः ॥ १२ ॥ पण्डितगणमौढीमणेः । तार्किकसिद्धान्त-  
१९ । शब्दशास्त्रार्थः । श्रीमत्कट्याणकुशलं । सुगुणेश्वरणप्रसादेन ॥ १३ ॥ तद्विषयस्य सुबु-  
२० । ज्ञेविष्टुषः सुयतेर्दयाकुशलनाम्नः । महतोद्यमेन कृत्यं । सिद्धं श्री जगधतः कृ-  
२१ । पया ॥ १४ ॥ रम्यो जीर्णोद्धारो । श्रीपार्श्वनाथान्वितोऽर्थ्यमानश्च । आचन्द्रार्कं राजतु जी-  
२२ । याज्जनसुखकरो नित्यं ॥ १५ ॥ संवत् १६७७ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ श्री अजपु-  
२३ । रे महार्थीर्णे जीर्णोद्धारो जानः श्रीमत्तपागङ्गेश जट्टारक प्रभु ज्ञ० श्री ५  
२४ । श्री विजयदेव सूरि विजयराज्ये । पं० श्री मेहसुनोन्द्र गणि शिष्य पं० श्री  
२५ । कट्याणकुशल गणि पं० । श्री दयाकुशल गणि शिष्येन । प्र-  
२६ । शस्त्रिचं त्रिखिता गणि चत्तिकुशलेन ॥ श्री रस्तु ॥ श्रीः ॥

पापाण की मूर्तियों पर । ७

[ 1718 ]

१ । सं० १३४३ वर्षे माघ वदि २ शनौ श्रीमाझीय हरिपाखेन  
२ । .... सूरिनिः ।

[ 1719 ]

१ । सं० १३४६ वर्षे वै० शुदि २ बुधे दीशावादा ज्ञानीय महं० ज्ञापण सुन श्री-  
२ । रस्तु सुन । वासव श्रेयोर्ध श्री पार्श्वेन प्र कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेंद्र मूर्तिनिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1720 ]

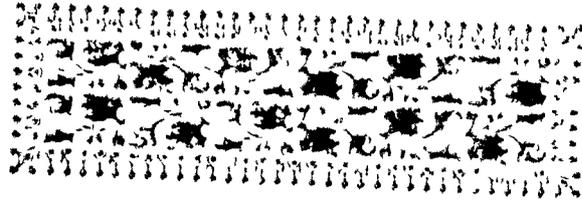
सं० १५०० वर्षे वैशाख शुदि १५ शनौ श्री .... पदेशेन हुंवाड ज्ञानीय न० श्रुतुन

२ । ये मूर्तियां परित्त है तेष मूर्तियों पर है ।

मारुतयो युत श्रीभा जुहा सुत नेमिनाथ प्रणमनि ।

[ 1711 ]

सं० १९१९ वर्षे वैशाख सुदि ३ शुभे श्री श्रीमात्र ज्ञानीय सं० नाथः चार्या गौमती ...  
आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रज स्वाम्यादि पञ्चतीर्थी श्री आगम गले श्री हेमरत्न सूरीणासु-  
देशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ।



## पिंडवाड़ा-सीरोही ।

श्री महावीरजीका मन्दिर ।

शिक्षा लेख

[ 1722 ]

- ( १ ) नीरागगन्धादिजावेन सर्वज्ञानविनायकं । ज्ञात्वा जगवतां जापं जिनानमिव पावनं ॥  
( २ ) द्रोणयेयक यशोदेव देव .... । .... रिदं जैनं कारितं युग्ममुत्तमं ॥  
( ३ ) जयशतपरम्परार्जित गुरुकर्मराजो .... कारापितां परदर्शनाय शुद्धं सज्ज्ञानचरण-  
खाजाय ॥

संवत् ८(७?)४४ ।

ॐ साक्षात्पिता सहन व विश्वरूपविनायिना । शिद्धिपना गोपगार्गेन कृतमेतज्जिन-  
ह्वयम् ॥



( १७१ )

## खीमत-पालणपुर ।

जैन मंदिर ।

मूर्त्तिकी चरणचौकी पर ।

[ 1723 ]

- १ । ढं० ॥ सं० १२१५ वैशाख वदि ४ शुक्ले खीमंत स्थाने प्राग्वाट वं-
- २ । शीय श्रे० आसदेव जार्यया दमति श्राविकया स्वपुत्र जसचन्द्र देवय
- ३ । तत् पुत्र पूना अन्नयडषद् प्रति समस्तमानुषसमेतया आ-
- ४ । त्मश्रेयसे श्री महावीर जिनयुगलं कारितं सूरिजिः प्रति(ष्ठितं) ।



## श्री तारंगा तीर्थ ।

श्रीअजितनाथ स्वामीजी का मंदिर ।

सहस्रकूट के चरण पर ।

[ 1724 ]

श्री शाश्वता परमेश्वर ४ श्री चौबीस तीर्थंकर ३४ श्री बीस विहरमाण २० श्री  
गणघरना १४५२ सर्वमखिने संख्या पनरत्तो जोड़ावि ठई सहि । सं० १८७३ वर्षे माघ  
सुदि ७ शुक्ले श्री तारंगाजी दुर्गे । श्री श्री विजयजिनेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं तपा गठे ।  
सा० करमचन्द्र मोतीचन्द्र सुत पनाचन्द्र करापितं । बीसनगर वास्तव्य ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1725 ]

सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ उकेस वंशे साहु गोत्रे सा० तुंषा जा० जूपादे

पु० सा० सातल्लकेन जा० संसारदेः पुत्र सा० हेगादियुनेन श्री कुंयु विंवं का० प्र० सा०  
गढे श्री जिनसागर सूरिनिः ।

[ 1726 ]

सं० १५१० वर्षे ज्येष्ठ शुदि ६ बुधे श्री कोरंट गढे । उाकेश मडाड्ड वा० सा० श्रवण  
जा० राजं पु० साट्टहा जा० सांपू पु० जाऊण सहितेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थ श्री चंद्रप्रज्ञ विंवं  
कारितं । प्रति० श्री सांवदेव सूरिनिः

[ 1727 ]

सं० १५१४ वर्षे वै० । सु० ३ विष्णुपुर वासि श्री श्रीमालि ज्ञा० म० लपमीधर जा०  
जासू पु० मं० जूठाकेन जा० डीरू द्वि० जसमादे प्रमु० पुत्रादि कुटुंबयुनेन स्वश्रेयोर्थं  
श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री विवंदनीय गढे श्री कक्क सूरिनिः ।

[ 1728 ]

सं० १५३२ वर्षे मार्गशिर शुदि ५ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अर्जन जा०  
हवकू पु० सहिजाकेन जा० मांनू सु० जूठा जावा स्वस्वपूर्वनिमित्तं कुटुंब० श्री सुमति  
नाथ विंवं का० प्र० पूणिमापक्षे चट्टा० श्री गुणतिलक सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ 1729 ]

॥ सं० १५७० वर्षे माघ वदि १ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० चुंडा जा० चांपलदे सुत  
वीसा धरणा वीसा जा० माणिकदे पितृमातृश्रेयसे श्री शीतलनाथ विंवं कारितं विष्णु  
गढे ज० श्री गुणप्रज्ञ सूरि पं० श्री तिलकप्रज्ञ सूरि प्रतिष्ठितं ॥ साचुरा ॥ ७९ ॥

[ 1730 ]

सं० १५८० वर्षे वैशाख सुदि १२ शुके प्राग्वाट ज्ञातीय महं धना सुत महं जीवा चार्या  
जसमादे सुत गोगा चार्या रूपार्ड श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्र० श्री तपा गढे  
हेमविमल सूरिनिः पेथापुर ।

( १७३ )

चौविंशी पर ।

[ 1731 ]

सं० १४७९ वर्षे आषाढ शुक्ल ५ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय मंत्रि बाहूड सुत सिंघा जा० पूजल सुत ठमुआकेन जा० कपूरीयुतेन निजश्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ मूढनायक चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री तपागढाधिप श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ।

[ 1732 ]

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि राणा संताने श्रे० रत्ना जा० धरण सुत पूर्णसिंहेन चार्या देमाई सहितेन तथा चातृ हरिदास स्वपुत्र पासवीर युतेन श्री अजितनाथ त्रिवं चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्र० श्री साधुपूर्णिमापट्टे ज० श्री रामचन्द्र सूरि पट्टे शिष्य पूज्य श्री श्री पूर्यचन्द्र सूरीणामुपदेशेन विधिना नारु श्रावकैः ॥

[ 1733 ]

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने उपकेश झा० डागखिक गोत्रे । सा० धिना जा० वारू पुत्र संघवी पासवीरेण जा० संपूरदे सहितेन स्वश्रेयमे श्री संजवादि तीर्थकृच्चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री कोरंटगछे श्रीनन्नाचार्यसंताने श्री कक्कसूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

नन्दीश्वरछीप की देहरी पर ।

[ 1734 ]

सं० १७०० महा सुदि ५ शुक्ले श्री विजयजिनेन्द्र सूरिजी नन्दीश्वरछीप त्रियप्रवेश प्रतिष्ठित श्रीमत्तगढे श्री गाम बड़नगर दो० शानचन्द्र जयचन्द्र स्थापित ।



## सिंहोर-काठियावाड़ ।

श्री सुपार्वनाथजी का मंदिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1735 ]

सं० १४०० वर्षे वैशाख सुदि ११ शुके प्राग्वाट झा० सं० रत्ना जा० रजाई पु० सं०  
सहस्रकिरण जार्या धरण सुत तजदे कुडुंभयुतेन श्री कुंडुनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री हेमत्रिमल सूरजिः । बलासर वास्तव्य ॥

[ 1736 ]

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल झातीय व० तयरा जा० वावू सुत  
नाणा वड़ीथ गोवल जा० हांसू सु० वीरा जा० बांजलदे सुत लाबु काणहु वानर एतै  
जिनपितृमातृ श्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गळे ज० .... ।

[ 1737 ]

सं० १५३६ वर्षे पौष वदि .... गुरु श्री श्रीमाल झा० श्रे० टोश्या जा० लला सुत  
पर्वत ब्रातृ कमि श्रेयोर्थ जीवितस्वामी श्री नमिनाथ विंबं कारितं श्री आगमगळे श्री  
श्री सिंघदत्त सूरजिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि ।

## पालिताना ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर—माधोलालजी की धर्मशाळा ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1738 ]

संवत् १५९५ वर्षे माइ सुदि ११ शुके आणंदत्रिमल सूरि या० चन्दा जा० माइवजी  
श्रीदजदेव (?) .... ॥

( १९५ )

[ 1739 ]

संवत् १६०० [पो] स वदि ५ सोम० श्रीमालज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० नाथुजी-  
केन धर्मनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[ 1740 ]

संवत् १६१६ वर्षे फाद्युष्य सुदि ७ सोम उ० सा० व्या० श्री सुमतिनाथ विंशं श्री  
हीरविजय सूरिः ।

[ 1741 ]

संवत् १६१० वर्षे भाष सुदि ९ दिने ब । इन्द्राणीसा (?) श्री श्री आदि विंशं का० प्र०  
तपामहे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

[ 1742 ]

संवत् १६०९ वै० शु० ५ शु० स ।

[ 1743 ]

संवत् १९०९ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शुक्ले श्री अंगलमघाधिराज पूज्य चहारक श्री  
कल्याणसागर सूरीश्वराणासुपदेशेन श्री दीव बंदिर वास्तव्य प्राग्व्याट शातीय नाग गोत्रे मंत्रि  
विमल सन्ताने सं० कमलसती पुत्र सं० जीवा पुत्र सं० प्रेमजी सं० प्रागजी सं० आणंदजी  
पुत्र केशवजी प्रसुखपरिवारसुतेन स्वपितृ सं० जीवा श्रेयोऽर्थ श्री आदिनाथ विंशं कारितं  
प्रतिष्ठितं चतुर्विंश श्रीसंघेन ।

[ 1744 ]

संवत् १९१९ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी चार्या घाई मनरंगदंकेन मुनि-  
सुमत विंशं का० प्र० श्री विजयसेन सूरि ।

[ 1745 ]

सं० १९१० वर्षे वै० शु० १ सो[म] सा० विमलसंघे तपामे विश्व श्री अन्नत विंशं प्र०  
श्री विजयसुद्धि सूरि ।



## सिहोर-काठियावाड़ ।

श्री सुपार्वनाथजी का मंदिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1735 ]

सं० १४८० वर्षे वैशाख सुदि १२ शुके प्राग्वाट झा० सं० रत्ना जा० रजाई पु० तं  
सहस्रकिरण जार्या धरण सुत तजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंयुनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री हेमत्रिमल सूरिभिः । बलासर वास्तव्य ॥

[ 1736 ]

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल झातीय व० तयरा जा० बाबू सुत  
नाणा बड़ीथ गोवल जा० हांसू सु० वीरा जा० बांजलदे सुत लालु काणहु वानर एतं  
जिनपितृभ्रातृ श्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गळे ज० .... ।

[ 1737 ]

सं० १५३६ वर्षे पौष वदि .... गुरु श्री श्रीमाल झा० श्रे० टोश्या जा० लला सुत  
पर्वत ब्रातृ कमि श्रेयोर्थ जीवितस्वामी श्री नमिनाथ विं० कारितं श्री आगमगळे श्री  
श्री सिंघदत्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि ।

## पालिताना ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर—साधोलाबजी की धर्मशाला ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1738 ]

संवत् १५९५ वर्षे माह शुदि १२ शुके आणंदत्रिमल सूरि वा० चन्द्रा जा० माहवजी  
श्रीवजदेव (?) .... ॥

( १७५ )

[ 1739 ]

संवत् १६०० [पौ] स वदि ५ सोम० श्रीमालज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० नायुजी-  
केन धर्मनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[ 1740 ]

संवत् १६१६ वर्षे फाल्गुण सुदि ७ सोम उ० सा० व्या० श्री सुमतिनाथ विं० श्री  
हीरविजय सूरिः ।

[ 1741 ]

संवत् १६१० वर्षे माघ सुदि २ दिने ल । इन्द्राणीसा (?) श्री श्री आदि विं० का० प्र०  
तपागहे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

[ 1742 ]

संवत् १६०९ वै० शु० ५ शु० स ।

[ 1743 ]

संवत् १७०५ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शु० श्री अंचलगुहाधिराज पूज्य चक्षारक श्री  
कल्याणसागर सूरेश्वराणासुपदेशेन श्री दीव वंदिर वास्तव्य प्राग्वाट हातीय नाग गोत्रे मंदि  
विमल सन्ताहे सं० कमलसी पुत्र सं० जीवा पुत्र सं० प्रेमजी सं० प्रागजी सं० आणंदजी  
पुत्र केशवजी प्रसुखपरिवारकुलेन स्वपितृ सं० जीवा श्रेयोऽर्थ श्री आदिनाथ विं० कारितं  
प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन ।

[ 1744 ]

संवत् १७११ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी जार्ग वार्द मनरंगदेकेन मुनि-  
सुवत विं० का० प्र० श्री विजयसेन सूरि ।

[ 1745 ]

सं० १७१० वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० विमलचंद्र जार्ग विश्व श्री अनन्त विं० प्र०  
श्री विजयसुद्धि सूरि ।

## सिहोर-काठियावाड़ ।

श्री सुपार्वनाथजी का मंदिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1735 ]

सं० १४०० वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्ले प्राग्वाट झा० सं० रत्ना जा० रजाई पु० तं  
सहस्रकिरण जार्जा धरण सुत तजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंभुनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री हेमविमल सूरिजिः । बदासर वास्तव्य ॥

[ 1736 ]

सं० १५१६ वर्षे वैश्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल झातीय व० तयरा जा० वाद सुत  
नाणा वड़ीय गोवल जा० हांसू सु० वीरा जा० बांजददे सुत लाहु काणहु वानर एतं  
जिनपितृभातु श्रेयोर्य श्री श्रेयांसनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गढे ज० .... ।

[ 1737 ]

सं० १५३६ वर्षे पौष वदि .... गुरु श्री श्रीमाल झा० श्रे० टोश्या जा० लला सुत  
पर्वत ज्ञातु कमि श्रेयोर्य जीवितस्वामी श्री नमिनाथ विंबं कारितं श्री आगमगढे श्री  
श्री सिंघदत्त सूरिजिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि ।

## पालिताना ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर — माधोलाबजी की धर्मशाळा ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1738 ]

संवत् १५९५ वर्षे माह सुदि ११ शुक्ले आणंदविमल सूरि वा० चन्द्रा जा० माहवती  
श्रीवजदेव (?) .... ॥

( १७५ )

[ 1739 ]

संवत् १६०० [पो] स वदि ५ सोम० श्रीमालज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० नाथुजी-  
केन धर्मनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥

[ 1740 ]

संवत् १६१६ वर्षे फाट्युण सुदि ७ सोम ७स० झा० व्य० श्री सुमतिनाथ विं वं श्री  
हीरविजय सूरिः ॥

[ 1741 ]

संवत् १६७० वर्षे माघ सुदि ३ दिने ७ । इन्द्राणीता (?) श्री श्री आदि विं वं का० प्र०  
तपामहे श्री विजयसेन सूरिनिः ॥

[ 1742 ]

संवत् १६७७ वै० शु० ५ शु० स ॥

[ 1743 ]

संवत् १७०९ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शुक्रे श्री अंजलगुहाधिराज पूज्य चहारक श्री  
कल्याणसागर सूरेश्वराणामुपदेशेन श्री दीव वंदिर वास्तव्य प्राग्वाट हातीय नाग गोत्रे मंत्रि  
विमल तन्ताने सं० कमलसी पुत्र सं० जीवा पुत्र सं० प्रेमजी सं० प्रागजी सं० आणंदजी  
पुत्र केशवजी प्रमुखपरिवारदुतेन स्वपितृ सं० जीवा श्रेयोऽर्थ श्री आदिनाथ विं वं कारितं  
प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन ।

[ 1744 ]

संवत् १७१९ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी चार्वा वार्श मनरंगदेकेन मुनि-  
सुव्रत विं वं का० प्र० श्री विजयसेन सूरि ।

[ 1745 ]

सं० १७५० वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० विमलचंद्र चार्वा विश्व श्री अनन्त विं वं प्र०  
श्री विजयसूरि सूरि ।

( १७६ )

[ 1746 ]

संवत् १७४० ॥ फाट्युण सुदि २ ॥ वासरे तदिने श्री पार्श्वनाथ विंभं प्र० बाई सी  
चरावती ॥

[ 1747 ]

दो० बाघा श्री जीराउलाउ श्री पार्श्वनाथ ।

[ 1748 ]

षा० हीराई श्री शान्तिनाथ ०० श्री हीरविजयसूरि प्र० ॥

[ 1749 ]

संवत् १७०३ वर्षे माघ विदि ५ शुके श्री चन्द्रप्रज विंभं कारापितं श्रीमालि वंश  
शा० अनोपचन्द तस्य जार्या बाई नाथो अंचल गहे ॥

श्री सिद्धचक्र यन्त्र पर ।

[ 1750 ]

संवत् १७५४ ना वर्षे माघ विदि ५ चन्द्रे श्री तपागहे बाई पूखी तस्या पुत्री बाई  
जवल श्री सिद्धचक्र करापितं पं० पंवाविजैः (?) प्रतिष्ठितं श्री राजनगर मध्ये ।

चौबीसी पर ।

[ 1751 ]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख विदि ७ रवौ श्री सीखंज वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० वासा  
जा० मानूं सुत श्रेष्ठ समधरेण जा० जासी जा० धर्मादे सुता लाली प्रमुखकृदुम्बयुतेन  
स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री तपागहे श्री रत्तशेखर  
सूरि पट्टे गठनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1752 ]

सं० १४३७ ( ? ) ॥ प्राग्वाट ज्ञातीय शा० हावा जार्या दानू सुत शा० तीर्गिरेष

श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं तपागङ्गे श्री देवचन्द्र सूरिनिः ।

[ 1753 ]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ सुदि १० शुक्ले श्री प्रग्वाट ज्ञातीय श्रे० पींचा चार्या लाखणदे  
तयोः पुत्रैः श्रे० वीरम धीटा चीगाख्यैः ज्ञातृपितृश्रेयोऽर्थ श्री सुनिसुव्रतस्वामी विंशं कारितं  
प्र० तपागङ्गे वृद्धशाखायां श्री जिनरत्नसूरिनिः । श्री सहूआला वास्तव्य ।

[ 1754 ]

सं० १५१२ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आसपाल ज्ञा० पचू पुत्र धना ज्ञा० चमकू पुत्र  
साधवेन ज्ञा० वाढ्हो ज्ञातृ देवराज ज्ञा० रामकी देपालादिद्युनेन श्री सुमति विंशं कारितं  
प्र० तपागङ्गेश श्री लोमसुंदर सूरि श्री सुनिसुंदर सूरि श्री जयचन्द्र सूरिशिष्य श्री श्री  
रत्नशेखर सूरिनिः ॥ श्री ॥

[ 1755 ]

सं० १५१७ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे उकेश वंशे कुंकड गोत्रे ज्ञा० गुजर पु० गा० देव-  
राज पु० आसा पु० ज्ञा० समधरेण खनानृ चाई पुण्यार्थ श्री कुन्धुनाय विंशं कारितं प्रति०  
श्री खरतरगङ्गे श्री विवेकरत्न सूरिनिः ।

[ 1756 ]

सं० १५१० वर्षे वैशाख सुदि १३ सखारि वानि प्रा० ना० जावड़ ना० वाच सुन दृग-  
वासेन ज्ञा० गोमती ज्ञातृ देवा ज्ञा० धर्मिण्युनेन श्रेयोऽर्थ श्री सुमति विंशं का० प्र० तपा  
श्री रत्नशेखर सूरि पदे श्री लदनीतागर सूरिनिः ।

[ 1757 ]

सं० १५१६ वर्षे भाद्र सुदि १५ शुक्ले श्री श्रीनाथ ज्ञातीय वनव० नरना चार्या पादरी  
ज्ञातृश्रेयोऽर्थ जीवतस्वामी श्री अजितनाथ सुव्य पंचवीथी विंशं कारितं श्री प्रणिमा  
पदे श्री सुनितिकर सूरि पदे श्री नजनिदृग सूरिणासुरवेनेन प्रतिष्ठितं । ज्ञातृ वास्तव्य ।

( १५७ )

[ 1758 ]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि ६ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० गोपात्र जा० सत्री पु  
पोमाकेन जा० कमकू श्रेयोऽर्थ श्रीसुमतिनाथ विंभं कारितं श्री पूर्णिमापक्षे ज० श्री सागर  
तिलक सूरि पद्ये ज० श्री गुणतिलक सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[ 1759 ]

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ७ सोमे श्रीमात्र ज्ञानीय शा० राजा जा० गजवदे सु  
स० शाह गिकूया चार्या राजाई तथा सु० पासा जीवायुतया स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ  
विंभं श्री आगम गद्ये श्री जयानन्द सूरि पद्ये श्री देवरत्न सूरि गुरुउपदेशेन कारितं  
प्रतिष्ठापितं च ॥ शुभं भवतु ॥ श्री स्तम्भतीर्थ ॥ ७४ ॥

[ 1760 ]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय म० देवसी जा० देवद्वेष  
पुत्र सहिजाकेन जा० धनी पुत्र गंगदास सचू हांसा चालू कीपा प्रमुखकुटुम्बयुतेन पितृ  
निमित्तं स्वश्रेयसे च श्री कुन्धुनाथ विंभं श्री पूर्णिमापक्षे श्री लौजाग्यरत्न सूरिणामुपदेशेन  
का० प्र० विधिना श्री लीवासी ग्रामे ॥

[ 1761 ]

सं० १५५२ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय प० सधा जा० अमकू सु० प०  
मूलाकेन जा० हांसी सु० हर्षा लषा सहितेन स्वश्रेयोऽर्थ श्री सम्भवनाथ विंभं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपापक्षे ज० श्री उदयसागर सूरिभिः ॥ श्री पत्तने ॥

[ 1762 ]

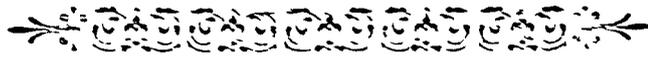
सं० १६३७ वर्षे माघ वदि ९ शनौ श्री दीव वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखा  
मण्डन श्रेण काबा जा० कामलदे सुत कक्की चार्या हर्षादे सुत सचवीर चार्या सहिजलदे  
सुत हीरजी चार्या हीरादे श्री आदिनाथ विंभं कारितं तपागद्ये श्री हीरविजयसूरिभिः  
प्रतिष्ठितं ॥ ठ ॥







- ६। त० सोनी जयपाल जार्या मृगाई ॥ ततः ॥ सोनी सायर जार्या वाई वाकू सुत सोनी  
मना जार्या वाई
- ७। वरजू सुत सोनी श्रीवंत सोनी जयवंतौ । सपरिजनसहितेन ॥ सोनी समरासिंह  
जार्या वाई पाही-
- ८। सहितेन ॥ एतै श्री चारवाड पुरे चर (?) ॥ निजजुजोपार्जितधनद्वैतार्थहेतोः ॥ श्री  
चिंतामणि पार्श्वना-
- ९। य चैत्यं कारापितं ॥ श्री वृद्धतपागढे जट्टारक श्री जयचन्द्र सूरि पट्टावतंस ॥ जट्टा०  
श्री जिन-
- १०। सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री जयसुन्दर गणि शिष्य महोपाध्याय श्री संवेगसुन्दर  
गुरूपदेशेन ॥ प्र-
- ११। तिष्ठितं चेति कल्याणमस्तु ॥ शुभं जवतु ॥



## घोषा-काठियावाड ।

श्री सुविधिनाथजी का मन्दिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1767 ]

॥ सं० ११६१ माघ ११ श्री नागेंद्रकुले श्री विजय तुंगसूरि.... ।

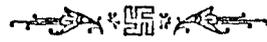
[ 1768 ]

सं० १५०३ धर्मप्रज्ञ सूरि त० पट्टे श्री धर्मशेखर सूरिनिः शुभं जवतु धाराधकन्य ।

[ 1769 ]

सं० १५१७ वर्षे महा सुदि ५ शुक्ले श्रेष्ठि नरपाल जा० कचुई नेपां सुता नामत्र देवा

पवित्रीकृतनिजांग सप्तक्षेत्रारोपितस्वकीयवित्त सं० लटकणा ज्ञा० सं० छलतादे .  
सुत जिनकुलकमलविकाशनैकसूर्यावतारः दातृगुणेन नृपतिश्रेयांससमः श्री जिन  
प्रतिष्ठातीर्थयात्रादिधर्मकर्मकरणैत्सुकचित्त संघपति श्री रत्नसो ज्ञा० सि० ९  
द्वि० ज्ञा० सं० मोहणदे तृतीय ज्ञा० सं० नवरंगदे द्वितीय सुत संघवी श्री रामजी .  
सं० केशरदे तयोः सुत संघवी कूंगरसी ज्ञा० सं० जाऊसदे द्वितीय सुत संघवी शुभ  
ज्ञा० सं० मसतादे एतेषां महासिद्धक्षेत्रः श्री सेतुंजय रत्नगिरौ श्री जिनप्रासाद  
शांतिनाथ त्रिवं कारयित्वा नित्यं प्रणमति । शुभं चवतु ।



## चौरवाड़-जुनागढ ।

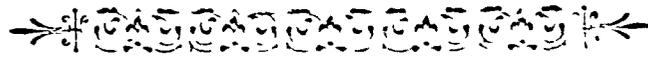
जेन मन्दिर ।

शिला लेख ।

[ 1766 ]

- १ । सुरमण्डलविशाल नगर श्री चौरवाटके रुचिरचिंतामणि पार्श्वनाथ विप्रोदय पर  
रत्नस्य तत्र गुण व.
- २ । श्री । गायत्र तनयो । आंवाक्यस्तत्र चादिमो गुणवान् । द्वितीयो मनातिशयोक्तो  
धर्म रतः कृपावानः ॥ १ ॥ आं
- ३ । वाकरस्य तनुजः सुविवेकः समरसिंह उत्याह्वः । देवगुरुनक्तिपरमः तत्र गुरु के  
नाट्यकवः ॥ ३ ॥ श्री
- ४ । सं० १५२२ वर्षे वैशाख सुदि तृतीया शुभे । श्री मंगलपुर वास्तव्य । श्री गुणा  
दानीय मोती माय-
- ५ । मन्त्रदे तुत सं श्री आंवा तायी वाई मन्दिन सुत सोनी समरमी तायी मन्त्रे  
तयै मन्त्रवाई

- ६। त० सोनी जयपाल चार्या मृगाई ॥ ततः ॥ सोनी सापर चार्या वाई बाकू सुत सोनी मना चार्या वाई
- ७। वरजू सुत सोनी श्रीवंत सोनी जयवंतौ । सपरिजनसहितेन ॥ सोनी समरासिंह चार्या वाई पाही-
- ८। सहितेन ॥ एनै श्री चारवाड पुरे चर (?) ॥ निजशुजोपार्जितधनद्वतार्थहेतोः ॥ श्री चिंतामणि पार्श्वना-
- ९। थ चैत्यं कारापितं ॥ श्री वृद्धनपागढे जहारक श्री जयचन्द्र सूरि पट्टावतंस ॥ जट्टा० श्री जिन-
- १०। सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री जयसुन्दर गणि शिष्य महोपाध्याय श्री संवेगसुन्दर गुरूपदेशेन ॥ प्र-
- ११। तिष्ठितं चेति कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥



## घोषा-काठियावाड़ ।

श्री सुविधिनाथजी का मन्दिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1767 ]

॥ ॐ सं० ११६१ माघ ११ श्री नागेंद्रकृष्ण श्री विजय तुंगसूरि.... ।

[ 1768 ]

सं० १५०३ धर्मप्रज्ञ सूरि त० पट्टे श्री धर्मशेखर नृगितिः शुभ नयतु आगमस्य ।

[ 1769 ]

सं० १५१७ वर्षे महा रुद्रि ५ तुळे जेठि नगनाद ना० कचुई देवां नृता मामत्र देवा

रोका बीमा स्वचार्या पितृमातृश्रेयार्थं श्री कुंथुनाथ त्रिवं का० प्र० श्री आगम गेठे -  
आनन्दप्रज्ञ सूरिनिः आवरणि वास्तव्य ।

[ 1870 ]

सं० १५३६ वर्षे आषाढ सुदि ६ श्री ओसवाल ज्ञाती सा० पादा जार्या वनधु ७  
गोविन्द ज्ञा० गंगादे नाझा आत्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ त्रिवं कारितं प्र० बृहत्तपा पक्षे ज०  
जिनरत्न सूरिनिः

[ 1771 ]

सं० १५५५ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ घनौघ वास्तव्य श्री उंसवाल ज्ञा० सा० गोगन  
जा० गुरदे सुत हांसाकेन जा० कस्तुराई सहितेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ त्रिवं का० श्री  
बृहत्तपा गेठे ज० श्री धर्मरत्न सूरिनिः ।

[ 1772 ]

सं० १५५५ वर्षे वै० सु० ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मनोरद जा० मांकी सु० वाहराज  
जा० जीविनी सु० देवदासेन जा० दगा सु० पासा करन धर्मदास सूरदास युतेन श्री  
विमलनाथ त्रिवं कारितं श्री अञ्जलगेठे श्री सिद्धांतसागर सूरि गुरूपदेशात् ।

[ 1773 ]

सं० १५५७ वर्षे पोष वदि ६ रवौ घनौघ वासी श्री श्रीमाल ज्ञा० सा० माईया ज्ञा०  
जीवी सुत कानाकेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ त्रिवं का० प्र० श्री बृहत्तपा पक्षे श्री लक्ष्मी-  
सागर सूरिनिः । श्रेयो जवतु पूजकस्य ।

[ 1774 ]

सं० १५५३ वर्षे वै० सु० ११ शुके श्री श्रीवंशे मं० माईया सुत मं० मूला जा० रम  
सुश्राविकया सुत मं० धना मेघा रामा सहितया निजश्रेयार्थं श्री सुमतिनाथ त्रिवं का०  
प्र० धर्मवृत्त सूरिनिः श्री जांबू ग्रामे ।

( १७३ )

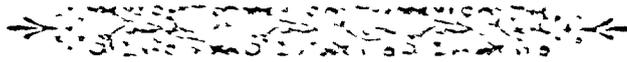
चौविंशो पर ।

[ 1775 ]

सं० १५११ वर्षे का० शु० शनो श्री श्रीमाज्ज ज्ञानीय सं० कृष्ण चार्या राजुज सुत सिंह-  
राज सं० विरुवाकेन पितृपातुञ्ज नृश्रेयोर्य श्री कुंभुनाथ चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री  
क० गुरुमुंदर सूरिजिः ।

[ 1776 ]

सं० १५१४ वर्षे आ० सुदि १० शुक्रे श्री श्रीवंशे सं० सांगन जा० सोहागदे पुत्र सं०  
धीरववल जा० सुमी पु० खेतस्त्री जन्मनाम्ना जूडाकेन सं० चार्या जयतलेदे त्रातृ काजा  
बड्या चारुपुत्र जोजा देवस्त्री धीरा प्रमुखतमस्नकुटुम्बसहितेन तत्पितृश्रेयोर्य श्री अंचल-  
गणेश्वर श्री जयकेसरी सूरिनामुपदेशेन श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री श्री-  
संवेन श्री विहुंड्रज्ञ प्रामे ।



## शीयालवेट-काठियावाड़ ।

जैन मंदिर ।

पापाय की मूर्तियों पर ।

[ 1777 ]

- १। तं संवत् ११७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ रवौ अच्येद्
- २। विंशतके सिद्धराज श्री रघुसिंह प्रतिरुत्तो नमस्तस्येन श्री मद्यारी-
- ३। र दिवं वारितं प्रतिष्ठितं श्री चण्डगडीव श्री नानिभन मूर्ति सिद्धे श्री वृषिभन  
सूरिजिः ॥

[ 1778 ] \*

ए० ॥ सं० १३०० वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे श्री सहजिगपुर वास्तव्य पद्मी० ज्ञाती  
ठ० देदा जार्या ककूदेवी कुक्षिसंभूत परी० महीपात्र महीचन्द्र तत् सुत रतनपाल वि०  
पालैर्निजपूर्वज ठ० शंकर जार्या लक्ष्मी कुक्षिसंभूतस्य संघपति सूधगदेवस्य निजपा  
वार सहितस्य योग्यं देवकुलिकासहितं श्री मल्लिनाथ त्रिं कागितं प्रतिष्ठितं श्री च  
गढीय श्री हरिप्रज सूरिशिष्यैः श्री यशोचन्द्र सूरिनिः ॥ ७ ॥ मंगलमस्तु ॥ ७ ॥

[ 1779 ] \*

सं० १३१५ फाट्गुण वदि ७ शनौ अनुगधा नक्षत्रे अद्येह श्री मधुमत्यां श्री महावीर  
देवचैत्ये प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि आसदेव सुत श्री सपाल सुत गंधि चिब्रकेन आत्मनः  
श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ देव त्रिं कारितं चन्द्रगढे श्री यशोचन्द्र सूरिनिः प्रतिष्ठितं ।

[ 1780 ] \*

सं० १३२० माघ सुदि ..... गुरौ प्राग्वाट ज्ञात ..... प्र व्य० वीरदत्त सुत व्य० जाला  
जार्या माठिकया स्वश्रेयोर्थ रांकागढीय श्री महीचन्द्र सूरिनिः महावीर चैत्ये श्री कृपानंद  
त्रिं कारितं ।

\* वहां के गोरखमण्डी में भोयरे के पास पड़े हुए मूर्तियों पर ये लेख हैं ।











- १६ । नू महेंद्रप्रजसूरिरार्यः ॥ श्रीमेरुतुंगोऽमितशक्तिमांश्च । कीर्त्यद्भुतः श्री ज-
- १७ । यकीर्त्ति सूरिः ॥ ७ ॥ वादिद्विरौघे जयकेसरीशः । सिद्धांतसिंधुर्भुवि ज्ञा-
- १८ । वसिंधुः । सूरीश्वरश्रीगुणशेवधिश्च । श्री धर्ममूर्त्तिर्मधुदीपमूर्त्तिः ॥ ए ॥
- १९ । यस्यांघ्रिपंकज निरंतरसुप्रसन्नात् । सम्यक्फलं तिसमनोरथवृद्धमालाः ॥ श्री-
- २० । धर्ममूर्त्तिपदपद्ममनोज्ञहंसः । कल्याणसागरगुरुर्जायताङ्गरिभ्यां ॥ १० ॥
- २१ । पंचाणुव्रतपालकः स करुणः कदपद्ममाजः सतां । गंचीरादिगुणोज्वलः शु-
- २२ । चवतां श्रीजैनधर्मे मतिः । द्वे काव्ये समतादरः द्वितितले श्री उषवशे विभुः
- २३ । श्रीमद्वालणगोत्रजो वरतरोऽचूत् साहि सांहात्रिभः ॥ ११ ॥ तदीय पुत्रो हरप
- २४ । मा देवाच्चनंदोऽथ स पर्वतोऽचूत् । बहुस्ततः श्रीअमरात्तु सिंहो । चाग्याधिकः को-
- २५ । कलाप्रवीणः ॥ १२ ॥ श्रीमतोऽमरसिंहस्य । पुत्रामुक्ताफलोपमाः । वर्द्धमानचांपसिंह
- २६ । पद्मसिंहा अमीत्रयः ॥ १३ ॥ साहि श्री वर्द्धमानस्य । नंदनाश्रंदनोपमाः । वीराहो
- २७ । विजपालारुयो जामो हि जगभूस्तथा ॥ १४ ॥ मंत्रीश पद्मसिंहस्य । उ
- त्रयः ।
- २८ । श्रीश्रीपालकुंरपाल । रणमह्ना वरा इमे ॥ १५ ॥ श्रीश्रीपालांगजो जीया । नारायणो
- मनो-
- २९ । हरः । तदंगजः कामरूमः कृष्णदासो महोदयः ॥ १६ ॥ साहि श्रीकुंरपालस्य । वर्त्तने
- ऽन्व-
- ३० । यदीपकौ । सुशीलस्त्रावराख्यश्च । वाघजिज्ञाग्यसुन्दरः ॥ १७ ॥ स्वपरिकरयुताच्याम-
- मात्य-
- ३१ । शिरोरत्नाच्यां साहि श्रीवर्द्धमानपद्मसिंहाच्यां हल्लारदेशे नव्यनगरे जाम श्रीशु-
- शब्दार्मज
- ३२ । श्री जसवन्तजी विजयिराज्ये श्री अंचलगणेश श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुप-
- देशेनात्र श्री शां-
- ३३ । तिनाथप्रासादादिपुण्यकृत्यं श्रीशांतिनाथप्रभृत्येकाधिकपंचशतव्रतिमाप्रतिष्ठायुगं का-

३४ । पितं चाद्या सं० १६७६ वैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे द्वितीया सं० १६७७ वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवासरे

३५ । सं० १६७७ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ गुरुवासरे उपाध्याय श्रीविनयसागरगणेः शिष्य सौभाग्यसागरैः

( अधो जाग )

३६ । रत्नेस्त्रीयं प्रशस्तिः ॥ मनमोहनसागरप्रासाद

( वाम जाग )

३७ । मंत्रीश्वर श्रीवर्द्धमान पद्मसिंहाच्यां ससलक्षरूप्यमुद्रिकाव्ययीकृतानवक्षेत्रेषु साहि श्रीचांपसिंहस्य पुत्रैः श्रीअमियात्रिधः । तदंगजौ शुद्धमती । रामजीमावुजावपि १७ ॥

श्री आदीश्वरजी का मन्दिर ।

[ 1782 ]

- |   |  |
|---|--|
| १ । ॐ श्री गौतमस्वामीनि लब्धि ॥ ज-      | २ । द्वारक चक्रवर्त्ति जट्टारक श्री    |
| ३ । हीरविजय सूरीश्वर चरण पादु           | ४ । काच्यो नमः ॥ सं० १६३३ वर्षे परम    |
| ५ । गुरु श्रीमत्तपागढाधिराज सकल-        | ६ । जट्टारकपुरंदर जट्टारक श्री हीरवि-  |
| ७ । जय सूरिराज्ये तथा जाम श्री शत्रशह   | ७ । राज्ये प। श्रीरवितागर गणि विशिष्यो |
| ८ । पदेशेन नवीननगर सकल संघ सु-          | १० । खसंधेन स्वश्रेयसे नवीनशिख-        |
| ११ । रं बध्वा प्रासादः कारितः ॥ ततो अक- | ११ । वर सुरत्राण प्रेषित मुग्गलैरुप-   |
| १२ । ड्रवकरणान्तरं जट्टारक श्री श्री    | १४ । हीरविजय सूरि पटोदयाद्रिदिन-       |
| १५ । कर जट्टारक श्री ५ श्री विजय से-    | १६ । न सूरिराज्ये ॥ सं० १६५१ वर्षे     |
| १७ । श्री श्रीमाली ज्ञातीय । जणसाली     | १७ । आणन्द जणसाली अबजीच्यां            |
| १८ । जणसाली आणन्द सुत जीवरा-            | २० । ज मेघराज प्रमुखसकलकुटं-           |
| २१ । वयुताच्यामेक त्रिंशत् सहस्र        | २२ । ३१००० रौप्य मुद्राव्ययेन पुनर-    |
| २३ । पि तथैव कारितं । सांप्रतं विज-     | २४ । यमान आचार्य श्री श्री श्री ३ श्री |

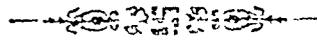
३५ । विजयदेव सूरीश्वर प्रसादात् ।

३६ । चिरं तिष्ठतु । शिवमस्तु ॥

३७ । घस्य ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ आदिनाथ

३८ । आवां कृतः । प्रासादनामनि

प्रासादः



## तालाजा-काठियावाड ।

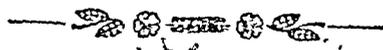
पाषाण के चरणचौकी पर ।

[ 1783 ]\*

उं सं० १३०२ वैशाख सु० ३ धवलकण्ठका वास्तव्य उ० पदमसीह सुत उ० जा-  
मदन जयता तेन ॥ उ० मदन जार्या उ० लक्ष्मा देवी श्रेयोर्थ सुत उ० पादहृष्टेन श्री-  
वीर विंशं पट्टकं च प्रतिष्ठितं आचार्य श्री माणिक्य सूरिजिः ।

[ 1784 ]

- १ । सं० १२१८ वर्षे दण्ड श्री धांध प्रभृति पञ्चकुलन श्री सुनिसुत्रतस्वामी देवा
- २ । .... णि .... पा विशेषपूजाप्रत्ययमण्डपिकायां प्रतिवर्षा हो
- ३ । .... इ ( १ ) ४ चतुर्विंशतिद्रुमाः । इ० खवनादेश । बहुजिर्वसु
- ४ । [धा जुक्ता] राजजिः सगरादिजिः । यस्य यस्य यदा नूमि तस्य तस्य
- ५ । तदा फलं ॥ १ ॥ तथा समस्तप्रमदाकुलाय अ .... पूर्णिमादि
- ६ । .... (रके) ४ चत्वारि द्रुमाश्च ॥ पञ्चकुलसमक्षे देवद....
- ७ । .... इ ४ पीजाम्—इ ३४ रक्षपटा
- ८ । —मठाय



\* यह लेख तालाजा से पूर्व में हजुरापीर की कवर से मिली हुई मूर्तिरहित पाषाण की चरण चौकी पर है और मान्य  
वास्तुन लार्सेरी के मुद्रियन में मुद्रित है ।

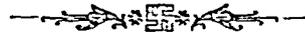
( १८९ )

## भाङ्गरोल-काठियावाड ।

पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1785 ] \*

- १ । उं ॥ सं० ११५३ वर्षे आपाह सुदि ४ शनौ ठ० चाविगउ महं वन्नराजे(न आ)त्म-  
श्रेयोर्ध श्री मुनिसुव्रतस्वामि प्रतिमा  
१ । कारिना प्रतिष्ठिता च श्री देवचन्द्र सूरि शिष्यैः श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥



## वेरावल-काठियावाड ।

शिला लेख ।

[ 1786 ] †

- १ । ..... वृद्धिवन्नानि नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ श्रे(?) प्रपा(सा) दन्तीष्ट संसिद्धयै  
मुखं चन्द्रप्रभं ....  
२ । ..... ह्य पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ ॥ मन्ये वेधा विधायैतद्विधित्सुः  
पुनरीहृ ..... दे  
३ । ..... रेन्द्रैश्चत्रयमंत्रैर्यत्रलक्ष्मीः स्थिरीकृता ॥ ५ ॥ तन्निःशेषमहीपात्रमौलीः  
घृष्टांश्चि  
४ । सौ नृपः । तेनात्खातासुन्मूढो मूढराजः स उच्यते ॥ ७ ॥ एकैकाधिकैश्चपात्रा  
सम .....  
५ । ..... सत्रजखुराहृतं । अतुठलत्थुयं पर्वत्रममजीजनत् ॥ ९ ॥ पौरुषेण प्रज्ञापेन  
पुत्येन ...

\* यह लेख रावली मतजीद के पास गुजरात में निरुली हुई मूर्ति के चरणवर्तनी पर है ।  
यह लेख वहां के फौजदारी कारे में रखा हुआ है ।

- ६ । ..... र न्यूनविक्रमः । श्री जीमन्नूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्ययं ॥ १  
जावाङ्गराण्यनञ्जाणि यो वसङ्गम(वज्रजम)
- ७ । ..... न्दंदि संघे गणेश्वराः । वज्रबुधुः कुंदकुंदाख्या साक्षात्कृतजगत्रयाः ॥ १३ ॥  
माकाशगामित्वं त्य ।
- ८ । ..... शत(पं)चकमुज्वलं । रमयित्वाद्य जन्मांतियेऽन्यन्नियमपूर्वकं ॥ १४ ॥ कापे  
स्मिन् चारते क्षेत्रे जाता
- ९ । ..... रीणा तत्व वर्त्मनि तेषां चारित्रिणो वंशे चूरयः सूरयोऽजवन् ॥ १७ ॥ सदृक्षणा  
पि निद्वेषाः सकलापंकः
- १० । प्रजा यस्या रुरोह तत् । श्रीकीर्त्ति प्राप्य सत्कीर्त्ति सूरिं चूरिगुणं ततः ॥ १९ ॥ यदीवं  
देशनावारिं सम्यग् वि(ग्रो)
- ११ । ..... कश्चिन्नकूटाच्च चावसः श्रीमन्नेमिजिनाधिशः तीर्थयात्रानिमित्ततः ॥ २१ ॥  
अणहिल्लपुरं रम्यमाजगा
- १२ । ..... नींजाय ददौ नृपः । विरुदं मण्डलाचार्यः सहत्रं समुखासनं ॥ २३ ॥ श्रीमुखवसंति  
कारुयं जिनचवनं तत्र
- १३ । ..... संज्ञयैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचन्दोयस्ततो चूत् स गणीश्वरः ॥ २४ ॥ चाह  
कीर्त्तियशः कीर्त्तिश्च
- १४ । ..... युक्तो को रत्नत्रयवानपि । यथावद्विदितात्मां साचूत् क्षेमकीर्त्तिस्ततो गणि  
॥ २७ ॥ उदेतिस्म लसद्ज्योति
- १५ । ..... क्षेपिवासिते हेमसूरिणा वस्तू प्रायरणं येन वशे ..... लेयिनं ॥ २९ ॥ .....  
पू .....
- १६ । ..... कीर्त्तिर्यत्कीर्त्तिर्ज्ञर्त्तको व ..... । त्रिभुवनरा ..... वासुकिं नूपुरशशितिलक  
निपट्या ॥ ३१ ॥ ते
- १७ । ..... ति ॥ ३२ ॥ समुद्धृतसमुष्टन्नश्रीर्णजीर्ण त्रयः । यः कृता रन्ननिर्वाहेसमुत्साद्  
शिरोमणि

.... शयैरवगण्यते ॥ ३४ ॥ वादिनो यत्पद छन्दनखचन्द्रेषु विविताः । कुर्वते विगत  
श्रीकाः कलंक

। .... दं तीर्थभूतमनादिकं ॥ ३६ ॥ सतायाः स्थापना यत्र सामेशः पद्मपातकृत् । प्रज्ञो-  
ल्लोक्ष्य

। .... तदुद्धृततेन जातोद्धारमनेकशः ॥ ३७ ॥ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो निजजुजमुद्धृत्य सक

। .... पतो मंडलगणि ललितकीर्त्ति सुकीर्त्तिः । चतुरधिकविंशति जसध्वजपटपट्टहंसूक ॥

। .... मेतदीय सज्ञोष्ठिकानामपि गह्वकानां ॥ ४१ ॥ यस्य स्तानपयोनुद्धितमखिलं जुष्टं  
दवी

। .... चन्द्रप्रज्ञः स प्रह्वस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताहिग्व्यससां शासनं ॥ ४२ ॥ जिन  
पतिगृह

। .... चाणवर्णिवर्यो ब्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गैरुपेतैः ॥ ४३ ॥ श्रीमद्विक्रम रूपस्य  
वर्षाणां द्वादशे

। .... क कीर्त्ति लघुबंधुः । चक्रे प्रशस्तिः मनघो गणि .... प्रवरकीर्त्तिरिमां ॥ ४५ ॥  
सं० १२ ....

जैन मंदिर ।

शिखा लेख ।

[ 1787 ]

१ । ॥ ए ए० ॥ संवत् १७९६ वर्षे शाके १७४१ प्रवर्त-

२ । माने माघ मासे शुक्लपक्षे अष्टमी तिथौ शनिवा-

३ । सरे श्री देवका पाटण नगरे श्री चन्द्रप्रज्ञ जि-

४ । न जीर्णोद्धार समस्त संघेन कारापितं चट्टार-

५ । क श्री श्री विजयजिणेन्द्र सूरि उपदेशात् श्री

६ । मांगडोर वास्तव्य शाण नानजी जयकरण

७ । सुत मकरजी ॥ ७ ॥ सुन्दरजीकेन जीर्णोद्धार-



- ७ । र प्रतिष्ठा कारापितं चट्टारकं श्री श्री विजय-  
ए । जिष्णेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागळे  
१० । जब लग मेरु अडग है तब लग शशि ओ-  
११ । र सूर । जिहां लग ए पट्टक सदा रहजो स्थि-  
१२ । र नरपूर १ लि । वजीर ज्योति लोकविजयेन ।



## गाणेशर-गुजरात ।

जैन मन्दिर ।

शिखा लेख ।

[ 1788 ]

- १ । ॥ ए० ॥ स्वस्ति सं० १२११ वर्षे वैशाख सुदि १४ गुरौ श्रीमदणहिलपुर वास्तव्य  
प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० (चं)  
२ । डप्रसादांगज ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आशाराज तनुजन्म ठ० श्री कुमारदेवी  
कुहिसमुद्भूत ठ० लूणि(ग)  
३ । महं० श्रीमालदेवयोरनुजमहं० श्री तेजःपालाग्रज महामात्य श्री वस्तुपालात्मज महं०  
श्री जयतसिंह ( स्तम्भ )  
४ । तीर्थनुद्धाव्यापारं सं ३९ वर्ष पूर्व व्यावृण्वति महामात्य श्री वस्तुपाल महं० श्री  
तेजःपालान्यां समस्तमहातीर्थेषु  
५ । तथा धन्यस्तमस्तस्यानेष्वपि कोटिशोऽन्निनवधर्मस्थानानि जीर्णोद्धारश्च कांतिः  
तथा सचिवेश्वर श्री वस्तु-  
६ । पात्रेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउजि ग्रामे प्रपा श्रीगाणेश्वरदेवमण्डपः पुरतस्तोरणं  
(अत्र)नः प्रतोतीठागळं(क)

- ७। त प्राकारश्च कारितः ॥ ७ ॥ गांजीर्ये जलधिर्वृद्धिर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः सौन्दर्ये  
पुरुषत्रने रघुपतिर्वाचस्पतिर्वा .....  
८। ये । लोकेऽस्मिन्दुपमानतामुपगताः सर्वे पुनः सम्प्रति प्राप्तास्तेऽप्युपमेयतां तदधिके श्री  
वस्तुपाले सति ॥ १ ॥ विदधति  
९। विदग्धमतयस्तुष्ट्यौ कौटिद्वयवस्तुपालौ ये । ते कुर्वते न कस्मात्कूपाकूपायः समतां  
॥ २ ॥ वदनं वस्तुपालस्य  
१०। कमलं को न मन्यते । यत् सूर्यालोकने स्मेरं ज्वति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥ श्री वस्तुपाल  
सम्प्रति परं महति कर्म(कुर्व)  
११। ता ज्वता । निर्वृतिरर्थिजने च प्रत्यर्थिजने च संघटिता ॥ ४ ॥ तस्मै स्वस्ति चिरं  
चुद्युभ्यतिवक्रामात्याय .....  
१२। क्रान्तक्रतुकर्मनिर्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति । राधे येन विना विना च शिविना  
ि..... य ना ि.....  
१३। द्वासित मम्मटाः स्वसदनं गङ्गति सन्तः सदा ॥ ५ ॥ महामात्य श्री वस्तुपालस्य  
प्र(शस्तिरियं) .....



## प्रभास पाटण - गुजरात ।

वावनजिनालय मन्दिर ।

मूर्तिदों पर ।

[ 1789 ]

- १। ठ० हीरा देवि पितृ० वीरदेव मातृ लक्तं संघ० पेथरु संघ० कृशुग संघ० पदमेस  
महं० वि(कन)ती वयजलदेवि महं० द्याब्दणमीद् महं० महगमीद् व्यय० सापस  
सो० महिपाल मातृ लक्त

- २ । ठ० रत्न ठ० लूणी ॥ ठ० ॥ पीपमीह श्रे० डोहर न० गणपतीह ठ० धोंप  
आमुल नागल श्रे० नागसूर राज० सा० चन्द्रमण्डल पा० जनेदीन ठ० जग्देव ठ०
- ३ । फो० रिणसीह ठ० मङ्गल नद्वरा मन्गीह राजगण श्रे० रचना ना० गणमीह  
लक्ष्मी करुसो दे० लूणा ठ० पाता श्रीपादेनी गूढा ठ० पनरीह ठ० सिरी
- ४ । ठ० सीडा ॥ मातृ० बाधिणि ठ० नगरसीह फो० चरणिम भागजनेदीन राजल ॥ वा  
वा० तेजी ठ० तिहुणगाळ ठ० लाठि फो० मूणा गुण० प छा० सेवल कामधे  
ठ० लपमीधर ।

चरणनौकी पर ।

[ 1790 ] \*

- १ । ॥ ए० ॥ सं० १६९९ वर्षे फाद्युन सित छादशी सोमवासे श्री द्वीप चन्द्रि  
वृद्धशाखीय उकेश ज्ञातीय सा० सुदुणसी जार्गा संपूर्णई सुन सा० सवराज ना  
श्री कुंकुमरोल पार्श्व विंबं सपरिकरं कारितं प्रतिष्ठितं च स्वप्रतिष्ठायां । प्रति-
- २ । ष्टितं चं तपागहाधिराज जटारक श्री १ए श्री हीरविजय सूरीश्वर पट्टालंकार  
श्री १ए श्री विजयसेन सूरीश्वरपट्टप्रजाकर जटारक प्रभु श्री १ए श्री विजयसेन  
सूरिजिः । स्वपट्टप्रतिष्ठिताचार्य श्री ५ श्री विजयसिंह सूरिजिः साथा(?) स्वशिष्योपा  
ध्याय श्री ५ श्री बावण्यगणप्रमुखपरिकरितैः ॥ शुभं चतु ॥ श्री ॥

[ 1791 ] †

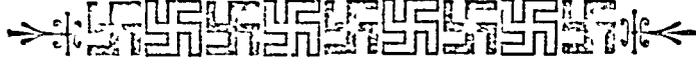
- १ । सं० १३३० वैशाख सुदि(१) शनौ पट्टीवाल ज्ञातीय ठ० आसाह ठ० आसापट्टाचार्य  
जा० जादह श्रेयोर्थ
- २ । श्री मल्लिनाथ विंबं ठ० आसपालेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णजड सूरिजिः ।

[ 1792 ] †

- १ । ॥ उं सं० १३४० ज्येष्ठ वदि १० शुक्ले पट्टीवाल... जा० वीरपाल जा० पूर्णसिंह जा० वय

\* यह लेख जमीन से निकली हुई मूर्ति के चरणनौकी पर है।  
† मल्लिनाथ महादेव के मन्दिर के पास पड़ी हुई खण्डित मूर्तियों पर ये लेख हैं।

- १। जलदेवि पु० कुमरिसिंह केसिसिंह जा० ठ०...आत्मश्रेयोर्थ ॥ श्री पार्श्वनाथ विं० का-  
३। रितं प्रतिष्ठितं श्री कोरंटकीय ..... सूरिभिः शुभं ॥



## खंभात-गुजरात ।

श्री आदीश्वर जगवान का मन्दिर ।

शिला लेख

[ 1793 ]

- १। ॥ ए० ॥ ॐ नमः श्री सर्वज्ञाय ॥ धीराः सत्वमुशंति यच्चिजुवने ( यन्नेति ) नेति श्रुत  
साहित्योपनिषद्भि  
२। पणमनसो यत् प्रतिज्ञं मन्वते सार्वज्ञं च यदा मनंति मुनयस्तत्किंचिदत्यद्भुतं ज्योति-  
द्योतितवि-  
३। ष्टपं वितनुतां जुक्तिं च मुक्तिं च वः ॥ १ ॥ श्री मद्गुर्जरचक्रवर्तिनगरप्राप्त प्रतिष्ठो  
ऽजनि प्राग्वाटाह्वय-  
४। न्य वंशविलसन्मुक्तामणिश्रंडपः ॥ यः संप्राप्य समुद्रतां किल दधौ राजप्रसादोल्लसद्दि-  
क्कूलंकप-  
५। कीर्त्तिशुद्धलहरीः श्रीमंतमंतर्जिनं ॥ २ ॥ अजनिरजनिजानिज्योतिरुद्योतकीर्त्तिस्त्रिज-  
गति तनुज-  
६। न्मातस्य चण्डप्रसादः ॥ नखमणिसख(शार्ड)सुन्दरः पाणिपद्मः कमकृत न कृतार्थ  
यस्य कटपद्रुकटपः  
७। ॥ ३ ॥ पत्नी तस्या जायतात्पायताद्दी मूर्त्तेन्द्र श्रीः पुण्यपात्रं जयश्रीः ॥ जज्ञेताच्यान  
ग्रिमः सूरसंज्ञः पुत्रः श्री

- ७ । मान् सोमनामा द्वितीयः ॥ ४ ॥ निर्माप्यादि जिनेन्द्रिविवमसमं शेषत्रयोविंशति  
जैनप्रतिमा विराजि.
- ८ । तमसावच्यर्चितुं वैशमनि ॥ पूज्यः श्री हरिजद्रसूरिसुगुरोः । पार्श्वात् प्रतिष्ठाप्य  
स्वस्यात्मीय कुलस्य चाक्ष-
- १० । यमयं श्रेयो निधानं व्यधात् ॥ ५ ॥ असावत् सावाशाराजं तनुजसमं सोमसचि  
प्रियायां सीतायां शुचि च
- ११ । रितनत्यामजनयत् ॥ यशोत्रिर्यस्यैर्जिर्जगतिविशदे क्षीरजलधौ निवासैकप्रीतिं मुदस  
जजर्दि-
- १२ । दुःदुःप्रतिपदं ॥ ६ ॥ श्री रैवते निर्मितसत्यपात्रः केनोपमानस्त्वह सोऽश्वराजः  
॥ कलंकशंकामुपमान-
- १३ । मेव पुष्पात्यहो यस्य यशः शशांके ॥ ७ ॥ अनुजोऽस्यापि सुमनुजस्त्रिभुवनपालस्तथा  
स्वसाकेली
- १४ । आशा राजस्याजनि जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥ तस्याऽभूत्तनयो जयो प्रथमः  
श्री मह्यदेवोऽपरश्रं
- १५ । चञ्चरुमरीचिमण्डलमहाः श्री वस्तुपालस्ततः । तेजःपालइति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र  
तुर्यः स्फुरच्चा-
- १६ । तुर्यः समजायतायतमतिः पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ९ ॥ श्री मह्यदेव पौत्रौ लीड् सुत  
पुण्यसिंह तनुज-
- १७ । न्मा ॥ आढहणदेव्या जातः पृथ्वीसिंहाख्ययाऽस्ति विख्यातः ॥ १० ॥ श्री वस्तुपाल  
सचिवस्य गेहिनी देहिनीव गृ-
- १८ । हलक्ष्मीः ॥ विशदतरचित्तवृत्तिः श्री ललितादेवी संज्ञास्ति ॥ ११ ॥ शीतांशुप्रतिवीर  
पीवर यशा विश्वेऽत्र
- १९ । पुत्रस्तयो विख्यातः प्रसरद्गुणो विजयते श्री जैत्रसिंहः कृती ॥ लक्ष्मीर्यत्करपंकज  
प्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन

- १० । सा प्रायश्चित्तमिवाचरत्त्वहरहः स्नानेन दानंजसा ॥ ११ ॥ अनुपमदेव्यां पत्न्यां श्री  
तेजःशाल मचिवतिश्रकस्या ।
- ११ । लावण्यसिंह नामा धाम्नांधामायमात्मजो जज्ञे ॥ १२ ॥ नाञ्ज्वन्कति नाम संति  
कनिनो नो वा ज्ञविष्यंति के किं-
- १२ । तु कापि न कापि संप्रपुरुषः श्री वस्तुपालोपमः ॥ पुण्येषु प्रहंरन्नहर्निशामहो सर्वा-  
जिसांगच्छुरो येनायं वि-
- १३ । जिनः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवं ॥ १४ ॥ लक्ष्मीधर्माङ्गयागेन स्थेयसीतेन न-  
न्वना ॥ पौषधाम्नयमालायं(लेख्यं)
- १४ । निर्म्ममेन विनिर्ममे ॥ १५ ॥ श्री नागेन्द्रमूनीन्द्रगढतरणिर्जज्ञे महेन्द्रप्रचोः पटे  
पूर्वनपूर्ववाङ्मयनि-
- १५ । धिः श्री शांति सूरिर्गुरुः ॥ आनन्दामरचन्दसूरिशुगलं । तस्मादञ्जुत्तपदे पूज्य श्री  
हरिचन्द्र सूरि गुग्गोऽञ्जुवन् जु-
- १६ । वो ञ्जुपणं ॥ १६ ॥ तत्पदे विजयसेन सूरयस्ते जयंति जुवनैकञ्जुपणं ये तपोज्वलन  
ञ्जुविञ्जुनिजिस्तेजयंति
- १७ । निजकीर्त्तिदर्पणं ॥ १७ ॥ स्वकुलशुरुर्गणिरपः पौषधशालामिमाममात्येन्द्रः ॥ पित्रोः  
पवित्रहृदयः पुण्यार्थ
- १८ । कल्पयामास ॥ १८ ॥ वाग्देवतावदनचारिज ( मित्र ) सामञ्छेराज्यदानकलितोरुयशः  
पताकां चक्रे गुरोर्विज-
- १९ । यसेन मुनीश्वरस्य शिष्यः प्रशस्तिमुदयप्रत सूरिरेनां ॥ १९ ॥ सं० १२७? वपे महं  
श्री वस्तुपालेन कारित पौषध-
- २० । शास्त्राख्य धर्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि० रावदेव सुत श्रे० मयधर । ना० गोताउ ना०  
धारा । व्यव० वेसाठ विक्रम श्रे० पूना
- २१ । सुत बीजावेड़ी उदयपाल । उ आत्मपाल । ना० आस्वृण उ गुग्गुलु मनेगोष्टिकरमः-  
नीकृतं ॥ मज्जिगोष्टिकरस्य धर्मस्थानस्य

३२ । .....स्तम्भतीर्थे — कायस्थवंशेनाह ..... उदंकितः ..... सिपा ..... लिख .....  
७० सु० ..... सूत्रधार कुमरसिंहेनोत्कीर्णा ॥

शिला लेख-जोंधरे के द्वार पर ।

[ 1794 ]

- १ । ॥ ए० ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री विक्रम नृपात् संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदि  
सोमे श्री
- २ । स्तंभतीर्थनगर वास्तव्य ॥ ऊकेश ज्ञातीय ॥ आबूहरा गोत्रविभूषण ॥ सौवर्णिक  
कलासु-
- ३ । त ॥ सौवर्णिक ॥ वाघा चार्या रजाई ॥ पुत्र ॥ सौवर्णिक वडिया ॥ चार्या सुहासि  
॥ पुत्र । सौव-
- ४ । णिक ॥ तेजपाल चार्या ॥ तेजलदे नाम्न्या ॥ निजपति सौवर्णिक तेजपाल प्रदत्ताई
- ५ । या ॥ प्रभूतद्रव्यव्ययेन सुभूमिगृहश्रीजिनप्रासादः कारितः ॥ कारितं च तत्र मूलः
- ६ । नायकतया स्थापनकृते श्रीविजयचिंतामणि पार्श्वनाथ विंभं प्रतिष्ठितं च श्रीमत्त-
- ७ । पागढाधिराज चट्टारक श्री आणंदविमल सूरि पट्टालंकार ॥ चट्टारक श्री विजयदा-
- ८ । न सूरि तत्पट्टप्रजावक सुविहितसाधुजनध्येय सुगृहितनामधेय ॥ पात ॥
- ९ । साह श्री अकबरप्रदत्तजगद्गुरुविरुद्धारक चट्टारक श्री हीरविजय सूरि
- १० । तत्पट्टोदयशैलसहस्रपाद ॥ पातसाह । श्री अकबरसजासमस्तविजितवा-
- ११ । दिवृंदसमुद्भूतयशः कर्पूरपूरसुरजीकृतदिग्बधूवदनारविंद चट्टारक श्री विजय-
- १२ । सेन सूरिजिः ॥ क्रीडायातसुपर्वराशिरुचिरो यावत् सुवर्णाचलो ॥ मेदिन्यां ग्र-
- १३ । हमरुखं च वियति ब्रह्मैंडुमुख्यंलशत् ॥ तावत्यत्रगताघृसेवितपद श्री पार्श्वना-
- १४ । यप्रजो ॥ मूर्ति श्री कलितांज्यमत्र जयतु श्रीमज्जिनेन्द्रालयः ॥ १ ॥ ७३ ॥ ॥



# पोसिना-भरुअछ ।

शिला लेख

[ 1795 ] \*

- १ । प्राग्वाटवंशे श्रे० ठहड येन श्री जिन- २ । चन्द्र सूरि सङ्गपदेशेन पादपरा ग्रामे उं-  
३ । निरवसहिका चैत्यं श्रीमहावीर प्रनिमा ४ । युतं कारितं । तत्पुत्रौ ब्रह्मदेव शरणदे-  
५ । वौ । ब्रह्मदेवेन सं० १३७५ अत्रैव श्रीने- ६ । मि मंदिर रंगमंडपे दाढ़ाधरः कारितः  
७ । श्रीरत्नप्रज्ञसूरि सङ्गपदेशेन तदनुज श्रे० ८ । शरणदेव चार्या सूहृवदेवि तत्पुत्राः श्रे०

ए । वीरचंद्र पासड । आंबड रावण । यैः श्री पर-

१० । मानन्द सूरीणामुपदेशेन सप्ततिशततीर्थ का-

११ । रितं ॥ सं० १३१० वर्षे । वीरचंद्र चार्या सुपमिणि

१२ । पुत्र पूना चार्या साङ्ग पुत्र लूणा जांजण आं-

१३ । वड़ पुत्र बीजा खेता । रावण चार्या हीरू पुत्र वो-

१४ । डा चार्या कामल पुत्र कडुआ ॥ छि० जयता चार्या मूं-

१५ । ठा पुत्र देवपाल । कुमरपाल । तृ० अरिसिंह जा०

१६ । गडरदेवि प्रभृतिकुटुम्बसमान्वतैः श्री परमा-

१७ । नन्द सूरीणामुपदेशेन सं० १३३० श्री वासुपूज्य

१८ । देवकुशिका । सं० १३४५ श्री संमेशिपर-

१९ । तीर्थ मुख्यप्रतिष्ठा महातीर्थयात्रां विधाप्या-

२० । स्वजन्म एवं पुण्यपरंपरया सफली कृतः

२१ । तदद्यापि पोसिना ग्रामे श्री संघेन पूज्यमान-

२२ । मस्ति ॥ शुभगतस्तु श्री श्रमणमंथप्रसादनः ॥



\* भरुअ छे ई ईल हूर पर पोसिना ग्राम मे ईल मन्दिर के ईतवती ही मूर्ति के निचे पत्थर पर पर लेख हे ।



# उना-काठियावाड़ ।

जैन ग्रन्थ-संग्रह भाग १ ।

। जजा खार ।

[ १००० ] \*

- १ । उं सस्ति श्री स० १३५२ वर्षे कार्तिके चदि १५ बुध
- २ । येषां जगद्गुरुणां संयोगे गणमोक्षायान्निगुणगण-
- ३ । श्रवणात् चमत्कृतेर्महागजाधिपतन पानिमादि श्री अकल्पवृक्षि-
- ४ । धानेः गूर्जरदेशात् दिव्यागणकृते मयहुमानमाहायं धर्मोपदेश-
- ५ । कर्णनपूर्वकं पुस्तकहोशममर्षणं काव्यगजिधानमहागणोमलय-
- ६ । धनिवारणं प्रतिवर्षं पाणमासिकामाग्निप्रवर्तनं सर्वथा श्री शत्रुंजयतीर्थे मुं-
- ७ । उकाजिधानकरनिवर्तनं जीजियानिधानकरकर्तनं निजराकक्षदेशे दा-
- ८ । णमृतं स्वमोचनं सदैव वृंद(?)महणनिवारणं सत्यादिधर्मकृत्यानि सकल-
- ९ । लोकप्रतीतानि कृतानि प्रवर्तं तेषां श्री शत्रुंजये सफलदेशसंघणुनकन-
- १० । यात्राणां जाडपदशुक्लैकादशीदिने जातनिर्वाणं शरीरसंस्कारस्थानासत्र-
- ११ । कलितसहकाराणां श्री हीरविजय सूरीश्वरणां प्रतिदिनं दिव्यनाथनाद-
- १२ । श्रवण दीपदर्शनादिकैर्जाग्रत्स्वजावाः स्तूयसहिताः पाण्डुकाः कारिताः पं०
- १३ । मेघेन चार्यां लारुकी प्रमुखकुटुम्बयुतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागच्छाधिराजैः ज-
- १४ । द्वारक श्री विजयसेन सूरिजिः उ० श्री विमलहर्षगणि उ० श्री कल्याण-
- १५ । विजय गणि उ० श्री सोमविजय गणिजिः प्रणताक्षव्यजनैः पूज्यमानाश्चि-
- १६ । रं नंदंतु ॥ लिखिता प्रशस्तिः पद्मानन्दगणिना । श्री उन्नतनगरे शुभं चवतु ॥



\* 'उना' का प्राचीन नाम 'उन्नत नगर' था । यह शिलालेख मन्दिर के ७ देहरी में पश्चिम तर्फ से पहली देहरी का है ।

- ( १ ) ॥ ए० ॥ स्वस्ति श्री प्रणयाश्रयः शिवमयः श्री वर्द्धमानाह्वयस्तीर्थेशश्चरमो वचूव  
जुव-
- ( २ ) ने सौजाग्यजोग्यैकचूः । नंदीश प्रथमोपि पंचमगतिः ख्यातः सुधर्माग्रणी । जज्ञे  
पंचमपंचमः शमव-
- ( ३ ) तां निग्रथं १ गोत्रेग्रणी ॥ १ ॥ श्री कौटिक २ वनवासिक ३ चष्ट्र ४ वृहज्ज ५ सत्तपा  
६ क्रमतः । तदा
- ( ४ ) गह्वानां संज्ञाजातास्तपगवस्तथाऽचूत् ॥ २ ॥ प्राणचूदितिपालज्ञानविलसत्कोटीर-  
हीरस्फुरज्यो-
- ( ५ ) तिर्जाज्ञजज्ञाजिषेकविधिना (जा)तांबुपंकेरुहः ॥ चि(द्रु)पावलिहीरहीरविजयाह्वानः  
प्रधान प्र-
- ( ६ ) जुः श्रामण्येकनिकेतनतनुमृताम् कल्याणकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥ तदादेशवाक्यैः सुधा-  
सागरै । मुदा
- ( ७ ) कव्वरः पातित्साहिः प्रबुद्धः । स्वदेशेऽखिले जीवहिंसा न्यवारीदमुंचत्करंचापिशुं-  
जयाज्ञः ॥ ४ ॥
- ( ८ ) तद्गध्योदपिशैलमौलिमहिमावपेंसहस्रत्वपि । जातः श्रीविजयादिसेनसुगुरुः प्रज्ञान-  
वालाखणः ।
- ( ९ ) येन श्रीमदकव्वरद्वितिरतिः घर्षयनेकछिजान् ॥ निर्जित्यैव जयश्रिया सह गह्वं-  
श्वके विवाहो
- ( १० ) नवः ॥ ५ ॥ (त)त्पष्टे (सा)रगजमूर्द्धनि देवराज (सू)र्गिर्वचूव नगवान् वि(जया-  
दिदे)वः । य(स्या)त्रसत्यवचना-
- ( ११ ) दनले तपोर्हः साद्रुदज्ञौ क्रमतद्रुस्तयसां वि(ना)शी ॥ ६ ॥ नम्यगु निशग्य न  
यदीय यज्ञप्रशस्तिना-
- ( १२ ) हवतद्रुणशणस्यदिदृदयैव । सूर्गेर्भद्रानपदनिप्रचिनं विरुं श्रीपानिनाद्विगुमेरव-  
नलेननाहि

- ( १३ ) ॥ ७ ॥ यस्याद्याप्युपदेशपेशलरसद्रोणंजगत्सिंहजीः संवृद्धः सरसोर्धिसारवि  
मारीन्यावारीत्ततः ॥
- ( १४ ) [सं]व्यूढां गुणरागरंगललितैः कीर्त्तिल्लिखोकोत्रमश्रांतां स्थानविधानतोऽपुं  
किंकिरपिंडिध्वलात् ॥
- ( १५ ) ॥ ७ ॥ श्री विद्यापुर पाति[साहि]मुचितैर्वाचाप्रपंचैर्यकः । स्वर्जोऽज्यप्रतिमः वे  
सूरजीरारंजतो मोचयन्
- ( १६ ) तद्धत श्रीमनुजादिमर्दनपतेः श्री पातिसाहेश्वरः । स्थानेऽस्थापयेदक्षिपातन  
धर्म सपक्षंगतः ॥
- ( १७ ) ॥ ए ॥ एवं विह्वयनगरानवनीतमस्मिन् राजन्य ... । श्रीमज्जिन-
- ( १८ ) ... कृतो ... चय मूर्त्तिति ... मूर्त्तिः सकलरात्रौध्वजरूपमूर्त्तैः ॥ १० ॥ पूज  
मालि कुलोपु-
- ( १९ ) रा जरण ... यो ... नामतिनामा । ... र्मनाः ॥ ११ ॥ तस्यांगजोगजइन्द्रो पवि-
- ( २० ) ... श्रीमालि विमलकुलांबुज ... माली । विश्वातिशायियशसाजिनपूर्णचन्द्रः श्री  
राजवं-
- ( २१ ) ... तिस ... रि - त् प्रतापं ॥ १२ ॥ अथ तेनमंशे किमहाग्र ... पूर्वस्वद्रव्यस्यसफ  
लीकरणाय श्री विजया-
- ( २२ ) दि सूरीश्वराः श्री शूर्जरदेशात्सौराष्ट्रके पादानांसस्याः कारिताः श्री सिद्धाद्रियस्या  
पिप्रज्ञूणांमहामहसां
- ( २३ ) ... कारिता ॥ ततश्च सं० १७१३ वर्षे आषाढ शुद्धैकादशी तिथौ । जट्टारक श्री  
विजयदेवसूरी-
- ( २४ ) श्वराणां स्व ... मुपापाडुकास्तूपोयं ... श्रीवासणात्मजेन वार्ह पातली जन्मना  
श्रीरायचन्द्र
- ( २५ ) नाम्ना कारितः प्रतिष्ठापितश्च सं० १७१३ वर्षे साधमास सितपञ्चमी तिथौ महा  
महोत्सवेन ।

- ( १६ ) सूरेः श्री विजयादिदेवसुगुरोः पट्टाब्जसूर्याश्रयः सूरि श्री विजयप्रज्ञाव्यदधत श्रेष्ठा  
प्रतिष्ठा-
- ( १७ ) मिमां श्रीमहाचकरान् विनीतविजयैः शांत्याह्वयैः पाठकैर्युक्ताश्चारुयशोचराः प्रतिम-
- ( १८ ) या वाचस्पतेः सन्नित्ताः ॥ १३ ॥ तथा साधु श्री नेमिदासेन तथा साधु वाघजीकेन  
त्रिनोप्रमेन का
- ( १९ ) रितः । कृतश्चायं हरजीनाम्ना शिदिपना । मुहूर्त्तदानातु अत्र उन्नतपुरवास्तव्य ऋद्ध-  
युतांई
- ( २० ) पुत्र ऋद्ध रणढोड़ नामा ॥ श्रीछीपवंदिरवास्तव्यसंघजातिव्याजे जीयतां श्रीदेव-  
विहारजा
- ( २१ ) गः स्तूपरूपः ॥ श्रीमत् श्रीविजयादिदेवगणभृत्पट्टोदयोष्कृतेः । सूरेः श्री विजय-  
प्रज्ञस्य क-
- ( २२ ) रणादृष्ट्या प्रकृष्टोदयः ॥ विद्धद्रूपमणीकृपादिविजयां तेवासिमेणाह्वयो । वेस्यदेव-  
विहार ....
- ( २३ ) विदिने स्तूपप्रशस्ति श्रिये ॥ १४ ॥ इति प्रशस्ति संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ ७ः ॥ ७ः ॥



## वस्वई ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर-वास्तुकेश्वर ।

पञ्चतीर्था पर ।

[ 1798 ]

सं० १४७७ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञा० पं० राणा ज्ञा० रूपादे सुत आसाकेन स्वमानुश्रयने  
ध्यानमगते श्री जयानन्दसूरीनामुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्था कागितं श्री मृगितिः ।  
शुभं भवतु ॥

- ( १३ ) ॥ ७ ॥ यस्याद्याप्युपदेशपेशलरसद्रोणंजगत्सिंहजीः संवृद्धः सरसोर्धिसारा  
मारीन्यावारीत्ततः ॥
- ( १४ ) [सं]व्यूढां गुणरागरंगललितैः कीर्त्तिस्त्रिदोकोत्रमश्रांतां स्थानविष तंशु  
किंरिपिंडिध्वलात् ॥
- ( १५ ) ॥ ७ ॥ श्री विद्यापुर पाति[साहि]मुचितैर्वाचाप्रपंचैर्यकः । स्वर्जो ज्यप्रतिमः प्र-  
सूरचीरारंजतो मोचयन्
- ( १६ ) तद्वत् श्रीमनुजादिमर्दनपतेः श्री पातिसाहेश्वरः । स्थानेऽस्थापयेदक्षिप ॥ १० ॥  
धर्म सपहंगतः ॥
- ( १७ ) ॥ ए ॥ एवं विह्वयनगरानवनीतमस्मिन् राजन्य ..... । श्रीमज्जिन-
- ( १८ ) ..... कौतो ..... चय सूर्त्तिति ..... सूर्त्तिः सकलरात्रौध्वजरूपमूचैः ॥ १० ॥ पूज  
मालि कुलोपु-
- ( १९ ) रा जरण ..... यो ... नामतिनामा । ... र्मनाः ॥ ११ ॥ तस्यांगजोगजश्द्रो पा
- ( २० ) ..... श्रीमालि विमलकुलांबुज ..... माली । विश्वातिशायियशसाजिनपूर्णचन्द्रः  
राजवं-
- ( २१ ) ... तिस ... रि . त् प्रतापं ॥ १२ ॥ अथ तेनमंशे किमहाय ... पूर्वस्वद्रव्यस्यसफ-  
लीकरणाय श्री विजया-
- ( २२ ) दि सूरीश्वराः श्री शूर्जरदेशात्सौराष्ट्रके पादानांसस्याः कारिताः श्री सिद्धाद्रिपरया  
पिप्रचूणांमहामहसां
- ( २३ ) ..... कारिता ॥ ततश्च सं० १७१३ वर्षे आषाढ शुक्लैकादशी तिथौ । जट्टारक श्री  
विजयदेवसूरी-
- ( २४ ) श्वराणा स्व ..... मुषापाडुकास्तूपोयं ..... श्रीवासणात्मजेन वाई पातली जन्मता  
श्रीरायचन्द
- ( २५ ) नाम्ना कारितः प्रतिष्ठापितश्च सं० १७१३ वर्षे साधमास सितपञ्चमी तिथौ महा  
महोत्सवेन ।



( १०६ )

[ 1808 ]

- ( १ ) संवत् १९४३ का मि । पाष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन संख्या पाडुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पाडुका  
( २ ) खरतर गह्वे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं । हिन बह्वत मु प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तरगत मांडल वास्तव्य.....  
( ३ ) वीर सोत्ताग्यवर लक्ष्मीचंदेन श्री समस्त शिखरि प  
( ४ ) रि स्थापितं ॥

१ । श्री कृष्ण १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २ । श्री अजित १००० साधु  
३ । श्री संजव १००० साधुसुं ४ । श्री अजिनंदन १००० साधुसुं ५ ।  
सुमति १००० साधुसुं ६ । श्री पद्मप्रत्न ३०० साधुसुं ७ । श्री सुगर्भनाथ ५  
साधुसुं ८ । श्री चंद्रप्रत्न १००० साधुसुं ९ । श्री सुविधि १००० साधुसुं १०  
श्री शीतल १००० साधुसुं ११ । श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२ । सुपूज्य  
६०० साधु चंपापुर १३ । श्री विमल ६००० साधुसुं १४ । श्री अनंत ९००० साधु  
१५ । श्री धर्म १०० साधुसुं १६ । श्री शांति ९०० साधुसुं १७ । श्री कुंथु १०००  
साधुसुं १८ । श्री अरि १००० साधुसुं १९ । श्री महि ५०० साधुसुं २० । श्री  
सुनिसुव्रत १००० साधु २१ । श्री नमि १००० साधुसुं २२ । श्री नेमि ५३६  
साधुसुं गिरनार २३ । श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४ । श्री महावीर एकाकी  
पावापुरी ॥

[ 1809 ]

॥ सं । १९४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शैल्यस्थ पर्वतोपरि चठ्य जीवस्य दर्शनार्थ  
श्रीजन्तु आदिनाथस्य चरण पाडुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादुरेण का० प्र०  
२१ विजयराज सूरि तपागळे ॥

[ 1810 ]

( १ ) सं । १९२५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी





- ( १ ) संवत् १९४२ का मि । पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वरं सोमवारं श्री चतुर्विंशति जिन संख्या पाडुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पाडुका  
 ( २ ) खरतर गह्वे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं । हिन बह्वत मु प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तर्गत मांडल वास्तव्य.....  
 ( ३ ) वीर सोजाग्रवर लक्ष्मीचंदेन श्री संवत् शिवरि प  
 ( ४ ) रि स्थापितं ॥

१ । श्री कृष्ण १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २ । श्री अजित १००० साधु  
 ३ । श्री संजव १००० साधुसुं ४ । श्री अजिनंदन १००० साधुसुं ५ ।  
 सुमति १००० साधुसुं ६ । श्री पद्मप्रज्ञ ३०० साधुसुं ७ । श्री सुपार्श्वनाथ ५०  
 साधुसुं ८ । श्री चंद्रप्रज्ञ १००० साधुसुं ९ । श्री सुविधि १००० साधुसुं १०  
 श्री शीतल १००० साधुसुं ११ । श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२ । वासुपू  
 ६०० साधु चंपापुर १३ । श्री विमल ६००० साधुसुं १४ । श्री अनंत ५००० साधु  
 १५ । श्री धर्म १०० साधुसुं १६ । श्री शांति ९०० साधुसुं १७ । श्री कुंभु १०००  
 साधुसुं १८ । श्री अरि १००० साधुसुं १९ । श्री महि ५०० साधुसुं २० । श्री  
 सुनिसुवत १००० साधु २१ । श्री नमि १००० साधुसुं २२ । श्री नेमि ५३६  
 साधुसुं गिरनार २३ । श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४ । श्री महावीर एकाकी  
 पावापुरी ॥

॥ सं । १९४९ माघ शुक्रवारं श्री समेत शैल्यस्य पर्वतोपरि जठ्य जीवस्य दर्शनार्थं  
 श्री चतुर्विंशति जिन संख्या पाडुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादुरेण कां प्र  
 श्री विजयराज सूरि तपागह्वे ॥

- ( १ ) सं । १९२५ फा० कृष्ण ५ बुधवारं श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासुपूज्य जी



( १०६ )

[ 1808 ]

- ( १ ) संवत् १९४३ का मि । पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन संख्या पादुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पादुका  
( २ ) खरतर गच्छे महो श्री दानसागरजी गणः तत् शिष्य सं । हिन बह्वन मु प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तर्गत मांडल वास्तव्य.....  
( ३ ) वीर सोजाग्यवर लक्ष्मीचंदेन श्री समस्त शिवार प  
( ४ ) रि स्थापितं ॥

१। श्री कृष्ण १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २। श्री अजित १००० साधु  
३। श्री संजय १००० साधुसुं ४। श्री अजिनंदन १००० साधुसुं ५।  
सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रज्ञ ३०० साधुसुं ७। श्री सुगार्श्वनाथ ५०  
साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रज्ञ १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं १०  
श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपूज  
६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ९००० साधु  
१५। श्री धर्म १०० साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंभु १०००  
साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री महि ५०० साधुसुं २०। श्री  
बुनिसुव्रत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३६  
साधुसुं गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी  
पावापुरी ॥

[ 1809 ]

॥ सं । १९४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शेट्यस्य पर्वतोपरि जट्य जीवस्य दर्शनार्थं  
श्रीवत् आदिनाथस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादुरेण का० प्र०  
श्री विजयराज सूरि तपागच्छे ॥

[ 1810 ]

( १ ) सं । १९५५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी



- ( १ ) संवत् १९४३ का मि । पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारै श्री चतुर्विंशति ।  
संख्या पाडुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पाडुका
- ( २ ) खरतर गढे महो श्री दानसागरजी गणः तत् शिष्य पं । दिन बह्वत  
प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तर्गत मांडल वास्तव्य.....
- ( ३ ) वीर सोजाग्रवर लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प
- ( ४ ) रि स्थापितं ॥

१ । श्री रूपन १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २ । श्री अजित १००० साधुसुं  
३ । श्री संजव १००० साधुसुं ४ । श्री अजिनंदन १००० साधुसुं ५ ।  
सुमति १००० साधुसुं ६ । श्री पद्मप्रज्ञ ३०० साधुसुं ७ । श्री सुगर्भनाथ  
साधुसुं ८ । श्री चंद्रप्रज्ञ १००० साधुसुं ९ । श्री सुविधि १००० साधुसुं  
श्री शीतल १००० साधुसुं ११ । श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२ । साधु  
६०० साधु चंपापुर १३ । श्री विमल ६००० साधुसुं १४ । श्री अनंत ९००० साधु  
१५ । श्री धर्म १०० साधुसुं १६ । श्री शांति ९०० साधुसुं १७ । श्री कुंभु १००  
साधुसुं १८ । श्री अरि १००० साधुसुं १९ । श्री महि ५०० साधुसुं २० ।  
जुनिसुवत १००० साधु २१ । श्री नमि १००० साधुसुं २२ । श्री नेमि ५००  
साधुसुं गिरनार २३ । श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४ । श्री महावीर एका  
पादापुरी ॥

[ 1809 ]

१ । सं । १९४९ माघ शुक्लवारै श्री समेत शैल्यस्य पर्वतोपरि जटय जीवस्य दर्शनाप  
२ । आदिनाथस्य चरण पाडुका स्थापिता राय धनपतिसिद्ध वाहाहरेण का  
३ । विजयगज सूरि तपगढे ॥

[ 1810 ]

१ । १९०५ का० कृष्ण ५ बुधवासरै श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी

( १०७ )

- ( १ ) पंच कल्याणक चरण न्याम मकसुदावाद वास्तव्य डुगरु माः प्रतापसिंह  
( २ ) जार्जा महताव कुमर ज्येष्ठ सुन लक्ष्मीपनस्य कनिष्ठ ज्ञान धनपत सिंह  
( ४ ) कारागितं प्रतिष्ठितं जः श्री जिनहंस सूरीतः वृहत्खरतरगणे ॥

[ 1811 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नमनाश्र जिन तीन कल्याणक रेवत ..  
( २ ) जवता नस्य चरण न्यामः नमन शिखरे स्थापिता मकसूदावाद श्रीजीमगंज  
( ३ ) वास्तव्य डुगड प्रतापसिंह जार्जा महताव कुमर सुन लक्ष्मीपत कनिष्ठ ज्ञाना  
( ४ ) धनपत सिंह कारागितं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजी ज. श्री जिनहंस सूरीतः खरतर गणे  
( ५ ) वृहत् खरतर गणे ॥

[ 1812 ]

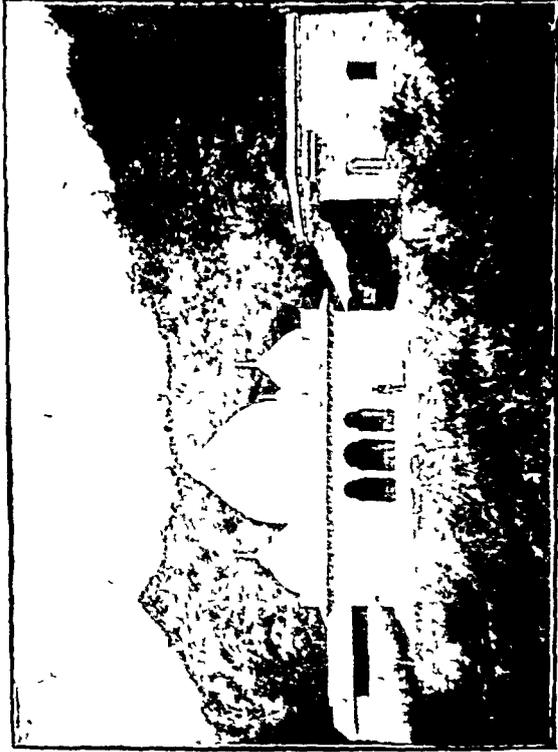
- ( १ ) ॥ सं १९३४ श्री फाटगुण वदि ५ श्री वार वर्धमानजी का चरण पाडुका मकसुदा  
( २ ) वाद वासी राय धनपत सिंह डुगडने स्थापित किया था सो उसको ठत्री विजली  
( ३ ) उपद्रव सु गिरगड उसपर सं १९६५ के फाटगुण सुदी ६ को कठ मांडवी वासी  
( ४ ) स्तः जगजीवन वाखजी ने जीरण उभार कराइ ।

जल मंदिर ।

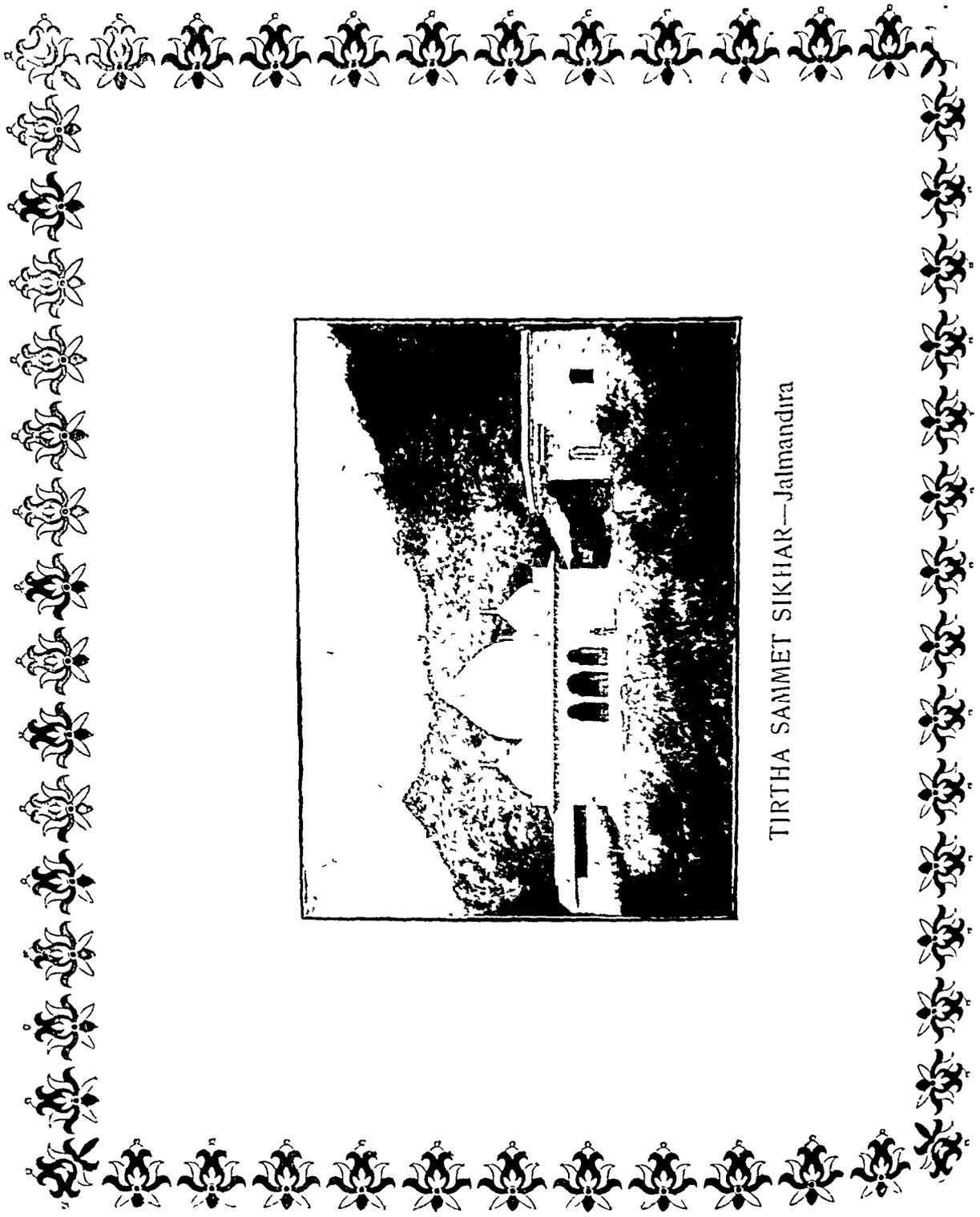
पाषाण की मूर्तियोंपर ।

[ 1813 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९३२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मकसुदावाद वास्तव्य ताउगुवा  
गोत्रीय आसबंस ज्ञानी  
( ४ ) च वृद्धशाखायाम् ॥ खालचंद चत सुगावचंदन श्री मद्गुरुणा उपदेजान आत्म सं  
धेयार्थ च श्री समेत शैल  
( ३ ) श्री जैन विहारे श्री सहस्र फणा पार्श्व जिन दिवं कारागितं प्रतिष्ठितं च मुविदि-  
तामणीतिः सकल सूरिवरैः ॥ मंगल ॥



TIRTHA SAMMET SIKHAR—Jalmandira



- ( १ ) पंच कल्याणक चरण न्याम मकसूदावाक वास्तव्य डुगरु माः प्रतापसिंह
- ( २ ) चाजा महनाव कुमर जेष्ठ सुभ लक्ष्मीपनस्य कनिष्ठ ज्ञान धनपत सिंह
- ( ४ ) कागपिनं प्रतिष्ठितं जः श्री जिनहंभ सू रतिः बृहत्खरतरगठे ॥

[ १०७ ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नमनाथ जिन तीन कल्याणक रेवत ..
- ( २ ) जवना नस्य चरण न्यामः नमन शिवरे स्त्र पिता मकसूदावाद अजीमगंज
- ( ३ ) वास्तव्य डुगड प्रतापसिंह चाजा महनाव कुमर सुभ लक्ष्मीपन कनिष्ठ ज्ञाना
- ( ४ ) धनपत सिंह कागपिनं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजो ज. श्री जिनहंभ सू रतिः खरतर गठे
- ( ५ ) बृहत् खरतर गठे ॥

[ १०८ ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९३४ श्री फाटगुण वदि ५ श्री दाम वर्धमानजी का चरण पाहुका मकसूदा
- ( २ ) वाक वाली राय धनगत सिंह डुगडन स्थापित किया या तो उत्तरी ठग्री विजयी
- ( ३ ) उरडव सु विगड उतपर सं १९३५ : फाटगुण सुदी ६ को कठ मांटीया गामा
- ( ४ ) साः जगजीवन वाक्षत्री ने जीरय उना दगड ।

जस मंदिर ।

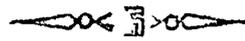
पापाण की मूर्तियोंपर ।

[ १०९ ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९३५ वर्षे वैशाख सुदि १३ शुभे श्री मकसूदावाद वास्तव्य पाटगुण
- गोत्रीय ज्ञानवंस ज्ञानी
- ( ४ ) य हृदयखापाम् ॥ काठवंद सुभ सुगाडवंदन श्री मकसूदावाद उरडव गामा
- धेयार्द्र च श्री समेत शेष
- ( ३ ) श्री जैन विद्वाने श्री महाम काला दार्द्र जिन विद्व जगपिनं प्रतिष्ठितं च मूर्तिः
- पापाणनिः मकसू रतिः ॥ संवत् ३



- ( १ ) ॥ सं १७१२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुणै श्री मगसुदावाद वास्तव्य सातंभुवा ।  
आसवंस ज्ञातीय
- ( २ ) वृद्धशाखायां सा सुगालचंद जार्यया केंसरकया आत्म संश्रेयार्थ श्री समंत  
श्री जैन विहारे श्री सं-
- ( ३ ) जवनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुनिहिताप्रणीजिः । सकन्न सूरजिः ॥  
मंगलं ॥



### मधुवन ।

जगतसेठजी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[ 1815 ]

॥ सं १७१२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुणै सा सुगालचंदेन श्रीपार्श्व विंवं कारापितं ।  
सकन्न सूरजिः ।

[ 1816 ]

- ( १ ) संवत् १७१२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुणै मग . . . . . ज्ञातीय वृद्ध शाखायां  
राजचंदजी सुन लखमीचंदजी
- ( २ ) सुन राजचंदजी माता मद्र कपूरचंदजी . . . . . देन स्वश्रेयार्थ श्री समंत  
श्रीजन वि
- ( ३ ) द्वारे श्री पार्श्व जिना विंवं कारापितं . . . . .

[ 1817 ]

॥ संवत् १७१२ वैशाख सुदि १३ गुणै श्री सरतर गठ आचार्यीय सा नीमजी  
सा निहालचंदेन सं . . . कारापितं ॥

[ 1818 ]

॥ सं० १८२७ शाके १६७३ । प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि छादशी तिथौ । शृगुवारे  
श्रीःसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां ॥ आदि गोत्रे । सा० रुचनदास तद्वार्या गुलाबकुशर सहितेन  
श्रेयोर्थ । कायोत्सर्ग मुद्रास्थित सहस्रकपालंकृत श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं ॥

[ 1819 ]

॥ सं० १८२७ [ ? ] वैशाख सु० १३ गुरौ श्री गहिलडा गोत्रीय साह कस्तुरचंद ॥

धरणेन्द्र पद्मावती की मूर्ति पर ।

[ 1820 ]

॥ संवत् १८२५ माहा सुदि ३ सा । सुगावचंदेन श्री धरणेन्द्र पद्मावत्या कारापिना प्र०  
तपागच्छे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

शिखालेख ।

[ 1821 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १८८७ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गो-
- ( २ ) ङी पार्श्वनाथस्य द्विभूमि युक्त चैत्यं । श्री वाळूचर वास्त-
- ( ३ ) व्य जुगरु गोत्रीय । श्री प्रतापसिंघेन कारित । प्रतिष्ठि-
- ( ४ ) तं च श्री खरतर गणेशाःजं । यु । ज । श्री जिन ह्य सूरि-
- ( ५ ) णामुपदेशात् । उ । श्री कामाकड्याण गणीनां शिष्येणेति

पाषाण की मूर्तियोंपर ।

[ 1822 ]

- ( १ ) ॥ सं० १८८८ माघ सुदि ५ नोमे श्री गवटी पार्श्वनाथ जिन विं-

- ( १ ) वं कारितं आसत्रंशे दुग्ड गो । प्रतापसिंहेन । प्र । वृ । न । खरतर ग-  
( ३ ) छाधिराज श्री जिनचंद्र सूरि . . . . . स्थितेः ।

[ 1823 ]

॥ श्री गोडी पार्श्व जिन त्रिवं ॥ ( ॐ ) ॥ संवत् १९३२ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११ ।  
जीर्णोद्धाररूपा । विजय गद्ये । जट्टारक श्री पूज्य श्री जिन शान्तिसागर सूरि  
प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

पायाण के चरणों पर ।

[ 1824 ]

- ( १ ) संवत् १८८९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गोडी पार्श्वनाथ चैत्ये  
जिनेश्वराणां चरण न्यासाः श्री वाळूचर नगर वास्त  
( २ ) व्य दुग्ड गौत्रीय साह श्री प्रताप सिंघेन कारिताः प्रतिष्ठिताश्च । श्री मधुसूदन  
गह्वेशाः जंग-  
( ३ ) म युग प्रधान जट्टारकाः श्री जिन हर्ष सूरिश्वराणामुपदेशात् उपाध्याय पद  
जिता । श्री कृमाकल्याण गणीनां शि-  
( ४ ) ष्य प्राज्ञ ज्ञानानंदेन पं । ध्यानंदविमल पं । सुमति शेखर सहितेनेति । श्रेयार्थ  
सम्यक्त वृद्ध्यर्थं च ॥  
॥ श्री अजितनाथजी १ ॥ श्री संजवनाथजी ३ ॥ श्री अजिनंदन नाथ जी ४  
श्री सुमति नाथ जी ५ ॥ श्री पद्मव्रत जी ६ ॥ श्री सुरार्धनाथ जी ७ ॥ श्री  
चंद्रप्रभजी ८ ॥ श्री सुविधिनाथ जी ९ ॥ श्री शीतल नाथ जी १० ॥ श्री श्रेयां-  
नाथ जी ११ ॥ श्री विमल नाथ जी १२ ॥ श्री अनंत नाथ जी १४ ॥ श्री धर्म  
नाथ जी १५ ॥ श्री शान्ति नाथ जी १६ ॥ श्री कुंभुनाथ जी १७ ॥ श्री अरनाथ  
जी १८ ॥ श्री महिनाथ जी १९ ॥ श्री सुनिसुव्रत नाथ जी २० ॥ श्री नमिनाथ  
जी २१ ॥ श्री पार्श्वनाथ जी २३ ॥

( ६११ )

पाषाण के चरणों पर ।

[ 1825 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९३१ ॥ माघे ॥ शुक्ला ए । चंद्रे । गोतम स्वामी ॥
- ( २ ) चरण पाण्डुका कारापिता ॥
- ( ३ ) मुनि गोकुल चंद्रेण
- ( ४ ) नट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ श्री विजय गच्छे ॥

[ 1826 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९३३ मिति माघ शुक्ल ११ अजिनंदन जिन पाण्डुकामिदं मक्
- ( २ ) सूडवादा वास्तव्य ओशवंशोय लुंपक गणोपानाश्च डुगड गोत्रीय वावु
- ( ३ ) प्रनागतिहस्य चार्या महनाव कुनारिकस्थ वृद्ध पुत्र राय वहापुर
- ( ४ ) लठमीमत सिंधस्य लघु त्रात् रा । धनगत सिंधेन कारापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिणा ॥

कानपुरवाशों का मंदिर ।

शिखालेख ।

[ 1827 ]

॥ सं १९४३ का वर्षे शाके १८०८ प्रवर्तमाने माघ मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां बुधे श्रेष्ठी श्री सिखरूप मख तादात्मज जंडारी श्री रघुनाथ प्रसाद तट्टार्या श्री बदामो वीधी नया कारितं श्री पार्श्वजिन मंदिरं सहोत्सवेन स्थापना कारापिता श्री शिखर गिरि मनु-वने बृहद्भिजयगच्छे सार्वभौम नट्टारक श्री जं. बु. प्र. श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रेयस्ते । (इत्तके वाई ओर एक संकि में) श्री मत्तनागहाधिगज नट्टारक श्री १०८ श्री विजयराज सूरि राज्ये शुभंभवतु ।

मूर्तियों पर ।

[ 1828 ]

॥ सं० १८५४ वर्षे माघ वदि ए चंडे श्री नरनगर देवना गते श्री जिनदेव

सूरीश्वर राज्ये श्रीसवंस वृद्ध शाखायां सा पानाचंद श्री पार्श्वजिन विंवं .....  
प्रति .....

[ 1829 ]

॥ सं. १९०५ शाके १७६७ वदि ५ भृगौ सीपोर वास्तव्य सा. र ( त ) न चंद .....  
जीजा बाइ तत्पुत्री बेन नवल स्वश्रेयोर्थ श्री चंद्रप्रत्त विंवं ॥ कारापितं तपागळे .....  
श्री शांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

लाला कालीकादासजी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[ 1830 ]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तियौ श्री सुपार्श्वनाथ जिन विंवं प्रतिष्ठितं  
खरतर गळे श्री जिनहर्ष सूरिणां पट्ट प्रजावक .....

[ 1831 ]

॥ सं. १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री वासुपूज्य जि विंवं प्रतिष्ठितं  
न । श्री जिन महेन्द्र सूरिजिः कारितं च श्री .....

[ 1832 ]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तियौ श्री धर्मनाथ विंवं प्रतिष्ठितं खरतर  
गळे श्री जिन हर्ष सूरिणां पट्ट प्रजावक .....

पाषाण की पंचतीर्थी पर ।

[ 1833 ]

॥ सं० १९३१ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १२ बुधे श्री पंचतीर्थीय जिन विंवं वैकुण्ठो  
गोत्रे लाला कालीकादास तट्टार्या चत्री वीचो तथा कारितं मलधार पूर्णिमा श्री मद्दिजय  
गळे न । श्री पूज्य श्री शांति सागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

( ११३ )

चंद्रप्रभुजी का मंदिर

मूर्तियों पर ।

[ 1834 ]

॥ सं. १७०७ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रप्रभु जिन विंभं कारितं ओसवंसे नवलखा  
गोत्रे मोटामल पुत्र यश रूपेण प्र । बृहत् खरतर ग । श्री जिनाक्षे सूरि चरणकज चंचरीक  
श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

पाश्वनाथ जी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[ 1835 ]

॥ सं. १६९६ मिति फालगुण शुक्ल १३ . . . . .

[ 1836 ]

॥ सं. १७९९ वै । शु । १५ श्री पार्श्व विंभं प्र । श्री जिनहर्ष सूरीणा गोत्रवद्या मद्दना  
षोजानी मूलचंदेन धर्मचंदेन कारितं कास्यां बृहत् खरतर गण

[ 1837 ]

॥ सं. १७९९ वै । शु । १५ श्री चंद्रप्रभु विंभं प्र । श्री जिन हर्ष सूरीणा कारितं ...

[ 1838 ]

॥ सं. १७९९ । वै । शु । १५ श्री चंद्रप्रभु विंभं प्र । श्री जिनहर्ष मृगिणा कारितं मास-  
षत्त चेन्सुखज कुंदन खालेन श्री . . . . .

पट पर ।

[ 1839 ]

॥ सं. १७७५ मि । फालगुण सुदि १३ रवौ जिनवर निगो श्री निहचक्रमिदं प्रतिष्ठित

( ११४ )

ज । श्री जिनहर्ष सूरिजिः श्री बृहत् खरतर गङ्गे कारितं हु० पुराणचंदेन सजा  
पुत्रेण श्रेयोर्थ ।

[ 1840 ]

॥ संबत् १९५४ वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी चंद्रवासरे अमृत सिद्धि योगे रा  
निवासि वायचाणा शा ... जेचंदेन श्री तपागढ सूरीश्वर विजयसिंह सूरीणा ...

सुज स्वामीजी का मंदिर ।

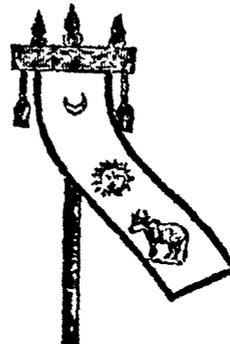
चरणों पर ।

[ 1841 ]

- ( १ ) सं. १८९५ मि । मार्गशीर्ष ए तिथौ रविवासरे  
( २ ) श्रीमच्छ्री जिनदत्त सूरीणां चरणपंकजानि  
( ३ ) वृ । ख । जं । यु । प्र । ज । जिनहर्ष । सू । प्रतिष्ठितानि ॥

[ 1842 ]

- ( १ ) ॥ सं. १८९५ । मिति मार्गशीर्ष शुक्ल ए तिथौ रविवासरे  
( २ ) श्री सङ्गुरुणां पादो बृहत् खरतर ग  
( ३ ) छे । जं । यु । प्र । ज । श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥  
( ४ ) ॥ दादाजी श्री जिनकुशल सूरिः









METAL IMAGE OF SHRI SUMATINATH.  
Jain Svetambara Temple—Tirtha Rajriha  
Dated V. S. 1512 (A D. 1455)

( ११५ )

## श्री राजगृह ।

गांध मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1843 ]

संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि १३ उकेश सा० चादा चार्या जरमादे पुत्र सा० नायक  
चार्या नायक दे फदेकू पुत्र सा० अदाकेन चा० सोनाई चातृ सा० जोगादि कुटुंबयुतेन श्री  
मति नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ बडली वास्तव्यः ॥ श्री ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1844 ]

सं० १९३० । म । का । कृष्ण २ बुधे डुगड प्रतापसिंह चार्या महताव कंवर श्री संती  
नाथ जिन विंवं का० ॥

सफण मूर्ति पर ।

[ 1845 ]

संवत् १६३० आपाड वदि २ । मित्रवाय वंशी पी ( वी ) सेरवार गोत्रीय सं० गनपति  
सं० तारात पुत्र हेमराज पार्श्वनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे जिनमछ  
सूरिजिः ॥ शुचमस्तु ॥

श्याम पापाण की मूर्ति पर .

[ 1846 ]

( १ ) ॥ संवत् १५०४ वर्षे फागण सुदि ९ महतीयाए वंशे ठ० देवर्मा पुत्र सं० रेवृ  
बहनी सन्वाई चार्या वेपी । श्री शान्ति



METAL IMAGE OF SHRI SUMATINATH.  
Jain Svetambara Temple—Tirtha Rajgraha  
Dated V. S 1512 (A D. 1455)

( ११७ )

[ 1840 ]

- ( १ ) संवत् १९३७ वर्षे शाके १७०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
- ( २ ) शुक्ले ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां तिथौ गुरुवासरे व्य-
- ( ३ ) वहार गिरिशिखरे श्री आद देव चरण न्या-
- ( ४ ) सः प्रतिष्ठितं वृद्धविज [ य ] गणी राय लठमिरत
- ( ५ ) सिंह धनपतमिंह जीरणोद्धार-
- ( ६ ) र करापितं श्रीरस्तु

[ 1850 ]

- ( १ ) संवत् १९३७ वर्षे शाके १७०३ प्रवर्त्तमाने
- ( २ ) मासोत्तममासे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
- ( ३ ) द्वादश्यां गुरुवासरे श्रीव्यवहारगिरि शिखरे
- ( ४ ) श्री शांतिजिन चरणप्रतिष्ठा । प्रथम
- ( ५ ) श्री जिनहर्ष सूरिभिः वृद्ध विजय प्रतिष्ठा
- ( ६ ) राय लठमिरत धनपत वा-
- ( ७ ) ह्यार जिरणोद्धार करापितं श्री
- ( ८ ) रस्तु

[ 1851 ]

- ( १ ) संवत् १९३७ वर्षे शाके १७०३ प्रवर्त्तमाने
- ( २ ) मासोत्तममासे ज्येष्ठमासे
- ( ३ ) शुक्लपक्षे द्वादश्यां गुरुवासरे
- ( ४ ) श्री व्यवहार गिरिशिखरे श्री नेमिजिन
- ( ५ ) चरणन्यास प्रतिष्ठा ( १ ) वृद्ध विजयगणि राय लठमिरत
- ( ६ ) धनपत संग जिरणोद्धार करापितं श्रीरस्तु ।

( २१६ )

( १ ) नाथ त्रिंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वा० शु  
गणिजिः

चरण पर ।

[ 1847 ]

॥ ॐ नमः ॥ संवत् १८१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्री चंद्रप्रज्ञ  
चरणकमले शुभे स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य श्रोसवंशे गांधी गोत्रे बुद्धाकिदास  
साह माणिक चंदेन पत्नीकुंडे कुंडघाटे जीर्णोद्धार करापितं ॥ १ ॥

वैज्जार गिरि ।

चौथे मंदिर में ।

चरणों पर ।

[ 1848 ]

- ( १ ) संवत् १९३० वर्षे शाके १८०३ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे
- ( २ ) शुभे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशी गुरुवासरे . . . श्री व्यवहार
- ( ३ ) गिरि शिखरे श्री जिनचैत्यालये मूलनायक श्री
- ( ४ ) महावीर जिन चरणन्यासः प्रतिष्ठितं श्री तपागङ्गे वृद्धवि
- ( ५ ) जय थापीतं ( ६ ) साह बाहादरसंह प्रताप-
- ( ६ ) सिंह तत् पुत्र राय लठमीपत धनपतसिंग
- ( ७ ) बाहाद् ( ८ ) जिरणोद्धार करापितं श्री रस्तु
- ( ८ ) ॥ प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १८७४ शा० १७३९ मासो
- ( ९ ) त्तमासे शुभे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पं-
- ( १० ) चम्यां तिथौ सोमवासरे श्री जिनचन्द्र
- ( ११ ) सूरिजी महाराज का० श्री ।



( ११७ )

[ 1852 ]

- ( १ ) संवत् १९३७ वर्षे शाके १७०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
- ( २ ) ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशम्यां तिथौ गुरुवासरे
- ( ३ ) श्री व्यवहार गिरिशिखरे
- ( ४ ) श्री पार्श्वनाथ चरणयनासः प्रतिष्ठितं वृद्धविज-
- ( ५ ) य गणि राय छठमिपत सिंह धन-
- ( ६ ) पत संग जिरणोद्धार करापीतं

ठठे मंदिर में ।

चरण पर

[ 1853 ]

- ( १ ) संवत् १९३७ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
- ( २ ) द्वादशम्यां तिथि गुरुवासरे आदिनाथ जिन चरण-
- ( ३ ) न्यास प्रतिष्ठितं वृद्धविजय गणि प्रथ-
- ( ४ ) म जीरणोद्धार वृत्ताकिचंद तत् पुत्र माणिक
- ( ५ ) चंद जिरणोद्धार करापीतं छुति-
- ( ६ ) थ जिरणोद्धार राय छठमिपति सं-
- ( ७ ) घ धनपतसंघ करापितं । श्रीरस्तु

७ । व्यवहारगिरी

वड़ी मूर्ति पर

[ 1854 ]

॥ संवत् १९०४ वर्षे फागुण सुदि ए दिने मङ्गलियाण.....श्री पार्श्वनाथ पितं  
श्री स्वरतर गठे.....श्री जिनसागरसूरीणां निदेशेन श्री शुचशील गुणितः ॥





‘खुस्यालचंद्रस्य पत्नी’ के स्थान में ‘खुस्यालचंद्रस्य पीपाळा गोत्रस्य पत्नी चाहिये । यह लेख त्रिपुल गिरि के मंदिर में है ।

[ 244 ]

‘सा श्री हकु—’ के स्थान में ‘सा । श्री हकुमतराय —’ होना चाहिये ।

[ 256 ]

‘देवराज सं० श्रीमराज’ के स्थानमें ‘देवराज पुत्र सं० श्रीमराज’ होना चाहिए संशोधित पाठ ।

[ 257 ]

॥ ओं सं० १५१४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजय तदादेशे .... श्री कमलसंयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचंद्र सूरि पाडुके प्र० का० श्री वं० श्रीपू पुत्र ठ० ठीतमल श्रावकेण श्री वैचार गिरो मुनि मेरुणा लि० ॥  
यह चरण गांव के मंदिरमें है ।

[ 258 ]

॥ सं० १५१४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरिणामादेशेन श्री कमलसंय. ॥ १५॥  
धनाशास्त्रिचंद्रमूर्ति ॥ प्र० का० ठ० ठीतमल श्रावकेण ।

[ 268 ]

“पत्नी महाकुमा—तस्या” के स्थान में “पत्नी महाकुमार्या तस्या” होना चाहिये ।



( २२१ )

## पटना ।

शहर मंदिर ।

संशोधित पाठ ।

[ 323 ]

॥ संवत् १५४७ वर्षे वैशाख शुदि ३ मुन्नसंघे जटारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव  
राज पापडिवाह नित्य प्रणमति सर मंसासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावल..... ।

[ 324 ]

संवत् १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ३ मुन्नसंघे जटारक श्री जिनचंद्र देवा सा० जिवराज  
पापडिवाह सहर मंसासा श्री राजा सिवसिंघजी रावल..... ।

दिगंबर मंदिर—धीया तमोक्षी गली, सिटी ।

श्वेत पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1859 ]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाट्गुण वदि २ श्री संडेरे गळे उ० माह केवडा नाया कस्तुरी पुत्र  
धी देपाल ना० देवल दे पुत्र सोकन्न सहितेन श्री शीतल विंघं का० प्र० श्री शांति मूर्तिः ॥

पटना—न्युजियम ।

संशोधित पाठ ।

[ 335 ]

संवत् । १०९४ । वर्षे शके १०२९ । प्रवर्तमाने । शुभ ज्येष्ठमाने कृष्णपक्षे पंचम्या  
दिने । सोमदिने श्री व्यड्हाग गिरि जिन्हे श्री ॥ शांति चित्त वाणान्प्रतिष्ठितं च । श्री  
जिनर्ष मूर्तिः ।

( २२० )

[ 242 ]

‘सुस्यालचंद्रस्य पत्नी’ के स्थान में ‘सुस्यालचंद्रस्य पीपामा गोत्रस्य पत्नं चाहिये । यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है ।

[ 244 ]

‘सा श्री हकु—’ के स्थान में ‘सा । श्री हकुवतराय —’ होना चाहिये ।

[ 256 ]

‘देवराज सं० षीमराज’ के स्थानमें ‘देवराज पुत्र सं० षीमराज’ होना चाहि संशोधित पाठ । -

[ 257 ]

॥ ओँ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजय तदादेशे .... श्री कमलसंगमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचंद्र सूरि पाडुके प्र० का० श्री वं० जीषू पुत्र उ० ठीतमल श्रावकेण श्री वैजार गिरो मुनि मेरुणा लि० ॥  
यह चरण गांव के मंदिरमें है ।

[ 258 ]

॥ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरीणामादेशेन श्री कमलसंगमोपाध्याय धनाशालिचंद्रमूर्ति ॥ प्र० का० उ० ठीतमल श्रावकेण ।

[ 268 ]

“पत्नी महाकुमा-तस्या” के स्थान में “पत्नी महाकुमार्या तस्या” होना चाहिये ।



( १११ )

## पटना ।

शहर मंदिर ।

संशोधित पाठ ।

[ ३२३ ]

॥ संवत् १५४७ वर्षे वैशाख शुद्ध ३ सुत्रसंघे जट्टारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव  
राज पापडिवाज नित्य प्रणमति सर मंजासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावल.....।

[ ३२४ ]

संवत् १५४७ वर्षे वैशाख सुद्ध ३ सुत्रसंघे जट्टारक श्री जिनचंद्र देवा सा० जिवराज  
पापडिवाज सहर मंजासा श्री राजा सिवसिंघजी रावल.....।

दिगंवरी मंदिर-धीया तमोश्री गजी, सिटी ।

श्वेत पाषाण की मूर्ति पर ।

[ १८५७ ]

॥ सं० १४७७ वर्षे फाट्गुण वदि २ श्री संडेरे गठे उ० माह केददा जाया कमवुरी पुत्र  
श्री देपाल जा० देवस दे पुत्र मोरुज सहितेन श्री शी वल विंघ का० प्र० श्री शानि मूर्तिः ॥

पटना-न्युजियम ।

संशोधित पाठ ।

[ ३२३ ]

संवत् १७७४ । वर्षे शाने १८७४ । प्रवर्तमाने । शुभ उपेदनामे कृपयासके पचम्य  
निर्घो । सोमदिने श्री व्यवहार निगि शिवरे श्री ॥ शानि जित चामान्प्रविष्टिं न । श्री  
जिनहर्षे मूर्तिः

( २२० )

[ 242 ]

‘खुस्यालचंद्रस्य पत्नी’ के स्थान में ‘खुस्यालचंद्रस्य पीपाका गोत्रस्य पत्नं चाहिये । यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है ।

[ 244 ]

‘सा श्री हकु—’ के स्थान में ‘सा । श्री हकुमताराय —’ होना चाहिये ।

[ 256 ]

‘देवराज सं० बीमराज’ के स्थानमें ‘देवराज पुत्र सं० बीमराज’ होना चाहि संशोधित पाठ ।

[ 257 ]

॥ ओं सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजय तददेशे .... श्री कमलसंयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचंद्र सूरि पाडुके प्र० का० श्री वं० ज्ञीषू पुत्र उ० ठीतमल श्रावकेण श्री वैचार गिरो मुनि मेरुणा लि० ॥  
यह चरण गांव के मंदिरमें है ।

[ 258 ]

॥ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरिणामादेशेन श्री कमलसंयमोपाध्याय धनाशास्त्रिचंद्रमूर्ति ॥ प्र० का० उ० ठीतमल श्रावकेण ।

[ 268 ]

“पत्नी महाकुमा-तस्या” के स्थान में “पत्नी महाकुमार्या तस्या” होना चाहिये ।



( १११ )

## पटना ।

शहर मंदिर ।

संशोधित पाठ ।

[ ३२३ ]

॥ संवत् १५४७ वर्षे वैशाख शुद्ध ३ मुन्नसंघे जटारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव  
राज पापडिवाज नित्य प्रणमति सर मंजासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावज..... ।

[ ३२४ ]

संवत् १५४७ वर्षे वैशाख सुद्ध ३ मुन्नसंघे जटारक श्री जिनचंद्र देवा सा० जिवराज  
पापडिवाज सहर मंजासा श्री राजा सिवसिंघजी रावज..... ।

दिगंबरी मंदिर—धीया तमोत्री गत्री. सिटी ।

श्वेत पाषाण की मूर्ति पर ।

[ १८५९ ]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाट्गुण वदि २ श्री संडेर गठे उ० माइ केवडा नारा कम्तुरी पुत्र  
श्री देपाल जा० देवज दे पुत्र मोकज सहितेन श्री शी नज विंघ का० प्र० श्री शांति मूर्तिः ॥

पटना—म्युजियम ।

संशोधित पाठ ।

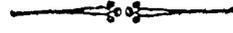
[ ३३३ ]

संवत् १७९४ । वर्षे शक १८३९ । प्रवर्तमाने । शुभ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पंचम्या  
तिथौ । सोमदिने श्री व्यवहार निगि जितने श्री ॥ शांति जिन वाप्याप्रतिष्ठिते न । श्री  
जित्पूर्व मूर्तिः

( १११ )

[ 734 ]

॥ सं. । १९११ व । सा । १९९५....शुचिः । शु । १० ति । श्री शांति जिन पादन्यासो  
खरतर गह्व चट्टारक श्री महेन्द्र सूरिजिः का । से । श्री उदेचंद चार्या माहा कुमार्य



## बनारस ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1860 ] \*

- ( १ ) ओँ संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ ( २ ) श्रीमाल वंशे [ ढोर ] गोत्रे व  
( ३ ) सं० उडरव अजीतमह्व चार्याया ( ४ ) पुत्र.....  
( ५ ) श्री सुमति नाथ बिंबं का० ( ६ ) प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि...  
( ७ ) श्री जिनतिलक सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1861 ] \*

- ( १ ) ओँ स्वस्ति संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ पुष्यनक्षत्रे गुरौ श्रीमालवंशे ढोर  
गोत्रे सोवनपाल चार्या.....  
( २ ) .....आदिनाथ.....  
( ३ ) खरतर ग० श्री जिनहर्षसूरि संताने श्री जिनतिलक सूरि प्रतिष्ठितं

[ 1862 ] \*

- ( १ ) [ नर ] पाल चार्या । महुरी पुत्र ठ० जरतपाल....  
( २ ) सं० उडरव अजितमह्व....

श्याम पाषाण की ठोटी मूर्ति पर ।

[ 1863 ] \*

सं० १३९१ वैशाख वदि.....

( २२३ )

काष्ठे पाषाण की टूटी परकर के बाँधे तर्फ

[ 1864 ] \*

( १ ) ... ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्र वासरे । व० द्वे. ...

( २ ) ..... । विंशं कारितं ।

[ 1865 ] \*

( १ ) ॥ ओँ ॥ सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ६ दिने श्रीमाल वंशे नांदी गोत्रे सं० नरपाल  
चार्या महु-

( २ ) री कारितं श्रीमहावीर विंशं । श्री खरतर गढे प्रतिष्ठितं श्रीजिनजागर सूरिजिः ॥

मूलनायकजी पर ।

[ 1866 ]

सं० १५१० शाके १९०३ मिति आषाढ कृष्ण २ श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जिन विंशं प्रति-  
ष्ठिता कृता बृहत् खरतर जट्टारक गणेश जङ्गम यु० प्रधान जट्टारक श्री जिनमुक्ति सूरिजिः  
कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्द्रेण स्वश्रेयोर्य सोम वासरे ॥

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1867 ]

सं० १५१० शाके १९०३ मिति आषाढ कृष्ण २ सोमे श्रीवर्धमान जिन विंशं प्रतिष्ठा  
कृता बृहत् खरतर जट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिजिः कारित च नाहटा  
गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्र पौत्र मनोरथचन्द्र श्रेयोर्यमिति ।

[ 1868 ]

सं० १५१० शाके १९०३ मिति आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री ऋषभदेव जिन विंशं प्रतिष्ठा

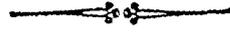
\* ये मूर्तियाँ हाल में जौनपुर से डेढ़ कोस पर गोमती के किनारे खेत में मिली हैं । यह निम्नलिखित श्री जौनपुर में स्थित  
श्री कानस के मंदिर में रखी हैं ।



( १११ )

[ 734 ]

॥ सं. १९११ व । सा । १९९५....शुचिः । शु । १० ति । श्री शांति जिन पादन्यासो  
खरतर गण चट्टारक श्री महेन्द्र सूरिजिः का । से । श्री उदेचंद चार्या माहा कुमार्य श्रे



## बनारस ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1860 ] \*

- ( १ ) ओँ संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ ( २ ) श्रीमाल वंशे [ ढोर ] गोत्रे व  
( ३ ) सं० उडरव अजीतमल्ल चार्याया ( ४ ) पुत्र.....  
( ५ ) श्री सुमति नाथ बिंबं का० ( ६ ) प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि...  
( ७ ) श्री जिनतिलक सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1861 ] \*

- ( १ ) ओँ स्वस्ति संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ पुष्यनक्षत्रे गुरौ श्रीमालवंशे ढोर  
गोत्रे सोवनपाल चार्या.....  
( २ ) .....आदिनाथ.....  
( ३ ) खरतर ग० श्री जिनहर्षसूरि संताने श्री जिनतिलक सूरि प्रतिष्ठितं

[ 1862 ] \*

- ( १ ) [ नर ] पाल चार्या । महुरी पुत्र ठ० जरतपाल....  
( २ ) सं० उडरव अजितमल्ल....

श्याम पाषाण की ठोटी मूर्ति पर ।

[ 1863 ] \*

सं० १३९१ वैशाख वदि.....

( ३३५ )

# देहली ।

छात्रा हजारीमलजो का घरदेरासर ।

देवी की मूर्ति पर ।

[ 1873 ] \*

( १ ) संवत् ११९५ श्री

( २ ) पचासरीय (!) गडे

( ३ ) श्रीमल्लवादि संताने

( ४ ) चेल्लकेन विरोध्या कारिता ॥

चीरेखाने का मंदिर ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1874 ]

संव ११९५ . . . . . ।

[ 1875 ]

संव १२३४ आणवळू वदि २ सनो जातु हीरेकेन प्रेरणेन न मरेनन धीमा मरिडा  
प्रतिष्ठा मलवादि श्री पूर्णचंड मूर्तिनिः ।

[ 1876 ]

संव १४२१ वर्षे माष लुदि १० नाह्य चरे स्याः देवा पुं सः संवत् १४२१ मया विष्ठा  
एतेसा धम्मजिषां पितृव्य प्रेरणे श्री मूर्तिनाय विदुः मूर्ति प्रीति १४२१ मया विष्ठा  
१० मलपचंड मूर्तिनिः ॥ मिर . . . म ।

[ 1877 ]

संव १५०३ वर्षे लदेह संव ३

[ 1878 ]

संव १५२१ वदि २ श्री अणवळन

[ 1879 ]

१. संवत् १५२१ वदि २ श्री अणवळन . . . . .  
२. संवत् १५२१ वदि २ श्री अणवळन . . . . .

कृता बृहत् खरतर जटारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिजिः कारिता च  
गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज फूलचन्द्र भ्रेयोर्थमिति ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[ 1869 ]

सं० १७९९ फा० सु० ५ श्री पार्श्वनाथ विं० प्र० श्री जिनमहेन्द्रसूरिणा कारिता ना  
लक्ष्मीचन्द्र तत् चार्या लक्ष्मी बीबी विधत्ते ।

[ 1870 ]

सं० १७९९ फा० सु० ५ श्री सुपार्श्व विं० प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिणा का० वा० ल  
चन्द्र पुत्री नानकी नाम्ना बुद्धोत्तम श्री कुशलचन्द्र गणयुपदेशतो बृहत् खरतर गठे ।

[ 1871 ]

सं० १०२० फा० सु० २ बुधे प्रतापसिंहजी चार्या महताव कुंवर कारितं श्री चन्द्र  
श्री सागरचन्द्र गणि प्रतिष्ठितं ।

सिद्धचक्र पर ।

[ 1872 ]

सं० १९१७ आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री सिद्धचक्र प्रतिष्ठितं ज० यु० प्र० ज० श्री जि  
मुक्ति सूरिजिः कारितं च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्देन स्वहितार्थं ।



( ११५ )

## देहली ।

छाया हजारीमलजो का घरदेरासर ।

देवी की मूर्ति पर ।

[ 1873 ] \*

( १ ) संवत् १११५ श्री

( २ ) पचासरीय (!) गढे

( ३ ) श्रीमल्लवादि संताने

( ४ ) चेल्लकेन विरोध्या कारिता ॥

चीरेखाने का मंदिर ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1874 ]

सं० १११५..... ।

[ 1875 ]

सं० ११३४ आप्पळू वदि २ सनौ जातु लीवूंदेव श्रेपार्य नागदेवेन प्रतिमा कारिता  
तिष्ठता मल्लवादि श्री पूर्णचंद्र सूरिनिः ।

[ 1876 ]

सं० १४३१ वर्षे माघ सुदि १० नाहर वंशे सा० पेना पु० ना० तोला जार्या निरुणश्री  
पु० हेमा धर्मराज्यां पितृव्य श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रति० श्री धर्मराज्य गंग  
श्री मलयचंद्र सूरिनिः ॥ गिर.... ग ।

[ 1877 ]

संवत् १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३..... ।

[ 1878 ]

सं० १५५५.... वदि ७ श्री ऋषयानन ..... ।

\* यह लेख १३ की विद्युत्की की धातु की मूर्ति के एक नमूने का है। यह मूर्ति का नाम है 'देवी' का नाम है।  
यह मूर्ति का नाम है 'देवी' का नाम है।

( ११६ )

श्रीवीशी पर ।

[ 1879 ]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाख सु० ३ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय सा० देवा जा० रामति सु०  
आकेन जा० माणिकदे सु० डाहीयानाथ पु० स्वश्रेयसे श्री मुनिसुवत स्वामि विं०  
प्र० श्री वृहत्तपा पद्मे ज० श्री उदयसागर सूरिजिः ॥ गिर...ग ।



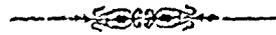
जोधपुर

राजवैद्य ज० श्री उदयचंद्रजी का देरासर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1880 ]

संवत् १५१६ वै० सु० ५ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मोषसी टमकू पु० जाणा हरखु पु० उं  
रणसा० पाहु प० जिनदत्त युंतेन श्री संचव विं० कारितं प्र० श्री तपा रत्नशेखर सूरिजिः



जसोल (मारवाड़) ।

पीछे पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1881 ]

॥ सं० १५३३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १०.....श्री महावीर विं०.....खरतर श्री जिनचंद्र  
सूरिजिः ।

( ११७ )

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1882 ]

संवत् १४७६ वैशाख वदि ३ श्री उकेशवंशे ठाजहड़ गोत्रे सा० पेता पु० आसधर पु०  
करमा जा० कूरमादे पु० नारमलेन जा० नरमादे पु० सहृणा सादा यु० श्री आदिनाथ विंवं  
कारितं आत्मश्रेयसे प्रति० श्री पल्लीवाल गढे श्री यशोदेव सूरि ( निः ) ।

[ 1883 ]

॥ संवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री उकेश गढे श्री ककुदाचार्य संताने श्री उर-  
केश ज्ञातौ विंवट गोत्रे सं० दादू पु० सं० श्रीवत्स पु० सुखलित जा० ललतादे पु० सादण-  
केन जा० संसार दे युतेन पित्तरो श्रेयसे श्री अजितनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कण-  
सूरिनिः ॥

[ 1884 ]

सं० १५१९ माघ सु० शुके प्रा० व्यर मीचत जा० नासल दे पुत्र मूचाकेन जा० पांरु  
माह्वी पु० मेरा तोलादि युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंतुनाथ विंवं कारितं प्र० नया श्री सार्गी  
नागर सूरिनिः ॥

नाकोडा ।

धी शान्तिनाथजी का मंदिर ।

पीले पापार के चरण पर ।

[ 1885 ]

संवत् १५२५ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने श्री दीनलहरे श्री स्वामी लो० श्री वं विंवा० मरिच  
शर्मा ॥ तत्प्राहृके संखवालेचा गोत्रे मा । जालड पुत्र मा० जिहोमिह देव विंवं विंवा०  
गडदीवान कुमहाकेन करापितं । सं० १५३१ वर्षे मगस सुदि २ दिने प्रतिष्ठितं ॥

( ११६ )

बोधीशी पर ।

[ 1870 ]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाख सु० ३ बुधे श्री हुंबड झातीय सा० देवा जा० रामति सु०  
आकेन जा० माणिकदे सु० डाहीयानाथ पु० स्वश्रेयसे श्री मुनिसुवत स्वामि विं० .  
प्र० श्री वृहत्तपा पद्मे ज० श्री उदयसागर सूरिजिः ॥ गिर... ग ।



जोधपुर

राजवैद्य ज० श्री उदयचंद्रजी का देरासर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1880 ]

संवत् १५१६ वै० सु० ५ प्राग्वाट झातीय व्य० मोपसी टमकू पु० जाणा हरस्तु पु०  
रणसा० पाहु प० जिनदत्त युतेन श्री संजव विं० कारितं प्र० श्री तपा रत्नशेखर सूरिजिः



जसोल (मारवाड़) ।

पीले पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1881 ]

॥ सं० १५३३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १०..... श्री महावीर विं०.....खरतर श्री जिनचंद्र  
सूरिजिः ।

( ११९ )

[ 1891 ]

॥ संवत् १६२० वर्षे वैशाख सुदि ११ बुधे नारदपुरी वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० टीला  
सुन सा० चूनाख्येन जार्या वार्ड पानु सुत लाधा हीता प्रभृति कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री  
धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपागडाधिराज चहारक श्री हीरविजय सुरिजिधिरं  
नन्दतात् ॥

श्री रूपनदेवजी का मंदिर—हाथीपोल ।

पंचतीर्थों पर ।

[ 1892 ]

॥ सं० १३४३ ज्येष्ठ शु० ए गुरौ नेपुत्रौवाह(?) ज्ञातीय व्यव० पुनाकेन जार्या .. श्रेयसे  
भी पद्मप्रज विंवं का० प्र० श्री सुमति सुरिजिः ॥

श्री रूपनदेवजी का मंदिर—कसैरी गली ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1893 ]

॥ सं० १५०१ वर्षे आपाढ सुदि ५ उक्केश ज्ञातीय....श्री आदिनाथ विंवं का०....

[ 1894 ]

॥ सं० १५३३ वर्षे वैशाख सु० ५ शुके श्रीनाथ ज्ञा० व्यव० मेला ता० ऊवक सुन मुभा  
केनपितृमातृघ्रातु श्रेयोर्थ आत्मश्रेयसे श्री सुमति नाथ विंवं का० प्र० श्री नामंठ गठे श्री  
एतेव नृगिजिः ॥ चडेवा सपवाराही ग्रामे दास्तव्य ॥

[ 1895 ]

॥ संवत् १५५९ वर्षे आपाढ सुदि ० दिने हूगड मोडे जार्या निम्बि पुत्र तरनमी  
गर्गो पुह्ला धरनाई पुत्र पीमपाळ नरपाळ नरपति नातु श्रेयसे श्री हीरविजय विंवं का  
निं प्र० श्री वृहज्जे ज० श्री श्री वलज सुरिजिः ॥



( १२० )

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1886 ]

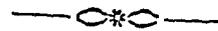
सं० १४०५ वैशाख सुदि ३ ऊएस झातीय ठाजहड़ गोत्रे सा० गणधर जार्या बल मोहण जयताकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथः कारितं प्रति० श्री अन्नयदेव सूरिजिः

[ 1887 ]

सं० १५१३ वर्षे माघ मासे ऊकेश वंशे सा० बट्हा जा० सूढही पुत्र सा० बाहड़ जा० सुत हूंगर रणधीर सुरजनैः रणधीर श्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री य सूरिजिः ॥ ठाजहड़ गोत्रे ॥

[ 1888 ]

आँ संवत् १५३६ वर्षे श्री कीर्तिरत्न सूरि गुरुच्यो नमः सा० जेठा पुत्र रोहिनी प्रणमं



## बाड़मेर-मारवाड ।

पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

[ 1889 ]

सं० १६६५ वर्षे उकेश वंशे सा० ठाकुरसी कु० प्र० क . . . . . प्रमुख श्री संघेन उ० विद्यासागर गणि शिष्येण श्री विद्याशील गणि शिष्य वा० श्री विवेकमेरु गणि शिष्य श्री मुनिशील गणि नित्यं प्रणमति । श्री अंचल गढे ।

\*\*\*

## उदयपुर ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर-सेठों की वाड़ी में ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1890 ]

॥ सं० १५०६ वर्षे मा० वदि ५ दिने श्री संडर गढे उ० सा० झासा पु० सा जा० पेठी पु० पितमा जा० धारू पु० जापर जा० लाडी पु० पामा स्वश्रेयसे श्री सुविधिना विंवं का० प्र० श्री यशोज्ञ सूरि संताने गढेशैः श्री शांति सूरिजिः ॥

- ( ३ ) यां घांघ गोत्रे साह् श्री माह्ण तत्तार्या सूरूप दे तत्पुत्र संघवि श्री कान्हजि तस्य वृद्धि तार्या दीपां लघु तार्या सूषम दे पुत्र चिरंजिवी पुन्यपाल सहितेन श्री प्रासाद विं
- ( ४ ) वं ॥ श्री ऋषभदेव त्रिंवं स्थापितं प्रतिष्ठितं मलधार गढे चट्टारिक श्री महिमा सागर सूरी तत्पद्मे श्री कल्याणसागर सूरिनिः प्रतिष्ठितं धर्माचार्य विजामति श्री उदय सागर सूरिः । शुभं ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1900 ]

॥ श्री ॥ सं० १४९९ वर्षे फा० सुदि २ दिने ओसवाल ज्ञातीय सा० जाऊण पु० सा० पुदा सुश्रावक तार्या रतनु तत्सुतेन सा० सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमालादि सहितेन श्री कुंथुनाथ त्रिंवं का० प्रतिष्ठितं खरतर गढे श्री जिनचक्र सूरिनिः ॥ श्री ॥

[ 1901 ]

॥ सं० १४९९ माह सुदि ६ सोमे उ० ज्ञा० गूंदोवा गोत्रे सा० लापा जा० लापण दे पु० मेहाकेन जा० मयणल दे पु० पित्रगल रणपालादि सह जाई पेटा जा० पेटल दे निमित्तं सुमतिनाथ का० प्र० चैत्र गढे श्री मुनितिलक सूरि गुणाकर सूरिनिः ॥

[ 1902 ]

॥ संवत् १५११ वर्षे वै० व० ४ शुके प्रा० ज्ञातीय प० चांपसी जा० पोमादे सु० सांगा- केन जा० दर्ई सुत करण जा० सहसादि कुटुंबयुतेन स्वमातृपितृश्रेयसे कुंथुनाथ त्रिंवं कार्गिनं प्रतिष्ठितं तथा श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः । जाडुखि ग्राम वास्तव्यः ॥

चौवोशी पर ।

[ 1903 ]

॥ सं० १५११ व० आषा० व० ७ श० उपकेश ज्ञातो आदित्यनाग गोत्रे भा० जा० मा०

( १३० )

[ 1896 ]

॥ सं० १५७१ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे ऊकशे वंशे वर्डताला गोत्रे सा० तोला जा० डी  
सा० आसाकेन जा० राना दे पु० जीवा द्वितीय जा० अचला दे पुत्र गोदहा पदमा  
वार युतेन स्वपुण्यार्थ श्री धर्मनाथ विंभं का० प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनहर्ष  
श्री जिनचंद्र सूरिनिः ॥ पं० कुशल....सुप.... ।

श्री गौतमस्वामी की धातु की मूर्ति पर ।

[ 1897 ]

॥ सं० १६१९ व० का० सु० ३ गुरुवारे...सरताण...श्री गौतमस्वामि विंभं का  
धातु के यंत्र पर ।

[ 1898 ]

॥ सं० १९११ वर्षे मिती आसोज सुदि १५ शुके मेदपाट देशे उदयपुर ओशवंशे  
शाखायां गोत्र बोड्यां साहाजी श्री एकलिंग दासजी तत्पुत्र साहाजी श्री जगवान दा  
तत्पुत्र कुंवरजी श्री .....श्री सिद्धचक्र यंत्र कारापितं जट्टारक श्री आनन्द सागर  
कारापितं बृहत्तपा गछे ।

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर - सेठों की हवेली के पास ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1899 ]

- ( १ ) ॥ ओ ॥ स्वस्ति श्री ऋद्धिबृद्धि जयौ । मंगलाच्युदय श्री ॥ अथ संवत्तरे  
श्री मन्नुपति विक्रमाकर्क समयातित संवत् १६९९ वर्षे श्री शालिवाहन  
शाके १५६४
- ( २ ) ॥ प्रवर्तमाने उत्तरगोले माघ मासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री रा  
दूर्गे महाराजाधिराज महाराव श्री हठीसिंघ जी विजयराज्ये ऊपकेश वंशे व  
शाखा

( १३१ )

- ( ३ ) यां घांघ गोत्रे साह् श्री माह्ण तत्तार्या सूरूप दे तत्पुत्र संघवि श्री कान्हजि तस्य वृद्धि तार्या दीपां लघु तार्या सूरूप दे पुत्र चिरंजिवी पुन्यपाल सहितेन श्री प्रान्नाद विं
- ( ४ ) वं ॥ श्री ऋषभदेव त्रिंवं स्थापितं प्रतिष्ठितं मलधार गढे जट्टारिक श्री महिमा सागर सूरि तत्पद्मे श्री कल्याणसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं धर्माचार्य विजामति श्री उदय सागर सूरिः । शुभं ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1900 ]

॥ श्री ॥ सं० १४९९ वर्षे फा० सुदि २ दिने ओसवाल ज्ञातीय सा० जाऊण पु० सा० पुदा सुश्रावक तार्या रतनु तत्सुतेन सा० सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमालादि सहितेन श्री कुंथुनाथ त्रिंवं का० प्रतिष्ठितं खरतर गढे श्री जिनजट्ट सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1901 ]

॥ सं० १४९९ माह सुदि ६ सोमे उ० झा० गूंदोचा गोत्रे सा० लापा जा० लापण दे पु० मेहाकेन जा० मयणल दे पु० पित्रपाल रणपालादि सह जाई पेटा जा० पेटल दे निमित्तं सुमतिनाथ का० प्र० चैत्र गढे श्री मुनितिलक सूरि गुणाकर सूरिजिः ॥

[ 1902 ]

॥ संवत् १५१९ वर्षे वै० व० ४ शुके प्रा० ज्ञातीय प० चांपती जा० पोमादे सु० सांगा- केन जा० दर्ई सुत करण त्रा० सहसादि कुटुंबयुतेन स्वमानृपितृश्रेयसे कुंथुनाथ त्रिंवं कार्गिनं प्रतिष्ठितं तथा श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । जाडुखि ग्राम वास्नव्यः ॥

चौचौशी पर ।

[ 1903 ]

॥ सं० १५११ व० व्यापा० व० ७ झा० उपकेज ज्ञाती आदित्यनाथ गोत्रे था० जा० मा०

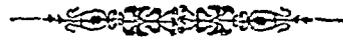
( १३३ )

जाषा जाण जांब श्री पुण सुवर्णपाल जार्या सोमश्री पुत्र साण लापा केन जाण अध  
सदरथ सूरचंद्र हरिचंद्र युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं उपकेश गण ककु  
संताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजि ॥ श्रीः ॥

प्रतिमा पर ।

[ 1904 ]

॥ सं० १९१९ रा मिर्गसर सु० १० उसवाल जागा गोत्रे साण द्विपमीदास जी न  
अनरुप दे पुत्र नाथजी अनरुप दे जी पंच पर....प्रतिष्ठितं ।



## करेडा - मेवाड ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

धातु को प्रतिमा पर ।

[ 1905 ] \*

( १ ) ओ देव धम्मोयं सुमति गुरोः मध्यम शाखस्य

( २ ) वसति काण देवसूरि संवतु .....

( ३ ) जिः

[ 1906 ]

सं० १६०४ व० ज्येष्ठ व०... वा कहानी (?) श्री कुंथुनाथ व जि... दान... संरपत्र  
ग्वत सोनी सीदंकरण

[ 1907 ]

॥ संवत् १६१९ वैशाख सुदि ६ श्री आदिनाथ.....श्री विजयदान सूरि प्रण वाण  
... पुण नाण सुंदर..... ।

\* संवत् के बर्कों का खान डूट गया है, परन्तु लेख के अन्य अक्षरों से स्पष्ट है कि प्रतिमा बहुत प्राचीन है ।

( १३३ )

[ 1908 ]

॥ सं० १६११ व० वैशाख सुदि ११ वो श्री शीतलनाथ विंवं गुरू श्री विजय सूरिनिः ॥

[ 1909 ]

॥ सं० १६४६ अस० सुदि ६ वाजसा श्री धर्म.....

[ 1910 ]

॥ संवत् १७१० वर्षे ज्येष्ठ सित ६ गुरौ श्री सुविधि विंवं श्रेयोर्थ का० प्र० ज० श्री विजयराज सूरिनिः श्रा० कनका ज० श्री विजय सेन सूरिनिः ॥

पंचतीर्थी पर ।

[ 1911 ]

॥ सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्ले प्राग्वाट वंशे सं० कर्मट जा० माजू पु० उधरणेन चार्वा सोहिणि पुत्र आढहा वोसा नीसा सहितेन श्री अंचल गणेश श्री जयकेसरि सूरि उपदेशेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य स्वामी विंवं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

[ 1912 ]

॥ सं० १५१६ वीरम ग्रामे श्रे० वीठा सोनल पुत्र श्रे० जुडसिकेन जा० संपूटी पुत्र धन्ना बाघा चार्वा जांऊ प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री नमिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागठ नायक श्री रत्नशेखर सूरिनिः ॥

[ 1913 ]

॥ संवत् १५१९ वर्षे फागुण सुदि १ शुक्ले श्री श्री (?) वंशे रमोड्या गोत्रे श्रे० वृद्धा चार्वा रंगाई पुत्र श्रे० देधर सुश्रावकेण जा० कुंवरि चानृ सीधा युतेन श्री अंचलगणेश्वर श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थ श्री शांति नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥

( २३४ )

[ 1914 ]

॥ संवत् १५४१ वर्षे वैशाख मासे नागर ज्ञाती श्रेणं केडहा जाण मानूं सुत  
माझ्याकेन सुत हरखा जांगा बाळा सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री संजवनाथ विंब काण  
बृह्म तपापद्मे जण श्री जिनरत्न सूरिजिः ॥

[ 1915 ]

॥ संवत् १५७७ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ उपकेश ज्ञाण साण हाया पुण विजा जाण  
जल दे पुण ठाकुर रीडा ठाकुर जाण अठवा दे पुत्र कुंरपाल युतेन आत्मश्रेण पित्रोः पुण  
शीतखनाथ विंब काण प्रण श्रीण वृण वोण श्री मलयहंस सूरिजिः ॥ कर्इउलि वास्तव्य ॥

रंगमंडप के बांये तर्फ आले के नीचे का शिलालेख ।

[ 1916 ]

( १ ) ॥ ओ ॥ संवत् १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे श्री आंचल गढे । प्राग्वाट ज्ञाती  
महं साजण महं तेजा . . . . सा जांऊणेन निज मातृ

( २ ) . . . . . कपूर देवी श्रेयोर्थ रवनक (?) श्री शांतिनाथ विंब कारापितं ॥ संताने  
मंडलिक महं माळा महं देवसीह महं प्रमत्तसीह . . . . .

सजामंरुप में दरवाजे के दाहिने स्तंज पर ।

[ 1917 ]

॥ ओ ॥ संवत् १४६६ वर्षे चेत्र सुदि १३ सुविहित शिरोरत्न शेखर श्री रत्नशेखर सूरि  
षट्हांबुधि पूर्णचंद्र श्री पूर्णचंद्रसूरि गुरुक्रम कमलहंसाः श्री हेम हंससूरयः सपरिकरा करः . . .

सजामंरुप के ३ मऊले के स्तंज पर ।

[ 1918 ]

श्री जिनसागर सूरि उदयशीख गणि आझासागर गणि हेमसुंदर गणि मेरुप्रज  
सुनि श्री . . . . .

( १३५ )

बावन जिनायलमें पंचतीर्थीयों पर ।

[ 1919 ]

॥ सं० ११४९.....सप्तमिणी श्रेयोर्य पुत्र उधरणेन ज्ञात्रि आसधर श्रेयोर्य श्री पार्श्व-  
नाथ विंबं कारितं ॥

[ 1920 ]

श्री संवत् ११६१ ज्येष्ठ सुदि १० शनौ बायट ज्ञातीय स्वसुर नायक आसल श्रेयोर्य  
.....श्री श्रेयांस विंबं कारितं । श्री नागेन्द्र गढे श्री वर्द्धमान सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[ 1921 ]

संवत् ११११ वर्षे फागुण सु० .... जा० घाटी पु० ऊदा जा० रुपिणि सुत आसपाक्षेण  
माता पिता पूर्वज श्रेयोर्य चतुर्विंशति पट्टः कारितः श्री चैत्रगढीय श्री आमदेव सूरिजिः  
श्री शांतिनाथ ..... ।

[ 1922 ]

सं० १३५५ श्री ब्रह्माण गढे श्रीमाल ज्ञातीय रिज पूर्वज श्रेयसे सुत मालाकेन श्री आदि  
नाथ विंबं प्र० श्री विमल सूरिजिः ।

[ 1923 ]

सं० १३५६ श्री शांतिनाथ विंबं कारितं श्री कक्क सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[ 1924 ]

सं० १३०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ० प्राग्वाट ज्ञातीय सा० धीना जार्या देवखं पुत्र चक्रुजा केन  
मातृ पितृ श्रेयोर्य श्री पार्श्वनाथ विंबं श्री पूर्णिमा गढे श्री सोमतिखक सूरि उपदेशेन विंबं  
का० प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1925 ]

सं० १३०३ वैशाख वदि ११ श्रे० सिरकुंध्यार जा० सींगार देव्या प्र० सा नृ .....  
श्री महावीर कारितं ।



संवत् १३९१ मा० सु० १५ खरतर गह्वीय श्री जिन कुशल सूरि शिष्यैः श्री ।  
सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठिता कारिता च मव० बाहि सुतेन रत्न  
आढ्यादि परिवृतेन स्वपितृ सर्व पितृव्य पुन्यार्थ ।

[ 1927 ]

सं० १४०० व० सु० ५ प्रा० रोस्तरा पदम । साह्रु साकल श्रे० देवसीद्देन का०  
सिद्धान्तिक श्री माणचन्द्र सूरि ।

[ 1928 ]

सं० १४११ व० ज्येष्ठ सु० ११ बुधे.....मंडलिक जा० मादहण दे सुत  
व्य० षानाकेन श्री संभवनाथ विंबं का०...तपा गह्वे श्री रत्नशेखर सूरिणासुपदेशेन ।

[ 1929 ]

सं० १४३९ माह वदि ७ श्रीमाल झा० व्यव० राणासीह जा० संसती पुत्र वयरा  
श्री सुमतिनाथ विंबं का० श्री विजयसेन सूरि पदे....

[ 1930 ]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि.....श्री मुनिसुवत विंबं का० प्र० कठोलीवाल  
श्री संघतिलक सूरि....

[ 1931 ]

सं० १४७२ वर्षे.....साहलेचा गोत्रे सा हांपा.....जा० गयणल दे पुत्र सा०  
जा० वीरणी पुत्र षरह्येन पितृ मातृ श्रेयसे श्री श्रेयांस विंबं का० प्र० श्री पक्षीकीय  
श्री यशोदेव सूरिभिः ।

[ 1932 ]

श्री सं० १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्रीमाल वंशे वहगटा गोत्रे सा० ऊदा पुत्र  
जगकेन आसा जूसा सहसादि पुत्रयुतेन पुन्यार्थ श्री नमिनाथ विंबं कारिनं प्रतिष्ठिनं  
खरतर गह्वे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

( १३७ )

[ 1933 ]

सं० १४९३ व० वै० सु० ५ श्री संकर गढे पीपलउडेवा गोत्रे श्रे० जा० सा० कान्हा  
चा० चोमणि पु० रतनाकेन पित्रौ निमित्तं श्री शांतिनाथ त्रिवं का० श्री जशोज्ञ सूरि  
संताने श्री शास्त्रि . . . . . ।

[ 1934 ]

सं० १५०३ व० ज्ये० सु० ११ शु० श्री उ० ग० ककुदाचार्य सं० त्रिपड गो० सा० जीजण  
पु० रामा चा० जीवदही पु० जिलाकेन पत्नीपुत्रस्वश्रे० श्री श्रेयांस त्रिं० का० . . . . . ।

[ 1935 ]

सं० १५०७ मा० ष० १३ उकेश सं० मारंग सुत संजा चा० हेमा दाणा हुंगर नापा सं०  
रावा चा० पोडू सुत साहस जहाए चा० लक्ष्म्या श्री संजव त्रिं० का० प्र० श्री उदयनंदि  
सूरिजिः ।

[ 1936 ]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे उकेश झा० कस्याट गोत्रे । सा० धाना चा०  
सप्तमादे पुत्र सा चडसीडाकेन पितर वादु निमित्तं श्री सुमतिनाथ त्रिं० का० प्र० उकेश०  
हुस श्रावक . . . . . ।

[ 1937 ]

सं० १५१७ वर्षे चैत्र वदि १ शुके श्रीश्रीमाल झा० . . . . . सु० बडूयास पुत्र पौत्र  
सहितेन श्री अजितनाथ सु० जिवितस्वामि प्र० श्री पूर्णिमा पद्मे श्री राजतिलक सूरिणा  
मुपदेशेन ।

[ 1938 ]

सं० १५२५ वर्षे मार्ग सु० ९ धागर वाति प्राग्नाट सा० वाया चा० गाऊ पुत्र सा०  
मासाकेन चा० आळू पुत्र पर्वत चा० नार्ई प्रमुख कुटुंबयुगेन स्वश्रेयमे श्री शांतिनाथ त्रिं०  
का० प्र० तपा श्री मोमसुंदर सूरि शिष्य श्री रुद्रनागर सूरिजिः ।

( १३० )

[1939]

संवत् १५३ . . . . । व० वैशाख सुदि ३ शनौ श्री संडेरे गछे उ० टप गोत्रे २ २  
दद्वहण दे गोरा जा० मद्वहा दे पु० आद्वहा जा० करआ जा० आनूण दे पु० तोळा श्रे०  
पुन्यार्थ वासुपूज्य विंशं का० . . . ।

[ 1940 ]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे उकेश वंशे जाजा गोत्रे सा० धर्मा जा०  
दे पुत्र सा० काजा सुआवकेण जा० नोजा प्रमुख परिवार सहितेन श्री श्रेयांस विंशं  
प्र० खरतर गछे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[ 1941 ]

संवत् १५३७ वर्षे ज्येष्ठ सु . . . . . माला जा० माला दे सुत केद्वहा जा० सिवा  
पोचकेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रज विंशं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री -  
सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1942 ]

संवत् १६३७ वर्षे वैशाख सुदि १३ रवौ श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री नागर झाती  
सा० पना जार्या कीळादे सुत सा० होसा जार्या वा । हांसलदे नाम्ना श्री आदिनाथ  
तीर्थी करापितं । श्रीमत्तपा गछे चट्टारक प्रभु श्री हीर विजय सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।  
जवतु ॥

[ 1943 ]

॥ संवत् १६७५ वर्षे वैशाख सुदि ७ गुरुवासरे . . . . . वास्तव्य उकेश झातीय व०  
साह यांदसा जा० प्रजा सुता जोआ . . . . . सुत हेमा कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनि . . . .  
तपा गछे ज० श्री हीरविजय सूरि ज० श्री विजयदेव सूरिश्वर . . . . . ।

[ 1944 ]

संवत् १७७७ माघ सु० ५ गुरुदिने आचार्य श्री हेमकीर्तीः तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः

( १३९ )

अयोतकान्वये साधु माना जा० फीनाही तयोः पुत्राः साधु कौला चूला कौला जार्या सुनुना  
तयो पुत्र कीन्हा जार्या बंदो पुत्र दासू वस्तुपाख नित्यं प्रणमति ॥

चौवोशी पर ।

[ 1945 ]

- ( १ ) ॐ संवत् ११४२ मार्ग सु० ७ सोमे श्री सांबदेवा धंमके (?) . . . जासख भावंक  
पुत्रि  
( २ ) कया भीमत्थासिकया श्रेयोर्षं चतुर्विंशति पटकः कारितः ॥  
( ३ ) ( विंवं ) शं० वि० . . . . चाळ । का० प्र० तपा गळे ॥

चौवीसी पर ।

[ 1946 ]

॥ सं० १५६५ वै० शु० ७ शनौ श्री नटोपद्र वास्तव्य श्रीश्रीमाख ज्ञातीय सा० कान्हा  
जार्या फुतिगदे सुता सा० मेघा जा० वारधाई सुत रूपा बीमादि सकुटुंब युतया सा० राजा  
जार्या बीमाई सुता राकू नाम्न्या श्री अनंतनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गळे श्री सोम  
सुंदरसूरि संताने श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

ईंकार यंत्र पर ।

[ 1947 ]

॥ संवत् १६७७ वर्षे पोत मासे १० दिने श्री वृहत् खरतर गळे श्री जिनराज सूरि  
विजय राज्ये चंदा पूम्यां ओसवाल ज्ञातीय नाहटा गोत्रे सा० सहसराज पुत्र सा० सिंघ-  
राज तत्पुत्राः सा० श्री चंद संवत् १ सा० सधारण सा० श्री हंस सा० करसण हासा सधा-  
रण जार्या सहयदे सुत तत्पुत्रा सहसकरण सुमति सहोदर शुजकर प्रतिष्ठितं श्रीमन्  
श्री परानयन सुहगुरुणा ॥ हितं कारापितं ॥

बावन जिनालय की देहियों के पाट पर ।

[ 1048 ]

- ( १ ) संवत् १०३९ ( व ) में श्री संमेरक गढे श्री यशोजङ्ग सूरि संताने श्री स्वामी चार्या . . . . .
- ( २ ) . . . . प्र० ज० श्री यशोजङ्ग सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ विंभं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ चंद्रेण कारितं . . . . .

[ 1049 ]

- ( १ ) ॐ संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्री चित्र गढे श्री जङ्गेश्वर राटजरीय वंशे
- ( २ ) श्रे० जीम अर्जुन करवट श्रे० वूना पुत्र श्रे० घयजा धांधल पासण जदादि कुटुंब समेतैः . . . . .
- ( ३ ) य प्रतिमा कारिता । प्रति० श्री जिनेश्वर सूरि शिष्यैः श्री जिनदेव सूरिजिः

[ 1050 ]

- ( १ ) ॐ संवत् १३१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री कोरंटक गढे श्री नन्दाचार्य संताने .
- ( २ ) सा० जीमा पुत्र जिसदेव रतन अरयमदन कुंता महणराव मातृ लाठी विंभं ( कारि )
- ( ३ ) ( ता ) । प्रतिष्ठितं । श्री सर्वदेव सूरिजिः ॥

[ 1051 ]

- ( १ ) ॥ ( संवत् १३१७ ) ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री संमेरक गढे प्रतिवद्ध चैत्याज्ञये श्री यशोजङ्ग सूरि संताने श्रे० साढ देव पुत्र मह सामंत मह आसपाखेन पु० धांधल सा० . .
- ( २ ) . . . . ( श्रे ) योर्थ श्री संजवनाथ विंभं देवकुलिका सहितं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरि शिष्यैः ईश्वर सूरिजिः ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥

( १४१ )

[ 1052 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३९ वर्षे फागुण सुदि ७ शनौ नां देवान्वये साधु षडमदं व सुत संघपति साधु श्री पासदेव जार्या पेढी पुत्राश्चत्वारः सा० देहड सा० काजल रउड  
( २ ) ढाहड पौत्र जिणदेव दिवधर प्रभृतिजिः देवकुञ्जिका सहितं श्री सुमति नाथ विंशं का० प्र० वार्दीड श्री धर्मघोष सूरि गढे श्री मुनिचंड सूरि शिष्यैः श्री गुणचंड सूरिजिः ॥ ७ ॥

[ 1053 ]

- ( १ ) ॥ ॐ नमः ॥ संवत् १३३९ फागुण सुदि ७ शनौ श्री राज गढे साधु नेमा सुत धार तत तनुज साधु नाहड तत्पुत्राखयो यथा सा० काकड जार्या नान्दी पुत्र पाढहा ॥  
( २ ) ना० धर्मसिरि देपाख जार्या देवश्री तथा सा० नरपति पत्नी छडतू छि० पत्नी नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाख जार्या हीरा देवी छि० हरिसिदि पुत्र महीपाख ॥  
( ३ ) देव तू० हिमश्री सा० कुमारसिह तथा सा० तेजा जार्या लीटू पुत्र धरणिंग पून सीह एतस्मिन्ननुक्रमे पितृ सा० नरपति श्रेयसे सा० हरिपाखेन श्री पंके ॥  
( ४ ) र गढे प्रतिवड श्री पार्श्वनाथ चैत्य देवकुञ्जिका सहितं श्री शांतिनाथ विंशं का० प्र० वार्दीड श्री धर्मघोष सूरि षट्क्रमे श्री ध्यानंद सूरि शिष्यैः श्री अमरप्रत सूरिजिः ॥

[ 1054 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ सं० १३३९ वर्षे फा० सुदि ७ शनौ श्री राज गढे सा० नेमा सुत सा० धार सत सुत सा० ढाहड तत्पुत्राखयो यथा सा० काकड जार्या नान्दी पुत्र पाढहा ना० ॥  
( २ ) धर्मसिरि देपाख जार्या देवश्री पुत्र तथा सा० नरपति जार्या छडतू छि० नायक देवा पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाख पत्नी हांगदेवी छि० हरिसिदि पुत्र महीपा-  
( ३ ) छ देव तू० हेमश्री कुमारसीह तथा सा० तेजा जार्या लीटू पुत्र महीपा पूनमाड

भावन जिनालय की देहियों के पाट पर ।

[ 1948 ]

- ( १ ) संवत् १०३९ ( व ) पें श्री संकरक गढे श्री यशोजङ्ग सूरि संताने श्री स्वामा (?)  
चार्या . . . . .
- ( २ ) . . . . प्र० ज० श्री यशोजङ्ग सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ विंभं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ पूर्व-  
चंद्रेण कारितं . . . . .

[ 1949 ]

- ( १ ) ॐ संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्री चित्र गढे श्री जङ्गेश्वर संताने  
राटजरीय वंशे
- ( २ ) श्रे० नीम अर्जुन कम्बट श्रे० वूना पुत्र श्रे० घयजा धांधल पासज जदादिजिः  
कुटुंब समेतैः . . . . .
- ( ३ ) थ प्रतिमा कारिता । प्रति० श्री जिनेश्वर सूरि शिष्यैः श्री जिनदेव सूरिजिः ॥

[ 1950 ]

- ( १ ) ॐ संवत् १३१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री कोरंटक गढे श्री नन्नाचार्य संताने . . .
- ( २ ) सा० नीमा पुत्र जिसदेव रतन अरयमदन कुंता महणराव मातृ लाठी श्रेयोर्थ  
विंभं ( कारि )
- ( ३ ) ( ता ) । प्रतिष्ठितं । श्री सर्वदेव सूरिजिः ॥

[ 1951 ]

- ( १ ) ॥ ( संवत् १३१७ ) ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री संकरक गढे प्रतिवज्जु चैत्यात्रये श्री यशो-  
जङ्ग सूरि संताने श्रे० साढ देव पुत्र मह सामंत मह आसपाखेन पु० धांधल सा० . .
- ( २ ) . . . . ( धे ) योर्थ श्री संजवनाथ विंभं देवकुलिका सहितं कारितं प्रतिष्ठितं श्री  
शांति सूरि शिष्यैः ईश्वर सूरिजिः ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥

( १४१ )

[ 1952 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३९ वर्षे फागुण सुदि ७ शनौ नां देवान्वये साधु षडमदेव सुत संघपति साधु श्री पासदेव जार्या पेढी पुत्राश्चत्वारः सा० देहड सा० काजल रजल
- ( २ ) गहड पौत्र जिणदेव दिवधर प्रभृतिजिः देवकुलिका सहितं श्री सुमति नाथ विंशं का० प्र० वार्दीज श्री धर्मघोष सूरि गढे श्री मुनिचंद्र सूरि शिष्यैः श्री गुणचंद्र सूरिजिः ॥ ठ ॥

[ 1953 ]

- ( १ ) ॥ ॐ नमः ॥ संवत् १३३९ फागुण सुदि ७ शनौ श्री राज गढे साधु नेमा सुत चार सत तनुज साधु नाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकड जार्या नान्दी पुत्र पादहा ॥
- ( २ ) सा० धर्मसिरि देपाख जार्या देवश्री तथा सा० नरपति पत्नी लखतू द्वि० पत्नी नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाख जार्या हीरा देवी द्वि० हरिसिद्धि पुत्र महोपाख ॥
- ( ३ ) देव तृ० हिमश्री सा० कुमारसिंह तथा सा० तेजा जार्या लील पुत्र धरणिंग पुन सीह एतस्मिन्ननुक्रमे पितृ सा० नरपति श्रेयसे सा० हरिपाखेन श्री पंके ॥
- ( ४ ) र गढे प्रतिवद्ध श्री पार्श्वनाथ चैत्य देवकुलिका सहितं श्री शांतिनाथ विंशं का० प्र० वार्दीज श्री धर्मघोष सूरि षट्क्रमे श्री ध्यानंद सूरि शिष्यैः श्री अमरप्रत सूरिजिः ॥

[ 1954 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ सं० १३३९ वर्षे फा० सुदि ७ शनौ श्री राज गढे सा० नेमा सुत सा० चार सत सुत सा० गहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकड जार्या नान्दी पुत्र पादहा सा० ॥
- ( २ ) धर्मसिरि देपाख जार्या देवश्री पुत्र तथा सा० नरपति जार्या लखतू द्वि० नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाख पत्नी हीरादेवी द्वि० हरिसिद्धि पुत्र महोपाख ॥
- ( ३ ) ल देव तृ० हिमश्री कुमारसीह तथा सा० तेजा जार्या लील पुत्र धरणिंग पुनसीह ॥



- पुत्रादि धर्म कुटुंब समुदये पितृ सा० काकढ श्रेयसे सा० पाट्टहाकेन श्री  
( ४ ) पंडेर गढे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये देवकुलिका श्री आदिनाथश्च कारितं प्र० वार्दींद्र  
श्री धर्मघोष सूरि पट्टकमे श्री आनंद सूरि शिष्य अमलप्रज्ञ सूरितिः ॥

[ 1955 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १३९९ वर्षे पौष सुदि ७ रवौ श्री चित्रकूट स्थाने महाराजाधिराज पृथ्वी-  
चंद्र . . . . .  
( २ ) श्री मालदेव पुत्र श्री वणवीर सत्कं सिखइदार महमद देव सुहृड सीह चउंनरा  
सत्कं पुत्र . . . . .  
( ३ ) दिवं गतं तस्य सत्कं गोमट्ट कारापितं : ॥

[ 1956 ]

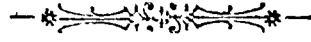
- ( १ ) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १४९१ वर्षे ॥ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ बुध-  
वारे श्रीमाल ज्ञातीय मळठिया गोत्रे सा० ठाहूर सा० धाना जा० इट्टा पुत्र सं०  
हेमराज सं० धिरराज सं० खोलू सं० ठाडपाल कु . . . . .  
( २ ) . . . दे पुत्र सा० हेमराज पुत्र समुद्रपाल चार्या . . . . श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंव  
कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनप्रज्ञ सूरि अन्वये । श्री जिनसर्व  
सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरितिः ॥

[ 1957 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ सं० १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ बुधवारे श्री ऊकेश वंशे नाहट शाखायां ।  
सा० माजण पुत्र सा० व  
( २ ) एवीर पुत्र सा० जोमा । वीसन्न रणपाल प्रमुख पौत्रादि परिवार सहितेन श्री  
करहेटक स्थाने श्री पार्श्व  
( ३ ) नाथ जुषने श्री विमलनाथ देवस्य देवकुलिका कारापिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री खरतर  
गढे श्री जिनवर्द्धन सू-

( २४३ )

- ( ४ ) शीणामनुक्रमे श्री जिनचंद्र सूरि पढकमलमार्तंडमंडलिः श्री मज्जिनसागर सूरिजिः  
॥ शिवमस्तु ॥
- ( ५ ) वरसंग देवराज पुन्यार्थः ॥



## नागदा - भेवाड़ ।

श्री शांतिनाथ जी का मंदिर ।

सूक्ष्मनायक की श्वेत पषाण की विशाल मूर्ति की चरण चौकी पर ।

[ 1958 ]\*

- ( १ ) संवत् १४९४ वर्षे माघ सुदि ११ गुरुवारे श्री  
( २ ) मेदपाट देशे श्री देवकुल पाटक पुरवारे नरेश्वर श्री मोकल पुत्र  
( ३ ) श्री कुंजकर्ण जूपति विजयराज्ये श्री उंसवंसे श्री नवलक्ष शाप मंडन साठ लक्ष्मी  
( ४ ) धर सुत साठ खाधू तत्पुत्र साधु श्री रामदेव तद्भार्या प्रथमा मेला दे छिनीया  
माढहण दे । मेला दे कुक्षि संचूत  
( ५ ) साठ श्री सहणपाल । माढहण दे कुक्षिसरोजहंसोपम श्री जिनधर्मकर्पूरवानस्य  
धीनुक साठ सारंग तदंगना हीमा दे लखमा दे  
( ६ ) प्रमुख परिवार सहितेन साठ सारंगेन निजजुजापार्जिते लक्ष्मी सफली करगार्थ  
निरुपममञ्जुतं श्रीमहत् श्री शांति जिनवर विवं सपरिकरं कारितं  
( ७ ) प्रतिष्ठितं श्री वर्द्धमानस्वाम्यन्वये श्री मखरतर गठे श्री जिनगज सूरि पदे श्री  
जिनवर्द्धन सूरि त (स्त) त्पदे श्री जिनचंद्र सूरि त (न्) त्पदेपूर्वाचमनसिका म.

\* यह लेख " भावनगर द्वापरिकाल " पृ: ११२-१२-वें अंक " देवकुल-मंडल " पृ: १६ नं: १८ में प्रकाशित हुआ है ।

हस्तकरावतारैः श्री मञ्जिनसागर सूरिभिः ॥

- ( ७ ) सदा वन्दंते श्रीमद् धर्ममूर्ति उपाध्यायाः घटितं सूत्रधार मदन पुत्र धरणा सोम-  
पुराध सूत्रधारः रोमी जुंरो रुथोवीकाच्यां ॥ आचंद्रावर्क नंद्यात् ॥ श्रीः ॥ ठ ॥

सज्जामंडप के बायें तर्फ स्तम्भ पर ।

[ 1959 ]

- ( १ ) संवत् १७७९ वर्षे वैशाख सुदि ११ सोमे साहाजी श्री जेठमल जी ताराचंद जी  
कोठारी जात श्री . . . . . साहजी श्री उदेचंदजी . . . . .

पाषाण की टूटी चौबीसी पर ।

[ 1960 ]

- ( १ ) ॐ सं० १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुधवारे जकेश वंशे नवलदा गोत्रे साधु श्री  
रामदेव पुत्रेण सादृष्ट्ये देवि पुत्र . . . . .

- ( २ ) कारकेण निजकार्या । जिनशासन प्रजाविकाया हेमा दे श्रीविकाया पुण्यार्य श्री  
सप्ततिशतं जिनानां कारितं . . . . .

- ( ३ ) तत्पदे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

—\*~\*~\*~\*~\*~\*—

## देलवाड़ा-मेवाड़ । \*

श्री पार्श्वनाथजी का बड़ा मंदिर ।

मूखनाथकजी पर ।

[ 1961 ]

सं० १४७६ श्री पार्श्वनाथ विंबं सा० सहणा . . . . .

\* यह स्थान प्राचीन है । “ देव कुलपाटक ” नामकी पुस्तक में लेखों के साथ यहां का वर्णन है ।

( १४५ )

पुंडरिकजी के मूर्ति पर ।

[ 1962 ]

संवत् १६७९ वर्षे आषाढ वहुल ४ शनौ देलवाड़ा वास्तव्य शवर गोत्रे ऊकेश झातीय  
इन्द्रशाखीय सा० मानाकेन जा० हीरा रामा पुत्र काया रांमा फया युतेन स्वश्रेयसे श्री  
पुंडरीक मूर्तिः कारापितं प्रतिष्ठितं संभर गछे ज० श्री मानाजी केसजी प्र० ॥

आचार्यों के मूर्ति पर ।

[ 1963 ]

.....  
... जिनरतन सूरिगुरु मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता . . .  
.....

[ 1964 ]

संवत् १४७६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ दिने नवलदा शाखीय सा० रामदेव नार्यया श्री मेप्रा  
देव्या श्री जिनवर्द्धन सूरि मूर्तिः कारिता प्र० श्री जिनचंद्र सूरिनिः ।

[ 1965 ]

संवत् १४७६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ सा० रामदेव नार्या मेप्रा देव्या श्री जिनवर्द्धन सूरि  
मूर्तिः कारिता प्र० श्री खरनर गछे श्री जिनचंद्र सूरिनिः ।

श्वेत पापाय की कारोत्तम मूर्तिदीर्घ पर ।

[ 1966 ] \*

( १ ) ॥ १० ॥ संवत् १४७६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ . . . . . वदन प्रसाद न सिम प्र १ ३  
मार्तीय वरव० सांजा ज०

\* यह मूर्ति प्रोफेसर नारायण शर्मा के द्वारा की गई है।

( १४६ )

- ( १ ) छाठि पुत्र देवा जार्या देवल दे पुत्र ३ व्यव . . . . . कुरंपाल सिरिपति नर दे  
धीणा पंडित लषमसी आ-
- ( ३ ) त्मश्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ जिनयुगल कारापितः प्रतिष्ठितः कठोलीवाल गठे पूर्णिमा  
पक्षे द्वितीय शाखा-
- ( ४ ) यां जहारक श्री जडेश्वर सूरि संताने तस्यान्वये ज० श्री रत्नप्रज्ञ सूरि तत्पुत्रे  
जहारक श्री सवाण-
- ( ५ ) द सूरिणा शिष्य लषमसीदेन आत्मश्रेयोर्थ कारापितः प्रतिष्ठितः ज० श्री सर्वा-  
णद सूरि-
- ( ६ ) णामुपदेशेन ॥ मंगलाज्युदयं ॥

[ 1967 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रमादित्य संवत् १५०० वर्षे वैशाख शुदि ३ श्रीमाल-  
ज्ञातौ मांथलपुरा गोत्रे सा०
- ( २ ) देहड़ संताने सा० काला तत्पुत्र सा० मेला केला मेला पुत्र सा० सोमा स० सा-  
यरकेन पुत्र हुंफण पुत्र
- ( ३ ) तोला सोमा पुत्र महिपति हुंगर जाषर सायर पुत्र बाहा पासो हुंफण पुत्र वस्त-  
पाल त . . . . .
- ( ४ ) ल रत्नपाल कुमारपाल तोला पुत्र नरपाल नरपति प्रभृति पुत्र पौत्रादि सहितेण

पहों पर ।

[ 1968 ]

सं० १४९४ वर्षे फाट्गुन वदि ५ प्राग्घाट सा० देपाल पुत्र सा० सुहडसी जार्या सुहडा दे  
पुत्र पीठल्लिआ सा० करणा जार्या चनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा काला  
प्रातृ सा० हीसाकेन जार्या लाखू पुत्र आमदत्तादि कुटुंबयुतेन श्री द्वासतति जिनपट्टिका  
कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपागठनायक श्री सोमसुंदर सूरजिः ॥ श्रीः ॥

( १४९ )

[ 1969 ]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ शु० ९ प्राग्वाट सा० देपाल पु० सा० सुहृडसी जा० सुहृडा दे  
सुन पीठलिखा सा० करणा जार्या वनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा ही रा होसा काला  
सा० धर्माकेन जा० धर्माणि सुन महसा साक्षिन सहजा सोना साजणादि कुटुंबयुतेन एद  
जिनपट्टिका कारिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री तपागह्याधिराज श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री जय  
चंद्र सूरिजिः ॥

[ 1970 ]

सं० १५०६ फा० शुदि ए श० सा० सोमा जा० रूडी सुत सा० समधरेण ज्रातृ फाफा  
सोधर तिहुणा गोविंदादि कुटुंबयुतेन तीर्थ श्री शंभुंजयगिरिनारावतार पट्टिका का० प्र०  
श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

**भोंयरे सैं ।**

सूदननायकजी पर ।

[ 1971 ]

१४९४ जकेश सा० वाछा राणी पुत्र वीसल खीमाई पुत्र धीरा पत्नी सा० राजा रत्ना  
दे पुत्री माद्वहण देव का० आदि विंवं प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

पट्ट पर ।

[ 1972 ]

सं० १४७५ वै० शु० ३ जकेश वंरा सा० वाछा नारां राजा दे पुत्र सा० सोमसुंदर सूरि  
सा० रामदेव जार्या मेळा दे पुत्रा सं० खीमाई नारायण पुत्र सा० सोमसुंदर सूरि शिष्य  
सुतया श्री नन्दोश्वर पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः तपागह्याधिराज श्री सोमसुंदर सूरि शिष्य श्री जय  
सुंदर सूरिजिः स्थापितः तपा श्री सुमसुंदर सूरि शिष्य श्री जयसुंदर सूरि

( १४७ )

[ 1973 ]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ शु० ७ प्राग्वाट सा० आका जा० जसल दे चांपू पुत्र सा०  
देव्हा जूठा सोना षीमायैः चतुर्विंशति जिन विंशं पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुंदर  
सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिजिः ॥

## देहरी में ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1974 ]

सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे श्री विमलनाथ विंशं कारितं जानसिरि श्राविकया ।  
प्र । श्री जिनसागर सूरिजिः । श्रीमाल ज्ञातीय चांमिया गोत्रे ।

पट्टों पर ।

[ 1975 ]

सं० १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १४ बुधे श्री जकेश वंशे नवलक्षा शाषायां सा० राम जार्या  
नारिंग दे पुण्यार्थ श्री श्री सिद्धिशिलाकायां श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि  
पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

[ 1976 ]

( १ ) ॥ संवत् १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ॥ जकेशवंशशृंगारो जुवन पास इत्यञ्जत् ।  
जुवनं पासयत् यः खुंनामनिन्ये (?) यथार्थतः ॥ १ ॥ तदन्वये ततो जात . . .  
तक . . . . .

( २ ) त्यः पृथु प्रतापी ननु गोप तापी । जिनांधिरक्तो गुरुपादलक्ष्णो । गुणानुरागी हृदय  
विरागी ॥ ४ ॥ युगलकं ॥ तस्यांगना . . . ग कुरंगनेत्रा सीतेव . . . . .

( ३ ) धार महितेन ना० महणा सुश्रावकेण जिनमातु पुण्यार्थ श्री वासुपूज्य विंशं चतु  
र्विंशति पट्टक विंशति विहरमानादि . . . . .

( १४७ )

[ 1977 ]

- ( १ ) संवत् १४७१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे नवलक्ष गौत्रे सा० रामदेव जार्या भेष्ठा  
( २ ) दे पुत्र सहणपात्र जार्या नारिगं देव्या श्री . . . . जिन मूर्ति विंवा नि प्र-  
( ३ ) तिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरि पेठ श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

दरवाजों पर ।

[ 1978 ]

- ( १ ) संवत् १४७७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवासरे . . . . .  
( २ ) . . . . .

[ 1979 ]

- ( १ ) श्री ॥ सं० १४७३ नागपुरे जकेश वंशे सा० हीरा जा० धर्मिणि पुत्र्या सरस्वती  
पत्तनदासि सा० हीरा सुत सा० संग्राम सिंह जार्याया सम्यक्त्वदेशविरत्यादि गुण  
( २ ) युक्त्या श्रा० देऊ नाम्न्या न्यायोरा(जि)तं निजवित्त व्ययेन तपापद्दे श्रीयादिदे-  
वप्रासादे श्रीपार्श्वनाथ देवकुसिका कारिता प्र० गठनाथक श्रीसोमसुंदर मूरिजिः ।

[ 1980 ]

- ( १ ) सं० १४७४ वर्षे श्री अणहिल्लपुरवासी श्री श्रीमासहानि सा० समरमा! पुत्रेण मभः  
सोमाकेन संप्रति अहमदावादपुरवासी सनार्या . . . . .  
( २ ) सुत मो० दाघादि कुटुंबयुनेन श्री तपापद्दे श्री यादिनाथ प्रामादे श्री यात्रिन  
देवकुसिका कारिता प्रनिष्ठिता श्री तपापद्दे श्री सोमसुंदर मूरिजिः ।

[ 1981 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ संवत् १४७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ बुधे नवलक्ष गौत्रे  
( २ ) सा० रामदेव जार्या भेष्ठा दे अदिक्का निजसुपार्य  
( ३ ) . . . . . श्री यादिनाथ प्रामादे कारिता . . . . .



( १५० )

( ४ ) श्री खरतर गह्वे श्री जिनवर्द्धन सूरि षट्ठे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[ 1982 ]

( १ ) ॥ संवत् १४८६ वर्षे कार्तिक सुदि ११ सोमे ॥ ऊकेश ज्ञातीय सा० ठाहड़ जार्घा सुषुव दे पु० राना साना सलषाके(न) निज मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ प्रासादे श्री सुमतिनाथ देव प्रतिमा

( २ ) कारिता ॥ ऊकेश गह्वे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं । श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥  
ठ ॥ श्री ॥ मल्लधारीयकैः ॥

[ 1983 ]

( १ ) सं० १४८८ फा० सु० ८ श्रीमाल ज्ञा० सा० . . . . .

( २ ) देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता तपागह्वनायक श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनि सूरिजिः ॥ श्री अणहिलपुरपत्तन वास्तव्य

[ 1984 ]

( १ ) ॥ ॐ ॥ संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधवारं ऊकेश वंशे श्री नवलखा गोत्रे श्री रामदेव जार्घा श्राविका मेला दे पुत्र साधु श्री सहणपाल जार्घा नारिग दे श्राविकया पुत्र सा० रणमल्ल सा० रणधीर रणत्रम सा० कर्मसी पौत्रादि सहितया निज पुण्यार्थं जिनानां

( २ ) . . . . .  
श्री जिनराज सूरि षट्ठे श्री जिनवर्द्धन सूरि तत्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टपूर्वा-  
चल श्रीयुत श्री जिनसागर सूरिजिः ॥ शुभं चवतु ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥

नये मंदिर में ।

मूखनायकजी पर ।

[ 1985 ]

॥ सं० १४९१ वर्षे वैशाख सुदि २ श्री पार्श्वनाथ विंशं ॥ सा० ससुदय वठस्य ॥

( १५१ )

कायोत्सर्ग मूर्तियों पर

[ 1986 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ सं० १४६४ वर्षे आषाढ शु० १३ दिने गूर्जर ज्ञानीय ज-  
( २ ) एसाखी साषण सुत सं० जयतल सुत सं० सादा चार्या सूमल  
( ३ ) दे सुत सं० वरसिंह ब्राह्म सं० जेसाकेन चार्या शृंगार दे पुत्र  
( ४ ) हरिचंद्र प्रमुख सकल कुटुंबसहितेन स्वश्रेयसे प्रभु  
( ५ ) श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरिजिः ॥

[ 1987 ]

॥ ॐ ॥ संवत् १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ गुरुवारे श्रीमाख ज्ञानीय मंत्रि . . . एं प्रा  
सुत नंदिगेत्त । सुत पुत्र सा० आसा सुभ्रावकेण श्री पार्श्वनाथ विंन स्वपुण्यार्थे कारितं  
श्री खरतर गढे श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[ 1988 ]

॥ ॐ ॥ सं० १३०१ वैशाख वदि ५ श्रीपत्तने श्री शांतिनाथ विधि चैत्ते श्री जिनचंद्र  
सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिजिः श्री जिनप्रबोध सूरि मूर्तिः प्रतिष्ठिता ॥ कारिता च  
सा० कुंभरपाल रत्नैः सा० महणसिंह सा० देपाल सा० जगसिंह सा० मेहा सुभ्रावकैः सप-  
रिवारैः स्वश्रेयार्थं ॥ ठ ॥

[ 1989 ]

संवत् १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे नवखरु गोत्रे सा० महणपाखेण स्वपुण्यार्थे श्री  
जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिणां मूर्ति प्र० श्री जिनलानगर मूर्तिः ॥

( १५२ )

## ऋषभदेवजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1990 ]

सं० १५१० पौष वदि १० घांघ गोत्रे सा० सारंग जा० सुहानिणि सु० सा० काळू सा०  
चाहड़ नामाच्यां पुण्यार्थ श्री सुमतिनाथ विंबं का० प्र० श्री मखधरि गळे श्री विद्यासागर  
सूरि पढे श्री गुणसुंदर सूरिजिः ॥

[ 1991 ]

॥ संवत् १५१५ वर्षे माह वदि ए शुके श्री संडेर गळे ज० काश्यप गोत्रे सा० षेता पु०  
बीमा जा० बीमसिरि पु० चुडा जा० जरमी पु० पूजा नयमा वीढा रंगा सहितेन श्री नेमि-  
नाथ विंबं कारितं प्रति० श्री ईश्वर सूरिजिः ॥

[ 1992 ]

॥ सं० १५७२ वर्षे वैशाख सुदि पंचमी सोमे । ज० झा० काठड़ गोत्रे । दो० ऊदा जार्या  
जमा दे पु० दो० रूपा दो० देपा अमर नाथा । रंगा देवा जार्या दाडिम दे पु । पहिराज  
सादहा रायमद्व युतेन सुपुण्यार्थ श्री शांतिनाथ विंबं कारितं श्री संडेर गळे श्री शांति  
सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1993 ]

ॐ ॥ स्वस्ति सं० १४६९ वर्षे माघ . . . . ६ रवौ श्रीमाख वंशे नावर गोत्रे ठ० ऊहड़  
संताने श्री पुत्र मंत्रि करम . . . . अयोर्थ सधु त्रातृ ठ० देपाखेन त्रातृव्य ठ० जोजराज  
ठ० नयणासिंह जार्या सादह दे सहितेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री स्वरतर  
गळे श्री जिनचंद्र सूरिजिः देवकुसुपाटके ।

( १५३ )

श्याम पाषाण की पाडुका पर ।

[ 1994 ]

संवत् १४९१ वर्षे माघ वदि ५ दिने बुधे उकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्री रामदेव  
चार्या मला दे तत्पुत्र साधु श्री सहणपालेन चार्या नारिंग दे पुत्र रणमह्लादि सहितेन  
देवकुलपाटके पूर्वाचलगिरा श्री शत्रुञ्जयावतार मोरनाग कुटिका सहिता प्रतिष्ठा श्री खरतर  
गढे श्री जिनवर्द्धन सूरि पढे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पढे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

पढे पर ।

[ 1995 ]

॥ ॐ ॥ संवत् १४९३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवारे सा० आंवा पुत्र सा० वीराकेन स्वमातृ  
आंवा आंविका स्वपुण्यार्थ ॥ श्री चतुर्विंशति जिन पटकः कारितः श्री खरतर गढे प्रति-  
ष्ठितं श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[ 1996 ]

संवत् १४६९ वर्षे माघ शुदि ६ दिने उकेश वंशे सा० सोपा संताने सा० सुदृटा पुत्रेण  
सा० नान्हाकेन पुत्र वीरमादि परिवारयुतेन श्री जिनराज सूरि मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता  
श्री खरतर गढे श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः ।

[ 1997 ]

सं० १४६९ वर्षे सा० रामदेव चार्या मेला दे आंविक्या स्वद्रान्द्रेद्वयया श्री जिन-  
देव सूरि शिष्याणां श्री मेरुनंदनोपाध्यायानां मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री जिनवर्द्धन  
सूरिजिः ॥

( १५४ )

श्री पार्श्वनाथजी की बसी ।

पंचतीर्थों पर ।

[ 1998 ]

॥ सं० १२०१ वर्षे आषाढ सुदि १० रवौ श्री देवाजिदित गठे श्री शील सूरि संताने  
आमण पुत्रेण कनुदेवेन त्रातृ सुंजदेव श्रेयोर्थं आत्मश्रेयोर्थं च प्रतिमा कारिता ।

तपागठ का उपासरा ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1999 ]

सं० १२७३ । गोसा त्रातृ जेजा जार्या हेमा - . . . . श्रेयोर्थं प्रतिमा कारिता ॥

[ 2000 ]

सं० १४०४ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उपकेश वंशे नोसतिकि (?) शाखायां लानू-  
वाल जा० माढ्हण दे लापाकेन त्रातृ पुंजा जा० मेला दे . . . . . पितृ श्रे० शांतिनाथ विंब  
कारितं प्र० श्री जयप्रज सूरिजिः ।

[ 2001 ]

ॐ सं० १४९४ वैशाख त्रदि ७ बुधे . . . . . विंब कारितं श्री . . . . . ।

[ 2002 ]

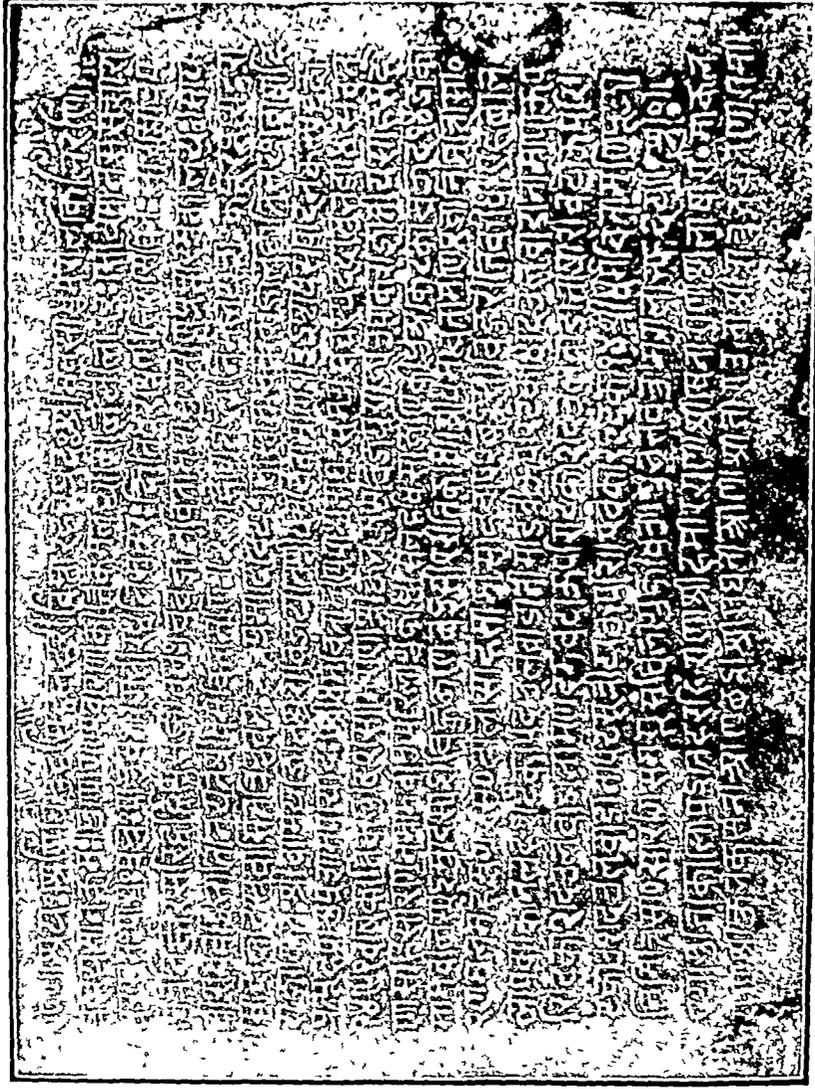
॥ ॐ सं० १५२० वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ शुक्रे ज० गूगलिया गोत्रे सा० सूरु जा० सुहमा दे  
पु० धणपाल जा० लाठल दे . . . . . हा निमित्तं श्री शीतलनाथ विंब कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री संडेर गठे श्री वशोज्ज सूरि संताने प्रतिष्ठितं श्री शालिज्ज सूरिजिः ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[ 2003 ]

सं० १८०२ आषाड़ सुदि १० श्री रूपननाथ विंब का० हरपा लोत . . . . . ।





DEVALVARHA ( MEWAR ) INSCRIPTION

Dated, V. S. 1491 ( A. D. 1434 )

( १५५ )

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 2004 ]

सं० १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे खरतर गह्वे नाग . . . . मुनिचंद्र शिष्य जव्यराज  
श्रेणि पार्श्वनाथ विंवं . . . . . ।

[ 2005 ]

सं० १३९९ वर्षे माह सु० १३ श्री प्र . . . लू जा० . . . कुंथुनाथ . . . . . ।

## शिलालेख

[ 2006 ]

- ( १ ) ॥ ॥ श्रेयः श्रेणिविशुद्धसिद्धलहरीविस्तारहर्षप्रदः श्री मत्साधुमरालकेलिरणिजिः  
( २ ) प्रस्तूयमानक्रमः । पुण्यागण्यवरेण्यकीर्तिकमलव्यालोलदीलाधरः सोयं मानससत्सरो  
( ३ ) वरसमः पार्श्वप्रभुः पातु वः ॥ १ ॥ गंतीरध्वनिसुंदरः क्वितिधरश्रेणिजिरासेवितः  
सारस्तोत्रप-  
( ४ ) वित्रनिर्जरसरिद्धिष्णुसज्जीवनः । चंचज्ज्ञानवितानजासुरमणिप्रस्तारमुक्तालयः  
सोयं  
( ५ ) नीरधिव . . . ज्ञाति नियतं श्री धर्मचिंतामणिः ॥ २ ॥ रंगजांगतरंगनिर्मल्यशः कर्पूर  
पूरोद्भुरा-  
( ६ ) मोददोदसुवासितत्रिचुवनः कृत्तप्रमादोदयः । जास्वन्मेचककज्जाधुतिजरः शेपाहि-  
( ७ ) राजांकितः श्री वामेवजिनेश्वरो विजयते श्री धर्मचिंतामणिः ॥ ३ ॥ इत्यर्थसंपादन-  
कल्पवृक्षः  
( ८ ) प्रत्यूहपांशुप्रशमे पयोदः । श्री धर्मचिंतामणिपार्श्वनाथः समग्रसंघन्य दृष्टानु दंडं ॥  
४ ॥ संवत्



- ( ए ) १४ए१ वर्षे कार्तिक सुदि ३ सोमे राणा श्री कुंजकर्णविजयराज्ये उपकेश ज्ञातीय साह सह ।
- ( १० ) णा साह सारंगेन मांडवी उत्परे लागू कीधु । सेव्हथि साजणि कीधु अंके टंका चऊद १४ जको
- ( ११ ) मांडवी खेस्यइ सु देस्यई । चिहु जणे वइसी ए रीति कीधी । श्री धर्मचिंतामणि पूजानिमित्ति । सा०
- ( १२ ) रणमल महं मूंगर से० हावा साह साडा साह चांप वइसी विडु रीति कीधी एह बोध
- ( १३ ) लोपवा को न खहइ । टंका ५ देउलवाडानी मांडवी ऊपरि टंका ४ देउलवाडानी मापा उप
- ( १४ ) रि । टंका ३ देउलवाडानी मण हंड वटा उपरि । टंका २ देउलवाडानी षारी वटा ऊपरी ।
- ( १५ ) टंकाज १ देउलवाडानी पटसूत्रीय ऊपरी ॥ एवं कारई टंका १४ श्री धर्मचिंतामणि पूजा
- ( १६ ) निमित्ति सा० सारंगि समस्त संघि लागु कीधज ॥ शुजं जवतु ॥ मंगलाज्युदयं ॥ श्रीः ॥
- ( १७ ) ए आसु जिको लोपइ तहेरहिं राणा श्री हमीर राणा श्री घेता राणा श्री लाया रा० मोकल
- ( १८ ) राणा श्रीकुंजकर्णनी आणठइ । श्रीसंघनी आण । श्रीजीराजला श्रीशत्रुंजयतणा सम ॥

देवी मूर्ति पर ।

[ 2007 ] \*

॥ सं० १४७६ वर्षे मार्ग शु० २० दिने मोढ ज्ञातीय सा० वउहृत्य जार्या साजणि सुत सं० मानाकेन अंबिका मूर्तिः क्यरिता प्रतिष्ठिता श्री . . . . . रिजिः ॥

( १५७ )

## खंडहर उपासरा ।

### शिलालेख

[ 2008 ]

स्यं



चंद्र

७

( ३ )

परमात्मने नमः

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ प्रणम्य श्री सूर्यदेवाय सर्वसुखंकर प्रज्ञो । सर्वलब्धिनिधानस्य तं  
( ३ ) सत्त्वं प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥ मेदपाटे गिरो देसे गिरजागिरस्थानयो तां नगरो उ-  
( ४ ) त्तमा ज्ञेया देवको प्रमपट्टणौ २ तत्र राज्ञा श्रेयो ज्ञेयाः राघवो राज्य मा-  
( ५ ) नयोः षट्दर्शनसदामान्यः श्रेतांवरा अजिभ्रियो ३ श्रीमदंचल ग-  
( ६ ) छेस्था श्री उदयसागर सूरिणा । तस्य आज्ञा कारेण चारित्र रत्न-  
( ७ ) गुर प्रज्ञौ ४ शिष्य लक्ष्मीरत्नस्य साधुमुद्रा सदा सुखी । राजधर्म स-  
( ८ ) नेहादि जिनमंदिर करापितं ५ कोटवर्षचिरंजीवो बहुपुत्र-  
( ९ ) गजवाजिना अचक्षं मेरुऊर्णोयं राज्यं पालति राघवः ६ जे  
( १० ) अन्य राजा स्वईवः लोपतो परदत्तयो नरकं ते नरा जाति ज-  
( ११ ) स्य धर्मस्य अवृथा ७ सं० १७९७ वर्षे माघ सुदि ५ तिथौ शुक्र-  
( १२ ) श्री चतुराजी शिष्य कुशक्षरतन लक्ष्मीरतन उपासरो करा  
( १३ ) यौ श्री पुण्यार्थे । श्री राज श्री राघव देवजी वारके देववाहा  
( १४ ) नगरे श्रीसंघ समस्तां साध अर्थे पं जिलमीग्नन चेष्टा हेमरा-  
( १५ ) ज ऊपासरो करायो वीजो को रहे जणीहे नाय  
( १६ ) मान्यारो पाप है जनी आंचट्या टाज रहेवा पावे नही

( १५८ )

दरवाजे की ठतरी पर का लेख ।

[ 200७ ]

श्री गणेश ... रतन चेला हेम ... कारापितं ॥ साह अषा साह नाराण साह ठाकुरसी  
साह हेमा साह हमीर साह खुना साह सिवा साह हर ... साह फवेल साह मेघा साह  
चोपा साह विरधा कटाच्या चतुरा जीथा सगता ... समसथ धावका ... लषाणा श्री राघ-  
वदेवजी वारको मंदिर कारा ... लक्ष्मीरतन सं० १७०५ माघ सुदि १३ शुक्रे प्रतिष्ठा करावो  
... लक्ष्मीरतन ..... ॥



कलकता ।

श्री थादिनाथजी का देरासर - कुमारसिंह हाल ।

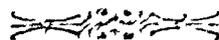
पंचतीर्थियों पर ।

[ 2010 ]

सं० १४६७ वर्षे मागसिर वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय संघ गोवल चार्या माव्हण  
दे तयोः सुतः महमाश्याकेन श्री सुमतिनाथ स्वामी विंवं कारापितं श्री जिनहंस गणि  
श्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः उग्रईज वास्तव्यः ।

[ 2011 ]

संवत् १५२७ वर्षे थापाट सुदि १० बुधे श्री श्री (माल) वंशे ॥ सं० कर्मा चार्या जासु  
पुत्र सं० पीमा चार्या चमकू आविकया पुत्री कर्माई पुण्यार्थं श्री थंचल गछे श्री जयकेसरि  
सुरिणामुपदेशेन चंद्रप्रज स्वामी विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥





( १५८ )

दरवाजे की ठतरी पर कः लेख ।

[ 2009 ]

श्री गणेश ... रतन चेला हेम ... कारापितं ॥ साह अषा साह नाराण साह ठाकुरसी  
साह हेमा साह हमीर साह खुना साह सिवा साह हर ... साह फवेल साह मेघा साह  
त्रोषा साह विरधा कटाच्या चतुरा जीथा सगता ... समसथ धावका ... लषाणा श्री राघ-  
वदेवजी चारको मंदिर कारा ... लक्ष्मीरतन सं० १७०५ माघ सुदि १३ शुके प्रतिष्ठा करावो  
... लक्ष्मीरतन ..... ॥



कलकता ।

श्री थादिनाथजी का देरामर - कुमारसिंह हाल ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2010 ]

सं० १४६० वर्षे मागसिर वदि ११ शुके श्री श्रीमाल ज्ञातीय संघ गोवल जार्या मादृण  
दे तयोः सुतः मद्माइयाकेन श्री सुमतिनाथ स्वामी विंवं कारापितं श्री जिनहंस गणि  
धेयोर्ष प्रतिष्ठितं श्री मूर्तिः उग्रईज वास्तव्यः ।

[ 2011 ]

संवत् १५२० वर्षे थापाट सुदि १० बुधे श्री श्री (माल) वंशे ॥ सं० कर्मा नार्या जाम्  
पुत्र सं० पीसा नार्या चमकृ थाविकया पुत्री कर्माई पुण्यार्थं श्री थंचल गधे श्री जयकेसरि  
मूर्तिमुददेशेन चंडप्रत स्वामी विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥

~~~~~





TIRTHA ABU — Dilwara Temples

( १५६ )

## आबू-रोड ।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर—धर्मशाला ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2012 ]

सं० १५०६ वै० व० ११ शुक्ले श्री कोरंट गढे श्री नन्नाचार्य संताने । उवएस वंशे ।  
शंखवालेचा गोत्रे श्रे० लषमसी जा० सांसल दे पु० रामा जा० राम दे पु० तेजा नाम्ना  
स्वमातापित्रोः श्रेयसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री सांवदेव सूरिजिः ।

चौवीशी पर ।

[ 2013 ]

॥ सं० १५१७ वर्षे माघ सुदि १३ गुरौ श्री उदयसागरगुरुपदेशेन श्रीमाख ज्ञातीय श्रे०  
मेघा जा० माणिकदे सुत श्रे० नाईयाकेन जा० वाढ्हा सु० गहिगा राघव ठाईया तथा  
छि० जा० नामल दे प्रमुख कुंदुबयुतेन श्री संजवनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारिताः प्र० श्री  
वृहत्तपा गढे ज्ञानसागर सूरिजिः ।



## आबू-तीर्थ ।

श्री आदिनाथजी का मंजिर—देखवाड़ा ।

पाषाणकी कायोत्तर्ग मूर्ति पर ।

[ 2014 ]

( १ ) संवत् १४०६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे ५ पंचम्यां तिथौ दुः



( २६० )

- ( १ ) रुदिने श्री कोरंट गढे श्री नन्नाचार्य संताने महं कउंरा  
( ३ ) जार्या महं कुंरदे पुत्र महं मदन नर पूर्णसिंह जाण पूर्णसि-  
( ४ ) रि सुत महं डुहा मं० धांधल मूल मं० जसपाल गेदा रुदा प्रभृति स-  
( ५ ) मस्त कुंदुबं श्रेयसे श्री युगादि देव प्रसादे महं धांधुकेन श्री जिन-  
( ६ ) युगलछयं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नन्न सूरि पढे श्री कक्क सूरिजिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 2015 ]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ सं० रत्ना सं० पन्नाच्यां श्रीशातिनाथ विंबं काण ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2016 ]

सं० १४९१ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे प्राण व्यं लषमण जाण रूड्री पुं जीलाकेन वित्रो  
आत्मश्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रति० ब्रह्माणीय गढे न० श्री उदयाणंद सूरिजिः ।

चौवीशी पर ।

[ 2017 ]

सं० १४०५ प्राग्वाट व्यं कुंर जार्या उम दे पुत्र व्यं मादहाकेन जाण मादहण दे पुत्र  
कीजा जीनादि युतेन श्री सुपार्श्व चतुर्विंशतिका पढः कारिताः प्रतिष्ठितस्तथा गढे श्री  
सोमसुंदर सूरिजिः ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर—अचलगढ़ ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 2018 ]

ॐ सं० १३०२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ए शुक्रे . . . . .





( २६१ )

[ 2019 ]

सा० धन्ना श्रावकेण श्री आदिनाथ विंवां कारितं ।

[ 2020 ]

पं० मांजू श्राविकया श्री सुमतिनाथ कारितं . . . . . ।

[ 2021 ]

श्री खरतर गढे श्री पार्श्वदेवद्वितीयचूमौ पार्श्वनाथ सा० साखा जा० मांजू श्राविका कारितः ।

देवी की मूर्ति पर ।

[ 2022 ]

सं० १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ शुके श्री उकेश वंशे दरडा मोत्रे सा० आसा जा० सोखु पुत्रेण सं० मंडसिकेन जा० हीराई सु० साजण द्वि० जा० रोहिणि प्र० त्रा० सा० पाट्टादि परिवार संयुतेन श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री अंबिका मूर्ति का० श्री जिनचंद्र सूरिनिः ।

श्री कृष्णदेव जी का मंदिर - अचखगढ़ ।

पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्ति पर ।

[ 2023 ]

सं० १३०१ वर्षे . . . . . क्षमरचंद्र सूरि जयदेव सूरिनिः ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2024 ]

सं० १५२० वर्षे आ० सु० २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सा . . . . . जा० रूपिणि सुत सोमा दे जा० वीकमादि कुटुंबयुतेन श्री मुनिबुवननाथ विंवां कारितं प्र० श्री त्रपागमनाथक श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ।

( २६२ )

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 2025 ]

सं० १५१५ फा० सु० ७ शनि रोहियां श्री अर्बुदगिरौ देवड़ा श्री रावधर सायर कृंगर-  
सिंह विजय राज्ये सा० ता जीमर्चैत्ये गूर्जर श्रीमाल राजमान्य सं० मंडन जार्या जोली पुत्र  
सं० शूद्र पु० सं० गदाज्यां जार्या हासी पद्माई सं० गदा जा० आसू पुत्र श्रीरंग वाघादि  
कुटुंबयुताज्यां १०० मन प्रमाण सपरिकर प्रथमजिन विंबं कारितं तपागहनायक श्री सोम-  
सुंदर सूरि पट्टे श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे प्रजाकर  
श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री सुधानंदन सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय  
श्री जिनसोमगणि प्रमुख । विज्ञानं सूत्रधार देवाकस्य श्री रस्तु । कृतं मेवाड़ ज्ञातीय सूत्र-  
धार मिहीपा जा० नागल सुन सूत्रधार देवा जार्या करमी सुत सू० हला गदा हांपा नाखा  
हाना कलाः सहित व्यापायताः ।

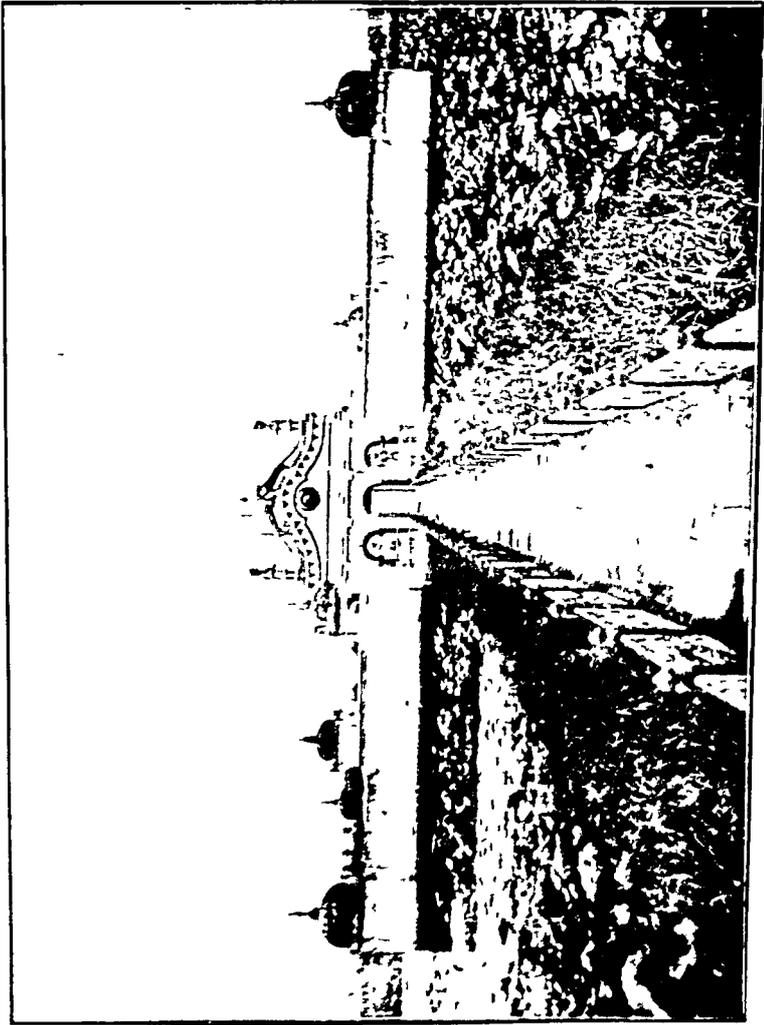
[ 2026 ]

संवत् १५१६ वर्षे वैशाख वदि ४ शुक्ले कृंगरपुर नगरे राजल श्री सोमदास वि० रा०  
तत्प्रधान प्रजावक पुरंदर सा० साजा प्रमुख श्री संघोपक्रमेन . . . . .  
श्री आदिनाथ विंबं प्र० तपागहनायक श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र  
सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि तत्पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय  
जिनहंसगणि प्रमुख सुदरादि शिष्यै परिवार परिवृतः

[ 2027 ]

संवत् १५६६ वर्षे फादुगुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज  
श्री जगमालविजयराज्ये सं० साखिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे जङ्ग-  
प्रासादे श्री सुपार्श्व विंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागह श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री  
कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकट्याण सूरिजिः ज० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परि-  
वार परिवृतैः श्रीरस्तु श्री संघस्य सूत्रधार हरदास ॥





TIRTHA PAWAPURI—JALAMANDIR  
(Front View)

( १६३ )

[ 2028 ]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगसाहबविजयराज्ये सं० साखिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे नन्द-प्रासादे श्री आदिनाथ विंवं श्री संघेन कारित प्र० तपागढ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिजिः न० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्री रस्तु श्री संघस्य । सूत्रधार हरदास ॥



श्री पावापुरी तीर्थ ।

जल मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2029 ]

सं(व)त् ११६० ज्येष्ठ सुदि १ रेनुमा(?) पु० चोराकेनात्मश्रेयोर्थ श्री महावीर विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री अन्नयदेव सूरिजिः

मूलवेदी के दाहिने तर्फ का लेख ।

[ 2030 ]

- ( १ ) सं० ११११ मिः आसिन सुदि १
- ( २ ) श्री मंदिरजी के बीच के फेरी में वः नी
- ( ३ ) वे के फेरी में पत्थर बैठाया नानकचं-
- ( ४ ) इ जीवनदास जैन श्वेतान्धरी के तर
- ( ५ ) फ ते साः कश्चकत्ता शुभं



( २६४ )

सोने के चरण पर ।

[ 2031 ]

सं० १९२३ डूगड़ धनपतसिंह कारापितं सर्व सूरि प्रतिष्ठित (श्री)संघस्य श्रेयसे जवतु ।

दादाजी के चरण पर ।

[ 2032 ]

१९५७ साल मिति अघन वदि १२ सोमवार निहालचंद इंद्रचंद डूगड़ तस्य परिवार  
प्रतिष्ठा कारापितं मुर्शिदाबाद ॥ श्री जिन कु(श)ख सूरि महाराज का चरण ॥ शुभं जवतु ॥

## समोसरन ।

मंदिर का शिखाखेख ।

[ 2033 ]

- ( १ ) श्री शुभ संवत् १९५३ मिति कातिक वदी
- ( २ ) त्रयोदशी मंगलवार श्री महावीर स्वामी जी के समोस
- ( ३ ) रनजी में मंदिर कराया श्री संघ ने श्वेताम्बरी आमनाथे
- ( ४ ) वः मनिजर गोविन्द चंद सचेती विहारवाले के
- ( ४ ) हस्ते बना । इदं प्रतिष्ठितं गंगारीखी जति

## महताव विवि का मंदिर ।

शिखाखेख ।

[ 2034 ]

- ( १ ) संवत् १९३२ का मिति माघ शुक्ल १० तिथौ
- ( २ ) चंद्रवारे श्री मन्महावीर स्वामी मंदिर श्री वंगदे-

( १६५ )

- ( ३ ) शे । मकमुदावादाजीमगंज वासिनी छुधेड़िया  
( ४ ) मोत्रे श्री नेमिचंद्र तस्य जार्या महताव कुमारि-  
( ५ ) णा कारापितं च श्री हर्षचंद्रजी तत् पुत्र बुधसीह  
( ६ ) विसनचंद्रेण प्रतिष्ठा कारापिता । श्री बृहह्वोपक  
( ७ ) गौर्जराधिपति श्री अखयराज सूरि तत्पट्टाखंठ  
( ८ ) त् श्री अजयराज सूरिणा प्रतिष्ठितं श्री शुभं जूयात् ।  
( ९ ) ॥ श्लोकः ॥ जवारण्यगोपालकं त्रैशक्षेयं । जवांबोधि-  
( १० ) संस्तारणे यानतुल्यं ॥ मुक्तिस्त्रिनाथं मयायं जिनेंद्रं  
( ११ ) प्रसंस्तौमि श्री वर्धमानं विभुं च ॥ ३ ॥

## गांव मंदिर ।

द्राहिण तर्फ के दिवार पर का लेख ।

[ 2035 ]

- ( १ ) श्री गांव मंदिर जि मे दक्ष ( २ ) ण पश्चिम उत्तर दाखान  
( ३ ) तथा चारो कोठे मे पत्थर ( ४ ) जैन श्वेताम्बर जंडार के तर  
( ५ ) फ से मैनेजर गोविंदचंद्र सुचं ( ६ ) ति बिहारवाखो ने वैठाया मुन्न  
( ७ ) सं० १९६४ आसिन वदि ५

सत्ता मंरप के द्राहिने तर्फ के आधे का लेख ।

[ 2036 ]

- ( १ ) श्रीमद्विर जनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुपी नगरी मधे आ श्री जिन  
( २ ) वीं व स्थानापन करोती स्वैतांवर आमनाय धारक शा० नवचंद्र

( २६६ )

- ( ३ ) रंगीलदास देवचंद सा पाटन वाला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई  
( ४ ) वालाये आगो खजार तथा सजा मंरुपमां जमती सहीत आरस कराव्यो  
( ५ ) संवत् १९६० खं० सेवक उत्तमचंद वालचंद मंत्री नगरवाला ।

सजा मंडप के बांये तर्फ के आले का लेख ।

[ 2037 ]

- ( १ ) श्रीमद विर जिनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जि  
( २ ) न धीब स्थापन्नं शा० रूपचंद रंगीलदास सा पाटन वा  
( ३ ) ला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई स्वेतांवर आमना धारक वा  
( ४ ) ला अे कराव्या ठे संवत् १९६०  
( ५ ) मीछी जार्डचंद जगजीवन सखाट पाळीताणा वाला ।



## हैदराबाद - दक्षिण । \*

श्री पार्श्वनाथ जी का मंदिर - वेगम बजार ।

मूलनायक जी पर ।

[ 2038 ]

सं० १५५७ वर्षे ॥ महा सुदि ५ सोमै श्री पार्श्वजिन बिंबं कारितं . . . . ।

पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 2039 ]

संवत् १५४० वैशाख सुदि ३ श्री संघे जहारक जी श्री जिन तपापति वाक जी प्रति०

\* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त हुवे थे ।

( १६७ )

श्री राजा जशसिंघ राजे . . . . . ।

[ 2040 ]

संवत् १५४० वर्षे वैशाख सुदि १ श्री चंद्रप्रभु विंवं कारापितं ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[ 2041 ]

संवत् १६६० फागुण सुदि १३ साह मनोरथ सदापगामे प्र० . . . . . ।

[ 2042 ]

संवत् १७०० वर्षे मार्ग० सुदि २ शुके राजनगर वास्तव्य ओसवंस झा० सा० वर्तमान  
तपुत्र सा० रायासिंघ केन स्वश्रेयोर्थ श्री पद्मावती विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा पं० श्री किर्ति-  
रत्नगणित्तः ॥

[ 2043 ]

सं० १७०७ व० फा० सु० ७ सोमे श्रीमाखी झा० सा० कुंठरजा जा० रतनवाई नाम्न्या  
उ० श्री विवेकहर्षजी श्री शान्तिनाथ विं० का० प्र० श्री तपा० ज० श्री विजयदेव सूरिनिः ॥  
पंचतीर्थियों पर ।

[ 2044 ]

सं० १५१२ माघ वदि . . . सोमे नागर झातीय श्रे० कर्मसी जा० फट्ट सुत जोर्गी  
नाम्ना जा० तटि सुत खजयादि कुटुंबयुतेन श्री धर्मनाथ विंवं का० प्र० वृद्धनया श्री रत्न-  
सिंह सूरिनिः ॥

[ 2045 ]

सं० १५३० वर्षे वैशाख वदि १२ दुधे बडाडडा गोत्रे छोग बंसे म ० पेठा जा० मावर्दी  
सुत सा० धर्मा जा० महू पुत्र नाया बाला हीगदि कुटुंबयुतेन अगम श्रे० श्री जीवनाथ  
विंवं का० प्र० श्री संदेर गहे श्री पद्मवंड सूरिनिः ॥ श्री ।

( १६७ )

[ 2046 ]

संवत् १५६२ वर्षे माघ सुदि १५ दिने ज्जकेश वंशे घोरवाड गोत्रे सा० वाचा जा०  
वाहिण दे पुत्र सा० रंगाकेन जा० रत्ना दे पुत्र सा० माहा पेता वेता प्रमुख परिवारयुतेन  
श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री खरतरगळे श्री जिनहंस सूरिनिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर - कारवान साहुकारी ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[ 2047 ]

संवत् १३२२ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय जा० जयतेन निजमा-  
तामह् ठ० सोढ जा० ठ० श्रियादेवी श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री पृथीचंद्र  
सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिनिः ॥

[ 2048 ]

संवत् १४५७ वर्षे फा० सुदि १ चौमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० धरणि सुत सिंघा श्रेयोर्य तद्  
त्रातु श्रे० कान्हदेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागणीयं जट्टारक श्री देव-  
सुंदर सूरिनिः ॥

[ 2049 ]

संवत् १४७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सामत जा० सामन्न दे  
सु० धर्माकेन त्रातु हीरा सिवा सहदे सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजिनदंन विंवं का०  
प्र० महाहड गळे श्री उदयप्रच सूरिनिः ॥

[ 2050 ]

सं० १६९९ व० फा० सु० ७ सोमे श्रे० ज्ञा० सा० शिव सा० जा० सुजारादि पुत्र सा०  
रत्नाकेन जा० रत्नवाह प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री सुविधिनाथ विंवं कारितं प्र० तपा गळे  
विवेकहर्षगणिनिः ॥

( २६ए )

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—रेसोडेन्सी बजार ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2051 ]

संवत् १४९४ मा० सु० ११ आस वंशे काटहणसीह् छाह्णि सुन कोवापाकेन श्री अंबलगउ  
श्री जयकोर्ति सूरिणामु० श्री नमिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥ श्रीः ॥

[ 2052 ]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उकेश झातौ श्रेष्ठी गोत्रे म० कमजा म० सिंवा  
जा० लखमा दे पु० साजण युतेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रद विंभं कारितं श्री ककदाचार्य संनाने  
प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिनिः ॥

[ 2053 ]

संवत् १५३९ वर्षे महावदि १३ शुक्रवार नृगाणः गोत्रे ना० नात्र पुत्र विग नाया  
सुद्लादे पुत्र सा० धेना चार्या रिमा दे पुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंभं कारितं श्री भर्मधोष  
गठे प्रतिष्ठितं जट्टारक श्री मानदेव सूरिनिः ॥

[ 2054 ]

सं० १५४१ माघ सुदि १२ प्राग्वाट झाण श्रेः कांटा ना० नृभूमिनि म० विपशमेन  
जा० लखी सुत हरदास सूरदासादि लुहंभुनेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंभं कारितं प्रति  
ष्ठितं तथा गठे श्री ३ लज्जोस्तगर नृनिः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—रेसोडेन्सी बजार

पंचतीर्थियों पर

[ 2055 ]

सं० १५४० मा० सु० ४ आस वंशे काटहणसीह् छाह्णि सुन कोवापाकेन श्री अंबलगउ  
श्री जयकोर्ति सूरिणामु० श्री नमिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥ श्रीः ॥

( २५० )

[ 2056 ]

सं० १४०१ वं० मार्ग० सु० ५ बा० चतुर नाम्ना श्री संखेश्वरपार्श्व विं० का० प्र० तथा  
श्री विजयहर्ष सूरिनिः ॥

[ 2057 ]

सं० १६६७ वर्षे फागुण सुदि ० सोमे श्रीमाल ज्ञातोय सा० सूरज कुटुंबयुतेन श्री शांति  
विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री तथा गच्छे नट्टारक श्री विजयदेव सूरिनिः ॥

[ 2058 ]

सं० १६९० व० फा० सु० ५ गुरौ दौलतीबाद उ० ज्ञा० सा० श्रीमंत जा० षमांवाई नाम  
श्री शांतिनाथ विं० का० प्र० तथा गच्छे . . . . . ।

[ 2059 ]

सं० १६९७ फा० सु० ५ वृ० उकेश वा० धीरा नाम्नी श्री शांति विं० का० प्र० श्री  
तथा गच्छे विजयदेव सूरिनिः ॥

[ 2060 ]

सं० १७०१ (?) वं० मा० र्ग० सु० द० ५ वा० वृ० प्रा० बा० कान्त नाम्ना श्री पार्श्व-  
नाथ विं० का० प्र० तथा श्री विजयदेव सूरिनिः ॥

दादाजी के चरणों पर ।

[ 2061 ]

॥ संवत् १९६१ का वर्षे मिति माघ सुदि ५ गुरुवासरे श्री जं० युग प्रधान जगद्  
चूडामणि दादा साहिव १००० श्री जिनंदत्त सूरि गुरुराज चरणपाडुका श्री चारकवाण  
का श्रीसंघेन कारापितं । पं० चारित्रसुखेन प्रतिष्ठापितम् श्रीसंघस्य कल्याण खेम कुशलम्  
समुपस्थिता ॥ हैदरावाद ॥

( १७१ )

[ 2062 ]

॥ सं० १९६१ वर्षे मि । माघ सु । ५ दिने । जं । युग प्र० १००७ दादा साहेब श्री जिन-  
कुशल सूरि पाडुका । च्यारकवाण ।

[ 2063 ]

श्री जिनकुशल सूरि चरणकमल पाडुकेच्यो नमः ॥ शुभ संवत् १९६४ वैशाख धवद  
१० गुरुवासरे प्रतिष्ठितम् ॥



## मद्रास । \*

चंद्रप्रजस्वामी का मंदिर - शूला वजार ।

मूल मंदिर का लेख ।

[ 2064 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९५२ रा शाके १७१७ मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे शुक्र पक्षे त्रिंशदशम्या  
रविवारे शूलामग्रामस्थः मालू गोत्रे सा० । काळू-
- ( २ ) राम रतनचंद्र खरतरगणोपासकेन कारापित जिनप्रवर्तनं चंद्रप्रभु विंशं स्थापितं खर-  
तर गच्छे क्षेमकीर्तिं शाखायां विष्णुमचंद्रगणि
- ( ३ ) तद्विषयं पं प्र । उदयचंद्रगणिः तच्चरणांतेवासी उपाध्याय नेमिचंडेण प्रतिष्ठितं  
जिनप्रवर्तनं स्थापितं विंशं च पं० । श्यामलाक्ष साकम्

मूलनायक जी पर ।

[ 2065 ]

॥ संवत् १९६० वैशाख सुदि ६ . . . जगतिं श्री मंथेन . . . . . ।

\* यहां के लेख सगरे पं० काटचंडेण विंशं च पं०



( २७२ )

मूर्तियों पर ।

[ 2066 ]

॥ सं० १९२१ माह सुदि ७ गुरु । श्री चंद्रजिन विंवं कारितं । श्री बृहत्खरतरगढीय-  
ज्ञ० श्री जिनहंस सूरिनिः प्रति . . . . . ।

[ 2067 ]

॥ सं० १९२१ माह ॥ सु० । ७ । गु । श्री सुमतिजिन विंवं कारितं । श्री बृहत्खरतरगढीय-  
ज्ञ० श्री जिनहंस सूरिनिः प्रति . . . . . ।

धातु की पंचतीर्थों पर ।

[ 2068 ]

॥ सं० १५०५ वर्षे पौंस सुदि १५ आ० विणवट गोत्र पा० स्तदा जा० मूदल दे पु ।  
सहसा जा० सुहड़ दे पितृमातृ पु० श्री चंद्रप्रज्ञो विंवं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गढे पूर्णचंद्र  
सूरि पढे श्री महेंद्र सूरिनिः ॥ श्री ॥

ताम्रपट्ट पर ।

[ 2069 ]

॥ संवत् १९७० रा शाके १८३५ रा ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदश्यायां चंद्र-  
वासरे ॥ जट्टारक श्री जिनफत्तेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं श्री मद्रास शूलामध्ये ॥

चंद्रप्रज्ञस्वामी का मंदिर — साहूकार पेठ ।

शिलाखेख ।

[ 2070 ]

( १ ) ॐ

( २ ) ॥ नमः श्री वीतरागाय ॥

( ३ ) ॥ श्लोकः ॥ आसीत्सूरिपदप्रतिष्ठितरणेः श्री हेमसूरिप्रभुस्तत्परीठे प्रतिवादिबुन्द-

( १७३ )

- ( ४ ) जयदो विद्याकलानां निधिः ॥ श्री सूरेश्वरमूर्खेन्दितपदः श्री सिद्धसूरिगुरुर्ध-  
( ५ ) मर्जादयत्तारकत्येतिनिपुणो वर्वर्ति सर्वोपरि ॥ १ ॥ प्रासादस्य कृतास्य तेन  
( ६ ) विष्णुषा माघस्थ शुक्ले बुधौ त्रयोदश्यां श्रुतिसप्तनन्दकुमिते श्री विक्रमाब्देऽधुना ।  
( ७ ) सौजन्यातमृतसागरेण जगतां धम्मोपकाराय वै श्रीमज्जैनधुरंधरेण कृतिना नूतं  
( ८ ) प्रतिष्ठानघाः ॥ २ ॥ श्री विक्रम संवत् १९७२ माघ शुक्ल १३ बुधवारके दि-  
( ९ ) न श्री मदरास पत्तन शाहूकार पेठमें श्री चन्द्रप्रज्ञस्वामी विम्ब प्रतिष्ठा श्री-  
( १० ) मज्जैनाचार्य वृहत्स्वरतरगण्डोय जं । यु । जट्टार्क श्री जिनसिद्ध सूरिजी ।  
( ११ ) महाराज के करकमलों से समस्त संघ सहित जैरुंक्कसजी सुखलाखजी ।  
( १२ ) समदक्षिया ने बड़े महोत्सव से कराई । हरषचंद रूपचंदजी ने विम्ब स्थाप-  
( १३ ) न किया वादरमलजी ने कलश चढ़ाया और हंसराजजी सागरमलजी  
( १४ ) ने ध्वजा आरोपण करी यह मंगल कार्य श्री संघको सर्वदा श्रेयकारी हो ॥  
( १५ ) ॥ हस्ताक्षराणि यति किशोरचन्द्रजी तद्विष्य मनसाचन्द्रस्य ॥

श्री दादाजी के वंगले में ।

[ 2071 ]

ॐ नमः दत्तसूरिजी ॐ नमः कुशलसूरिजी

मिति माह सुदि ५ संवत् १९३६ का ।

जैन मंदिर—साहूकार पेठ ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2072 ]

संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदि ५ बुधौ श्रीमाल ज्ञातीय नान्दी गोत्रे मा० प्रह्ला पुत्र  
शा० प्रेताक्षेण पुत्र हरेराज सहित तत् पिता पुण्यार्थ श्री अजितनाथ विंयं काग्निं प्रति-  
ष्ठितं श्री खरतर गळे श्री जिनसागर सूरिदिः ॥

( १७४ )

[ 2073 ]

संवत् १५१७ वर्षे पौष वदि ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय महं वित्रा जा० जासी सुत सोजा जा० हीरू आत्मश्रेयोऽर्थ जीवितस्वामी श्री श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे त्रितविया श्री धर्मसागर सूरिः । जीबुटग्रामे ।

[ 2074 ]

संवत् १५१८ वर्षे माघ शुक्ल १३ पाळण पुर जकेश ज्ञातीय सा० पर्वत जा० जीविणी पुत्र शा० गेहाकेन जा० वारू पुत्र वस्त्रा जावड प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे पार्श्वविंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिः ॥

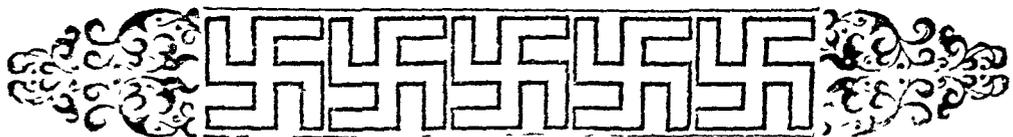
चौवीसी पर ।

[ 2075 ]

संवत् १४७७ वर्षे माघ . . . दि . . . वाइमा ज्ञातीय श्रे० खीमा जा० लहिकू सुत आया जा० हीसु पुत्र हाणा गोपा जीरादि कुटुंबयुतेन श्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ चतुर्विंशति पट्टकारितः प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज ज० श्री सोमसुंदर सूरिः ॥ श्रीशुजं जवतु ॥

[ 2076 ]

संवत् १५१२ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल प्राग्वाट ज्ञातीय सं अर्जुन जा० टवकु सुत सं० वस्ता जा० रामी सुत सं० चान्दा जा० जीविणि सुत लींवा आका प्रमुख कुटुंबयुतेन ७१ चतुर्विंशति पट्टान् कारयितश्च श्रेयसे श्री पद्मप्रजः चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः । श्री तपा पट्टे श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री रत्नशेखर सूरि तत् पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिः ॥



( ११५ )

## रायपुर-सी० पी० । \*

जैन मंदिर-सदर बजार ।

शिलालेख ।

[ 2077 ]

- ( १ ) ॥ श्री मदिष्टदेवेभ्यो नमः ॥ श्रीमच्छ्रीवीरविक्रमादित्य राज्यात् नजवर्ण-
- ( २ ) निधिइंद्रवद ( १९५० ) शाके इंद्रिचंद्रसिद्धि नक्षत्रेश प्रमिते मासोत्तममासे छि-
- ( ३ ) तीय आसाढ मासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ जार्गववासरे स्वाति नक्ष-
- ( ४ ) त्रे साध्ययोगे बुधमार्गे एवं पंचांग शुद्धावत्र समये कर्कार्क गते रवौ शेषे-
- ( ५ ) षु पूजनिरिद्धित वेदायां श्री मझाजपुरवरे माखु गोत्रे साहू तनसुखदा
- ( ६ ) स(दास) तत्पुत्र साहू आसकरणेनात्तौ श्री मचंद्रप्रज्ञ जिन्प्रज्ञो प्रासा
- ( ७ ) द कारितं स्वश्रेयोर्थं श्री बृहत्वरतर जटारक गठाधिपै जटारक श्री
- ( ८ ) जिनचंद्र सूरेश्वर प्रतिष्ठितश्चेति पं० सिवलाल मुनिरुपदेशान् ।

ताम्रपत्र पर ।

[ 2078 ]

- ( १ ) श्री जिनायनमः ॥ श्रीमन् वीर सं० १४२१ विक्र-
- ( २ ) म सं० । १९५१ शाके १०१६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मा-
- ( ३ ) से आषाढ शुक्लपक्षे तृतिया तिथौ गुरुवारं पु-
- ( ४ ) ष्यनक्षत्रे सिद्धुत्कार्कगते रवौ शेष शुभ निरिद्धि-
- ( ५ ) त वेदायां श्री रत्न(राज)वरे माखु गोत्रे साहू धन-
- ( ६ ) रूपजी तत्पुत्र साहू बृहत्चंद्रजी कन्या नाया

( १७६ )

- ( ७ ) हीरादेवी तथा श्री अजिनंदनजिनप्रज्ञो प्रासाद  
( ८ ) कारित स्वश्रेयं श्रीवृहत् खरतर गढे श्री जिनचंद सूरेश्वर  
( ९ ) जी आदेशात् श्री शिवलाख मुनि प्रतिष्ठितम् ॥ श्री शुभम् ॥

कककककककककककककककककक

## उथमण - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पबवासण के नीचे का लेख ।

[ 2079 ]

॥ सं० ११४३ वर्षे माहा सुदि १० बुधदिने नाणकीय गढे उथमण चैत्ये धणसर जाण  
धारमती पुण देवधर जेसड आढहा पाढहादि कुटुंब संयुते मातृ निमित्तं जलवट्टु करापितं ॥

कककककककककककककककककक

## रोहेड़ा - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2080 ]

सं० ११९३ वर्षे फागण सुदि ८ कोरंट गढे . . . जीखा . . . धर्मनाथ विंवां कारितं  
प्रतिष्ठितं ककक सूरिजिः ॥

[ 2081 ]

सं० १३४१ वर्षे नाणकिय गढे . . . . . चतुर्विंशतिपट्ट कारितं प्रतिष्ठितं जट्टारक  
महेन्द्र सूरिजिः ॥

( १९९ )

[ 2082 ]

सं० १४९१ फागुण सुदि १२ गुरौ कोरंटवाल गढे उपकेश ज्ञातीय संखवालेचा गोत्रे  
नपती पु० जाणाकेन श्रेयसे श्री धर्मनाथ विंभ कारितं प्रतिष्ठितं सांबदेव सूरिजिः ॥

[ 2083 ]

सं० १४९३ वर्षे माघ सुदि १३ उपकेश ज्ञातीय म० मांडण जा० सिरियांदे पु० काजा  
केन जार्या जह्नी सहितेन आत्मश्रेयसे श्री नमिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं चट्टारक श्री  
धनप्रन्न सूरिजिः ॥

[ 2084 ]

संवत् १५२३ वर्षे फागुण वदि ११ नागेंड गढे उपकेश ज्ञातीय कोठारी . . . जा० लक्ष्मी  
पु० मेघा जा० हीरु पु० नेरा कुंगर तोड्हा युतेन श्री आत्मपुण्याक्षे श्री वासुपूज्य विंभं  
कारितं प्रतिष्ठितं त्रिनयप्रन्न सूरिजिः ॥

[ 2085 ]

सं० १५१७ वर्षे वैशाख वदि ७ शुके श्री श्रीमाख श्रेष्ठी जामा जा० साही पु० गोड्हा  
जा० आसि पु० पहिराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंभं कारितं पूर्णिमापक्षे पुण्य-  
रत्न सूरिणां प्रतिष्ठितं चाराही ग्रामे ॥

[ 2086 ]

सं० १५१७ वर्षे माघ वदि २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० कोट्टाकेन जार्या कामल दे पु०  
जाड्हा हीदा युतेन धर्मनाथ विंभं कारितं कटोळीवाख गढे पूर्णिमापक्षे गुणसागर मृगिजिः ॥

[ 2087 ]

सं० १५७६ आसाढ सुदि ९ रवौ उपकेशज्ञातीय नाग गोत्रे नाड्हा तोला जा० नाथल  
दे पु० मांडण आड्हा जेला सहितेन नाड्हा जा० नाथक दे पु० रंगा युतेन आत्मपुण्याक्षे  
संनतनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं नाणंवाड गढे नटारक श्री . . . . . ।

( १७० )

## भारज - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2088 ]

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ श्रीमाल ज्ञातीय पितृ धरकण जा० धरणा सुत  
कालु जा० कुंथि करमी सुत सहिता युतेन श्री नमिनाथ विंशं कारितं बृह्मणिया गढे प्रति-  
ष्ठितं श्री विमल सूरिजिः वटपद्म वःस्तव्य ॥

— ❦ —

## गुडा - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2089 ]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ उसवाल बृहद्दे लजेने ठाकुर गोत्रे साह० पोमादे  
पु० जावड़ जावड़ गीदा सा० माणाकेन जा० सणिक दे पु० मेघराज हांसावि कुटुंबयुतेन  
स्वश्रेयोर्थ श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारापितं । नाणावाल गढे श्री धनेश्वर सूरिजिः  
प्रतिष्ठितं तथा श्री सोमसुंदर सूरिजिः सं . . . . . ॥



## तिवरी - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

काजसग प्रतिमा पर ।

[ 2090 ]

सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० श्रे० ऊवा जीदा जा० रूपल दे पु० . . . . .  
श्री नयगल कारितं प्रतिष्ठितं चित्रगढीय श्री देवजद्र सूरि संतानीय रा० पं० सोमचंड्रेण ॥

( २७९ )

## पाडीव - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2091 ]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीमाली ज्ञातीय राजल जा० वाला पु० देवा जा०  
खलियता सुत तेजा श्रो विमलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गढे अमरन्द सूरि गुरू-  
पदेशेन करापितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्य ॥



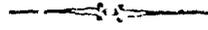
## मडिया - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2092 ]

सं० १४७० वर्षे माघ सुदि २ गुरौ वाफणा गोत्रे साह्र लुंजा सुन देपाल जा० मेला दे  
पु० जोगराज जा० जसमादे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गढे श्री ककुदा-  
चार्याजिधान प्र० देवगुप्त सूरिजि ॥



## निंबज - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2093 ]

सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री जावदेड़ा गढे श्री कासिकाचार्य मंनाने उप-  
केश ज्ञातीय खांटेड़ गोत्रे साह्र खाना जा० . . . . . ह० सामंत जा० दामस दे पु० नाराय



( १७० )

## भारज - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2088 ]

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ श्रीमाल ज्ञातीय पितृ धरकण जा० धरणा सुत  
कालु जा० कुंथि करमी सुत सहिता युतेन श्री नमिनाथ विंवं कारितं बृह्मणिया गढे प्रति-  
ष्ठितं श्री धमल सूरिजिः वटपद्म वःस्तव्य ॥

— ❦ —

## गुडा - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2089 ]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ जसवाल बृहद् सज्जन ठाकुर गोत्रे साहू पोमादे  
पु० जावड़ जावड़ गीदा सा० माणाकेन जा० सणिक दे पु० मेघराज हांसादि कुटुंबयुतेन  
स्वश्रेयोर्थ श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पद्म कारापितं । नाणावाल गढे श्री धनेश्वर सूरिजिः  
प्रतिष्ठितं तथा श्री सोमसुंदर सूरिजिः सं . . . . ॥



## तिवरी - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

काजसग्ग प्रतिमा पर ।

[ 2090 ]

सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० श्रे० ऊवा जींदा जा० हंपल दे पु० . . .  
श्री नयगल कारितं प्रतिष्ठितं चित्रगढीय श्री देवजद्र सूरि संतानीय रा० पं० सोमचंद्रेण ॥

( ११९ )

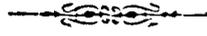
## पाडीव - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2001 ]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीमाली झातीय राउल जाण वाला पु० देवा जाण  
खलियता सुत तेजा श्री विमलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गठे अमरत्न सूरि गुरू-  
पदेशेन करापितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्य ॥



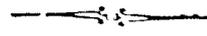
## मडिया - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2002 ]

सं० १४९० वर्षे माघ सुदि २ गुरौ बाफणा गोत्रे साह् बुंता सुत देवाज जाण मेला दे  
पु० जोगराज जाण जसमादे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेज गठे श्री ककुदा-  
चार्यानिधान प्र० देवगुप्त सूरिजि ॥



## निंज - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2003 ]

सं० १५८९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री नावहेड़ा गठे श्री बाळिकानाथ मठाने उर-  
केश झातीय खांटेड़ गोत्रे साह् साजा जाण . . . ह० नासंद जाण द्वांगल दे पु० नोयाड

( १६० )

उदय जोपाल जा० नतु दे पु० नाट्टहा सीवा उदा जा० उमा दे पु० रतना समरथ कुटुंबेन  
सह स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ विंभं कारितं श्री विजयसिंह सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं वीर सूरिजिः ॥

## छुड़वाल-सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पाषाण की प्रतिमा पर ।

[ 2004 ]

सं० १६४४ वर्षे फागण वदि १३ बुधे हालीवाका वास्तव्य श्री संघेन कारितं श्री शांति-  
नाथ विंभं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिः ॥



## डीसा ।

श्री आदीश्वरजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2005 ]

सं० १५२४ वर्षे का० व० २ शुके श्री जावडार गछे श्रीमाल ज्ञातीय म० धिरणल जा०  
ब्रह्मादेवि पु० मना जा० माट्टहण दे पु० सिंघा मेघा मेहा साण। जुग सहितेन जावि-  
तस्वामी श्री पद्मप्रह प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० कालिकाचार्य संताने श्री जावदेव  
सूरिजिः श्री वनरिया ग्रामे ॥

[ 2006 ]

सं० १५६३ वर्षे माघ सुदि १५ गुगे उमकेश ज्ञातीय गा० कनुज सो० करणा ता०  
श्वरघु पु० विमाल पितृव्य नयाणा निमित्त श्री विमलनाथ विंभं कारितं प्र० जिनमाल गच्छे  
श्री कर्मातिक सूरिजिः ॥

( १७१ )

[ 2097 ]

सं० १६६३ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० टाहापान जा० चीवु  
निमित्तं सुत लिंवा राणा जाजण सहितेन आत्मश्रेयोर्थे श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं  
प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गळे ज० जाजोग सूरिनिः स्थिराद्र वास्तव्यः ॥

## श्री महावीर स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ॥

[ 2098 ]

सं० १३१० वर्षे फागण सुदि २ शुके ब्रह्माण गळे श्री जऊक सूरि गुणे श्रीमात जाजोग  
पिणनाक वास्तव्य आजा सुत देवधर श्रेयोर्थे आसधर सुत जादणोन पितृव्य श्रेयोर्थे  
श्री महावीर विंवं कारितं प्र० श्री वयरसेणोपाध्याय गणि ॥

[ 2099 ]

सं० १३४४ वर्षे जे० व० ४ शुके श्रोतवाक ज्ञा० श्रे० दी०गमन्य सुत श्रीजदेन निजमातृ  
व्यज देवि श्रेयोर्थे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० सतुधरि श्री गनदेव गणित ॥

[ 2100 ]

सं० १४७६ वर्षे चैत्र वदि २ शनौ उपकेश ज्ञा० वटाखिया गळे सा० देवा जा० ज०  
श्री सुत जीमा जा० सनपतञ्जा श्रेयोर्थे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गळे  
श्री विद्यासागर सूरिनिः ॥

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १ शनौ श्री श्री महादेव उ० व० निजमातृ देवा जा० ज०  
श्रेयोर्थे सुत जमनदेव श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० सतुधर गळे श्री गनदेव गणित ॥

( १८१ )

[ 2102 ]

सं० १४८४ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ श्री कोरंटकीय गढे श्री नन्नाचार्य संताने उपकेश  
ज्ञातीय मं० मलयसिंह जा० माखण देव सं० म० मद्नेन पु० लुणा सहितेन जा० हेमा  
श्रेयोर्थ श्री संजवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिजिः ॥

[ 2103 ]

सं० १५१० वर्षे वैशाख वदि ५ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सदा जा० सहजू पु० धीरा-  
केन जा० काली सहितेन पितृमातृ श्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री नागेंद्र गढे  
श्री गुणसमुद्र सूरिजिः प्र० सर्व सूरिजिः ॥

[ 2104 ]

सं० १५११ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ पाट्टहाउत गोत्रे सा० शिवाराज जा० कर्मणि  
तत्पुत्र मेघा जार्या युतेन पु० सालिग मातृ श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं  
मलधारि गढे श्री गुणसुंदर सूरिजिः ॥

[ 2105 ]

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुदि ३ उपकेश गढे श्री ककुदाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय  
वाफणा गोत्रे सा० . . . वरु जा० जसमा दे पु० सोहडा दे पु० वस्ता आत्मश्रेयोर्थ श्री  
अजितनाथ विंवं कारितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 2106 ]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ वायना ज्ञातीय व० साह नारिंग सुत व० राजा-  
केन जा० रई पु० रीडा मेघा रीडा जा० इंद्र प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यादि  
पंचतीर्थी आगम गढे श्री अमररत्न सूरिजिः गुरूपदेशेन कारितं प्र० विधिना पत्तन  
वास्तव्यः ॥

( १७३ )

## गुडली - मेवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2107 ]

सं० १५४१ वर्षे वैशाख वदि ४ उपकेश ज्ञातीय सा० करमा ज्ञा० साहु पुत्र पीदा ज्ञा०  
षत्तमा दे पु० गोदा उजल ज्ञा० वडी पु० जेसा मेघा केमा हरमा सहितेन जिदरु निमित्तं  
श्री वासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं बृहज्जे ऋद्धारक श्री धनप्रज्ञ सूरिजिः ॥

[ 2108 ]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख सुदि १५ शनौ उपकेश ज्ञातीय मानींग ज्ञा० नंदि पु० देपा-  
केन पितृयुतेव श्री वासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गढे दुमतिलक सूरि पट्टे श्री  
उदयाणंद सूरिजिः ॥



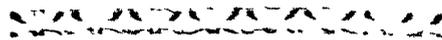
## खारची - मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2109 ]

सं० १५३७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ . . . . . धर्मनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं पंचर गढे  
श्री शांति सूरिजिः द्वाविध आने ॥



( १७४ )

## खंडप-मारवाड ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[ 2110 ]

सं० १५२७ वर्षे वैशाख सुदि ३ औसवाल ज्ञातीय साह हंसा पु० उधरण देदा वेला  
जा० वाहनु मोदरेचा गोत्रे साह लाधु जा० नामल दे पुत्रिका नानुं आत्मपुण्यार्थे श्री चंद्र  
प्रभु विंबं कारितं श्री नाणकीय गढे धनेश्वर सूरिजिः ॥

[ 2111 ]

सं० १५२७ वर्षे . . . उपकेश ज्ञातीय ठाजेड़ गोत्रे पना जा० सुहृवि दे पु० नरसिंग  
त्रिचणा सहितेन श्री मुनिसुव्रत विंबं कारितं प्रतिष्ठितं पल्लीवाल गढे श्री यशोदेव सूरि  
पढे श्रीश्री नन्न सूरिजिः ॥



## मांकलेश्वर-मारवाड ।

जैन मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ॥

[ 1187 ]

सं० १५३० वर्षे फागुण सुदी १० श्री ज्ञानकीय गढे उ० उत्तम गोत्रे सं० चांका जा०  
साहा पीथा स्था० प्रतिष्ठितं श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्र० सिद्धसेन सूरि  
सूरिजिः ॥



॥ श्री जैन लेख संग्रह द्वितीय खण्ड समाप्तः ॥





| संवत्             | नाम                      | लैखांक                       | संवत्                | नाम                              | लैखांक     |
|-------------------|--------------------------|------------------------------|----------------------|----------------------------------|------------|
| १५४७              | अमररत्न सूत्रि           | २१०६                         | १५२०                 | " "                              | १२२८ १२०२  |
| १५३६              | सिंधवत्त सूत्रि          | १७३७                         | १५२१                 | " "                              | १२८६       |
| १५६६              | सोमरत्न सूत्रि           | १२१६                         | १५२४                 | " "                              | १२७४ १४४३  |
| १५७१              | " "                      | १५७७                         | १५२८                 | देवगुप्त सूत्रि                  | १५७१       |
| <b>उपकेश गण ।</b> |                          |                              |                      |                                  |            |
| १३२, ५६           | कक सूत्रि                | १६२३                         | १५३४                 | " "                              | २०२२       |
| १३२५              | " "                      | १०३८                         | १५३५                 | " "                              | १०६२       |
| १३८०              | " "                      | १३५८                         | १५३७                 | " "                              | २१०५       |
| १३८५              | " "                      | १०४३                         | १५४४                 | " "                              | १६०३       |
| १४५७              | रामदेव सूत्रि            | १४६०                         | १५४६                 | " "                              | १२६३       |
| १४६८              | देवगुप्त सूत्रि          | १०६२                         | १५५८                 | " "                              | १६३४       |
| १४७०              | " "                      | २०६२                         | १५५६                 | " "                              | ११०१, ११८६ |
| १४८४              | " "                      | १०७२                         | १५६६                 | सिद्ध सूत्रि                     | १३००       |
| १४८६              | " " ( मल्लभारोयक )       | १६८२                         | १५६७                 | " "                              | १६५६       |
| १४८२              | सिद्ध सूत्रि             | १०७०                         | १५७१                 | " "                              | १५७४       |
| १४६१              | " "                      | १५४६                         | १५७२                 | " "                              | १५७६       |
| १४६३              | सिद्ध सूत्रि             | ११८२                         | १५७४                 | " "                              | १४५०       |
| १४६५              | सवे सूत्रि               | १६४१                         | १५८८                 | " "                              | १४६४       |
| १५०३              | ककुदाचार्य ( कक सूत्रि ) | १६३४                         | १५६२                 | " "                              | १३०५       |
| १५०५              | कक सूत्रि                | ११४८, १४७६                   | १५६६                 | " "                              | १३४७       |
| १५०६              | " "                      | ११४६                         | १५२७(?)              | सिद्ध सूत्रि                     | १३२२       |
| १५०७              | " "                      | १०८३, १२५०                   | १७८१                 | कर्पूरप्रियगणि                   | १०२४       |
| १५०८              | " "                      | ६३३२                         | १६४०                 | सिद्धसूत्रि ( कमलागच्छ )         | १४७८       |
| १५०६              | " "                      | १२५६                         | <b>कठोलीवाल गण ।</b> |                                  |            |
| १५१२              | " "                      | ११५३, १२६१, १२६३, १३७३, १५०४ | १४७१                 | संघतिलक सूत्रि                   | १६३०       |
| १५१७              | " "                      | १८८३                         | १४६३                 | सर्वाणंद सूत्रि ( पूर्णिमापक्ष ) | १६६६       |
|                   |                          |                              | १४६३                 | लग्नमसीह ( " " )                 | १६६६       |

| संवत् | नाम                           | लेखाक | संवत् | नाम              | लेखांक           |            |
|-------|-------------------------------|-------|-------|------------------|------------------|------------|
| १५१८  | गुणसागर सूरि ( पूर्णिमापक्ष ) | २०८६  | १३६२  | जिनपद्म सूरि     | १६२६             |            |
| १५३०  | विद्यासागर सूरि               | १३६१  | १४८२  | जिनभद्र सूरि     | १५०३             |            |
| १५३४  | विजयप्रभ सूरि                 | १३८२  | १४६३  | " "              | १२४४             |            |
|       |                               |       | १४६६  | " "              | १६००             |            |
|       |                               |       | १५०३  | " "              | १३२५             |            |
|       |                               |       | २०८०  | १५०७             | " "              | ११५१, १४०० |
| १२६३  | कक सूरि                       | १६५०  | १५०६  | " "              | १२५५, १३३३       |            |
| १३१७  | सर्वदेव सूरि                  | १७६२  | १५२१  | " "              | १५५०             |            |
| १३४०  | ... सूरि                      | २०१४  | १५१७  | " "              | १०१०             |            |
| १४०६  | कक सूरि                       | १०५७  | १४६१  | भव्यराज गणि      | २००४             |            |
| १४३७  | सांवदेव सूरि                  | २१०२  | १५०६  | जिनतिलक सूरि     | १२५७             |            |
| १४८४  | कक सूरि                       | २०८२  | १५११  | " "              | १८६०-६१          |            |
| १४६१  | सांवदेव सूरि                  | १३३०  | १५२८  | " "              | ११५८             |            |
| १४६६  | " "                           | ११८३  | १५२५  | जिबचंद्र सूरि    | ००२२             |            |
| १५०६  | " "                           | १७३३  | १५१६  | " "              | १३३५             |            |
| १५०८  | " "                           | २०१२  | १५१६  | " "              | १२७०             |            |
| १५०६  | " "                           | १४०४  | १५२६  | " "              | १३७६             |            |
| १५१७  | श्री पाद ..                   | १७२६  | १५२६  | " "              | १०१५             |            |
| १५१८  | सांवदेव सूरि                  | १३८०  | १५३१  | " "              | १२०६             |            |
| १५३२  | " "                           | १६६८  | १५३२  | " "              | १३४०             |            |
| १५५३  | नख सूरि                       | १६४२  | १५३३  | " "              | १८८१             |            |
| १५६७  | नख सूरि                       |       | १५३४  | " "              | १०८७, १०८६, १३१७ |            |
|       |                               |       | १५३६  | " "              | १०५६, १३४१       |            |
|       |                               |       | १६१०  | १५१७             | विवेकरत्न सूरि   | १०५५       |
| १३८१  | जिन कुशल सूरि                 | १६८८  | १५२५  | कीर्तिरत्न सूरि  | १०८०             |            |
| १३८७  | " "                           | १३५०  | १५०८  | जिन्मदन सूरि     | ११५०             |            |
| १३६६  | " "                           | १५४५  | १५०३  | जिन्मसुन्दर सूरि | ११६०             |            |

खरतर गछ ।

| संवत्   | नाम                        | लेखांक     | संवत् | नाम               | लेखांक                                |
|---------|----------------------------|------------|-------|-------------------|---------------------------------------|
| १५५५    | जिनसमुद्र सूरि             | १२२४       | १८५२  | लालचंद्र गणि      | १२०५, १२१६                            |
| १५५६    | जिनहंस सूरि                | १२६८, १४६३ | १८५४  | जिनदेव सूरि       | १८२८                                  |
| १५६२    | " "                        | २०४६       | १८६३  | जिनहर्ष सूरि      | १५२५                                  |
| १६०६    | जिनमाणिक्य सूरि            | १३५१       | १८६४  | " "               | १५२६-२८                               |
| १६२८    | जिनभद्र सूरि               | १४४८, १८४५ | १८७१  | " "               | १६३८                                  |
| १६५३    | जिनचंद्र सूरि              | ११६६       | १८७३  | " "               | १०१६                                  |
| १६२७(?) | जिनसिंह सूरि               | १३८८       | १८७५  | " "               | १८५२ ४२                               |
| १६६६    | " "                        | १७१५       | १८७७  | " "               | १०२७, १६४७ ५६, १६६२, १६६६, १८३६-३८    |
| "       | गुणरत्न गणि                | "          | १८८५  | " "               | १८३६                                  |
| "       | रत्नविशाल गणि              | "          | १८८६  | " "               | १८२१, १८२४                            |
| १६६८    | जिनचंद्र सूरि              | १४५७       | १६३८  | " "               | १८५०                                  |
| १६६८    | " "                        | १५८५       | १८७७  | उ० रत्नसुन्दर गणि | १०२७                                  |
| १६६८    | लघ्विघ्नार्दन              | १४५१       | १८७७  | होरधर्म ( पाठक )  | १६४७-५६, १६६२-६६                      |
| १६७५    | जिनराज सूरि                | १६७०       | १८६३  | जिन महेन्द्र सूरि | १६७१-७२                               |
| १६८६    | " "                        | १६४७       | १८६६  | " "               | १६४३                                  |
| १६६८    | " "                        | १६६७       | १८६७  | " "               | १८७०                                  |
| १६८६    | परानयन (?)                 | १६४७       | १६०६  | " "               | १६४५                                  |
| १६६८    | समयराज उपाध्याय            | १६६७       | १६१०  | " "               | १५२६-३२, १६४६, १६६७-६८, १६७३, १८३०-३२ |
| "       | अभयसुन्दर गणि (वाचनाचार्य) | "          | "     | " "               | १६८२                                  |
| "       | कमललाम उपाध्याय            | "          | १६१३  | " "               | १६२२                                  |
| "       | लघुश्रीर्त्ति गणि          | "          | १६१४  | " "               | १६२२                                  |
| "       | पं० राजहंस गणि             | "          | १८६२  | जिन सौभाग्य सूरि  | १०१७, १०२०-२१                         |
| "       | पं० देवविजय गणि            | "          | १६०५  | " "               | १३५२                                  |
| १६६०    | जिनकीर्ति सूरि             | ११०७       | १८६३  | आनन्द वल्लभ गणि   | १०१७                                  |
| "       | जिनसिंह सूरि               | "          | १६३६  | " "               | १०२०-२१                               |
| २७      | म० राम विनय गणि            | १००६       | १८६७  | कुशलचंद्र गणि     | १८७०                                  |
| ८४६     | जिनचंद्र सूरि              | १८०७       | १६१८  | जिन मुक्ति सूरि   | १८६६-६८, १८७२                         |

| संवत् | नाम                 | लेखांक     | संवत् | नाम            | लेखांक           |
|-------|---------------------|------------|-------|----------------|------------------|
| १९२०  | जिनहंस सूरि         | १६६६, १७०१ | १४६४  | " "            | १६५८             |
| १९२१  | " "                 | २०६६-६७    | १४६५  | " "            | १२४५, १६७४, १६७५ |
| १९२२  | " "                 | ...        | १८१०  | " "            | १६५७             |
| १९२२  | " "                 | ...        | १०६८  | " "            | २०७२             |
| १९२४  | " "                 | ...        | १८११  | " "            | १२४८             |
| १९२०  | सदान्ताभ गणि        | १७०१       | १५०३  | " "            | १८६५             |
| १९२२  | कनकनिधान मुनि       | १०१८       | १५०७  | " "            | १९५१             |
| १९२३  | विवेककीर्ति गणि     | ...        | १६५७  | " "            | १३७२, १७२५       |
| १९२२  | दिनचन्द्र मुनि      | १८०८       | १५१०  | " "            | १२३२             |
| १९५०  | जिनचंद्र सूरि       | २०७७       | १५०४  | शुभशील गणि     | १८३६, १८५४-५६    |
| १९५१  | " "                 | २०७८       | १५२३  | जिनहर्ष सूरि   | १९५७             |
| १९५६  | " "                 | १६३६-४०    | १५२८  | " "            | १४३८             |
| १९५२  | ७० नैमिचंद्र        | २०६४       | १५६७  | जिनचंद्र सूरि  | १४१५             |
| १९६०  | जिन फत्तेन्द्र सूरि | ...        | २०६६  | " "            | १८६६             |
| १९६२  | जिन सिद्ध सूरि      | २०७०       | १६६८  | लक्ष्मिवर्द्धन | १४५१             |
| १९६३  | हीराचंद्र यति       | १००८       |       |                |                  |

रंगविजय शाखा ।

खरतर गठ ।

जिनवर्द्धन सूरि शाखा ।

|      |                 |                                          |                           |                              |
|------|-----------------|------------------------------------------|---------------------------|------------------------------|
| १९६६ | जिनवर्द्धन सूरि | १६६६, १६६७                               | १६२३ (?) जिनरंग सूरि      | १००५                         |
| १९७३ | " "             | १२३८, १६६५                               | १८५६ जिनचंद्र सूरि        | ११७६, १२०७                   |
| १९७५ | " "             | १६८७                                     | १८७४ " "                  | १८२८                         |
| १९७६ | " "             | ...                                      | १८७७ " "                  | १००७, १२०६, १५२५             |
| १९७६ | " "             | १९३६, १६६३                               | १८७६ " "                  | १६७८-८०                      |
| १९७६ | " "             | ...                                      | १८८८ " "                  | १५८६, १६२६, १६८३, १८२२, १८३२ |
| १९७६ | जिनचंद्र सूरि   | १९३६, १६६३                               | १६०२ जिन नंदिवर्द्धन सूरि | ३२०८                         |
| १९७६ | " "             | ...                                      | १६१७ " "                  | ३६३०                         |
| १९७६ | " "             | १६६४-६५, १६८५                            | १६१३ जिन जगन्नेसर सूरि    | १५३३, १६३८                   |
| १९७६ | जिनसागर सूरि    | १०७५, १३६६, १६१८, १६३२, १६७७, १६८४, १६६४ | १६२१ जिन कान्ताभ गणि      | १८५५                         |

| संवत्                 | नाम              | लेखांक | संवत्           | नाम               | टि  |
|-----------------------|------------------|--------|-----------------|-------------------|-----|
| चंद्र गठ ।            |                  |        | ठहितेरा गठ ।    |                   |     |
| १०७२                  | सौलगल सूरि       | ३८६    | १६१२            | धम्ममूर्त्ति सूरि | ... |
| १२३५                  | पूणेभद्र सूरि    | १६८८   | "               | भावसागर सूरि      | ... |
| १३५८                  | देवभद्र सूरि     | १०३४   | जापडाण गठ ।     |                   |     |
| १२७२                  | दृष्टिम सूरि     | १७७७   | १५३४            | कमलचंद्र सूरि     | ... |
| १३००                  | यशोभद्र सूरि     | १८७८   | जीरापट्टीय गठ । |                   |     |
| १३१५                  | " "              | १७७६   | १४०६            | रामचंद्र सूरि     | ... |
| चाणांचाल गठ ।         |                  |        | १५०७            | उदयचंद्र सूरि     | ... |
| १५२६                  | मन्नेभद्र सूरि   | ११५६   | तप गठ ।         |                   |     |
| चित्रवाल (चैत्र) गठ । |                  |        | १४०१            | विजयहर्य सूरि     | ... |
| १३०३                  | शिवदेव सूरि      | १६४६   | १४२२            | रत्नाशेखर सूरि    | ... |
| १३०१                  | सामदेव सूरि      | १६२१   | १४३६(?)         | देवचंद्र सूरि     | ... |
| १३१७                  | पं० सोमचंद्र     | २०६०   | १४५३            | हेमलंभ सूरि       | ... |
| १३२०                  | शशिवदेव सूरि     | ११३४   | १४६६            | " "               | ... |
| १३२२                  | सुमचंद्र सूरि    | १०४१   | १४७५            | " "               | ... |
| १३६६                  | सुनिशिरुद्र सूरि | १६०१   | १४६०            | " "               | ... |
| १३७१                  | " "              | ११४५   | १४६६            | " "               | ... |
| १३६६                  | सुमनार सूरि      | १६०१   | १४६८            | " "               | ... |
| १३७३                  | " "              | १२६८   | १५०१            | " "               | ... |
| १३७५                  | रामदेव सूरि      | १०६०   | १५०४            | " "               | ... |
| १३७७                  | कायचंद्र सूरि    | १३६४   | १५१०            | " "               | ... |
| १३७७                  | कायचंद्र सूरि    | १०६६   | १५११            | " "               | ... |
| १३७८                  | कायचंद्र सूरि    | ११६३   | १५१३            | " "               | ... |
| १३७९                  | " "              | १४१०   | १५१८            | देवचंद्र सूरि     | ... |



| संवत् | नाम              | दोखांक     | संवत् | नाम              | दोखांक           |
|-------|------------------|------------|-------|------------------|------------------|
| १५४१  | लक्ष्मीसागर सूरि | २०५४       | १५४८  | म० वाकजी         | २०३६             |
| १५४२  | " "              | ११००       | १५५२  | जिनसुंदर सूरि    | १२६४             |
| १५५७  | " "              | १७७३       | १५५५  | धर्मरत्न सूरि    | १७७१             |
| १५२८  | हेमविमल सूरि     | १५४४       | १५६३  | द्रुङ्गादि सूरि  | १६१०             |
| १५५२  | " "              | १३४४, १६०४ | १५७६  | " "              | १३५४             |
| १५५४  | " "              | १४७७       | १५६६  | चरणसुंदर सूरि    | ११०३, २०२७-२८    |
| १५५७  | " "              | १०२६       | १५६६  | नन्दकल्याण सूरि  | ११०३             |
| १५६०  | " "              | १३२०       | १५६६  | जयकल्याण सूरि    | २०२७-२८          |
| १५६१  | " "              | १३४५       | १५७५  | " "              | १६४२             |
| १५६५  | " "              | १६४६       | १५७६  | सौभाग्यसागर सूरि | १३८७             |
| १५६६  | " "              | ११०२, ११७० | १५६५  | भाणंद विमल सूरि  | १७३८             |
| १५८०  | " "              | १७३०, १७३५ | १५६६  | विजयदान सूरि     | ११०४, १५०७       |
| १५१८  | सुरसुंदर सूरि    | १४०५       | १६०१  | " "              | ११७६             |
| १५२१  | उदयवल्गुभ सूरि   | १४०७       | १६१६  | " "              | १५०८, १५०६, १५४५ |
| १५२२  | सोमदेव सूरि      | १११७       | १६१७  | " "              | १५५३, १६६०       |
| १५२५  | सोमजय सूरि       | २०२५       | १६१६  | " "              | १६०७             |
| "     | सुधानंदन सूरि    | "          | १६२२  | " "              | १६०८             |
| "     | म० जिनसोम गणि    | "          | १५६७  | सुमनिसाधु सूरि   | १४७२             |
| "     | शालसागर सूरि     | १०६३       | १६१५  | तेजरत्न सूरि     | १३०७             |
| १५२८  | " "              | १५६०, २०१३ | १६१७  | हीरविजय सूरि     | १५५३             |
| १५२६  | संवेगसुंदर       | १७६६       | १६२४  | " "              | ११६५, १२२५       |
| १५३३  | उदयसागर सूरि     | १४४४       | १६२६  | " "              | १७४५             |
| १५३६  | " "              | १४४५       | १६०७  | " "              | १३४८             |
| १५५२  | " "              | १७६१       | १६२८  | " "              | १२१४, १८६१       |
| १५५३  | " "              | १८७६       | १६३३  | " "              | १७८०             |
| १५३४  | सुगन्धर्वान सूरि | १०६०       | १६३७  | " "              | १७६०, १६४०       |
| १५३७  | हेमरत्न सूरि     | १३५३       | १६३८  | " "              | १०१५             |

## ( ए )

| संवत् | नाम            | लेखांक           | संवत् | नाम               | लेखांक        |
|-------|----------------|------------------|-------|-------------------|---------------|
| १६४१  | हीरविजय स्त्री | १४५६             | १७०५  | " "               | १६१३          |
| १६४२  | "              | १००२             | १७०७  | " "               | २०४३          |
| १६४२  | " "            | १६६१, १७१२, २०६४ | १६५२  | सोमविजय गणि       | १७६६          |
| १६५१  | "              | १७६३             | १६६७  | " "               | ११०५          |
| १६८५  | "              | १६६३             | १६५२  | विमलहर्ष गणि      | १७६६          |
| "     | "              | १७४८             | "     | कल्याणविजय गणि    | "             |
| "     | "              | १५००             | "     | पद्मानंद गणि      | "             |
| १६३३  | रविसागर गणि    | १७८२             | १६७७  | विवेक हर्ष गणि    | २०५०          |
| "     | शत्रुशाल       | "                | "     | कल्याण कुशल       | १७१७          |
| "     | विजयसेन स्त्री | "                | "     | दया कुशल          | "             |
| १६४३  | "              | १३०८             | "     | भक्ति कुशल        | "             |
| १६५२  | "              | १७६६             | १६८२  | म० मुनि सागर गणि  | १६३५          |
| १६५६  | "              | १७६४             | १६८६  | विजय सिंह स्त्री  | ११०६          |
| १६६१  | "              | १७६४             | १६६३  | " "               | १०२८          |
| १६६७  | "              | ११०५             | १६६६  | " "               | १३१०-११, १७६० |
| १६७०  | "              | १६२८, १७४१       | १७०१  | " "               | १५४५          |
| १६५१  | विजयदेव स्त्री | १७८२             | १७०३  | " "               | ११०७          |
| १६६७  | "              | २०५७             | १६६३  | मनिचंद्र गणि      | १००८          |
| १६७३  | "              | १४६०             | १६६४  | उ० लाम्पविजय गणि  | ११०८          |
| १६७७  | "              | १७१७             | १६६६  | " "               | १११०          |
| १६८५  | "              | १३६१, १६४३       | १७००  | पं० कर्त्तिका गणि | २०१५          |
| १६८६  | "              | ११०६             | १७०६  | विजयानंद स्त्री   | १०११          |
| १६८७  | "              | ११७३             | "     | विजयानंद स्त्री   | "             |
| १६९७  | "              | ११०८             | १७१०  | "                 | १११३, १११५    |
| १६९७  | "              | २०५६             | "     | विजयसेन स्त्री    | १११६          |
| १६९९  | "              | १७६०             | १७१५  | "                 | १११७          |
| १७०३  | "              | २०६०             | १७१३  | विजयसेन स्त्री    | १११८          |



| संवत् | नाम                       | लेखांक     | संवत् | नाम              | लेखांक |
|-------|---------------------------|------------|-------|------------------|--------|
| १७४४  | विजयप्रभ सूरि             | ११७७       | १४३८  | पद्मशेखर सूरि    | १२     |
| "     | मुक्तिचंद्र गणि           | "          | १४७४  | " "              | १२     |
| १७६४  | ज्ञानविमल सूरि            | १७६६       | १४८५  | " "              | १४     |
| १८०५  | पं० कुशलविजय गणि          | १४६७       | १४५५  | सर्वाणंद सूरि    | १०६    |
| १८०६  | " " "                     | १४६८       | १४६१  | मलयचंद्र सूरि    | १८६    |
| १८१८  | " " "                     | १४५५       | १४६५  | " "              | १२२    |
| १८०८  | विजयधर्म सूरि             | १११६       | १४७३  | पद्मसिंह सूरि    | १०६    |
| १८४८  | विजयजिनेंद्र सूरि         | १२०४       | १४८६  | महीतिलक सूरि     | ११८    |
| १८७३  | " "                       | १७२४       | १५०१  | " "              | ११४    |
| १८७६  | " "                       | १७८७       | १५०३  | " "              | १४६५   |
| १८८०  | " "                       | १७३४       | १५११  | " "              | १५३८   |
| १८४८  | पं० पुण्यविजय गणि         | १२०४       | १४६५  | विजयचंद्र सूरि   | १०७७   |
| १९०५  | शांतिसागर सूरि            | १८२६       | १४६८  | " "              | १२४७   |
| १९१२  | आनन्दसागर सूरि            | १८६८       | १५०१  | " "              | १०७६   |
| १९३१  | धरणेन्द्रविजय सूरि        | १४६६       | १५०३  | " "              | १५४७   |
| १९३८  | वृद्धविजय गणि             | १८४८-५३    | १५०४  | " "              | १३६६   |
| १९४३  | विजयराज सूरि              | १८२७       | १५०१  | विजयप्रभ सूरि    | ११४४   |
| १९४६  | " "                       | १८०६       | १५०५  | महेन्द्र सूरि    | २०६८   |
| १९५४  | पं० पवा विज्ञे (?)        | १७५०       | १५०७  | —                | १३६०   |
| "     | विजयसिंह सूरि             | १८४०       | १५०७  | पद्मार्णंद सूरि  | १२५१   |
| १९६४  | उ० वीर विजय               | १४६६, १५०१ | १५२६  | " "              | १३२६   |
|       | कृष्णर्षि गठ—(तपगठ शाखा)। |            | १५३५  | " "              | १०६८   |
| १९२५  | कमलचंद्र सूरि             | १२७५       | १५१३  | साधुरत्न सूरि    | १०८८   |
|       | देवाजिदित गठ ।            |            | १५२०  | " "              | १३७७   |
|       |                           |            | १५१३  | पद्मणक सूरि      | १४७४   |
| २००१  | कानुदेव                   | १६६८       | १५२२  | साधु —           | १०१३   |
|       | धर्मघोष गठ ।              |            | १५३४  | लक्ष्मीसागर सूरि | १३१८   |
|       |                           |            | १५६३  | " "              | १२६६   |
| १९३६  | मुष्णंद सूरि              | १६५२       | १५३७  | मानदेव सूरि      | २०५३   |

| संवत्                 | नाम                 | लेखांक     | संवत्                                  | नाम             | लेखांक       |
|-----------------------|---------------------|------------|----------------------------------------|-----------------|--------------|
| १५६३                  | श्रुतसागर स्मृति    | १३८४       | १७१५                                   | रत्नाकर स्मृति  | १३१२         |
| १५६६                  | नन्दिवर्द्धन स्मृति | ११६१       | <b>नाणकीय (ज्ञानकीय, नाणावाल) गठ ।</b> |                 |              |
| १५७०                  | " "                 | १६२०, १६६३ | १२४३                                   | — —             | २०७६         |
| १५७३                  | " "                 | १३०३       | १३४१                                   | महेन्द्र स्मृति | २०२२         |
| १५७७                  | " "                 | १३२१       | १३४६                                   | " "             | १७१६         |
| <b>नमदाल गठ ।</b>     |                     |            | १४०५                                   | शांति स्मृति    | १४८७         |
| १५१६                  | देवगुप्त स्मृति     | १३४०       | १४६३                                   | — —             | १११२         |
| <b>नागपुरीय गठ ।</b>  |                     |            | १५०२                                   | शांति स्मृति    | ११४३         |
| --                    | हेमरत्न स्मृति      | १६०६       | १५६४                                   | " "             | १५१६         |
| <b>नागेन्द्र गठ ।</b> |                     |            | १५६६                                   | " "             | १३२८         |
| ११६१                  | विजयतुंग स्मृति     | १७६७       | १५७६                                   | " "             | २०८७         |
| ११६२                  | वर्द्धमान स्मृति    | १६२०       | १५१६                                   | धनेश्वर स्मृति  | १५५०         |
| ११८१                  | उज्जयिनी स्मृति     | १७६३       | १५२७                                   | " "             | २११०         |
| ११८५                  | रत्ननागर स्मृति     | १०४८       | १५३०                                   | " "             | (१७२८४) ११८० |
| ११८२                  | रत्नम स्मृति        | १०५३       | १५३४                                   | " "             | २०८६         |
| ११३७                  | " "                 | ११३६       | १५३६                                   | " "             | १३११         |
| ११६६                  | उज्जयिनी स्मृति     | ११२४       | १५६२                                   | " "             | १०३१         |
| ११५०                  | देवगुप्त स्मृति     | १०५८       | १५७७                                   | महेन्द्र स्मृति | १०३१         |
| ११७७                  | सिंहदत्त स्मृति     | १०६५       | <b>निष्ठानि गठ ।</b>                   |                 |              |
| ११८७                  | पद्मानन्द स्मृति    | १०७३       | ११६६                                   | धर्म स्मृति     | १०३१         |
| ११६६                  | गुणलसुन्दर स्मृति   | १३६८       | <b>निष्ठानि गठ ।</b>                   |                 |              |
| १५१०                  | " "                 | २१०३       | १५३६                                   | " "             | १०३१         |
| "                     | सर्व स्मृति         | "          | <b>पद्मानरीय गठ ।</b>                  |                 |              |
| १५३३                  | गुणेश्वर स्मृति     | १८६६       | १५३३                                   | देव स्मृति      | १०३१         |
| १५५८                  | हेमरत्न स्मृति      | १६०५       | <b>पद्मीवास गठ ।</b>                   |                 |              |
| १५७०                  | हेमसिंध स्मृति      | १६०५       | १५७०                                   | " "             | १०३१         |
| १५७२                  | सुगुप्त             | १६०५       | १५७२                                   | " "             | १०३१         |

| संवत्                      | नाम                  | दोखांक    | संवत्                   | नाम                | दोखांक |
|----------------------------|----------------------|-----------|-------------------------|--------------------|--------|
| १४७६                       | यशोदेव स्त्रि        | १८८२      | १५३२                    | " "                | १७२८   |
| १४८२                       | " "                  | १९३१      | १५२३                    | साधुसुंदर स्त्रि   | ११५६   |
| १५१३                       | " "                  | १८८७      | १५२६                    | " "                | १२८१   |
| १५२८                       | नन्न स्त्रि          | २१११      | १५४७                    | जयरत्न स्त्रि      | १११६   |
| १५३६                       | उद्योतन स्त्रि       | १४६२ १५५५ | १५४८                    | सौभाग्यरत्न स्त्रि | १७६०   |
| <b>पार्श्वचन्द्र गण ।</b>  |                      |           | १५५६                    | मनसिंह स्त्रि      | १२१२   |
| १५७७                       | पार्श्वचन्द्र स्त्रि | १५६१      | <b>पूर्णिमा गण ।</b>    |                    |        |
| <b>पिप्पल गण ।</b>         |                      |           | <b>जीमपत्नीय शाखा ।</b> |                    |        |
| १४६१                       | वीरप्रभ स्त्रि       | १६७५      | १४८२                    | जयचंद स्त्रि       | १५६४   |
| १५१६                       | शालिभद्र स्त्रि      | ११५५      | १५१५                    | " "                | १३७६   |
| १५१७                       | धर्मसागर स्त्रि      | २०७३      | १५७६                    | मुनिचंद्र स्त्रि   | १३०२   |
| १५३०                       | चंद्रप्रभ स्त्रि     | १२२२      | <b>प्राया गण ।</b>      |                    |        |
| १५७०                       | तिलकप्रभ स्त्रि      | १७२६      | १३७४                    | शीलभद्र स्त्रि     | १०४२   |
| "                          | गुणप्रभ स्त्रि       | "         | <b>बापदीय गण ।</b>      |                    |        |
| <b>पूर्णिमा(पक्ष) गण ।</b> |                      |           | १२४२                    | जीवदेव स्त्रि      | १६८६   |
| १३८१                       | सोमतिलक स्त्रि       | १६२४      | <b>बोकड़िया गण ।</b>    |                    |        |
| "                          | श्रीस्त्रि           | "         | १४५७                    | धर्मतिलक स्त्रि    | १०६१   |
| १४८५                       | सर्वानन्द स्त्रि     | १२४१      | १४६६                    | " "                | १२४६   |
| १४८६                       | विद्याशेखर स्त्रि    | १३६७      | १५४६                    | मणिचंद्र स्त्रि    | ११६७   |
| १५०१                       | गुणसमुद्र स्त्रि     | १५६५      | १५५६                    | " "                | १४१४   |
| १५११                       | राजतिलक स्त्रि       | १४८०      | १५६२                    | " "                | ११६६   |
| १५१७                       | " "                  | १६३७      | १५८७                    | मलयहंस स्त्रि      | १६१५   |
| १५१६                       | " "                  | १७५७      | <b>ब्रह्माण गण ।</b>    |                    |        |
| १५१७                       | पुष्करज स्त्रि       | २०८५      | १३२०                    | धरस्तेण उपाध्याय   | २०६८   |
| १५१८                       | " "                  | १५६७      | "                       | जम्क स्त्रि        | "      |
| १५३२                       | " "                  | ११६८      |                         |                    |        |
| १५२१                       | गुणतिलक स्त्रि       | १७५८      |                         |                    |        |

| संवत्                     | नाम               | लेखांक     | संवत् | नाम                          | लेखांक     |
|---------------------------|-------------------|------------|-------|------------------------------|------------|
| १३५५                      | विमल स्त्रि       | ...        | ...   | मध्यम शाखा ।                 |            |
| १३५६                      | विजयसेन स्त्रि    | ...        | ...   | — — देव स्त्रि               | १६०५       |
| १३५७                      | हेमनिलक स्त्रि    | ...        | ...   | मकाहक(मड्डारडिय,मड्डहड) गठ । |            |
| १३५८                      | बुद्धिसागर स्त्रि | ...        | ...   | १३५१ सोमतिलक स्त्रि          | १०४६       |
| १३५९                      | वीर स्त्रि        | ...        | ...   | १४८० धर्मचंद्र स्त्रि        | १०६८       |
| १४०३                      | " "               | ...        | ...   | १४८१ उदयप्रम स्त्रि          | १०६६, २०४६ |
| १५१६                      | " "               | ...        | ...   | १५२७ नयचंद्र स्त्रि          | १२७६       |
| १४७१                      | उदयाणंद स्त्रि    | ...        | ...   | १५४१ कमलचंद्र स्त्रि         | १३६०       |
| १५००                      | विमल स्त्रि       | ...        | ...   | १५४५ " "                     | १३६२       |
| १५१८                      | " "               | ...        | ...   | १५५७ गुणचंद्र स्त्रि         | ११३०       |
| १५१९                      | " "               | ...        | ...   | " उ० बाणंदनंद स्त्रि         | "          |
| १५२४                      | " "               | ...        | ...   | मधुकर गठ ।                   |            |
| १५११                      | मुनिचंद्र स्त्रि  | ...        | ...   | — — —                        | १७३६       |
| १५१३                      | उदयप्रम स्त्रि    | १०८६, १३७४ | १५१६  | मह्वधारि(मह्ववादि) गठ ।      |            |
| १५२४                      | " "               | ...        | ...   | १२३४ पूर्णचंद्र स्त्रि       | १८८५       |
| १५१३                      | हेमहंस स्त्रि     | ...        | ...   | १३४४ रत्तदेव स्त्रि          | २०६६       |
| १५१६                      | बुद्धिसागर स्त्रि | ...        | ...   | १४७६ विद्यासागर स्त्रि       | २१००       |
| "                         | उदयाणंद स्त्रि    | ...        | ...   | १४७७ मुनिशेखर स्त्रि         | ११०५       |
| १६६३                      | जाजीग स्त्रि      | ...        | ...   | १५१० गुणासुंदर स्त्रि        | १६६०       |
| भावडार(भावड,भावहेडा) गठ । |                   |            |       | १५१२ " "                     | १७७५       |
| १५०६                      | वीर स्त्रि        | ...        | ...   | १५१५ " "                     | ११५२       |
| १५२४                      | भावदेव स्त्रि     | ...        | ...   | १५२२ " "                     | २१०४       |
| १५३७                      | " "               | ...        | ...   | १७२५ " "                     | १७३०       |
| १५३६                      | " "               | ...        | ...   | १७०७ गुणजोहर स्त्रि          | १२२८       |
| जिन्नमाल गठ ।             |                   |            |       | १५३२ सुप्रतिभा स्त्रि        | १२०५       |
| १५६३                      | कर्मांतिक स्त्रि  | ...        | ...   |                              |            |

| संवत् | नाम                     | लेखांक  | संवत् | नाम                  | लेखांक                                                        |
|-------|-------------------------|---------|-------|----------------------|---------------------------------------------------------------|
| १५३४  | गुणविमल सूरि            | १३३८    | १५३८  | देवसुंदर सूरि        | १६२१                                                          |
| १५५७  | गुणवपान सूरि            | ११६८    |       |                      |                                                               |
| १५६६  | लक्ष्मीसागर सूरि        | ११३१    |       |                      |                                                               |
| १५८१  | " "                     | १४८४    | १६३२  | अजयराज सूरि          | २०३४                                                          |
| १६६६  | कल्याणसागर सूरि         | १८६६    | १६५३  | गंगारिखी यति         | २०३३                                                          |
| "     | उदयसागर सूरि            | "       |       |                      |                                                               |
|       | <b>मोढ गठ ।</b>         |         |       | <b>वड गठ ।</b>       |                                                               |
| १२२७  | जिनभद्राचार्य           | १६६४    | १५७२  | चंद्रप्रभ सूरि       | १३८६                                                          |
|       | <b>रडुल गठ ।</b>        |         |       | <b>विजय गठ ।</b>     |                                                               |
| १५७६  | श्रीसूरि                | १६२५    | १६२१  | शांतिसागर सूरि       | १५६६-६७                                                       |
|       | <b>रांका गठ ।</b>       |         | १६२४  | " "                  | १५११-१८, १५३५, १५४२-४३, १५५६, १५६८, १६७०-७१, १६०८, १६१५, १६२३ |
| १३२०  | महीचंद्र सूरि           | १७८०    | १६३१  | " "                  | १८०६, १८२५, १८३३                                              |
|       | <b>राज गठ ।</b>         |         | १६३२  | " "                  | १८२३                                                          |
| १३३६  | अमरप्रभ सूरि            | १६५३-५४ | १६३३  | " "                  | १७०२-०३                                                       |
| १५०६  | पद्मानंद सूरि           | ११७४    | १६४३  | " "                  | १८२७                                                          |
| १५५२  | पुण्यवर्द्धन सूरि       | १५६१    |       | <b>विद्याधर गठ ।</b> |                                                               |
|       | <b>रामत्तेनीय गठ ।</b>  |         | १४११  | विजयप्रभ सूरि        | १११८                                                          |
| १४५५  | धर्मदेव सूरि            | १२३६    | १४१३  | विजयप्रभ सूरि        | २०८४                                                          |
|       | चंद्र सूरि              | १०८०    | १५१८  | हेमप्रभ सूरि         | १६२४                                                          |
|       | "                       | १०८७    | १५२०  | " "                  | १३१३                                                          |
|       | <b>रुद्रपल्लीय गठ ।</b> |         |       | <b>विवंदणीक गठ ।</b> |                                                               |
|       | जनरदेव सूरि             | २०२६    | १५१२  | सिद्ध सूरि           | १६५८                                                          |
|       | जिनराज सूरि             | १०५२    | १५२४  | कक सूरि              | १०२७                                                          |
| १३    | मोमसुंदर सूरि           | १३१५    |       | <b>वृहज्जठ ।</b>     |                                                               |
| १५१७  | " "                     | १२६७    | १३१६  | हीरभद्र सूरि         | १३२७                                                          |
|       |                         |         | १३३४  | — — —                | १८०१                                                          |

| संवत् | नाम            | लेखांक     | संवत् | नाम           | लेखांक     |
|-------|----------------|------------|-------|---------------|------------|
| १३८६  | धर्मघोष सूरि   | १३६३       | १४६३  | शालिभद्र सूरि | १६३३       |
| १४६१  | रामदेव सूरि    | १४३६       | १५२०  | " "           | २००२       |
| १४६६  | रत्नम सूरि     | १२०७, १६७६ | १४६४  | शांति सूरि    | १६४१       |
| १५०३  | मलयचंद्र सूरि  | १०८०       | १४६६  | " "           | १८५६       |
| १५०६  | " "            | १०१२       | १५०१  | " "           | १६४२       |
| १५०७  | लागर सूरि      | ११५०       | १५०६  | " "           | १८६०       |
| १५०८  | महेन्द्र सूरि  | १५३७       | १५०८  | " "           | १५४८       |
| १५१३  | कमलप्रभ सूरि   | १२६५       | १५१८  | " "           | १६३१       |
| "     | लागरचंद्र सूरि | १३७५       | १५२७  | " "           | १५५४       |
| १५१८  | मैत्रप्रभ सूरि | १४०६       | १५३३  | " "           | १४०८       |
| १५५२  | " "            | १२११       | १५३७  | " "           | २१०६       |
| १५५३  | श्री सूरि      | १२२३       | १५०५  | — —           | १०८१       |
| १५५४  | धर्मप्रभ सूरि  | २१०७       | १५१२  | शिवर सूरि     | १०५५       |
| १५५६  | हनिदेव सूरि    | १२६७       | १५१५  | " "           | १६३१       |
| "     | मनिचंद्र सूरि  | १४३४       | १५३०  | मराचंद्र सूरि | २०३५       |
| "     | वसुध सूरि      | १८६५       | १५३१  | — —           | १११६       |
|       |                |            | १५३२  | — —           | १३१७       |
|       |                |            | १५३३  | सति सूरि      | १०११, १०१५ |
|       |                |            | १५३४  | सुमति सूरि    | १३७५       |
|       |                |            | १५३५  | शक्ति सूरि    | १२१६       |
|       |                |            | १५३६  | " "           | १११५       |
|       |                |            | १५३७  | " "           | १११७       |
|       |                |            | १५३८  | " "           | १३१५       |
|       |                |            | १५३९  | शिवर सूरि     | १३१५       |
|       |                |            | १५४०  | मराचंद्र सूरि | १११५       |
|       |                |            | १५४१  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५४२  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५४३  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५४४  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५४५  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५४६  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५४७  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५४८  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५४९  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५०  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५१  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५२  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५३  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५४  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५५  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५६  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५७  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५८  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५५९  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६०  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६१  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६२  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६३  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६४  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६५  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६६  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६७  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६८  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५६९  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७०  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७१  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७२  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७३  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७४  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७५  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७६  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७७  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७८  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५७९  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८०  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८१  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८२  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८३  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८४  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८५  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८६  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८७  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८८  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५८९  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९०  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९१  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९२  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९३  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९४  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९५  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९६  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९७  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९८  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १५९९  | — —           | १३१५       |
|       |                |            | १६००  | — —           | १३१५       |

व्यवस्तीह गठ ।

पं(सं)डेर(क) गठ ।

मराठु कुटुंबा मंडळ (स.स.), ।

| संवत्                                  | नाम             | लेखांक | संवत् | नाम            | लेखांक |
|----------------------------------------|-----------------|--------|-------|----------------|--------|
| <b>सिद्धान्तिक गद्य ।</b>              |                 |        | १३८०  | पद्मानंद सूरि  | १४३५   |
| १४०८                                   | माणचंद्र सूरि   | १४२७   | "     | जगनिलक सूरि    | "      |
| <b>हर्षपुरीय गद्य ।</b>                |                 |        | १३८६  | धर्मप्रभ सूरि  | १५०२   |
| १५५५                                   | गुणसुंदर सूरि   | १२६५   | १३६६  | भावदेव सूरि    | १०४७   |
| <b>हुंबड़ गद्य ।</b>                   |                 |        | १४०५  | अभयदेव सूरि    | १८८६   |
| १४५३                                   | सिंहदत्त सूरि   | १०५६   | १४०७  | गुणप्रभ सूरि   | १०५०   |
| <b>जिनमें गद्यों के नाम नहीं हैं ।</b> |                 |        | १४०६  | सर्वानंद सूरि  | १०५१   |
| ६३७                                    | उद्योतन सूरि    | १७०६   | "     | सर्वदेव सूरि   | "      |
| "                                      | वच्छवल देव      | "      | १४२३  | शालिभद्र सूरि  | १०५४   |
| ११६६                                   | श्रामदेव सूरि   | १०३३   | "     | अभयचंद्र सूरि  | १०५५   |
| १२५३                                   | जिनचंद्र सूरि   | १७८५   | १४३६  | — — —          | १६२६   |
| १२६२                                   | भावदेव सूरि     | १०३५   | १४६८  | श्री सूरि      | २०१०   |
| १२--                                   | सर्वगुप्त सूरि  | १०३६   | १४७८  | " "            | १०६६   |
| १३०२                                   | माणिक्य सूरि    | १७८३   | १४७०  | देव सूरि       | १३६६   |
| "                                      | जयदेव सूरि      | २०२३   | १४८४  | जयप्रभ सूरि    | २०००   |
| १३१०                                   | परमानंद सूरि    | १७६५   | --    | जिनरतन सूरि    | १६६३   |
| १३३८                                   | " "             | "      | १४६३  | अमरचन्द्र सूरि | १२४३   |
| २२                                     | जयचंद्र सूरि    | २०४७   | "     | धनप्रभ सूरि    | २०८३   |
| ३                                      | उद्योतन सूरि    | १०३७   | १४६६  | शीलरत्न सूरि   | १४२२   |
| २३८                                    | श्री सूरि       | ११२१   | १४६७  | मुनिप्रभ सूरि  | १३३१   |
| "                                      | पूर्णभद्र सूरि  | १७६१   | १५०१  | मंगलचंद्र सूरि | १३६६   |
|                                        | प्रद्युम्न सूरि | १३६४   | १५०३  | धर्मशेखर सूरि  | १७६८   |
|                                        | विवुधप्रभ सूरि  | ११२२   | १५०६  | सर्व सूरि      | १०८२   |
|                                        | जिनभद्र सूरि    | १७६५   | १५०६  | साधु सूरि      | १२५४   |
|                                        | रत्नप्रभ सूरि   | १७६५   | १५१६  | श्री सूरि      | ११२७   |
| "                                      | "               | १०५३   | १५३३  | " "            | १४७०   |
|                                        |                 |        | १५२१  | सुविहित सूरि   | ११७५   |
|                                        |                 |        | १५२३  | कनकरत्न सूरि   | १५६८   |

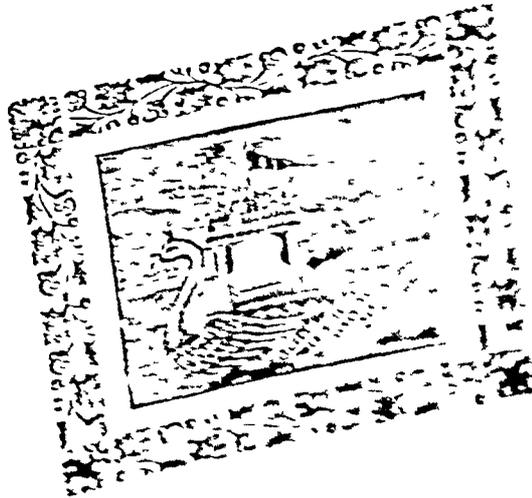
( १७ )

लेखांक

| संवत् | नाम               |
|-------|-------------------|
| १९९२  | धर्मवल्लभ स्त्री  |
| १९९३  | सर्वदेव स्त्री    |
| १९९४  | देवरत्न स्त्री    |
| १९९५  | नंदिनार्दन स्त्री |
| १९९६  | श्री स्त्री       |
| १९९७  | जिनसाधु स्त्री    |
| १९९८  | हर्षरत्न स्त्री   |
| १९९९  | विजय स्त्री       |
| १९९९  | रत्नविशाल गणि     |
| १९९९  | भक्तिचंद्र गणि    |
| १९९९  | ड० क्षेत्रराम गणि |
| १९९९  | विजयशक्ति स्त्री  |
| १९९९  | विद्यविजय गणि     |
| १९९९  | ऋद्धिविजय गणि     |
| १९९९  | लालचंद्र गणि      |
| १९९९  | रावण्य कमल गणि    |

| लेखांक | संवत् | नाम              |
|--------|-------|------------------|
| १७७४   | १८५६  | हेमगणि           |
| १६२७   | १६२०  | अमृतचंद्र स्त्री |
| ११७१   | "     | सागरचंद्र गणि    |
| १३५६   | १६३१  | विजय स्त्री      |
| ११७२   | १६४४  | सं० रणधीरविजय    |
| ११६३   | १६६१  | चारित्र सुख      |
| १४६६   |       |                  |
| १६०८   |       |                  |
| १७१५   |       | देव स्त्री       |
| १०२८   |       | महप्य गणि        |
| १५५७   |       | जिनसागर स्त्री   |
| १७४५   |       | उदयश्रील गणि     |
| १२०१   |       | बातासागर गणि     |
|        |       | क्षेमचंद्र गणि   |
| ११७८   | १४४१  | मेखम सुनि        |
|        | १४१७  |                  |

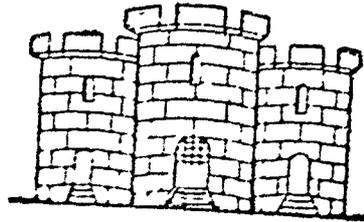
जिनमें सम्बत् नहीं है।





## दिगम्बर संघ ।

| संवत्                               | नाम          | लेखांक | संवत् | नाम           | लेखांक |
|-------------------------------------|--------------|--------|-------|---------------|--------|
| <b>काष्ठा संघ ।</b>                 |              |        |       |               |        |
| १३६०                                | तिहुण कीर्ति | ११३५   | १४५७  | पद्मनंदि      | १००६   |
| "                                   | — —          | १२२६   | १४७२  | "             | १०६३   |
| १४६७                                | जिनचंद्र     | १४८३   | १५३४  | म० ज्ञानभूषण  | ११२७   |
| १५०६                                | मलयकीर्ति    | १२५२   | "     | म० भूयनकीर्ति | "      |
| १५४६                                | — —          | १३४३   | "     | रत्नकीर्ति    | १४५८   |
| <b>काश्ची संघ ।</b>                 |              |        |       |               |        |
| १४६७                                | कोर्तिदेवा   | १४२७   | १५४६  | जिनचंद्र      | १०१५   |
| १५१०                                | विमलकीर्ति   | १४२८   | १५६२  | " "           | १४४७   |
| <b>नंदि संघ ।</b>                   |              |        |       |               |        |
| — —                                 | क्षेमकीर्ति  | १७६६   | १५५२  | — —           | १४२६   |
| <b>मृत्त संघ ।</b>                  |              |        |       |               |        |
| १४४३                                | — —          | १४२०   | १६१६  | सुमतिकीर्ति   | १६३६   |
| <b>जिनमें संघ के नाम नहीं हैं ।</b> |              |        |       |               |        |
|                                     |              |        | १६५२  | चंद्रकीर्ति   | ११३२   |
|                                     |              |        | १६८६  | पद्मनंदि      | १०६५   |
|                                     |              |        | १६०८  | क्षेमकीर्ति   | १४३७   |



















| गोत्र       | लेखांक | गोत्र     | लेखांक |
|-------------|--------|-----------|--------|
| चंडेजस्विया | १३६७   | वज्रजातोय | १६११   |
| चंदवाड़     | ११३२   | विणचट     | १०६०   |
| छाहखा       | १४८१   | विणड      | १६३४   |
| तइट         | १३४०   | वेलुयुतो  | १८३३   |
| दहदहड़ा     | १०८०   | षट गड़    | १२५१   |
| फाफटिया     | १२४७   | सापुटा    | १२२०   |
| भाईलेवा     | १५५५   | सामलिया   | १५३७   |
| मुठिया      | १२५७   | हिंगड     | ११५२   |

## शुद्धि पत्र ।

| पृ० | ले०  | अशुद्ध       | शुद्ध    | पृ०                      | ले०  | अशुद्ध   | शुद्ध    |
|-----|------|--------------|----------|--------------------------|------|----------|----------|
| १२  | १०५६ | १४३६         | १५३६     | १५१                      | १६६५ | १६७७     | १८७७     |
| "   | १०५७ | कारंट        | कोरंट    | २१३                      | १८३४ | १८०८     | १८८८     |
| २०  | ११०३ | नंदकल्याण    | जयकल्याण | २२४                      | १८७१ | १०२०     | १६२०     |
| ३०  | ११६२ | जिनचंद्र     | जिनभद्र  | २३५                      | १६२३ | १३५६     | १३७६     |
| "   | "    | जिनभद्र      | जिनचंद्र | २४४                      | १६६० | १४२५     | १४६५     |
| ३६  | ११६५ | द्वाराविजय   | हीरविजय  | २६५                      | २०३६ | पावापुरी | पावापुरी |
| ५४  | १२८७ | जिनचंद्र (१) | जिनभद्र  | प्रतिष्ठा स्थान ( उथमण ) | २०७० |          | २०७६     |
| ६०  | १३१७ | "            | "        | " ( चारकवाण )            | २०५२ |          | २०६१     |
| ८२  | १४१५ | जिनराज       | जिनहर्ष  | " ( च्यारकवाण )          | २०५३ |          | २०६२     |
| ११६ | १५१२ | १८२४         | १६२४     | " ( दौलतीवाद )           | २०४८ |          | २०५८     |

